प्रकाशक
श्री परमानन्द पोद्दार
आधुनिक पुस्तक भवन
३०/३१ कलाकार स्ट्रीट
कलकत्ता

अक्टूबर १९५०
मूल्य ४)

मुद्रक
युनाइटेड कमर्शियल प्रेस,
३२, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट
कलकत्ता।

भूमिका

अभी मुझे इस कर्त्तव्यका ज्ञान नहीं हुआ था, कि जिस भूमिका अन्न-जल आदमी चार-छ महीने खा ले, उससे उऋण होनेका भी यत्न करना चाहिये। वह यत्न मेरे जैसे कलमकारोंके लिये उस देशके बारेमें कुछ लिखना ही हो सकता है। "किन्नर देशमें" मैंने अपनी कर्त्तव्य-बुद्धिसे नहीं लिखा, बल्कि मित्रोंके तकाजेपर तकाजे जब लेखके लिये आने लगे, तो उसी सिलसिलेमें यह ग्रंथ लिख डालना पड़ा। जब १ अप्रैल सन् १९४९ ई० को हम कलिम्पोङ पहुँचे, तो वहां भी तकाजे आये, लेकिन उनकी पूर्तिमें लिखे लेख "आज की राजनीति" के कलेवरमें समा गये।" "दार्जिलिङ-परिचय" के लिखे जानेका भारी श्रेय श्रीरामेश्वरप्रसादजी टांटिया (कलकत्ता) को देना चाहिये। मैं कलकत्ता पहुँचा था, उसी समय श्रीरामेश्वरप्रसादजी दार्जिलिङ होकर लौटे थे। उन्होंने बंगला और अंग्रेजीकी कई पुस्तकें मेरे सामने पटकते हुए कहा—"देखिये, दार्जिलिङकी पथ-प्रदर्शिका (गाइड) के रूपमें कितने ग्रंथ अंग्रेजी और बंगलामें हैं, और हमारी हिन्दीमें एक भी नहीं है। क्या यह लज्जाकी बात नहीं है ?" मुझे रामेश्वर बाबूकी बात लग गयी और आगेके लिये अन्न-जलसे उऋण होनेके कर्त्तव्यका भी साक्षात्कार हो गया, इस प्रकार इस ग्रंथके लिखनेके लिये लेखनी उठी।

भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोंका परिचय प्राप्त करनेके लिये अंग्रेजोंका ध्यान सबसे पहिले जाना आवश्यक था, क्योंकि हरएक अंग्रेज शासक इस देश-में उड़ते पंछीकी तरह आता था। ईस्ट इंडिया कंपनीकी आज्ञासे १८०७ ई० में ही बंगालके विवरण और आंकड़े जमा किये जाने लगे। उस समयके कितने ही ग्रंथ दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण चित्रोंके साथ छपे थे। यहां मैं यह बतला देना जरूरी समझता हूँ, कि सन् १८५० ई०से पहिलेके जितने भी अंग्रेजी ग्रंथ हमारे देशके परिचयके संबंधमें लिखे गये [illegible] इतिहास-भूगोलकी इतनी ही बहुमूल्य सामग्रियां [illegible] थे उनका

हिंदीमें अनुवाद होना जरूरी है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा सर्वेक्षण कार्य सन् १८५८ ई० तक होता रहा। किन्तु प्रांतवार विवरण और आंकड़ोंसे भी जरूरी था, जिलोंका परिचय। जो भी तरुण अंग्रेज अफसर भारतमें पहिले पहिल आया होगा, उसका ध्यान इस ओर गया जरूर होगा, किन्तु इस काम-का आरम्भ मध्यप्रदेशके बेतूल जिलेके डिप्टी कमिश्नर मेजर बाल्डविनने सन् १८६९ ई० में किया। बाल्डविन बहुत समयसे जिलेके सम्बन्धमें सामग्री जमा कर रहा था। उसने बड़े संकोचसे अपना हस्तलिखित [illegible] दिखाया। चीफ-कमिश्नरने देखकर हरएक जिलेके संबंधमें ऐसे विवरण तैयार करनेकी सलाह दी। इस प्रकार जिलेके "गजेटियरों" के लिखनेका श्रीगणेश हुआ, और मध्यप्रदेश जिलोंके गजेटियरोंको तैयार करानेमें सफल हुआ। इतिहासवेत्ता हंटरने "Annals of Rural Bengal" को सन् १८६८ ई० में ही प्रकाशित कर दिया था। दस वर्षके परिश्रमके बाद सन् १८७८ ई० में उसने "Statistical Accounts of Bengal" और दो वर्ष बाद 'Imperial gazetteer of india" को प्रकाशित कराया। इस शताब्दीके आरम्भतक भारतके सभी जिलोंके गजेटियर तैयार हो गये थे।

किंतु—स्वतंत्र भारतके लिये अगले गजेटियर स्वतंत्र दृष्टिसे लिखने होंगे, तथा उनमें नवीनतम आंकड़ोंके साथ हर क्षेत्रके नये अनुसंधानोंकी बातोंको भी सम्मिलित करना होगा।

"दार्जिलिङ-परिचय" में मैंने स्थानीय इतिवृत्त, भूगोलादिके साथ पथप्रदर्शनकी बातें भी शामिल कर दी हैं। हिन्दीमें जब सभी तरहके ग्रंथ सुलभ हो जायेंगे, तब लेखकोंको एक ही अंगतक सीमित रहना पड़ेगा, किन्तु अभी तो "पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर" जैसे ग्रंथोंके लिखनेमें ही अधिक पाठकोंका अधिक लाभ होगा। ग्रंथ कहीं अधिक बढ़कर पाठकोंके लिये दुष्पाठ्य न बन जाये, इसलिये जान-बूझकर मैंने कितनी ही बातोंको छोड़ दिया है। उनका और दूसरी बातोंका समावेश तो, अगले संस्करणमें तभी होगा, जब सैलानी पाठक उस ओर संकेत करेंगे।

सन् १९०९ ई० में मैंने नागाधिराज हिमालयका सर्वप्रथम दर्शन किया,

तबसे "अब तेरे सिवा कोई आंखोंमें नहीं जंचता" "वाली बात है। हिमालयने मुझे स्थायी तौरसे अपना बना लिया है। नैनीताल-मसूरीमें आकर आगेके "हिमवन्तखंड"पर लिखनेका काम ले लिया है, जिसमें यमुनासे काली गंगातक का हिमालय सन्निविष्ट होगा। अस्तु, विज्ञ पाठकोंको मेरे और ग्रंथोंकी भांति इस ग्रंथमें भी कितनी ही त्रुटियां मालूम होंगी, जिनके होते भी वह उसे ग्रहण करेंगे, इसमें मुझे संदेह नहीं, किन्तु अपनी उन साधारण त्रुटियोंका परिमार्जन करना मेरी शक्तिके बाहर है। मैं भावी लेखकोंके रास्तेको रोकना नहीं चाहता, अपनी कृतिके सामने मेरे ग्रंथको रद्दीकी टोकरीमें फेंकवा देना उनका अधिकार है। लेखनीके अमर होनेपर मुझे विश्वास नहीं है। इसलिये मैं पाठकोंकी तात्कालिक आवश्यकताओं एवं आनेवाले लेखकोंके लिये दिशा-संकेत भर कर देना अपना उद्देश्य मानता हूं।

"किन्नर देशमें" मैंने देश-परिचायक कितनी ही बातोंको देते हुए लोक-गीतोंको भी दिया था, किंतु इस ग्रंथमें वैसा नहीं कर सका, जिसका कारण दोर्जेलिङ-प्रदेशमें बहुत सी लोक-भाषाओंका होना है, जिनके लोकगीतों-की थोड़ी भी जानकारीके लिये एक अलग पुस्तककी आवश्यकता होगी। "किन्नर देशमें" मैंने अपनी यात्राको भी सम्मिलित कर दिया था, किंतु यहां मैं अपने ५ अप्रैल सन् १९४९ ई० से २२ फरवरी सन् १९५० तकके प्रवासके बारेमें नहीं लिख सका, उसका कारण वस्तुतः अधिकतर एक खूंटे (कालिम्पोङ) से बंध जाना हुआ। साहित्य-सम्मेलनकी ओरसे बनते परिभाषा-कोशोंके निर्माणका काम था, जिसके कारण मैं दोर्जेलिङ और सिक्किमके अनेक भागोंमें नहीं जा सका। दोर्जेलिङ, मङ्पू, गङ्तोक गया भी तो दो एक दिनसे अधिकके लिये नहीं, और वह भी मोटरपर। हां, मध्य-तिब्बतकी अपनी चार यात्राओंमें जाते या लौटते समय जालेप-ला अथवा लांछेनके रास्तेसे गुजरा था, जिसके परिचयका मैंने इस ग्रंथमें कहीं-कहीं उपयोग किया है।

इस "परिचय" को यात्रा-वर्णनका रूप न देनेसे इसकी रोचकतामें अवश्य कमी हुई है, किन्तु इससे एक लाभ हुआ है, कि मेरी लेखनीने किसीके

लिये अप्रीतिकर वाक्य नहीं निकाले। "किन्नर देशमें" के लिखनेमें ऐसा हुआ था, इसका प्रमाण निम्न पत्र है, जिसे अविकल उद्धृत कर देनेको मैं अनुचित नहीं समझता—

"गोलन", ११, जनवरी १९५० ई०

प्रिय राहुलजी,

नमस्ते,

जब मैं बुशहरमें था, मुझे कई मित्रोंने बताया, कि आपने अपनी 'किन्नर देश' नामकी पुस्तकमें मेरे बारेमें कुछ ऊटपटांग लिखा है। मैंने ध्यान नहीं दिया। आज अकस्मात् मेरे एक मित्रने आपकी पुस्तकका पृष्ट ३१६ खोलकर मेरे सामने रख ही दिया। मुझे बड़ा शोक हुआ कि विद्वान कहाते भी आपने बिना निश्चित किये कैसे किसीके बारेमें उसके बड़ोंके नाम-पता सहित असत्य लिखकर पुस्तक-रूपमें छपवा छोड़ा। आपके लिखे अनुसार तो मैं शिष्टाचारहीन हूं। पर क्या आपने अच्छी प्रकार यह जाननेका यत्न किया था, कि वह श्रीमान् जिनकी आपसे भेंट सराहन बंगलेमें हुई थी, थे कौन? वह सज्जन जो ताश खेल रहे थे और जिसने आपका शिष्टाचार स्वीकार नहीं किया, श्री ई०एम० वी० घोष इंजीनियर थे, जो दिल्लीसे अपनी अर्धांगिनी सहित घूमने आये हुए थे। पता नहीं आपने किससे यह जाना कि वे प्रेमराज और उनकी धर्मपत्नी थीं।

मैं उसी दिन रामपुरसे सराहन अवश्य पहुँचा, पर आपके लिये सीमें वाला बारगमास्टीका बंगला छोड़कर भीमाकालीके पीछे वाले सिविल गेस्ट हाउसमें चला गया था। अगले दिन, जिस दिन कि आपका जाना निश्चित था, आपसे मिलने भी गया, पर आप जा चुके थे। उस दिन तो मुझे शोक हुआ था कि एक विद्वानसे न मिल सका, पर आज यह पुस्तक देखकर मुझे यह जान पड़ रहा है, कि आपसे न मिलकर मैं किसी बड़ी हस्तीके दर्शनसे वंचित नहीं रहा। कोई बड़ी बात नहीं, यदि आपकी इस पुस्तकमें और बातें भी ऐसी ही अनिश्चित हों। पाठक तो वहांतक पहुंचने से रहे, सत्य (का) तो हम लोगोंको ही पता है।

यह मैंने श्री महताजीको भी बता दिया था।

अन्तमें यह लिखकर समाप्त करता हूँ कि विद्वान कहानेके लिये निश्चित होना आवश्यक है। यदि किसीने छोटापन भी किया हो तो उसका ढिंढोरा पीटनेसे ढिंढोरचीकी विद्याका अनुमान होता है।

आशा है, आप मेरे मनके दुखको जान सकेंगे और अब अपनी "किन्नर देश" पुस्तकमें किये गये अन्यायकी शुद्धि करेंगे, नहीं यूं कहिये कि महान त्रुटिको दूर करेंगे।

आपका मित्र
प्रेमराज
मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास
"सोलन"

मेरी पुस्तकमें तीन-चार छोटे कालमोंमें ही थोड़ी सी उक्त विषयकी चर्चा आयी है, जिसे कि मैं यहां दुहराना नहीं चाहता। जिस घटनापर मैंने टिप्पणी की, वह सच्ची थी, प्रश्न व्यक्तिका है। मैं श्री प्रेमराजजीको पहिलेसे नहीं जानता था, सराहनके कितने ही लोगोंके बतलानेसे ही मुझे मालूम हुआ था, कि बंगलेमें ठहरे उक्त सज्जनका नाम श्री प्रेमराज है। हो सकता है, ऐसा समझनेमें भूल हुई हो, ऐसा होनेपर मैं अपनेको अक्षन्तव्य अपराधका अपराधी समझता हूं, जिसका प्रतिकार आसान काम नहीं है। किन्तु, इस बातमें मुझे भारी सन्देह है, कि सराहन बंगलेमें उस दिन ठहरे सज्जन, उनकी धर्मपत्नी, दो बच्चे और एक रिश्तेदार बंगाली सज्जन थे, उन लोगोंकी आकृति और वेषभूषा किसी घोष-परिवारके अनुरूप थी। क्या सत्य है, इसका पता तो श्री प्रेमराजजीका दर्शन होनेपर ही लगेगा, तो भी अन्यायके परिमार्जनके लिये मुझे "किन्नर देश" के दूसरे संस्करणकी प्रतीक्षा न करके यहां इन पंक्तियोंको लिख देना पड़ा।

इस पुस्तकके लिखनेमें सबसे अधिक सहायता श्री कमला परियारकी है, जिनकी द्रुत लेखनी और टाइपिंगके बिना यह पुस्तक अस्तित्वमें आती, इसमें संदेह है।

अन्तमें पुस्तकको इतने सुन्दर रूपमें प्रकाशित करनेके लिये श्री परमानन्द पोद्दार जी को भी धन्यवाद देता हूँ।

मसूरी
१६-८-५०

—राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय १

प्राकृतिक रूप

अध्याय २

इतिहास

अध्याय ३

निवासी

अध्याय ४

कृषि, व्यवसाय और उद्योग

विषय	पृष्ठ

अध्याय ५

यातायात

अध्याय ६

स्वास्थ्य-रक्षा

अध्याय ७

शिक्षा

विषय — पृष्ठ

अध्याय ८

दोर्जेलिङ नगर

अध्याय ९

कलिम्पोङ नगर

अध्याय १०

खरसान् नगर

अध्याय ११

सिक्किम

अध्याय १२

हिमालय यात्राकी तैयारी

अध्याय १३

यात्राएं

दोर्जेलिङ परिचय–

दोर्जेलिङ मित्र-मंडली में लेखक

दोर्जेलिङ्-परिचय

१

प्राकृतिक रूप

१—भू-भाग

नागाधिराज हिमालय विश्वकी सुन्दरतम गिरिमाला है। प्रकृतिने मानो अपने सारे सौन्दर्यको हिमाचल भूमिको प्रदान कर दिया है। हिमालयकी सुषमा सभी जगह एक-सी नहीं है, उसमें वैचित्र्य पाया जाता है। अलमोड़ा, नैनीतालके हिमालयका दृश्य दूसरा है, किन्नरका उससे भिन्न है, दोर्जेलिङ अपना पृथक् सौन्दर्य रखता है। दोर्जेलिङका तिब्बती भाषामें अर्थ है, "वज्र-द्वीप"। तिब्बतमें बौद्ध विहारोंके साथ द्वीप (लिङ) लगानेका बहुत रवाज है। इसी नामका एक विहार दोर्जेलिङमें था, जिसके कारण नगर बसनेके बाद इसका यह नाम पड़ गया। अंग्रेजोंने उसी नामको बिगाड़कर दार्जेलिङ कर डाला। दोर्जेलिङ जिला उत्तरी अक्षांशमें २६°.३१' और २७°.१३' के बीच तथा देशांतर ८७°.५९' और ८८°.५२' के बीचमें है, और दोर्जेलिङ नगर उत्तरी अक्षांश २७°.३' और देशांतर ८८°.१६' पर है। यह जिला पश्चिममें नेपाल राज्य, उत्तरमें सिक्किम, पूरबमें भूटान और दक्षिणमें पूर्णिया (बिहार) तथा जलपाईगोड़ी जिलोंसे घिरा हुआ है। इसकी सीमाके बहुत पासतक पाकिस्तान पहुंच गया है जिससे कलकत्ता होकर सीधी दोर्जेलिङ जानेवाली ट्रेन सिलिगोड़ी पहुंचती है। पाकिस्तानके झगड़ेसे बचनेके लिये अब साहेबगंजमें गंगा पारसे भारतके भीतर-भीतर कलकत्ता दोर्जेलिङ ट्रेन जारी हुई है।

दोर्जेलिङ जिलेका निचला भाग तराई है, जो समुद्र-तलसे जहां

३४० फुट ऊपर है, वहां उपरला पहाड़ी भाग १२००० फुटतक ऊँचा है। तराईकी ओरसे हिमालयकी पर्वतमालाएं पर्वतपार्श्व और श्रेणियोंके रूपमें एकके ऊपर एक ऊंची होती चली गई हैं। पहाड़ी भागमें यद्यपि यह चढ़ाई क्रमशः है, किंतु चढ़ाईमें वह एक-ब-एक आरंभ हो जाती है। हरियाली हिमालयके और भागोंमें भी है, लेकिन बंगालकी खाड़ीसे बिना किसी पर्वतको उल्लंघन किये सीधे यहां पहुंचनेवाले बादल वर्षा करनेमें बहुत उदार होते हैं। इसीलिये इस भू-भागमें वर्षा बहुत अधिक, कहीं-कहीं २०० इंचतक होती है। जहां २००० फुटकी ऊंचाईतक जंगल सुरक्षित है, वह स्थान बहुत घना और दुर्गम दिखाई पड़ता है। यहांके जंगलोंमें जंगली केला, जिसमें गूदेसे अधिक बीज होते हैं, तथा दूसरे कितने ही तरहके फल होते हैं।

जिस वक्त दोर्जेलिङ जिलेको सिक्किम राज्यसे लिया गया था, उस समय पहाड़ और तराई दोनोंमें बहुत कम बस्तियां थीं। तराईके बीहड़ जंगलोंमें बाघ, हाथी आदि तरह-तरहके जानवर रहते थे। यहां शाल (साखू), तून और दूसरे बहुत तरहके कठोर और नरम मूल्यवान तथा अल्पमूल्य वाले वृक्ष भरे हुए थे, जिनपर विकराल लताएं चढ़ी हुई थीं। मनुष्यने तराईको बहुत जगह साफ कर दिया है, लेकिन अब भी उसका कुछ अवशेष बचा हुआ है; जहां बाघ, चीते, सुवर्ण मार्जार, मत्स्याद मार्जार, नेवले, तराईके भालू, बन्दर, अर्ना-भैंसा और कई तरहके मृग मिलते हैं; जिससे अब भी वह शिकारियोंका स्वर्ग है, यद्यपि तराई मलेरियाके लिये भी दुःख्यात है। एक तरहका सारनावाला विशाल भैंसे जैसा जानवर गौर भी तराईमें मिलता है। एक बार ८ मई १९२२ को एक गौर ऊपर चढ़ते-चढ़ते दोर्जेलिङमें सेंटपाल स्कूलके नीचे देखा गया। नीचे आकर लोगोंका मारकर उसने झरनेसे पानी पिया, फिर लेबोङका रास्ता लिया और रास्तेमें दो आदमियोंको सींगसे दबाकर मार दिया। अंतमें फुपर्छोरिङके जंगलमें वह मारा गया। उसका सिर अब भी दोर्जेलिङके प्राकृतिक-संग्रहालयमें मौजूद है। आमतौरसे गौर झुंडमें चलते हैं, कभी-कभी कोई झुंडसे

अलग भी हो जाता है। पहाड़ोंमें ऊंचाईके अनुसार वनस्पतियों और पशुओंका अंतर होता जाता है, जिसमें वर्षाका काफी हाथ है, यह आगे मालूम होगा।

२—वर्षा

कुहरा, तराईमें दिसम्बरसे मार्चतक चंद ही दिनोंतक रहता है, किंतु दोर्जेलिङ (उन्नतांश ६८१८ फुट) और कलिम्पोङ (उन्नतांश ४००० फुट) में जुलाई और अगस्त आमतौरसे कुहरेके महीने हैं। जून और दिसम्बरमें भी अक्सर कुहरा छा जाया करता है। जुलाई और अगस्तमें प्रतिमास प्रायः २० दिन, लेकिन दिसम्बरमें वह बहुत कम पाया जाता है। जुलाई और अगस्तमें प्रतिमास प्रायः २० दिन दोर्जेलिङमें आकाश मेघाच्छन्न रहता है। दोर्जेलिङके कुछ भागोंमें वार्षिक वर्षा निम्न प्रकार होती है—

(१) तराई

स्थान	इंच
सिलिगोड़ी (३९६ फुट)	१३१.६३
बागडोगरा (५०० फुट)	१३५.६०
सामसिङ चायबगान	२१२.७६
रोङतोङ रेल-स्टेशन (१४०४ फुट)	१७८.५०
फागू चायबगान	२२६.२०
बगराकोट चायबगान	१६८.५२
सिवोक रेल-स्टेशन (५०० फुट)	१७०.३०
(२) बाहरी पर्वतमाला	
धैयाबारी चायबगान (१९३८ में)	१४५.००
महानदी चायबगान (१९३८ में)	२३४.००
खरसान (४२२० फुट)	१६१.२६
महलदीरम चायबगान (५२१३ फुट)	१०५.९२
धोबीझोरा (६०६६ फुट)	१६२.०८

(३) ऊपरी बालासान

स्थान	इंच
बालासान चायबगान	१११.००
सलिबोङ चायबगान	११२.७५
नागरी	११५.००

(४) भीतरी पर्वतमाला

स्थान	इंच
(क) रंगित-उपत्यका	
दोर्जेलिङ (७३६३ फुट)	१२६.४२
सिङताम चायबगान	११३.३५
तुङसान्	१११.००
मारीबोङ	७७.९५
(ख) रङ्गू-उपत्यका	
लोपचू चायबगान	९६.१३
बदमताम् चायबगान	७०.७८
रागेरूङ	१४८.३९
पेशोक चायबगान	५८.९२
(ग) तिस्ता-उपत्यका	
तिस्ता-उपत्यका चायबगान	१५०.००
मङपू सिनकोना फैक्टरी	१३१.२२
(घ) भीतरी पर्वतमाला (पूर्व)	
कालिम्पोङ (३९३३ फुट)	८६.२०
मनसोङ सिनकोना बगान	९६.२३
पेदोङ (४७६० फुट)	१०३.७५

(५) सिक्किम (सुक्किम)

स्थान	इंच
गङतोक (५६६७ फुट)	१३५.११

पर्वतके बाहरी भागमें तराईके पास वर्षा अत्यधिक होती है। इसके पूर्वी छोरपर तो वह किसी-किसी साल ३०० इंचतक पहुँच जाती है। दक्षिणकी पर्वतमालाओंसे रक्षित स्थानोंमें वर्षा कम होती है। माने-

भंजयाङसे सिंचेल ओर रिशिलाके पूर्वी भागमें इसी कारण वर्षाकी मात्रा कम है।

हिम-वर्षा दोर्जेलिङ नगरमें बहुत कम होती है। ८००० फुटसे कमके स्थानोंमें गिरी वर्फ कुछ घंटों हीमें पिघल जाती है। ऊंचे उन्नतांशोंमें दिसम्बरसे मार्चतकके महीने हिम-पातके हैं, लेकिन आमतौरसे दोर्जेलिङ जिलेमें हिम-पातके औसत दिन सालमें एक या दो ही होते हैं। मार्च, अप्रैल और मईमें कभी-कभी ओले भी पड़ते हैं। वर्षा किस महीनेमें कितनी होती है, इसके लिये निम्न तालिका देखिये—

	१	२	३	४	५	६	
दोर्जेलिङ	०.५३,	१.१९,	१.८८,	४.१४,	९.६३,	२४०२८,	
	७	८	९	१०	११	१२	(मास)
	३२.९२,	२६.५६,	१८.९०,	५,४१,	०.८१	०.२७	
	१	२	३	४	५	६	
कलिम्पोङ	०.४५,	१.५०,	१.१३,	२.५९,	४.४५,	१५.५५,	
	७	८	९	१०	११	१२	(मास)
	२२.९७,	१९.१७,	१०.९३,	२.५५,	०.२९,	०.२४,	

दोर्जेलिङ और कलिम्पोङमें साधारणतया बरसातके भिन्न-भिन्न महीनोंमें वर्षाके दिनोंकी संख्या निम्न प्रकार है—

	१	२	३	४	५	६	
दोर्जेलिङ	१.५,	२.४,	३.६,	७.१	१३.९,	२०.६,	
	७	८	९	१०	११	१२	(प्रतिवर्ष)
	२५.०,	२४.४,	१७.०,	४.३,	०.८,	०.७,	१२१.३
	१	२	३	४	५	६	
कलिम्पोङ	१.३,	३.०,	३.१,	६.५,	८.८	१५.९,	
	७	८	९	१०	११	१२	(प्रतिवर्ष)
	२३.३,	२१.१,	१२.८,	३.४,	०.५,	०.५,	१००२

३—तापमान

तराईका तापमान १०४° फारेन्हाइटसे जाड़ोंमें ३०° फारेन्हाइट तक होता है। कलिम्पोङमें अप्रैल और जून सबसे गरम मास हैं, जब कि तापमान ८७° तक पहुँचता है और दिसम्बरमें सबसे नीचे ३१° तक। दोर्जेलिङमें जूनमें उच्चतम तापमान ८०°.१० देखा गया है, जब कि निम्नतम तापमान फरवरीमें १९°.९ पाया जाता है। बारहों महीनोंमें उच्चतम और निम्नतम तापमान निम्न प्रकार मिले हैं—

कलिम्पोङ (४००० फुट, वार्षिक औसत ६९,५ और ५७°.६)

उच्चतम	५८.९,	६०.७,	६८.३,	७३.१,	७४.३,.	७४.९,
	७५.१,	७४.७,	७४.३,	७१.६,	६६.५,	६१.०
निम्नतम	४५.९,	४७.४,	५२.७,	५८.२,	६२.१,	६५.९,
	६६.९,	६६.९,	६५.४,	६०.३,	५२.५,	४६.८,

दोर्जेलिङ (६८१४ फुट, वार्षिक औसत, ५८.८ और ४७.४)

उच्चतम	७६.६,	४८.४,	५६.३,	६२.५,	६४.०,	६५.५,
	६६.३,	६५.९,	६९.९,	६१.३,	५५.१,	४९.२,
निम्नतम	३४.७,	३५.५,	४२.१,	४८.५,	५२.१,	५६.२,
	२७,७,	५७.४,	५५.७,	४९.९,	४२.७,	३६.७.

गङतोक (५८०० फुट, वार्षिक औसत ६८.२, और ४५.८)

उच्चतम	५७.५,	५९.१,	६६.३,	७०.४,	७२.४,	७३.४,
	७४.६,	७४.६,	७३.९,	७०.८,	६४.७,	६०.३
निम्नतम	३२.२,	३४.९,	४१.७,	४७.१,	५०.५,	५४.९,
	५६.०,	५५.	६५३.६,	४८.४,	४०.८,	३४.१

निश्चय ही मसूरी और शिमलाकी अपेक्षा दोर्जेलिङ अंचलमें हिम-पात और तापमानका गिरना भी कम होता है। इसके अपवाद सन् १८३७ में दोर्जेलिङमें एक फुट बर्फ पड़ी थी और फरवरी सन् १८७७ में पड़ी बर्फ दोर्जेलिङके पासकी उच्च पर्वतमालाओंमें तीन सप्ताहतक रही।

४—ऋतु

मार्चसे वसंतका आरंभ होता है और उसके साथ ही फगुनाहट-की तेज हवा चलने लगती है। इसी समय गुरांस (रोडोडेन्ड्रोन) और मग्नोलियाके फूलोंसे उच्च उन्नतांशोंके जंगल रंगीन हो जाते हैं। अप्रैल और मईमें थोड़ासा ग्रीष्मका समय है, फिर वर्षा शुरू होती है। जूनसे अगस्ततकके तीन महीने घनघोर वर्षा के दिन हैं। सितम्बरमें वर्षाकी जगह फुहारें पड़ने लगती हैं। इस समय सूर्य कभी ही कभी दिखलाई पड़ता है। अक्टूबरसे वर्षा बंद हो जाती है और फिर एक-डेढ़ महीना, जबतक कि जाड़ा कड़ा नहीं हो जाता, यात्रियोंके लिये सुन्दर मौसम होता है, यद्यपि उतना अच्छा नहीं जितना कि अप्रैल और मईके ग्रीष्म महीनोंका। आंधी और पानी कभी-कभी भयंकर रूप लेता है। २५ सितम्बर सन् १८९९ में २४ घंटोंमें १९.४० इंच वर्षा हुई थी। इससे पहिले २३ और २४ सितम्बरको भी कड़ी वर्षा हुई थी। इस वर्षाके कारण दार्जेलिङ जिलेमें कितनेही भूमिपात हुए, जिसमें प्राण और धनकी काफी क्षति हुई थी। वर्षाके कारण उस समय लघु-रंगित नदीका पानी ३० से ५० फुट ऊंचा उठा था, जिससे ६७ आदमी मरे। वर्षाके कारण भूमिपात हुआ, जिससे नदीकी धार रुक गई, और फिर तोड़कर बही। तिस्ता नदीमें भी बाढ़ अभूतपूर्व आई और जिसमें तिस्ता बाजारके अधिकांश घर बह गये। दो हजार एकड़ चायके बाग और बहुतसे जंगल बहकर नीचे चले गये। बालासान नदीकी उपत्यकामें तो तीन चौथाई जंगल स्वाहा हो गया। सड़कों और रेलवे लाइनोंको भी बहुत क्षति पहुंची थी। सारे जिलेमें इस अतिवृष्टिसे २३९ आदमी मर गये, जिनमें ७२ मृत्यु (१० युरोपियन) दार्जेलिङमें हुई। वहां मालरोडके पूर्वी भागमें प्रायः लगातार भूमिपात हुआ।

१२ जून सन् १९५० को ५१ साल पहिलेसे कम अतिवृष्टि और त्राहि-त्राहि नहीं मची। उस दिन (शनिवारसे रविवारकी शामतक) २४ घंटेमें १८ इंचसे अधिक पानी बरसा। डेढ़ सौके करीब आदमियोंने सारे जिलेमें

प्राण गंवाये। इस बार मकानोंकी क्षति पहिलेसे भी अधिक हुई। दोर्जे-लिङ नगरमें चौरस्ता, जलपहाड़, उत्तरबिंदु, दारोगाबाजार, विक्टोरिया अस्पताल और रेल-स्टेशनके मुहल्लोंमें बहुत मकानोंको नुकसान पहुंचा। सिलिगोड़ीसे दोर्जेलिङ और कलिम्पोङ जानेकी सड़कें टूट गईं, और रेल तथा मोटरोंका आना-जाना कई दिनोंतक रुका रहा। यही नहीं संचार और सूचनाके लिये भी बेतारका आश्रय लेना पड़ा। कलिम्पोङमें दोनों भालूखोरोंमें कई आदमी मरे। मकान गिर गये। जिलेके कितने ही भागोंमें भयंकर भूमिपात हुए।

५—पर्वत-श्रेणियां

जिलेके उत्तर-पश्चिममें सिङलीला-पर्वत श्रेणी नेपालसे आकर फलूतमें प्रविष्ट होती है। यह पर्वत-श्रेणी फलूतमें १२ हजार फुट ऊंची है, जो और दक्षिणमें सन्दकफूतक प्रायः उतनी ही ऊंची चली जाती है। उससे आगे ऊंचाई कम होते-होते नेपाल और दोर्जेलिङकी सीमाके पास मानेभंज्याङमें ६००० फुट रह जाती है। यही श्रेणी और भी दक्षिण नेपालकी सीमा बनती अंतमें मेची नदीके बांयें तट होते तराई पहुंच जाती है।

मानेभंज्याङसे पूर्व दिशाकी ओर एक पर्वत-श्रेणी घूम (७४०० फुट) होते सिंचेल तथा व्याघ्रगिरि (टाइगर हिल ८६०० फुट) पर पहुंच जाती है। व्याघ्रगिरिसे वही दक्षिणकी ओर घूम जाती है और धीरे-धीरे कम होती महलदीरम और दौगिरि (डौहिल, खरसानसे ऊपर) होते दक्षिणमें तराईके मैदानकी ओर चली जाती है। इसी मुख्य पर्वतश्रेणीके पूर्वसे तक्दा-पोशक-श्रेणी निकलकर रंगित और तिस्ता नदीके संगमपर उतर जाती है। इससे और दक्षिण सिङतम पार्श्व-श्रेणी है। दोर्जेलिङ नगर मानेभंज्याङ-सिंचेलकी उत्तराभिमुख पार्श्व-श्रेणीके ऊपर है। तिस्तासे पूर्व सबसे ऊंचा शिखर रिशिला (१०,३०० फुट) है, जहां दोर्जेलिङ जिला, सुक्किम और भूटान (डुग्-युल) मिलते हैं। यहांसे एक पार्श्व-श्रेणी दक्षिण-पूरबकी ओर चलती है, जो जलढका-उपत्यकाको बाकी जिलेसे अलग

करती है। दूसरी श्रेणी ७००० फुटकी ऊंचाईसे लाभाकी ओर चलती है, जिसका एक पार्श्व दक्षिण-पश्चिमकी ओर उतरता मैदानकी ओर जाता है और दूसरा पार्श्व उत्तर-पश्चिमकी ओर रिशिसुम् पहुंचता है, जहां उससे पूर्वोत्तरसे दक्षिण-पश्चिम जानेवाली एक श्रेणी मिल जाती है। इस श्रेणीका उत्तरी-पूर्वी छोर पेदोङसे आगे रिशि नदीमें उतरता है और दक्षिणि-पश्चिमी पार्श्व कलिम्पोङ होते एकाएक तिस्ता-उपत्यकामें गिर जाता है।

६—नदियां

(१) **तिस्ता**—यह इस भूमिकी सबसे बड़ी नदी है, जो उत्तरी सिक्किममें (सुक्किम) २१,००० फुटकी ऊँचाईकी एक हिमानी (ग्लेशियर) से निकलती है। सारा सिक्किम तिस्ताके पनढरमें है। रोङप् नदी जहां तिस्तासे मिलती है, वहांसे महा-रंगित और इसके संगम-तक तिस्ता नदी सिक्किम और दोर्जेलिङ जिलेकी सीमा है। महा-रंगित-संगमसे सिवोकतक इसकी धार दोर्जेलिङ जिलेमें बहती है। तिस्ता अंतमें पाकिस्तानमें जाकर ब्रह्मपुत्रमें मिलती है।

जिलेके भीतर रोङप् और रेली नदियां बायें तटसे आकर तिस्तामें मिलती हैं और महा-रंगित, रियाङ और सिवोक दाहिने तटसे। तिस्ता नदीपर तिस्ता और मुकुटबंधन (कारोनेशन) दो विशाल लौह-सीमेंटके पुल हैं। तीसरा पुल सबसे नीचे सन् १९४९ के अंतमें रेलवेके लिये बना है, जिसके द्वारा बिना पाकिस्तानमें गये उत्तरी बिहार, उत्तरी बंगाल और आसामको मिला दिया गया है। तिस्ताकी धार बहुत प्रखर और भयंकर है। कहीं-कहीं इसकी गति प्रति घंटा १८ मील है। बर्षाके दिनोंमें इसका जल बालू-मिश्रित मटमैला होता है, किन्तु बाकी समय समुद्र-जल जैसा हरा रहता है। पहाड़ी भागमें कहीं भी इसकी धार सौ गजसे अधिक नहीं है, लेकिन मैदानमें उतरते ही यह दो-तीन सौ गज चौड़ी हो जाती है।

तिस्ता नदीकी तटभूमिका दृश्य अत्यन्त सुन्दर है। यह पहाड़ोंके भीतर अपना संकीर्ण खड्ड बनाती टेढ़ी-मेढ़ी चालसे मैदानकी ओर अग्रसर

होती है। इसके किनारेकी पहाड़ियां बहुधा सीधी खड़ी तथा घने जंगलों-से ढकी हैं। वैसे यहां हरियाली सदा बनी रहती है, किंतु वर्षाकालमें तो वह और निखर जाती है। रोङ्पूसे ऊपर दि-क्छू (२१५० फुट) चुङ्थाङ्- (५३५० फुट), होते लाछेन (८८०० फुट) तक तिस्ता-उपत्यकाकी वनस्पति-श्री बदलते हुये भी बराबर मोहक बनी रहती है।

(२) **महा-रंगित नदी**—यह तिस्ताकी बड़ी महत्त्वपूर्ण शाखा है। सिक्किमसे दोर्जेलिङमें घुसते ही बायेंसे रम्मम् नदी आकर इसमें मिलती है। फिर कुछ पूर्वकी ओर बहनेपर दोर्जेलिङकी ओरसे लघु-रंगित और रङन् नदियां आ मिलती हैं। रम्मम् नदी फलूत पहाड़से, लघु-रंगित तङलूसे और रङन् नदी सिंचेलसे आती हैं। तिस्तासे महा-रंगितका संगम बड़े ही अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्यके बीच होता है। संगमका जल वर्षामें कुछ-कुछ त्रिवेणी (प्रयाग) का स्मरण दिलाता है। जहां तिस्ताकी धारा मटमैली और सफेद होती है, वहां रंगितका जल निर्मल और हरित। तापमानमें भी तिस्ताका जल अधिक ठंडा और रंगितका अधिक गरम होता है। कारण, तिस्तामें अधिक जल हिमानियोंका होता है, जब कि रंगित मुख्यतः सिंचेल और शिङलीला पर्वतोंकी वर्षापर निर्भर करती है।

(७) **जलढका**—तिस्ताकी तरह उससे पूरबकी नदियोंका भी जल ब्रह्मपुत्र-में जाता है, जिनमें जलढकाका पनढर बहुत भारी है और वह जिलेसे अलग-अलग अपना क्षेत्र बनाती ऊपरी सिक्किममें ग्नातोङ (१२००० फुट) तक जाती है। तिब्बतका मार्ग ग्नातोङ होकर ऊपर जाता है। ग्नातोङसे उत्तर जलढकाकी रुपहली धारा सरल रेखामें दक्षिणकी ओर दूरतक जाती दिखाई पड़ती है। इस नदीके तट नीचेके मैदानतक दोनों ओर जंगलोंसे ढंके हैं।

(४) **महानदी**—तिस्तासे पश्चिमकी नदियां महानदी, बालासान और मेची अपना जल गंगामें ले जाती हैं। महानदी खरसानसे पूरब महल्दीरम पर्वतके पाससे निकलती है। यद्यपि इसका पनढर बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन मानसूनकी वृष्टि अधिक होनेसे वर्षामें जल बहुत बढ़

जाता है। पहाड़ छोड़नेके बाद यह दक्षिणमें सिलिगोड़ीके पास पहुंचती है, फिर दक्षिण-पश्चिम घूमकर फांसीदेवातक जलपाईगोड़ी और दोर्जेलिङ-तराईकी सीमा बनती है।

(५) **बालासान नदी**—यह लेप्चा-जगात (घूमसिमाना पर्वत-पार्श्व) के पाससे निकलती है। खरसानसे पश्चिम इसकी उपत्यका महानदीकी अपेक्षा बड़ी है, यद्यपि वहां वर्षा कम होती है। तराईमें उतरनेके बाद इसकी दो शाखाएं हो जाती हैं, जिनमें नयी बालासान सिलिगोड़ीसे नीचे महानदीमें जा मिलती है और पुरानी-बालासान दक्षिण होते पूर्णिया जिलेमें जाकर महानदीमें मिलती है। कहते हैं, सौ बरस पहिले मेचे लोगोंने मछली मारनेके लिये धारको बांध दिया था, जिसके कारण इसकी दो शाखाएं बन गई। पुरानी-बालासानमें पानी अधिक बहता है, और कभी-कभी वह सड़कों और पुलोंको बहुत हानि पहुंचाती है।

(६) **मेची नदी**—यह जिलेकी सबसे पश्चिमी नदी है, और कुछ दूरतक नेपाल और दोर्जेलिङ जिलेकी सीमाका काम देती है। इसमें नेपालसे आकर कई और छोटी-छोटी नदियां मिल जाती हैं। मेची जहां पर्वतसे नीचे उतरती है, वहां बहाकर लाये पत्थरों और चट्टानोंका ढेर लगा रहता है, जिनसे जंगलों और पासके खेतोंको बहुत क्षति होती है।

७—भूतत्त्व

दोर्जेलिङ और सिक्किमका भूतत्त्व कई युगोंकी चट्टानोंसे मिलकर बना है। कहीं-कहीं अधिक पुरातन चट्टानें ऊपर दिखाई पड़ती हैं। यहांकी उच्च पर्वत-श्रेणी तृतीय युगमें एक ऐसे पुराने समुद्रकी पेंदीसे ऊपर उठी, जिसमें भिन्न-भिन्न भूतत्त्वीय युगोंके अवशेष एकत्रित थे। यहां कितनी ही जगहोंमें [illegible] ऊपर निकल आया है। [illegible] भारतकी पहाड़ियोंका कुछ भाग उत्तरकी ओर [illegible]-तक पहुंचा हुआ था, इसीलिये प्राकृतिक उभाड़में [illegible] कितनेही स्तर जहां-तहां मिलते हैं। बाह्य-हिमालयकी सारी लम्बाईमें इस

प्रकारकी नयी चट्टानोंके ऊपर पुरानी चट्टानोंका उभाड़ देखा जाता है। हिमालयके वर्तमान उच्च शिखर तथा गहरी उपत्यका आंधी, जल और हिमके घर्षणका परिणाम है। तराई और निचले मैदानका, जो हिमालयकी चरणमें आज भी मौजूद है, वर्तमान आकार पर्वत-श्रेणियोंके अंतिम उद्गार-का परिणाम है। वहां नीचे प्रस्तरखंड, फिर रोड़े, फिर नरम मिट्टी और ऊपर बालूके स्तर मिलते हैं। तराईसे उत्तर सानु-पर्वत-श्रेणी भी बहुत कुछ इसी तरह बनी है, लेकिन इसके निर्मापक तत्त्व एक दूसरेके साथ अधिक गठित हैं। इसके प्रस्तर उसी तृतीयकालके हैं जोकि बाह्य हिमालयकी सिवालिक श्रेणी नाहनके।

सिवालिककी अंगनाईके ऊपर एक और अधिक पुरानी चट्टानोंका समूह पड़ा हुआ है, यह सबसे कठिन पाषाण हैं, जिनमें स्लेट, शेल और चूर्णित कोयलेके स्तर भी मिलते हैं। अंगनाईमें कहीं-कहीं आधारभूत आग्नेय चट्टानें भी बिछाई मिलती है। शेलोंमें वनस्पति-फोसील उसी तरह प्राप्त होते हैं, जैसे कि निम्न गोंडवाना श्रेणीके कोयले वाली दमुदा-अवस्थामें। गोंडवानाके इन अवशेषोंके उत्तरमें पर्वत श्रेणियों-की तलछट क्वार्टजाइट, स्लेट, फिलाइट और सिलवटी चट्टान (जिनमें ग्रफाइट, क्लोराइट ओर सेरीकाइट जैसे चैलीवाले खनिज) की हैं। वहां कहीं-कहीं ऊपर-नीचे हो गये आधारिक आग्नेय चट्टानोंके भी छोटे-छोटे बंध मिलते हैं। गोंडवानाकी चट्टानोंके ऊपर दालिङ-श्रेणीके समुदाय है। पश्चिमी दुवार (द्वार) में दूसरे गठकोंके अतिरिक्त डोलोमाइट चट्टानें भी मिलती हैं, जिन्हें बक्सा-श्रेणी कहते हैं। दालिङ और बक्सा पाषाण-श्रेणियां गोंडवाना चट्टानोंसे भी पुरानी हैं और यह पूर्वी हिमालय-में बहुत व्यापक रूपमें देखी जाती हैं। दालिङ-श्रेणी कई प्रकारके पत्रदार और बंधदार चट्टानोंके ऊपर आधारित है। इन चट्टानोंमें कुछ स्थिर और कुछ आग्नेय (दोर्जेलिङ आग्नेय) हैं। पत्तरदार चट्टानें साधारण तौरसे अबरखके ढोकोंकी होती हैं, जिनमें मुख्य खनिज अबरख हैं। इन ढोकोंके अबरखके स्तर और कुछ दूसरे खनिज अच्छी तरह बंधी पुस्तकके पन्नों

जैसे है। दोर्जेलिङकी निथरे प्रकारकी चट्टानोंमें गारनेट, सिलिम्नाइटक्या-नाइट और स्टोरोलाइट जैसे खनिज मिलते हैं, जिससे मालूम होता है कि इन चट्टानोंको दालिङ चट्टानोंकी अपेक्षा अधिक तापमान और दबावसे गुजरना पड़ा। तृतीयकालकी चट्टानें दक्खिनकी अधिक पुरानी चट्टानोंके निकट-से मेची नदीके नजदीक होते पूरबकी ओर जलढका नदीतक चली जाती है। गोंडवानाकी पतली पट्टी पंखाबारीसे जलढकातक दालिङ और तृतीयकालकी चट्टानोंसे मिलती हैं। सभी बक्सा-चट्टानें जिलेके अंतिम पूर्वी छोरमें ही गोंडवाना चट्टानोंके ऊपर पाई जाती है। दालिङ चट्टानें जिलेकी सारी लम्बाईमें छाई हुई हैं और वह अधिक तरुण चट्टानोंकी भांति ही लगती हैं। दोर्जेलिङ आग्नेय-चट्टानें जिलेके अधिक भागोंमें पाई जाती हैं। मैदानसे दोर्जेलिङकी ओर चलते वक्त तृतीयकालकी आधार-भूत चट्टानें सुकना तथा चुनभट्टीके बीच उभड़ी हुई हैं कोयला-वाली गोंडवाना-चट्टानें तिनधरियाके नीचे मिलती है। तिनधरिया और पैयाबारीके बीचमें दालिङ चट्टानें और अवशिष्ट भागमें दोर्जेलिङ आग्नेय चट्टानें प्राप्त होती हैं। कालीझोरा और रोङपूके बीचमें तथा सिक्किमके भीतरतक तिस्ता-उपत्यका दालिङ पाषाण-श्रेणियोंकी है। ये पाषाण दोर्जेलिङ के नीचे रंगित उपत्यका तथा तिस्ता-उपत्यकामें दोर्जे-लिङ आग्नेयके नीचे मिलते हैं।

(१) **खनिज**—दोर्जेलिङ जिलेमें पत्थर, कोयला, ग्रेफाइट, लोहे और तांबेके, भून (धातु-पाषाण और) मिलते हैं। लेकिन अभीतक उनमें विशेष काम नहीं किया गया है। गोंडवाना आधारमें कोयला मिलता है, किन्तु उसमें भस्मकी मात्रा अधिक है। कोयला बुरी तरहसे दबकर चूर्ण-विचूर्ण हो गया है, और वह कोक या ईंटके रूपमें परिणत करके ही उपयोग-में लाया जा सकता है। पिछली शताब्दीके अंतमें कलिम्पोङ सब-डिवीजन (उप-विभाग) में नम्बुङके नीचे दालिङ कोयला-क्षेत्रमें एक कम्पनीने हाथ लगाया था, लेकिन यातायात तथा खननकी कठिनाइयोंके कारण काम छोड़ देना पड़ा। द्वितीय विश्व-युद्धके समयसे कोयला-खानोंमें

फिर काम होने लगा है। रनती नदीमें निम्न श्रेणीका ग्रफाइट मिलता है।

(क) लौह धून—जिलेके दक्षिण-पश्चिम पङ्खाबारीके नीचे लोहाड़-गढ़ स्थानमें लोहा पाया जाता है। पुराने समयमें इसमें कभी काम होता था। सिकबारसे पूर्व दक्षिण-पूर्व एक मीलपर तिस्ताके पूर्व अवस्थित समलबोङमें २० फुट मोटा लोह-बंध मिलता है। यह उच्च श्रेणीका मग्नेटाइट और हेमेटाइट लोहा-धून है, जिसमें गंधक और फास्फोरसका लेश नहीं है। पुराने समयमें उच्च कोटिका लोहा इससे बनाया जाता था।

(ख) ताम्र-धून—महानदीके पश्चिम भागमें बकूपानीके संगमके पास रानीहाटके समीप दालिङ चट्टानोंमें मुख्यतः चाकोपाइराइट मिलता है। साथही पेशक, कालिम्पोङसे दो मील उत्तर-पूर्वके एक स्थान मङपूसे पूर्व तिस्ताके बायें तटपर, ममथरके पास एक खड्ड तथा नेल नदी के पास-पड़ोसमें भी तांबेका धून मिलता है। तांबा निकालनेका कभी-कभी प्रयत्न किया गया, किन्तु सफलता नहीं मिली। पुराने समयमें कुछ तांबेकी खानोंमें काम हुआ था, इसका पता वहांके अवशेषों से लगता है।

(ग) अन्य खनिज—चूनेका पत्थर जिलेके बक्सा-पाषाण-श्रेणियों तथा तृतीयकालिक चट्टानों और कितनेही स्थानोंके झरनोंके पास विशेषकर उन जगहोंमें जहां गोंडवाना और तृतीयकालिक पाषाण—मिलता है, श्रेणियां मिलती हैं। झरनोंके पासकी गुफाओंमें ९० प्रतिशतसे ऊपर कार्बोनेट चूना है।

मकान बनानेके अच्छे पत्थर यहां नहीं मिलते, लेकिन साधारण मकानों-की दीवारोंके कामके पत्थर बहुत मिलते हैं। सड़कोंके कामके लिये बहुतसी पत्थरकी खानें हैं, जहांसे क्वार्टजाइट और आग्नेय पत्थर सड़क बनानेके लिये निकाले जाते हैं।

(२) भूकम्प—हालके समयतक बहुत बड़ा भूकम्प इस देशमें नहीं

आया, लेकिन १८८२ के बादसे भूकम्पके कई नरम या कुछ कड़े धक्कोंका पता लगा है। २७ फरवरी सन् १८४९ में एक तेज धक्का लगा था, जिसके कारण कितने ही मजबूत मकानोंकी दीवारोंमें दरारें पड़ गईं। सन् १८६३ ई० की मार्च और अक्टूबरके बीचमें कितनेही भूकम्पके धक्के लगे थे। १० जनवरी सन् १८६९ ई० को कछार-भूकम्पका भी काफी धक्का दार्जिलिङ, खरसान, पंखाबारी और सिलिगोड़ीमें लगा था। उसी साल मार्च और अगस्तके बीचमें भी दार्जिलिङमें कुछ धक्के मालूम हुए। ३० जुलाई सन् १९३० ई० के धुबरी-भूकम्पके समय दार्जिलिङ और कलिम्पोङके कितनेही मकानोंमें दरारें पड़ गई थीं। १२ जून सन् १८९७ के आसाम-भूकम्प तथा १५ जनवरी सन् १९३४ ई०के बिहार-नेपाल भूकम्पके समय यह जिला भी उनके प्रभाव-क्षेत्रके अन्तर्गत था—विशेषकर दार्जिलिङ नगर, उसके आस-पासके पर्वत-पार्श्व और तिनधरिया रेल-स्टेशन इन दोनों भूकम्पोंके समय अधिक झकझोरे गये थे। दार्जिलिङके बहुतसे कमजोर मकान तो बिल्कुल गिर गये, कितनेही मकानोंमें दरारें पड़ गयीं या दीवारें गिर गयीं, कितनेही बंगलोंकी ईंटकी चिमनियोंने गिरकर छतोंको चूर्ण कर दिया। दार्जिलिङकी भूमि स्वभावसेही ढीली-ढाली है, जिसके कारण यहां भूकम्पोंका ध्वंसात्मक परिणाम अधिक दिखाई पड़ता है। सन् १९३४ ई० के भूकम्पमें लोहे-सीमेंटके ढांचेवाले मकान अछूतेसे रह गये। इसी समय दार्जिलिङके पर्वत-पार्श्वके माथोंपर, विशेषकर नगरकी पश्चिम ओरके भागोंमें दरारें-फूट निकली थीं, जिससे मकानोंको बहुत नुकसान पहुंचा। सन् १८९७ और १९३४ ई० दोनोंके भूकम्पोंमें तिनधरिया स्टेशनके मकानोंको क्षति हुई। सन् १८९७ ई० के भूकम्पके तुरन्तही बाद तिनधरिया स्टेशनके पास भू-पात हुआ और सन् १९३४ ई० में स्टेशनके हालेके नीचे ६०० हाथ लम्बी दरार प्रगट हुई। सन् १९३४ ई० के भूकम्प में खरसान और कलिम्पोङके मकानोंको बहुत कम क्षति हुई, लेकिन कलिम्पोङके नीचे तिस्ता-उपत्यकामें कई जगह भू-पात हुए। सन् १८९७ ई० और सन् १९३४ ई० के भूकम्पोंसे सिलिगोड़ीके मकानोंको बहुत

क्षति नहीं हुई, लेकिन ऊपर पहाड़-नलीमें गुफनाके नजदीक तथा आगेके कई स्थानों पर दरारें प्रगट हुईं।

(३) भू-पात और भूक्षय-जिलेमें भू-पातका डर विशेषकर वर्षाके समय या तुरंत बाद अधिक बना रहता है। ऐसे भूपातोंके चिह्न जिलेके हरएक भाग-में पाये जाते हैं, जिसका कारण सीधी उतराई, भार तथा नीचेकी चट्टानों-की अस्थिर स्वभावता है। भू-पात कई रूपोंमें होता है, जिसमें सबसे साधारण है शिलापात—छोटी-बड़ी चट्टानोंका सीधी उतराईमें गिरने लगना। पर्वत-पार्श्वकी चट्टानें अधिकतर बेजड़की होती हैं और उनके नीचे तथा पीछे युगोंकी सड़ी-गली वस्तुएं पड़ी रहती हैं। ऐसी चट्टानोंके पतनके कारण दार्जिलिङकी गाड़ी-सड़क वर्षामें कई बार बंद हो जाती है। दूसरे प्रकारका भू-पात तिस्ता-उपत्यकाके बीच सिवोक और कालीझोराके बीच अक्सर वर्षाकालमें देखनेमें आता है। यह पहाड़ बलुआ पत्थरों और बीच-बीचमें शेलोंका बना है, जिनका झुकाव पहाड़की उतराईकी ओर है। वर्षाके पानीसे नीचेका नरम शेल घुल जाता है, जिससे ऊपरी बलुआ पत्थर नीचेको सरकने लगता है। तीसरे प्रकारका भू-पात है पर्वतके बाहरी भागमें ढीलमढाल पड़े मिट्टीवाले पार्श्वका गिरना। महानदी और रोङलोङके बाद दार्जिलिङकी गाड़ी-सड़कपर ऐसे दृश्य अक्सर दिखाई पड़ते हैं, जहां सड़क कुछ इंचसे कई फुटतक धँस जाती है।

कभी-कभी मृत्तिकापार्श्वका नीचेकी ओर खिसकना एकाएक महा-ध्वंसक भू-पातका रूप ले लेता है। कहीं-कहीं तो यह भूपात ३००० फुट नीचेतक अपनी ध्वंसलीला दिखाते चला जाता है। सितम्बर सन् १८९९ ई०में दार्जिलिङ नगरके पूर्वी भागमें भयंकर भू-पात हुआ, जिसका कारण अत्यधिक वर्षाके कारण पर्वत-पार्श्वकी आग्नेय चट्टानके अस्तरका ढीला पड़ जाना था। यह भू-पात २३ सितम्बरको आरंभ हुआ था। इसमें संपत्तिके अतिरिक्त ७२ आदमियोंके प्राण गये थे।

कालिम्पोङ उप-विभाग (सब-डिवीजन) के रक्षित बनमें भी कभी कभी भू-पात होता है। भू-पातोंको एकदम रोका तो नहीं जा सकता, किंतु

दार्जेलिङ परिचय—
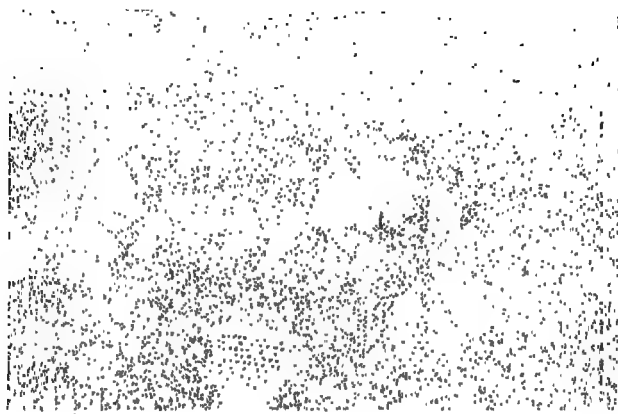
(ऊपर) दार्जेलिङ का चाय-बगान, (नीचे) विक्टोरिया जल-प्रपात दार्जेलिङ

दोर्जेलिङ परिचय–

(ऊपर) दोर्जेलिङ नमङ मन्दिर, (नीचे) दोर्जेलिङ-धीरधाम मन्दिर
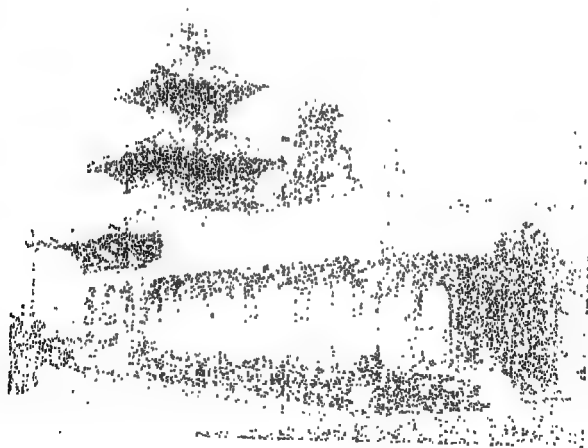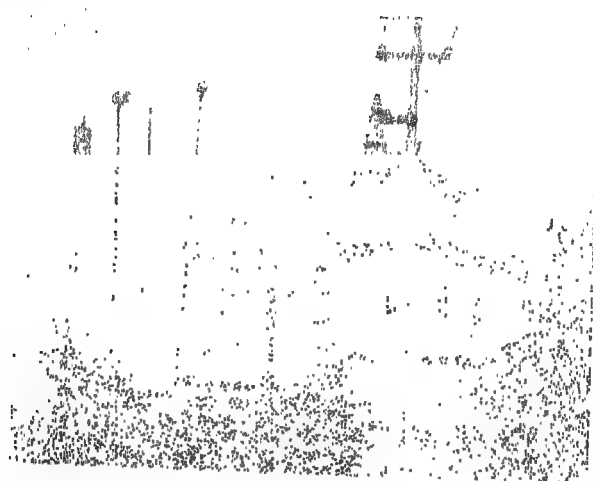
उनकी रोक-थाम जंगलोंके लगाने, पानीके बहावको ठीकसे नियंत्रित करने, खड़ी चढ़ाईको सीढ़ीदार बनाने और दूसरे तरीकोंसे की जा सकती है। वर्षोंके तजरबेमें सड़क और रेलकी देख-भाल करनेवाले लोग भू-पातों-के अभ्यस्त हो गये हैं और प्रायः भू-पातके कुछ घंटे बाद ही सड़कें चालू कर दी जाती है।

भू-क्षय सबसे अधिक पहाड़से आती कुछ नदियोंके कारण होता है। मेची नदी, जो जिलेकी पश्चिमी सीमा है, नेपालके एक बड़े भू-पातसे लाये पाषाण-खंडों और चट्टानोंसे भर गई है, जिसके कारण रक्षित बन तथा दोर्जे-लिङ जिलेके तटवाले खेतोंको बहुत क्षति हुई है। जिलेके पूर्वी भागमें लिश और गेल नदियां भी इस तरहकी ध्वंसलीलाके लिये बदनाम है। बालासान नदी खरसानसे नीचे पहाड़से निकलतेही दो शाखाओंमें विभक्त हो जाती है। यदि इसने अपनी धार बदल दी, तो सड़कों और संपत्तिको भारी क्षति पहुंचेगी। जंगलके अभावसे नदियोंको इस तरह मनमानी करनेका मौका मिलता है। हालमें जंगल लगाकर रक्षा करनेके कुछ प्रयत्न हुए हैं, सन् १९४० ई० में कलिम्पोङके पास दलापचनमें १८८ एकड़ भूमि जंगल-विभाग को दे दी गई, वहां सरकारी सड़कको भू-पातसे बहुत क्षति हो रही थी और मरम्मतमें भारी रकम लगानी पड़ती थी। सन् १९४२ ई० में कलिम्पोङके अधिकांश क्षेत्रोंमें भी इसी तरह १७३ एकड़ भूमि जंगल-विभागके सुपुर्द हुई।

८—वनस्पति

दोर्जेलिङ जिलेमें १६० परिवारों तथा ४००० जातियोंके फूलवाले वनस्पति हैं। ऊंचाईके अनुसार इस जिलेमें पांच कटिबंध हैं—(१) मैदान या तराई, (२) उष्ण-कटिबंध या निचला पार्वत्य-क्षेत्र, (३) उपोष्ण कटिबंध या मध्य पार्वत्य-क्षेत्र, (४) अनुष्ण-कटिबंध या ऊपरी पार्वत्य-क्षेत्र और (५) हिमाल-क्षेत्र। मैदान या तराई समुद्र तलसे ३०० फुटसे कुछ ऊपर है। निम्न पार्वत्य कटिबंध हजार दो हजार फुटकी

ऊंचाईतक है, मध्य पार्वत्य कटिबंध ३ से ५ हजारतक, उन्नत पार्वत्य ६ से ८ हजार फुटतक, हिमाल ९ से ११ हजार फुटतक— सिक्किमका हिमाल १२ से १८ हजार फुटतक है। १८००० फुटसे ऊपर सनातन हिमरेखा है।

तराईमें शाल, तुंग, समर आदिके वृक्ष पाये जाते हैं। निम्न पार्वत्य क्षेत्रमें (मैदानसे ३००० फुटतक) बड़ी तेज चढ़ाई है, जिसमें २००० फुट तककी ऊंचाई घने जंगलोंसे ढकी तथा बड़ी अस्वास्थ्यकर है। यहां बड़े वृक्षोंके अतिरिक्त बांस, बेंत आदि बहुत पाये जाते हैं।

तृतीय क्षेत्र उपोष्ण-कटिबंध (३००० से ६००० फुट) में योरोपके जैसे वनस्पति देखे जाते हैं। ओक, चेरी, मागल आदि वृक्ष यहां बहुत मिलते हैं। चतुर्थ कटिबंधमें हिम पड़नेवाले देशोंके वनस्पति तथा बहुत प्रकारके देवदार प्राप्त होते हैं। यहीं गुरांसके भी दर्शन होते हैं। यहीं ओरचिड जातीय महार्घ पुष्प दूसरे वृक्षोंके ऊपर भोज करते मिलते हैं। यदि इन्हें विमानसे योरोपके देशोंमें भेजा जा सके, तो काफी वैदेशिक विनिमय प्राप्त हो सकता है। इस पांचवें कटिबंधमें सौ परिवार-के पुष्पधारी पौधे पाये जाते हैं—मग्नोलिया वसंतमें अपने बड़े-बड़े फूलों-को प्रफुल्लित कर दिशाओंको सुगंधित करती है। अभी वृक्षोंपर पत्ते आये नहीं होते, कि इसके अति सुन्दर श्वेत-पाण्डु पुष्प खिल उठते हैं। देवदार जातीय वृक्ष ९००० से १२००० फुटतक मिलते हैं, जिनमें हिमालय-का प्रसिद्ध देवदार अपने सरल और विशाल शरीर तथा गगनचुम्बी नोकदार शिखरमें बहुत सुन्दर लगता है। पश्चिमी हिमालयमें अतिसुलभ साइप्रस देवदार इस ओर नहीं पाया जाता। छोटी जातिके बांस ८ से १०००० फुटतक मिलते हैं, जो जंगलोंके जलनेपर अपने क्षेत्रको बढ़ाने-में ज्यादा चुस्त दिखाई पड़ते हैं।

सिक्किमके हिमाल-क्षेत्रमें दो ऋतुएं पायी जाती हैं, और उनके अनुसार यहांके वनस्पति-जगतमें भी भेद है। वहां ४०० जातिके पुष्प-धारी वनस्पति मिलते हैं, किन्तु १२००० फुटसे ऊपर पुष्पधारी वनस्पति

नहीं मिलते। १३००० फुटके आसपासतक भुर्ज वृक्ष जहां-तहां बिखरे मिलते हैं। गुरांसकी झाड़ियां १४००० और १६००० फुटतक मिलती हैं। पद्मकाष्ठ (चुनीकाष्ठ) की दो जातिया और बोनी बोरी १६००० फुटतक मिल जाती है। ३० जाति के वनस्पति १८००० फुट-की ऊंचाईतक बिखरे हुए पाये जाते हैं। फेस्तुका (वनस्पति) सबसे ऊंचे स्थान (१८३०० फुट) तक पाई गई है।

९—प्राणि—जगत्

(१) **पशु**—ऊंचाईके अनुसार ऋतुओं और वनस्पतियोंके परिवर्तन-के कारण उनपर आश्रित प्राणी भी यहां भिन्न-भिन्न प्रकारके पाये जाते हैं। यहां ८० से ९० जातितकके स्तनधारी पशु मिलते हैं। दो प्रकारके वानर होते हैं, जिनमें नेपाली वानर दोर्जेलिङके वर्च-हिल (भुर्जगिरि) पर अक्सर देखे जाते हैं। भारतीय व्याघ्र तराईमें मिलता है, जो कभी-कभी शिकारकी खोजमें १०००० फुटतक पहुंच जाता है। यही बात चीतोंकी है। मार्जार-जातिके कई प्राणी यहां मिलते हैं, जिनमें हिमालयका जंगल-मार्जार आमतौरसे मिलता है। दो जातिके भालू भी पाये जाते हैं, जिनमें हिमालयका काला भालू ७५०० फुटपर आमतौरसे मिलता है, कभी-कभी वह तराईमें भी चला आता है। मकईका यह शत्रु है और जितना खाता नहीं उतना नुकसान करता है। यह कन्दमूल और फल खाता है। कभी-कभी पशुओंको भी मार डालता है। सभी भालू अदूरदृष्टिक होते हैं। पंडा एक विचित्र जंतु है, जो ७००० फुटवाले जंगलोंमें मिलता है। गिलहरियां, जिनमें उड़न्तू गिलहरियां भी हैं, चूहे-चूहियां और चमगादड़ भी पाये जाते हैं। उड़न्तू गिलहरी कभी-कभी दोर्जेलिङके वृक्षोंमें भी एक वृक्षसे दूसरे वृक्षपर उड़ती दिखाई पड़ती हैं। असलमें यह उड़ती नहीं, बल्कि जिस समय ऊंचे वृक्षसे निचले वृक्षपर कूदती हैं, उस वक्त पैरोंको मिलानेवाली झिल्ली फैलकर इसकी मदद करती है। जिलेमें तीन प्रकारकी साही मिलती है। दो प्रकार की

जंगली बकरियां भी मिलती हैं, जिनका वास २००० से ९,००० फुट तक होता है। यहां चार-पांच तरहके मृग पाये जाते हैं, जिनमें कृष्णसार और सांभर भी सम्मिलित हैं। सांभर ३००० फुटतक पाया जाता है। चित्तल सबसे सुंदर मृग है। यह दुर्लभ मृग नदियोंके पासके जंगलोंमें रहता है। इसकी रक्षाके लिये सरकारने विधान बना दिया है। मैदानी बनैला सूअर यहां भी है और कभी-कभी ८००० फुटतक पहुंच जाता है। हाथी अब बहुत कम रह गये हैं। पुराने समयमें कभी-कभी हाथी रिशिला (१०३०० फुट) पर चढ़ते देखा गया था। प्रायः हाथी झुंडोंमें रहते हैं, लेकिन बूढ़ा नर कभी-कभी अलग-अलग रहता भी दिखाई पड़ता है। खेतीमें विशेषकर धानकी खेतीको यह नुकसान पहुंचाता है, किन्तु दूसरावाले धानको नहीं छूता। बहुत वर्ष हुए, जब खेडा किया जाता था। सन् १९१६ ई० में शामको वक्त दार्जिलिङसे रेल सीलीकी ओर जा रही थी, उसी समय दो हथिनियोंके साथ एक दंतेल ट्रेनके सामने आ गया। दंतेलने सीटीकी परवाह नहीं की और ट्रेनपर आक्रमण करना ही चाहता था, कि प्रत्युत्पन्नमति ड्राइवरने इंजनकी नलीका मुंह खोलकर तेजीसे भाप छोड़ दी, जिसकी सनसनाहटको सुनकर हाथी भाग खड़े हुए।

पिछले ३०—३२ सालोंमें प्राणियोंकी संख्या और उनके निवास-स्थान पर जंगलोंके कट जानेके कारण बहुत प्रभाव पड़ा है। ऊपरसे मोटर वाली सड़कोंका विस्तार और बन्दूकोंके अधिक लाइसेन्सोंने भी इनकी संख्या कम करनेमें सहायता की। पहिले तराईके घने जंगलोंसे लेकर तिस्ता, रंगित और बालासान नदियोंकी उपत्यकाओं तथा शिलीगुड़ीसे ऊंचे जंगलोंतकमें हाथी, बाघ, सांभर, मृग और सूअरोंके यूथ एवं चीता, भालू, बोराल आदि बहुतायतसे मिलते थे। अब हाथी शायद ही कभी आ जाते हैं। यही अवस्था बाघोंकी है। हिमालयका काला भालू भी बहुत कम हो गया है। दूसरे जानवरोंको भी कम ही देखा जाता है। हां, मैदानी हरिन अब भी उसी तरह बहुतायतसे मिलते हैं।

हिमालयके अत्यन्त दुर्लभ प्राणियोंमें पंगोलिन भी है, जो ढाई फुटतक लम्बा होता है। इसके शरीरपर कछुएकी हड्डीकी तरह कड़े किन्तु छोटे-छोटे चकत्तोंका कवच होता है। डर होनेपर यह गोल-मटोल बन जाता है और शत्रु जानवर इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह निशाचारी जन्तु है और दिनमें अपनी गुप्त मांदोमें छिपा रहता है। यह पहाड़ और तराई दोनोंमें मिलता है।

(२) **पक्षी**—चिड़ियोंकी संख्या इन पहाड़ोंमें बहुत है। प्रायः ५५० जातियोंकी चिड़ियां मिलती हैं। धनेस कई प्रकारके होते है। १५ प्रकारके उल्लू भी पाये जाते हैं, इनमें सबसे बड़ा गांवकी बिल्लियों-को पकड़ ले जाता है। सबसे छोटी जातिके भी उल्लू (खूसट) मिलते हैं। कबूतरों और पंडुकोंकी भी एक दर्जन जातियां मिलती हैं, जिनमें कुछ अधिक ऊंचे पर्वतोंमें ही रहते हैं। एक बड़े सुन्दर रंगका पंडुक मैदानसे ६००० फुटकी ऊंचाईतक पाया जाता है। पिलक, कई रंगके तोते, टोट, (रामगेगरा), कौड़िल्ला, कीवी, कठफोर, गिद्ध, जंगली मुर्गी आदि बहुत तरहके पक्षी इन पहाड़ोंमें पाये जाते हैं। दोर्जेलिङ जिलेमें भारत, लंका और बर्मामें पायी जानेवाली पक्षि जातियोंमें से एक चौथाई मिलती हैं, लेकिन दोर्जेलिङ नगर ऐसे स्थानोंमें बसा है, जहां कुहरा और धुन्ध अक्सर बनी रहती है, इसलिये वे बहुतायतसे दिखाई नहीं पड़ते—आदमियोंकी भांति पक्षी भी सूर्य सेवी हैं।

(३) **सर्प**—इस जिलेमें ५१ जातिके सांप मिलते हैं, जिनमें ११ कम या अधिक विषधर हैं। करैत (४) गोहुअन (२) आदि विषधर सर्प हैं। राजगोहुअन (नैयाहन्ना) सबसे बड़ा सांप है, जो कभी-कभी १५ फुट ५ इंचका पाया गया है, आमतौरसे १० फुटसे अधिक लम्बे बहुत कम मिलते हैं। यह बहुत भयंकर सर्प है। इसका विष अत्यन्त घातक है। गोहुअन ६ फुट ७ इंच तकका मिला है। इसका भी विष प्राणघातक है।

(४) **मछली**—जिलेकी नदियों और जलाशयोंमें १२५ प्रकारकी

मछलियां मिलती हैं। माशीर, कतला, रोहू आदि सुखाद्य मछलियां यहां मिलती हैं।

अस्थिहीन प्राणियोंमें जोंक इस जिलेमें ६ प्रकारकी ५००० से ९,००० फुटतक मिलती है। कीटों और कृमियोंकी संख्या और भी अधिक है।

२

इतिहास

१—कम्पनीके हाथमें

कलिम्पोङ तथा तराईके कुछ भागको लिये दोर्जेलिङ पहले सिक्किम राजाके हाथमें था। सन् १७०६ ई० में भूटानियोंने आजकलके कलिम्पोङ उप-विभागको सिक्किमके हाथसे छीन लिया। गोरखोंने १८ वीं सदीके मध्यमें अपने प्रभुत्वको बढ़ाते नेपालको ले पश्चिममें कांगड़ासे पूर्वमें तिस्ता नदीतक अपने राज्यका विस्तार किया। सिक्किमने सन् १७८०ई० में गोरखोंसे मुकाबिला करना चाहा, लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई और अगले ३० वर्षोंतक सिक्किम और उसकी तराई गोरखोंके हाथमें रही। सन् १८०० ई० में तिस्तासे कांगड़ातकके सारे पहाड़ और तराईके भी बहुतसे भागको लेकर नेपाल एक वर्द्धमान शक्तिशाली राज्य था। उसके दक्खिनमें ईस्ट इंडिया कंपनी अपने अंग्रेजी राज्यको फैला रही थी। सन् १८१४ ई० में दोनों प्रतिद्वंद्वियोंका युद्ध छिड़ गया, जिसका अंत १८१६ की सुगौलीकी संधिके साथ हुआ। नेपालने तराईके और भागोंके साथ सिक्किम राज्यको अंग्रेजोंके हाथमें दे दिया। अंग्रेजोंने १० फरवरी सन् १८१७ ई० की तितलियाकी संधिके अनुसार उसे तराईके साथ सिक्किम राजाको लौटा दिया—तराईमें मेची और तिस्ता नदीके बीचका भाग था। नेपाल और भूटानके बीच सिक्किमको सीमांत-राज्य बनाके उसकी स्वतंत्रताको कायम रखनेका भार अंग्रेजोंने अपने ऊपर ले लिया। कलकत्तामें आक्टर लोनी स्मारक मीनार (१६५ फुट) उसी जेनरल आक्टर लोनीका स्मारक है, जिसने नेपालको हराया। नेपालने पश्चिमी हिमालयको भी अंग्रेजोंके हाथमें छोड़ दिया, जहां अल्मोड़ा

(५५१० फुट), मसूरी (६६७० फुट) नैनीताल (६४०७ फुट) और शिमला (७०७५) के गर्मियोंकी हवा खानेके नगर बनते गये।

उक्त संधिके अनुसार सिक्किम राजाने स्वीकार किया था, कि पड़ोसी राज्योंकी तथा अपनी प्रजाके भीतर झगड़ा खड़ा होनेपर उसका फैसला करनेके लिये बृटिश सरकारको पंच माना जायेगा। सन् १८२७ ई०में (संधि के १० साल बाद) नेपाल और सिक्किममें सीमाका झगड़ा उठा, जिसके निपटारेके लिये गवर्नर जेनरलको लिखा गया और उसने कप्तान लायड और मिस्टर ग्रान्टको झगड़ा निपटानेके लिये भेजा। वे दोनों रिन्छेन्-पोङ (सिक्किम) में कुल्हायट-उपत्यकाके भीतरतक पहुँचे। लायड-ने फरवरी सन् १८२९ में ६ दिन दोर्जेलिङके पुराने गोर्खा-थानामें बिताये। लायडको यह स्थान स्वास्थ्याश्रमके लिये बहुत उपयुक्त जंचा। उस समय दोर्जेलिङ सूना था, यद्यपि उससे पहले वहां एक अच्छा खासा गांव था, जहां सिक्किमके एक मुख्य क-जी (मंत्री) का निवास था। ग्रान्ट-ने इस स्थानके अनेक लाभोंके बारेमें उस समयके गवर्नर जेनरल लार्ड बेन्टिकको बतलाया और यह भी कहा, कि नेपालसे मुकाबिलेके लिये इसे सैनिक अड्डा बनाना अच्छा होगा। गवर्नर जेनरलने ग्रान्टके साथ कप्तान हर्बर्टको स्थानकी जांच-पड़तालके लिये भेजा। कम्पनीके डाइ-रेक्टरोंने भी इस बातको मंजूर किया। जेनरल लायड (पहलेके कप्तान लायड) राजाके साथ इसके बारेमें बात-चीत करनेके लिये भेजे गये और अंतमें १ फरवरी सन् १८३५ ई० को सिक्किम राजाने लायडकी बात मंजूर की। लिखितममें सिक्किम राजाने लिखा था—

"गवर्नर जेनरलने ठंडी आबोहवाके कारण अपनी सरकारके बीमार सेवकोंके लिये उपयोगी समझकर दोर्जेलिङ पर्वतको पानेकी इच्छा प्रकट की। उक्त गवर्नर जेनरलकी मित्रताके खयालसे मैं सिक्किम-गद्दीका राजा इस लिखितम द्वारा ईस्ट इंडिया कम्पनीको दोर्जेलिङ अर्थात् रंगित नदीसे दक्षिण, बालासान, महानदी और लघुरंगित नदियोंसे पूरब तथा झ्ळनी, महानदी नदियोंसे पश्चिमकी सारी भूमिको भेंट करता हूँ।"

राजाने इस भूमिको, जो कि उस समय निर्जन पर्वत मात्र थी, बिना किसी शर्तके कम्पनीको दे दिया। पीछे सन् १८४१ में कम्पनीने ३००० रु० वार्षिक देना स्वीकार किया, जिसे सन् १८४६ में ६००० रु० वार्षिक कर दिया गया।

२—सेनिटोरियम नगरी आरम्भ

सन् १८३६ में जेनरल लायड और डाक्टर चैपमैन दोर्जेलिङके जलवायु और स्थानकी जांच-पड़तालके लिये भेजे गये। उस सालके जाड़ों और सन् १८३७ के भी कुछ भागको भी बिताकर उन्होंने इस स्थानको सेनिटोरियम-के लिये उपयुक्त समझा। लायडको स्थानीय एजेंट बना दिया गया। कलकत्ताके लोगोंने भी वहां जमीन लेनेकी इच्छा प्रगट की, इस-लिये दोर्जेलिङकी प्रगति बड़ी तेजीसे होने लगी। सन् १८३६ में वहां सिक्किम राजाके बनवाये थोड़ेसे गुनरी (चटाई) के झोपड़े मात्र खड़े थे, जिनके कारण आज भी कितने ही पुराने लोगोंको दोर्जेलिङका गुनरीबाजार नाम याद है। सन् १८४० में पंखाबारीसे एक सड़क बनायी गयी, जिसपर पंखाबारी और महलदीरगामें पड़ावके बंगले खड़े कर दिये गये। खरसान और दोर्जेलिङमें एक-एक होटल भी जारी हो गये। दोर्जेलिङमें ३० निजी घर भी बन गये और करीब-करीब उतने ही घरोंके लिये स्थान लेबोङमें भी ले लिया गया।

सिक्किमसे प्राप्त बाकी भूमि निर्जनसी पड़ी थी। उसमें जहां-तहां जंगलोंमें दो हजार आदमियोंकी बस्ती थी। राजाके अत्याचारके कारण १२०० रोङ (लेप्चा) दोर्जेलिङ और उसके पास-पड़ोसके स्थानों-को छोड़कर नेपाल भाग गये थे। जब अंग्रेज नयी बस्ती बसाने लगे, तो राजाने अपने आदमियोंको वहां जानेसे मना कर दिया।

सन् १८३९ ई० में डाक्टर कैम्पबेल (आई० एम० एस०), जो कि नेपालमें अंग्रेजी रेजिडेन्ट थे, दोर्जेलिङके सुपरिण्टेण्डेण्ट बनाकर भेजे गये। उनके जिम्मे दीवानी-फौजदारी-अदालत और कर-संग्रहके साथ सिक्किमके

राजनीतिक अफसरका भी काम था। डाक्टर कैम्पबेलके सुप्रबन्ध और प्रोत्साहनसे बाहरसे लोग आने लगे और सन् १८३९ ई० में जनसंख्या एक हजार और दस साल बाद दस हजार हो गयी। इस वृद्धिके बारेमें मि० डब्ल्यू० पी० जेक्सनने सन् १८५२ ई० में लिखा था—"यहां जो कुछ हुआ है वह केवल डाक्टर कैम्पबेलने ही किया। उनके आनेके समय दोर्जेलिङ एक दुर्गम वनभूमि थी, जहां बहुत ही कम आदमी रहते थे। उनके प्रयत्नसे यहां सैनिक और दूसरे लोगोंके लिये एक सुन्दर सेनिटोरियम स्थापित हो गया, व्यवस्था-स्थापन और यातायात सुधारके लिये एक पर्वतीय सेना बना दी गयी, ७० से अधिक योरोपियन घर बन गये, एक बाजार, एक जेल तथा बीमारोंके लिये निवास तैयार हो गये। मालगुजारी बढ़कर ५०००० हो गयी और अब वह नियमपूर्वक जमा की जाती है। पहाड़ी जन-जातियोंके स्वभावके अनुकूल सीधी-सादी न्याय-व्यवस्था जारी कर दी गयी। बेगारकी प्रचलित प्रथाको बंद कर दिया गया। सड़कें बनायी गयीं। चाय, काफी, बहुत तरहके योरोपियन फल और अंगूरके बाग-बगीचे परीक्षार्थ लगाये गये।"

३—सिक्किमसे संघर्ष

इस बीच सिक्किमके साथ कम्पनीका सम्बन्ध खराब होता गया। चतुर देश-प्रेमी दीवान नम्गे दोर्जेलिङमें अंग्रेजोंके अड्डा जमानेको संदेहकी दृष्टिसे देखता था। अंग्रेज राजनीतिक प्रभुत्व ही नहीं व्यापारी इजारादारी भी कायम करना चाहते थे। सिक्किमसे कितने ही दास भागकर दोर्जेलिङकी भूमिमें पहुंच गये। दीवान अपने भूतपूर्व दासोंको जबर्दस्ती पकड़ मंगवानेकी कोशिश करता था, और अंग्रेजोंसे भी लौटा देने की मांग कर रहा था। बिगाड़ अपनी चरम-सीमापर पहुंच गया, जब कि राजाकी आज्ञासे सिक्किमकी यात्रा करते समय नवम्बर सन् १८४९ ई० में कम्पनीके दो अफसर सर जोजफ हूकर और डाक्टर कैम्पबेल बन्दी बना लिये गये। दीवानने बहुत तरहकी मांग और शर्तें रखीं, किन्तु अंतमें २४ दिसम्बर

को बिना शर्तके उन्हें छोड़ दिया। कम्पनीने फरवरी सन् १८५०ई० में दण्ड देनेके लिये एक छोटी-सी सैनिक टुकड़ी भेजी, जो सिक्किमके भीतर दाखिल होकर महा-रंगित नदीके उत्तरी तटपर कुछ सप्ताह रही। राजा को सबसे बड़ा दंड यह मिला, कि कम्पनीने ६००० वार्षिक देना बंद कर दिया और तराईको लिये उत्तरमें रम्मम् और महा-रंगित नदियोंसे, पूरब-में तिस्ता नदी और पश्चिममें नेपाल सीमातक की ६४० वर्गमील भूमिको सिक्किमसे निकालकर अपने राज्यमें मिला लिया। तराईके दक्षिणी भाग-को कुछ समय बाद (सन् १८५०) पूर्णिया जिलेमें मिलाया गया, लेकिन निवासियोंको यह पसंद नहीं आया, इसलिये फिर उसे दार्जेलिङमें सम्मिलित कर दिया गया। तराईको जिस वक्त लिया गया, उस वक्त वहांपर फौजदारी और दीवानीके अधिकार रखनेवाले बंगाली अफसर रखे गये थे, जिन्हें चौधुरी कहा जाता था। तराई और सिक्किमसे मिले भू-भागका प्रबन्ध पहिले सुपरिण्टेण्डेण्टके हाथमें था, जिसे ८ मई सन १८५० ई० से डिप्टी-कमिश्नर कहा जाने लगा। देहरादूनके जिला अफसरको तो अभी हालतक सुपरिण्टेण्डेण्ट कहा जाता रहा है।

४—अन्तिम संघर्ष

इस घटनाके कुछ सालों बादतक सिक्किमके साथ अंग्रेजोंका सम्बन्ध अच्छा रहा, लेकिन फिर ब्रिटिश प्रदेशपर लूट-पाट होने लगी। अंग्रेजी प्रजाजनों को पकड़ कर सिक्किममें ले जाके दासके तौरपर बेचा या बंद रखा जाने लगा। राजा ८० वर्षका बूढ़ा था। वह तिब्बतमें चौम्बी (चुचम्बी) में एकान्त जीवन बिताता था और शासनका काम उसी दीवान नम्गे (नम्‌ग्यल-विजय) के हाथमें था, जिसने कैम्पबेल और हूकरको बंदी बनाया था। ६ महीनेकी बात-चीतका कोई फल न देख अंग्रेजों ने निश्चय किया, कि यदि गिरफ्तार अंग्रेजी प्रजाको छुड़ा नहीं लिया गया, अपराधियोंको सुपुर्द नहीं किया गया और फिर ऐसा न करने की जिम्मेदारी नहीं ली गई, तो रम्ममसे उत्तर एवं महा-रंगिनसे पश्चिमके इलाकेको दखल

कर लिया जायेगा । १६० आदमियोंकी छोटी-सी टुकड़ीके साथ डाक्टर कैम्पबेल रम्मम् नदी पार हो रिन्छेन्पोङतक गये । मुकाबला ऐसा सख्त हुआ, कि उन्हें दोर्जेलिङ भाग आना पड़ा । पीछे विशेष कमिश्नर तथा दूत बनाकर भेजे गये सर एश्ली एडेनके साथ कर्नल गालर तोपखाना और २६०० आदमियोंकी सेना लेकर सिक्किमकी तत्कालीन राजधानी तमलोङमें मार्च सन् १८६१ ई० में दाखिल हुआ । दीवान नम्से भाग गया । बूढ़े राजाने अपने लड़केके लिये गद्दी छोड़ दी । नये राजाके साथ २८ मार्चको एक संधि हुई, जिससे दोर्जेलिङ और सिक्किमकी अंतिम सीमा निश्चित हो गयी और साथ ही अंग्रेजोंको सिक्किमकी सीमाके भीतर व्यापार करनेकी पूरी स्वतंत्रताका अधिकार मिल गया ।

५—कलिम्पोङपर अधिकार

तिस्तासे पूरबके भाग—आधुनिक कलिम्पोङ सब-डिवीजन (उप-विभाग)—को सिक्किमसे भूटानियों (डुक्पों) ने छीन लिया था, यह हम कह आये हैं । डुक्पा (भूटानी) लोग अंग्रेजी इलाकों में लूट-पाट करने लगे । वे लोगोंको यहांसे पकड़ कर ले जाते थे । सन् १८६२ ई० में खबर मिली, कि डुक्पा दोर्जेलिङपर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं । प्रतिरक्षाके लिये तुरंत दानापुरसे सेना भेजी गयी । इसके बाद सन् १८६३ ई० में सर एश्ली एडेनके अधीन एक विशेष मिशन भूटान भेजा गया, कि मतभेदोंको दूर किया जाय और लूटकी संपत्तिको लौटा दिया जाय । मिशन अपने उद्देश्यमें असफल रहा और ब्रिटिश दूतको एक ऐसे लिखतपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर किया गया, जिसके द्वारा आसाम सीमान्तपरके भूटान-दुवारपर भूटानका अधिकार मान लिया गया । बड़ी मुश्किलसे अप्रैल सन् १८६४ ई० में एडेन राजधानी पुनाखासे भागकर दोर्जेलिङ पहुंचनेमें सफल हुआ ।

कुछ समयतक बात-चीत होती रही, किन्तु कोई फल नहीं निकला, अन्त में अंग्रेजोंने बंगाल द्वार तथा और भी ऐसी-पार्वत्य भूमिको अपने राज्यमें

मिलानेका निश्चय किया, जिसमें कि भूटानी लोगोंकी दोर्जेलिङ जिले या मैदानमें लूट-पाट बन्द हो। सन् १८६४ ई०के जाड़ेमें एक छोटा-सा अभियान भूटानके विरुद्ध भेजा गया, जो बिना अधिक कठिनाईके अपने काममें सफल रहा। अन्तमें नवम्बर सन् १८६५ ई० में एडेनसे जबर्दस्ती लिखाई सन्धिको रद्द करके कुछ वार्षिक अनुदानके बदलेमें आज-कलके कलिम्पोङ सब-डिवीजन (दार्लङ पर्वत-जिला), भूटान-दुवार तथा भूटानी पर्वतोंके घाट अंग्रेजोंके हाथ आये। पहिले कलिम्पोङ इलाकेको एक सब-डिवीजन बनाकर पश्चिमी द्वार जिलेके अधीन रखा गया। दालिङ में उस समय एक भूटानी किला था। दुवार वस्तुतः द्वारका अपभ्रंश तथा घाटेका पर्याय है। दक्षिणसे भूटानके भीतर जानेके जितने रास्ते हैं, उनके मुंहको द्वार कहा जाता है। ऐसे कुल १८ द्वार हैं। मैनागढ़ी, दालिंग कोट, चमरचीके आदि बंगाल-द्वारोंमें सम्मिलित हैं। सन् १८६६ ई०में कलिम्पोङ सब-डिवीजनको दोर्जेलिङ जिलेमें मिला दिया गया। तबसे दोर्जेलिङ जिला आज-सा ही चला आ रहा है।

६—प्रदेश—विभाग

आगे जिलेका विकास बड़ी तेजीसे हुआ, अंग्रेजोंके हाथमें आनेसे पहिले सारा दोर्जेलिङ जिला जंगलसे आच्छादित था। कहीं-कहीं यहांके पुराने निवासी रोङ (लेप्चा) लोगोंकी झोपड़ियां थीं, जिनका गुजारा अधिकतर फल, मूल और शिकारसे होता था। खेती उनकी झूम-प्रणाली की थी—जिसमें जंगलको आग लगाके जला दिया जाता, फिर वहां पतले मुंहकी कुदालसे बीज बोकर एक दो साल फसल पैदा की जाती और फिर स्थानको छोड़ उसी तरह दूसरी जगह खेती शुरू की जाती। अब झूमकी जगह नवागत नेपालियोंने बाकायदा जंगल साफ करके खेत तैयार किये और हल द्वारा जुताई-बुवाई आरंभ की। जहां अंग्रेजोंके आनेके समय आजके सारे दोर्जेलिङ जिलेमें चार-पांच हजार आदमियोंकी ही बस्ती रही, वहां सन् १९४१ ई० में वह ३,७६, ३६९ भी हो गयी। आदमियोंके हाथ

ही तो जंगलोंमें मंगल करते हैं। दोर्जेलिङकी समृद्धिमें चाय, सिनकोना, आलू, इलायची और नारंगीकी खेती और बगानोंने बहुत काम किया।

आरंभसे ही दोर्जेलिङ अंग्रेजोंका गर्मियोंका आवास बन गया। अपने लड़के-लड़कियोंकी शिक्षाके लिये उन्होंने दोर्जेलिङ, खरसान और कलिम्पोङमें कई स्कूल खोले, जिनमें छात्र-छात्राओंके रहनेका भी प्रबंध था। उस समय बच्चोंको यूरोप भेजना कठिन और अधिक व्ययसाध्य था, इसलिये अधिकांश अंग्रेजोंके बच्चे यहां ही पढ़ने आते थे। जैसे-जैसे दोर्जेलिङके यातायातका सुभीता बढ़ता गया, वैसे ही वैसे इन योरोपीय शिक्षण संस्थाओंमें भी अधिक तरक्की हुई और वह समृद्धि तबतक अक्षुण्ण बनी रही, जबतक कि भारतसे अंग्रेजी शासन उठ नहीं गया। यद्यपि अभी (सन् १९४९) में भी कितने ही योरोपीय स्कूल यहां चल रहे हैं, लेकिन अब भारतीय बच्चोंको उनमें अधिक आकृष्ट करनेकी कोशिश की जाती है। इसपर भी यह कहना कठिन है कि वह अपने अस्तित्वको बनाये रख सकेंगे।

७—शासन—प्रबन्ध

कलिम्पोङ सन् १८६५ में भूटानसे लिया गया। इसी समय दोर्जेलिङ जिलेको दो उप-विभागों (सब-डिवीजनों) में बांट दिया गया। सदर सब-डिवीजन ९६० वर्गमीलका था, जिसमें तिस्ताके दोनों तटपर अवस्थित जिलेका सारा पहाड़ी भाग था, और पहाड़के नीचेकी २७४ वर्गमील भूमि तराई उप-विभाग कही जाती थी। तराई उप-विभागका मुख्य-स्थान सन् १८६४ से १८८० तक फांसीदेवाके पास हंस-खावामें था, किन्तु सन् १८८० में उसे सिलिगोड़ीमें बदल दिया गया। इससे पहिले सिलिगोड़ी जलपाईगोड़ी जिलेमें था, किन्तु जब छोटी लाइन (उत्तर बंगाल राज्य रेलवे) यहां लायी गयी, तो सिलिगोड़ी और उसके आस-पासकी थोड़ी-सी जमीनको दोर्जेलिङ जिलेमें डालकर उसे तराई उप-विभागका मुख्य स्थान बना दिया गया।

खरसान भी बढ़ता गया और उसे सन् १८९१ ई० में एक नये सब-डिवीजनका केन्द्र बना दिया गया, जिसमें तराई तथा तिस्ताके पश्चिमके छोटे-छोटे पहाड़ सम्मिलित कर दिये गये। इस प्रकार सिलिगोड़ी मुख्य स्थान होनेसे वंचित हो गया, किन्तु सन् १९०७ ई० में तराई सब-डिवीजन फिर स्थापित हुआ और सिलिगोड़ीको उसका केन्द्र बना दिया गया। सन् १९०७ तक खरसानके उप-विभागीय अधिकारी (एस० डी० ओ०) के अधीन एक उप-दडाधिकारी (डिप्टी मजिस्ट्रेट) सिलिगोड़ीमें रहता था।

कलिम्पोङ पहिले सदर उप-विभागके अन्तर्गत था, किन्तु सन् १९१६ ई० में उसे एक अलग उप-विभाग बना दिया गया। इस प्रकार आजके सदर, खरसान, तराई और कलिम्पोङके चार उप-विभाग (सब-डिवीजन) स्थापित हुए। नवम्बर सन् १९०५ तक दार्जिलिङ जिला बंगालके राजशाही-विभाग (डिवीजन) के अन्तर्गत था। बंग-भंगके समय उसे भागलपुर-विभाग (कमिश्नरी) में मिला दिया गया। बंग-भंगके हटानेके बाद मार्च सन् १९१२ ई० में फिर उसे राजशाही-विभागमें सम्मिलित कर दिया गया। दार्जिलिङ जिला अंग्रेजी भारतके उन जिलोंमें से था, जहां साधारण कानून लागू नहीं होते और यहांके मुख्याधिकारी—डिप्टी-कमिश्नरको बहुतसे असाधारण कानूनी अधिकार प्राप्त थे। इसमें संदेह नहीं, कि पुराने निवासी रोङ (लेप्चा) और नये निवासी नेपाली शिक्षा आदिमें बहुत पिछड़े हुए थे। यदि उनकी रक्षाका खयाल न रक्खा जाता, तो थोड़ेही समयमें बड़े परिश्रमसे तैयार किये गये उनके खेत तथा दूसरी अचल सम्पत्ति अपार्वतीय आदमियोंके हाथमें चली जाती। लेकिन साथ ही अंग्रेज शासकोंका ध्यान बराबर इस बातकी ओर भी रहा, कि पर्वत-निवासियोंको राजनीतिकी हवा न लगे। नेपालके बाद गोरखा सैनिकोंकी भर्तीका एक बहुत महत्त्वपूर्ण इलाका दार्जिलिङ जिला था। यहां किसी तरह राजनीतिक आन्दोलनको दबानेके लिये यहांके डिप्टी कमिश्नरको सर्वेसर्वा-सा बना दिया गया था। डिप्टी-कमिश्नर पदेन सब-जज था। उसे नेपाल, सिक्किम और भूटानके भीतर

आने-जाने वाले योरोपियनोंपर निगाह रखनेका अधिकार था। दार्जेलिङ जिलेमें स्थायी या अस्थायी जमीदारियोंका अभाव था। यहांकी प्रायः सभी कृषि-उपयोगी भूमि सरकारी खास-महालके हाथमें है। ये खास-महालें डिप्टी-कमिश्नरके अधिकारमें हैं। जिलेके सारे हाट-बाजार भी उसी-के अधीन हैं। यही नहीं, डिप्टी-कमिश्नर ही जिला-पालिका (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) तथा नगर-पालिका (म्युनिसिपैलिटी)का भी अध्यक्ष (चेयरमैन) होता रहा। (पहाड़ी खास-महालोंमें किसी पर्वत-वासीकी भूमिको कोई पर्वत-वासी खरीद नहीं सकता और पर्वत-वासियोंमें रोङ (लेप्चा) तथा भोटियाकी भूमिको कलिम्पोङ खास-महालमें नेपाली भी नहीं खरीद सकता।)

यहांके लोगोंको राजनीतिसे अछूता रखनेके लिये भारत-सरकार सन् १९१९ के अधीन बनी व्यवस्थापिका-सभामें भी अपना प्रतिनिधि भेजने-का अधिकार नहीं दिया था। जिला पिछड़ा भू-भाग घोषित था। यहांका शासन-प्रबन्ध सपरिषद् बंगाल-गवर्नरके हाथमें था और जिलेके भीतरी शासनके स्वरूपपर धारा-सभाको वोट देनेका अधिकार नहीं था। लेकिन भारत-सरकार-कानून सन् १९३५ के अनुसार दार्जेलिङको बंगाल-विधान-सभामें अपने प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार मिला। सिलिगोड़ी सब-डिवीजन को जिलेके दूसरी पहाड़ी सब-डिवीजनोंसे अलग करके जलपाईगोड़ी-के साथ जोड़ दिया गया था, जिसमें कि पार्वतीयों और अपार्वतीयोंका भेद पूरी तौरसे बना रहे। सदर, खरसान, कलिम्पोङके तीनों सब-डिवीजन मिलकर एक प्रतिनिधि बंगाल एसेम्बलीमें भेजते थे, जब कि इस जिले के मुट्ठीभर योरोपियनोंको अपना अलग एक प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार था।

३

निवासी

१—जन-संख्या

जैसा कि पहले कहा गया, सन् १८३५ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीने दार्जिलिङ्ग जिलेकी जो भूमि सिक्किमके राजासे प्राप्त की थी, वह बहुत कुछ निर्जन पहाड़ी जंगल-सी थी। उसकी १३८ वर्गमील भूमिमें सौ आदमी निवास करते थे। जिलेके मूल-निवासी रोङ (लेप्चा) थे। पीछे उनसे कई गुने नेपाली आकर यहां बस गये। डाक्टर कैम्पबेलने सन् १८५० ई० में निवासियोंकी संख्या १०००० बतलायी थी। सन् १८६९ ई० में वह २२००० आंकी गई। तराईमें संख्या शायद पहिलेसे भी कुछ अधिक थी, क्योंकि सन् १८७२ ई० की जन-गणनामें वहांकी जन-संख्या ४७९८५ बतलायी गयी। सन् १८६५ ई० के भूटान-युद्धके बाद वर्तमान कलिम्पोङ उप-विभागके दोर्जेलिङमें मिलाये जानेके समय वहांकी जन-संख्या ३५३६ थी। सन् १८८१ ई० में वह बढ़कर १२६८३ हो गयी। इस वृद्धिके कारण केवल नेपालसे आकर बसने वाले लोग थे।

सन् १८७२ ई० से १९४१ ई० तक जिलेकी जन-संख्या जन-गणनाओं-के अनुसार निम्न प्रकार रही—

सन्	संख्या	बढ़ी संख्या	प्रतिशत वृद्धि
१८७२	९४७१२	..	..
१८८१	१५५१७९	६०४६७	६४
१८९१	२२३३१४	६८१३५	४४
१९०१	२४९११७	२५८०३	१२
१९११	२६५५५०	१६४३३	७

सन्	संख्या	बढ़ी	प्रतिशत वृद्धि
१९२१	२८२७४८	१७१९८	६
१९३१	३१९६३५	३६८८७	१३
१९४१	३७६३६९	५६७३४	१८

आबाद होने लायक भूमिकी इफरात और चायके बगीचोंका बढ़ना नेपालसे लोगोंको खींचनेका कारण हुआ। सन् १८७२ ई० मे १४००० एकड़के ७४ चायबगान थे, जो सन् १८८१ ई० में ३०००० एकड़ वाले १५३ बगानों और सन् १८९१ ई० मे ४५००० एकड़ वाले १७७ चाय-बगानोंमें परिणत हो गये।

सन् १८९१ ई० में नेपालमें पैदा हुए ८८००० आदमी जिलेमें बस गये थे। सन् १९३१ ई० की जन-संख्याके अनुसार भिन्न-भिन्न जगह पैदा हुये निवासियोंकी संख्या निम्न प्रकार थी—

स्थानीय	२१८९३५
बिहारके	२४५४०
सिक्किमके	५३२१
अन्य भारतीय	८२७७
नेपालके	५९०१६
एशियाई	२०५१
यूरोपीय	६१६
फुटकर	८७८
	३१९६३५

जैसा प्रवासियोंसे भरे प्रदेशमें अक्सर देखा जाता है, पहिले इस जिलेमें सौ पुरुषोंपर ८७ स्त्रियां थीं, सन् १९४१ ई० में सौपर ८८ अर्थात् १९९६९१ पुरुषोंपर १७६४७८ स्त्रियां थीं। भिन्न-भिन्न सब-डिवीजनों-में सौ पुरुषोंपर स्त्रियोंकी संख्या निम्न प्रकार रही—

सदर	९२
खरसान्	९३
कलिम्पोङ	९१
सिलिगोड़ी	७८

तराई (सिलिगोड़ी) में भी पुरुषोंपर ७८ स्त्रियोंका होना बतलाता है, कि यहां अस्थायी प्रवासियोंकी संख्या अब भी काफी है।

चारों सब-डिवीजनोंमें जन-संख्याकी वृद्धि निम्न प्रकार हुई—

सदर सब-डिवीजन

सन्	जन-संख्या
१८९१	७९०४१
१९२१	१०६५११
१९३१	११९१७८
१९४१	१४७३२७

खरसान् सब-डिवीजन

सन्	जन-संख्या
१८९१	४४६४९
१९०१	४५१८७
१९११	४१२०७
१९२१	४०३५७
१९३१	५१९६६
१९४१	५९९८६

कलिम्पोङ सब-डिवीजन

सन्	जन-संख्या
१८६५	३५३६
१८८१	१२६८३
१८९१	२६६३१
१९०१	४१५११
१९११	५५६५३
१९२१	६००९३

सन्	जन-संख्या
१९३१	६८२०३
१९४१	७९०४२

सिलिगोड़ी सब-डिवीजन

सन्	जन-संख्या
१८७२	४७९८५
१८८१	६३०३८
१८९१	७२९९३
१९२१	७५७८७
१९३१	८०२५८
१९४१	९००१४

जिलेके ११९२ वर्गमीलमें जन-संख्याकी घनता ३१६ प्रति वर्गमील है। सदर सब-डिवीजन जिलके क्षेत्रफलका १९ प्रतिशत है, किन्तु जन-संख्याका ३९ प्रतिशत वहां बसता है। खरसान् सब-डिवीजनमें क्षेत्रफल १४ प्रतिशत और जन-संख्या १६ प्रतिशत है, कलिम्पोङ सब-डिवीजनका क्षेत्रफल ३५ प्रतिशत और जन-संख्या २० प्रतिशत, सिलिगोड़ी सब-डिवीजनका क्षेत्रफल २२ प्रतिशत और जन-संख्या २४ प्रतिशत है।

दार्जिलिङ नगरकी जनवृद्धि निम्न प्रकार हुई—

सन्	जन-संख्या
१८७२	३१५७
१८८१	७०१८
१८९१	१४१४५
१९०१	१६९२४
१९११	१९००५
१९२१	२२२५८
१९३१	२११८५
१९४१	२७२२२

सन् १९४१ ई० की जन-गणनामें वही आदमी सम्मिलित हैं, जो कि स्थायी तौरसे दोर्जेलिङ्में रहते हैं। यदि जन-गणना गरमीमें होती, तो पर्यटक लोग भी शामिल होते। दोर्जेलिङ् नगर-क्षेत्रमें कटापहाड़, जल-पहाड़ और अलेबोङ् (लेबोङ) सैनिक-छावनिया भी शामिल हैं। सन् १९४१ ई० की जन-गणनामें लड़ाईके कारण दो छावनियां खाली थीं और कटापहाड़में सिर्फ १३१ विदेशी नजरबंद थे। युद्धके समय दोर्जेलिङ् नगरकी जन-संख्या गर्मियोंमें हवाखोरीके लिये आये बहुतसे लोगोंके कारण ५०००० तक पहुंच गई थी।

खरसान् नगरकी जन-वृद्धि निम्न प्रकार हुई–

सन्	जन-संख्या
१८८१	४०३३
१८९१	३५२२
१९०१	४४६९
१९११	५५७४
१९२१	६४४५
१९३१	७४५१
१९४१	८४९७

खरसान्के पासके स्कूल-क्षेत्रमें १५०० आदमी बसते थे।

कलिम्पोङ् नगर सन् १९०७ ई० के गजेटियरमें हजार आदमियोंका गांव बतलाया गया था, जो सन् १९११ ई०में ७८८०, और १९३१ ई० में ८७६८, तथा १९४१ ई० में ११९६१ आदमियोंका नगर बन गया। इसके पास सेंट एन्ड्रूज होम, मिशन-क्षेत्र तथा डेवलोपमेंट-क्षेत्र हैं।

सिलिगोड़ी सन् १९०७ ई० में मलेरिया-पीड़ित एक गांव था, जिसमें ७८० आदमी बसते थे। सन् १९४१ ई० में इसकी जन-संख्या १०४८७ हो गयी। लड़ाईके समय और उसके बाद जन-संख्या और बढ़ी। आज तो भारत संघके भीतरसे होकर आसामको जोड़नेवाली रेलका केन्द्र होनेके कारण इसकी जन-संख्या और बढ़ रही है।

चायके बाद सिनकोना (कुनैन) - बगान दोर्जेलिङ जिलेकी विशेष-चीज है, जिसमें १३५०७ आदमी रहते हैं, जब कि चायबगानमें १८६५०८ अर्थात् जिलेकी जन-संख्याका ३९ प्रतिशत बसता है। चायबगानका क्षेत्रफल १६७६८० एकड़ (२५८.७५ वर्गमील) है।

२—भाषाएं

दोर्जेलिङ जिलेके पहाड़ी अंशमें नेपाली, रोङ (लेप्चा), भूटानी, तिब्बती, बंगाली, मारवाड़ी और बिहारी लोग रहते हैं और तराईवाले भू-भागमें बंगाली, मारवाड़ी, बिहारी, सोंथाल, उड़ाव, मुंडा और राजवंशी वास करते हैं। अधिक बोली जानेवाली भाषाएं पहाड़में नेपाली और तराईमें बंगला तथा हिन्दी हैं। नेपाली (गोरखा) भाषा हिंदीका ही स्थानीय रूप है, जिसने अब साहित्यका आकार ले लिया है। नेपाली भाषा नेपालियोंमें सर्वत्र प्रचलित है, किन्तु नेपालकी भांति यहां गुरुङ, लिम्बू, ख्बू, सुनुवार, माखा, मंगर और मुरमी (तमङ) भाषाएं भी बोली जाती हैं। सन् १९३१ ई० की जनगणनाके अनुसार भिन्न-भिन्न भाषाओंके बोलनेवाले निम्न प्रकार थे:—

बंगला	३७८८८
हिंदी	२२१९५
उर्दू	२८८८
भोट (तिब्बती)	११७६१
गुरुङ	२०२९
लिम्बू	१८७०६
मंगरी	१०८८५
मुरमी (तमङ)	३२३१९
नेपाली	९२९७०
नेवारी	६९५६
दूसरी बंग-भाषाएं	५१७९३

असमी भाषा	८२३
खेवाड़ी (बिहार)	११५७०
मुंडारी	५६४९
सौंथाली	४७७१
उड़ावँ	११७४२
बर्मी	४६
अन्य प्रान्तीय भाषाएं	१०८००
अन्य एशियाई भाषाएं	३०
चीनी	३९९
अंग्रेजी	२०५०
युरोपीय भाषाएं	१२४

लेप्चा भाषा तिब्बती भाषासे संबंध रखती है, जिसे रोङ-रिङ भी कहते हैं। यह विश्वकी एक सबसे पुरानी भाषा मानी जाती है। तराई-के मूल-निवासी धीमल अपनी भाषा रखते थे, जो अब जन-गणनामें नहीं पायी जाती। ये लोग कोच लोगोंकी प्राचीन शाखा थे। सन् १९३१ ई० तथा पहलेकी जन-गणनाओंमें इनकी संख्या कुछ सौ उल्लिखित हुई थी।

३—धर्म

हिंदू और बौद्ध यहांके मुख्य धर्म हैं। इसके बाद ईसाइयोंकी संख्या आती है। सन् १९२१ ई० के बादकी जन-गणनाओंमें भिन्न-भिन्न धर्मावलंबियोंकी संख्या निम्न प्रकार थी—

धर्मानुयायी	१९२१	१९३१	१९४१
मुसलमान	८५१६	८३९१	८७२८
हिन्दू	२०१३१६	२३६९१३	२७९१६८
ईसाई	८०९८	८२८०	११०३१
बौद्ध	...	५८९४३	६७२२५
यहूदी	६९	...	...
अन्य	...	१४५	५८९

(१) हिंदू और बौद्ध-धर्म—सन् १९४१ ई० की जन-गणनाके अनुसार २८९,१६८ हिंदुओंमें २०२१७३ नेपाली, २८२७६ मैदानी हिंदू और ५८७१९ पिछड़ी जातियोंके लोग थे। सिक्कानी, रोङ (लेप्चा) और भूटानियोंके अतिरिक्त नेपालियोंमें शर्वा तथा तमङ भी बौद्ध होते हैं।

दार्जिलिङ जातियों और धर्मोंके महासंगमका प्रदेश है। कितनी ही नेपाली जातियोंके बारेमें यह कहना मुश्किल है, कि वह किस अंश तक बौद्ध हैं और किस अंश तक ब्राह्मण-धर्मी (हिंदू)। शर्वा और तमङ (लामा) खुले तौरसे बौद्ध हैं, किन्तु गाई, सुब्बा आदिके लिये बतलाना मुश्किल है। जहाँ ब्राह्मण-पुरोहितोंका अधिक प्रभाव रहा, वहाँ वह ब्राह्मण-धर्मकी ओर अधिक झुके और जहाँ लामाओंका, वहाँ बौद्ध-धर्म की ओर। जिनके चेहरेपर मंगोलीय मुख-मुद्राकी छाप है, उनपर बौद्ध-धर्मका भी प्रभाव कुछ-न-कुछ रहता है, चाहे उनके कितने ही रीति-रवाज ब्राह्मण-धर्मियों जैसे हो गये हैं। सारे जिलेकी जन-संख्या (३७६८१०) में गैर-ईसाई अनुसूचित जातियों, मैदानी हिन्दुओं तथा नेपाली जातियोंको हिंदू गिननेपर उनकी संख्या निम्न प्रकार है—

अनुसूचित जातियां	५८७१९
मैदानी हिंदू	२८२७६
नेपाली	२०२१७३
	२८९१६८

भोट-भाषी जातियां, रोङ (लेप्चा) बौद्धों, एवं तमङ तथा शर्वा लोगोंको मिलाकर सन् १९४१ ई० में इस जिलेमें बौद्धोंकी संख्या ६७२२५ थी, लेकिन जैसा कि ऊपर कहा गया है, भोट भाषियोंको छोड़ औरोंको हिन्दू संस्कृतिके अन्तर्गत बौद्धधर्मी मानना पड़ेगा।

(२) ईसाई—जिला और उसके सब-डिवीजनोंमें ईसाइयोंकी संख्या (११०३१) सन् १९४१ ई० में निम्न प्रकार थी—

सब-डिवीजन

	सदर	खरसान्	कलिम्पोङ	सिलिगोड़ी	योग
भारतीय ईसाई	७२	९८	२०५	३५९	७३०
अनुसूचित जाति	०	४३	९६	२८९२	३०३१
नेपाली	७३३	५९६	१०४०	२३	२३९२
भोटभाषी	३८	१३१	१७२	०	३४१
रोङ (लप्चा)	५६२	७८	१९१९	०	२५५९
अंग्रेज	४७४	१७९	१८६	४५	८८४
ऐंग्लो-इंडियन	१२६	१९३	६००	१६	९३५
युरोपियन	८३	६६	१	९	१५९
योग	२०८८	१३८०	४२१९	३३४४	११०३१

ईसाइयोंकी वृद्धि जिलेमें इस प्रकार हुई—

१८९१	१९०१	१९२१	१९३१	१९४१
७९८	२८२९	८०९८	८२८०	११०३१

(३) मुस्लिम—जिलेमें मुसलमानोंकी संख्या ८९,२८ (१९४१) थी, जिनमेंसे अधिकतर तराईमें रहते है।

४—जातियां

(१) अनेपाली,

(क) मैदानी (अनुसूचित जातियां) ५०७५०

धोबी, नाई आदि	२६९९
राजवंशी	१७९९१
अन्य	२९४५
सांथाल (जनजाति)	४०४५
मेचे ,,	२७५
उड़ावँ ,,	१२४३३

मुंडा	(जनजाति)	४९९३	
ईसाई	,,	३०३१	
अन्य	,,	२३३८	
(ख) हिन्दू (अनुसूचित) -			३९२७६
बंगाली		१३८३०	
मारवाड़ी		२४१६	
पंजाबी		३२०	
हिंदी-भाषी		२१९९६	
अन्य		७१४	
(२) नेपाली			२५४६०८
गाई		५६७९४	
शरबा		६९२९	
छेत्री		२५९४१	
संन्यासी (गोसाईं)		१३३५	
ब्राह्मण		८१९९	
गुजेल		५८१६	
जोगी		४५४	
अन्य		४७२	
अकथित जाति		४३०४	
ईसाई		२३९२	
मगर	(जनजाति)	१७२६२	
नेवार		११२४२	
तमङ्ग	(जनजाति)	४५११४	
दमाई	,,	८१६२	
गुरुङ्ग	,,	१५४५५	
सुब्बा (लिम्बू)	,,	१७८०३	
कामी	,,	१६२७२	

सुनुवार	(जनजाति)	४८२२	
(याखा)	"	८२४	
सारखी या चमार	"	२७७८	
घरती	"	४९६	
अन्य	"	१९४२	
(३) अन्य पहाड़ी–			२००८३
भूटानी और तिब्बती		७२७१	
रोङ (लेप्चा) बौद्ध		९९११	
रोङ (लेप्चा) ईसाई		२५५९	
भोटिया ईसाई		३४१	
अन्य		१	
भारतीय ईसाई		७३०	
अंग्रेज	"	८८४	
ऐंग्लो-इंडियन		९३५	
यूरोपियन		२२८	
एशियाई		५८८	
			३७६८१०

जनजातिक अनुसूचित जातियां	२७११५
अनजातिक अनुसूचित जातियां	२३६३५
जनजातिक नेपाली	१४११७२
अनजातिक नेपाली	११३४३६

दार्जिलिङ्ग जिलेकी ३७६८१० की आबादीमें २५४६०८ नेपाली हैं और उसके पहाड़ी भागमें तो नेपालियोंकी संख्या और भी अधिक है। नेपाली जातियोंमें जन-संख्याकी दृष्टिसे निम्न जातियां अधिक महत्व रखती हैं।

राई		५६७०४
तमाङ	(जनजाति)	४३११४
छेत्री		२५९४१
लिंबू	(जनजाति)	१७८०३
मगर	"	१७२६२
कामी	"	१६२७५
गुरुङ	"	१५४५५
ब्राह्मण		८९९९
दमाई	(जनजाति)	८१६२
शर्वा		६९२९
भुजेल		५८१६

(४) मैदानी जातियाँ—

इन जातियोंमें राजवंशी, कोच और धीमल मुख्य हैं, जिनकी संख्या भिन्न-भिन्न जन-गणनाओंमें निम्न प्रकार पायी गयी—

सन्	१८७२	१८८१	१८९१	१९११	१९३१	१९४१
राजवंशी	२३१२४	..	..	२८९४४	२६९६९	१७९०१
कोच	..	३०८०१	..	..	१२७	..
धीमल	८२३	..	६३१	४४४	३७५	..

(क) **राजवंशी**—राजवंशी उसी कोच नामकी पुरानी जातिके ही अवशेष हैं, जिनके नामपर कोचबिहार (कूचबिहार) का नाम पड़ा। राजवंशियों (कोचों) के बारेमें कुछ विद्वानोंका कहना है, कि यह उसी द्रविड़ जातिके हैं, जो आर्योंके विस्तारके समय गंगा-उपत्यका छोड़कर पूरब-की ओर चले आये। राजवंशियोंके ऊपर मंगोलीय छापको मंगोल जाति-के संपर्कके कारण बतलाया जाता है। दूसरा मत है कि यह मंगोलायित जातिसे संबंध रखते हैं और ब्रह्मपुत्र-उपत्यकाके रास्ते बंगालमें आये। शुद्ध कोचोंकी मुखाकृति मंगोलायित जरूर है। जलपाईगोड़ी, कूचबिहार और ग्वालपाड़ाके राजवंशी भी शुद्ध कोच जान पड़ते हैं, हिंदू बन जानेपर

उन्होंने अपनेको कोच छोड़ राजवंशी कहना शुरू किया। राजवंशी बंगाली बोलते हैं और उसके अतिरिक्त उनकी कोई दूसरी बोली नहीं है। भारत-सरकारने बहुत बुद्धिमानी की, जो कूचबिहारको अलग रखनेके दुराग्रहको छोड़कर उसे बंगालमें मिला दिया। सन् १९०१ ई० में घटकर १७९९१ की गिनतीसे जान पड़ता है कितने ही लिखना पसंद नहीं किया। दार्जिलिङ जिलेके १७९९१ राजवंशियोंमें १७७८८ सिलिगोड़ी सब-डिवीजनमें रहते हैं।

(ख) **मेचे**—यह मूल-निवासी जाति है, और थारुओंकी भांति तराईके मलेरियासे इन्हें सुरक्षित समझा जाता है। कोच, धीमल और मेचे तराईके जंगलोंमें शताब्दियोंसे रहते आये हैं। ये झूम-रीतिके अनुसार जंगलको जला-कर दो-तीन साल खेती करके एक जगहसे दूसरी जगह चलते-फिरते थे। दार्जिलिङ जिलेमें १८७२ में इनकी संख्या ८९३ थी, जो सन् १९०१ ई० में ३४२, सन् १९२१ ई० में ३७९ और सन् १९४१ ई० में २७५ रह गयी। मेचे अब भी पिछड़ी हुई जाति है। जलपाईगोड़ी जिलेमें इनकी संख्या १०००० है।

(ग) **सौंथाल, उड़ावं, मुंडा**—तराईके चायके बगीचोंमें काम करने-के लिये ये लोग बिहारसे आये। सन् १९४१ ई० में इस जिले में (विशेषतः तराई में) ४४५ सौंताल, १२४३३ उड़ावं और ४९९३ मुंडा रहते थे।

(घ) **बंगाली**—जिलेके पहाड़ी इलाकेमें बंगाली मुख्यतः नगरों या उपनगरमें पाये जाते हैं। अधिकतर वह सिलिगोड़ी नगर और सब-डिवीजनमें रहते हैं।

(ङ) **मारवाड़ी**—मारवाड़ी नगरके अतिरिक्त देहातमें भी रहते हैं। सदर सब-डिवीजनके १००२ मारवाड़ियोंमें केवल ५५८ दार्जिलिङ जिलेमें रहते हैं। इसी तरह खरसान् सब-डिवीजनमें ६६ तथा कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें १४६ ही नगर से बाहर रहते हैं।

(च) **हिंदी भाषी**—मारवाड़ीके अतिरिक्त दूसरे हिंदी भाषी अधिकतर बिहारके हैं। तराईके चायबगानोंमें इनकी संख्या १०७११ और देहाती स्थानोंमें १८२४ थी। सिलिगुड़ी नगरमें २९६८ हिंदी भाषा-भाषी रहते थे। सदर सब-डिवीजनके १६९८ हिन्दी भाषा-भाषियोंमें १००० दार्जिलिङ्ग-में रहते हैं। खरसान् सब-डिवीजनके चायबगानोंमें ७३३ और नगर तथा उपनगर क्षेत्रोंमें ३७३ रहते हैं। कलिम्पोङ सब-डिवीजनके १४३८ हिंदी भाषियोंमें ५७९ चायबगानोंमें प्रायः मजदूरका काम करते हैं, नगरमें ५०० और उपनगर-क्षेत्रोंमें २४६ हैं।

५—नेपाली जातियां

(१) **राई (किराती)**—नेपालियोंमें सबसे अधिक संख्या राई लोगों-की है। इनकी वृद्धि निम्न प्रकार हुई है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
३३१५३	४०४०९	४१२३६	४७४३१	५६९७४

नेपालियोंकी ढाई लाखकी आबादीका पंचमांश राइयोंका है। इनका मूल-निवास पूर्वी नेपालमें सोनकोशी नदी, सिंगलीला पर्वतमाला और मेची नदीके बीचका प्रदेश था। इनको किराती भी कहा जाता था, जिसमें लिंबू (यक्थुम्बा), जिमदार (राई) एवं याक्खा (देवान) जनजातियां सम्मिलित थीं। गोरखोंने सन् १७६९ ई० में नेपाल जीतते हुए किरातियोंको भी जीत लिया, किंतु यह बहादुर जाति जल्दी दबने वाली न थी। कुछ इलाकोंके वे स्वतंत्र शासक भी थे। उनको अपनी ओर खींचनेके लिये गोरखा राज्यने जिमदार शासकोंको राई और लिम्बू शासकोंको सुब्बाकी उपाधि दी। अब यह उपाधियां दार्जिलिङ्ग निवासी सभी जिमदारों और लिम्बुओंकी है।

(२) **खम्बू (लिम्बू)**—एवरेस्ट शिखरके दक्खिन-पश्चिम वाले लिम्बू इलाकेके निवासी खम्बू कहे जाते हैं। जैसा कि ऊपर बतलाया गया है, राई संख्यामें सभी नेपाली जातियोंमें अधिक हैं। उनके धर्मपर बौद्ध

और हिन्दू दोनों धर्मोंकी छाप है। लिंबू (सुब्बा) और जिमदार (राई) के बहुतसे रीति-रवाज एकसे हैं और उनमें परस्पर ब्याह शादी भी होती है। राई और सुब्बाकी इस तरह सम्मिलित संख्या पौन लाख पहुंच जाती है। सन् १९११ ई० में ३९८४८ आदमी खम्बू भाषा बोलने वाले दर्ज किये गये थे।

(३) **शरबा**—यह तिब्बती-भाषी जाति है। नेपालमें इनका निवास पूर्वोत्तरमें था। शरबा (सेरबा) का तिब्बती भाषामें अर्थ ही होता है पूरबवा (पुरबिया)। यह अधिकतर सदर सब-डिवीजन, कलिम्पोङके खासमहाल और सिनकोनाके बगानोंमें पाये जाते हैं। सन् १९०१ ई० में इनकी संख्या ३८५० थी, जो सन् १९३१ ई० में ५२९५ और सन् १९४१ ई० में ६९२९ हो गई। गोरखा पल्टनमें राई, सुब्बा, तमङ, मंगर, गुरुङ आदिकी भांति ये भी भर्ती होते रहे। हिमालयके उच्च शिखरों-पर अभियान करनेवाले दलोंके सामानको बहुत बड़े उन्नतांशोंमें यही पहुंचाया करते हैं। शरबा स्त्रियां दूसरी तिब्बती स्त्रियोंकी भांति कमर-में नीचे लटकनेवाले अपने डाड़न (पङ्दन) को सामनेकी ओर नहीं बल्कि पीछेकी ओर लटकाती हैं।

(४) **खस (छेत्री)**—आमतौरसे ये अपनेको छेत्री या छत्री कहते हैं, किन्तु उनका पुराना नाम खस (खश) है। किसी समय नेपालमें सिञ्जिनदीका भूभाग खसोंका देश कहा जाता था। आज भी नेपाली भाषाका दूसरा नाम "खसकुरा" (खसबोली) भी है। खस शब्द काश्मीर नाममें भी मौजूद है और वही शब्द चीनी तुर्किस्तानके काशगर (कश-गिरि, खशगिरि) नगरमें भी मौजूद है। कश भी शकका ही उल्टा उच्चारण है। काशगरका इलाका शकोंकी भूमिमें था, यह हमें मालूम है। जान पड़ता है, शक आर्योंसे स्वतंत्र रूपमें पहाड़ ही पहाड़ आकर पामीरसे नेपाल तक फैलते गये। आज छेत्रियोंके लिये यह खस या शकका संबंध विस्मृत बात है, और वह अपना संबंध मैदानी राजपूतोंसे जोड़ना चाहते हैं। नेपालका वर्त्तमान शासक-वंश (३ सरकार और ५ सरकार दोनों) खस

जातिके हैं, यद्यपि आज-कल उनका संबंध अधिकतर मैदानके राजपूतोंसे साथ होता है और वह खसकी अपेक्षा राजपूत या क्षत्रिय कहलाना अपने लिये बड़े गौरवकी बात समझते हैं, लेकिन राजपूतोंमें भी शकोंका काफी अंश है। सन् १७६९ ई० में नेपालसे नेवार राजवंशको खतम कर गोरखा शासनसे आगे खसोंने अपना राज्य स्थापित किया। खस (छेत्री) सफल कृषक और बहादुर योद्धा भी हैं। सन् १९०१ ई० में जिलेमें इनकी संख्या ११५९७ थी, सन् १९११ ई० में वह १२५९९ और सन् १९४१ ई० में २१९८१ हो छेत्रियों, गयी। ये जिलेके सभी भागोंमें पाये जाते हैं। नेपाली भाषा मुख्यतः ब्राह्मणों, दमाइयों (दर्जियों), कामियों (लोहारों) की भाषा थी, किंतु आज नेपालकी सभी जातियोंकी यह साधारण भाषा बन गयी है।

(५) **संन्यासी (गोसाईं)**—इनकी संख्या १३३५ थी। इनमें अधिकांश गिरिशाखा हैं। सन् १९०१ ई० में ११५१ और १९११ ई० में १०६० सन्यासी दर्ज किये गये थे। सन्यासीसे यहां गृह-त्यागी साधु अभिप्राय नहीं है, बल्कि ये अपनी प्रथम जातिसे बाहर ब्याह करने वाले सन्यासियोंके वंशज हैं। गोरखा सेनामें इनकी भी भरती होती रही है। दार्जिलिङ्गके दल बहादुर गिरि जैसे प्रसिद्ध देश-भक्तको पैदा करनेका सौभाग्य भी इसी जातिको है।

(६) **नेपाली ब्राह्मण**—इनकी संख्या जिले में निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९१४
६४७०	६१९५	८१७४	८७९१	८९९९

ये अच्छे सफल कृषक हैं। आधेके करीब नेपाली ब्राह्मण कलिम्पोङ सब-डिवीजनके खासमहालमें बसते हैं। इन्हें गोरखा-पल्टनमें भरती नहीं किया जाता था। ब्राह्मण और छेत्रीका भेद नीचेकी तरह पहाड़में कड़ा नहीं है। ब्राह्मणकी लड़की छेत्री ब्याह सकता है और वह जातिसे पतित नहीं समझा जाता, किंतु छेत्रीकी लड़की लेनेपर ब्राह्मणको भी छेत्री होना पड़ता है। छेत्रियोंमें विधवा-विवाह और विवाह-विच्छेदका प्रतिषेध नहीं है।
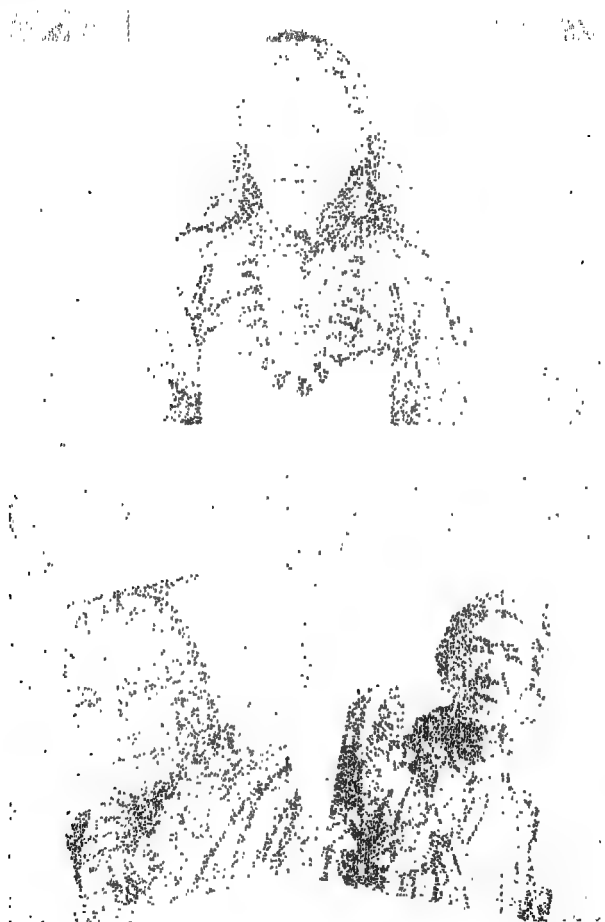
(ऊपर) नैपाली तरुणी, (नीचे बायें) नैपाली महिला,
(नीचे दायें) एक तिब्बती भिखारी

(७) मुखियान्त (मुजेर)—ये पहिले नेपालमें दास थे, और समाज-में निम्न स्थान रखते थे। अब उनकी सामाजिक स्थितिमें कुछ परिवर्तन हुआ है और गोरखा-सेनामें भी भरती किये जाने लगे थे। दार्जिलिङ जिलेमें उनकी संख्या ५८१६ थी, जिनमें ६१० खरसान् सब-डिवीजनके चायबगानोंमें एवं २३०८ कलिम्पोङके खासमहालमें रहते थे। अब ये मुखियाके नामसे पुकारे जाते हैं।

(८) जोगी—ये नेपाली साधु हैं, जो सभी जातियोंमेंसे आते हैं। सन् १९३१ ई० में इनकी संख्या ७५२ थी और सन् १९४१ ई० में ४५४।

(९) मगर—भिन्न-भिन्न जन-गणनाओंके समय इनकी संख्या निम्न प्रकार थी—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
११९१२	१२४५१	१४९३८	१६२९९	१७२६२

मगर सारे जिलेमें फैले हुए हैं। खेती, व्यापार और सिपाहीगिरी इनका व्यवसाय है। नेवार राजवंशको ध्वंस करनेमें इनका भी हाथ रहा। मगरोंकी मुखाकृति नेवारोंकी भांति मंगोलायित होती है।

(१०) नेवार—सन् १७६९ ई०से पहिले नेपालपर नेवार-वंशका शासन था, जिसे खसों (क्षेत्रियों), मगरों और गुरुङोंने नष्ट कर दिया। आजकल अच्छे सफल व्यापारीके रूपमें जहां इन्हें पाया जाता है, वहां शिल्प, कृषि और सरकारी चाकरीमें भी मिलते हैं। गोरखा-सेनामें भी इनकी भरती होती रही है। दार्जिलिङ जिलेमें पहिलेसे आकर बस गये नेवार प्रधान नामसे पुकारे जाते हैं। शिक्षा आदिमें यह आगे बढ़े हुए हैं, किंतु अब ये नेवार भाषा भूल गये हैं। यह पुरानी भाषा मूल रूपमें संस्कृत और तिब्बती दोनों भाषाओंसे भिन्न थी, यद्यपि अब उसमें बहुतसे शब्द इन दोनों भाषाओंसे उधार ले लिये गये हैं। नेपालसे अब भी संबंध रखने वाले नेवार अपनी भाषा बोलते हैं। इस भाषामें पुराना साहित्य भी है और आज भी नये साहित्यका सृजन हो रहा है। दार्जिलिङके पुराने नेवारोंमें हिंदू (ब्राह्मण) धर्मकी प्रधानता है, यद्यपि नेपालसे संबंध

रहनेवाले अधिकांश नेवार बौद्ध धर्मके अनुयायी हैं। तिब्बतका व्यापार मुख्यतः इनके हाथमें है। नेवार मंदिर और स्मरणात्मक मठ-छवियों तथा कलिम्पोङके बाजारहाटोंमें अधिकतर पाये जाते हैं। नेवार वस्तुतः नेपाल शब्द हीका बिगड़ा रूप है।

(११) तमङ (लामा)—राई लोगोंके बाद नेपाली जातियोंमें सबसे अधिक संख्या तमङ लोगोंकी है, जो भिन्न-भिन्न जन-गणनाओंमें निम्न प्रकार रही है—

१८७२	१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
६५५७	२४४६५	२७२६६	३०४५०	३३४८१	४३११८

तमङ लोग अपने नामके साथ लामाकी उपाधि लगाते हैं। यद्यपि श्राद्ध तथा कुछ दूसरे समयोंमें वह हिंदू रीति रिवाजोंका अनुसरण करते हैं, किंतु मुख्यतः उनका धर्म बौद्ध है। विवाहके समय लामा (बौद्ध पुरोहित) बुलाया जाता है और उनके घरोंके पास मंत्रोंसे छपी लंबी खड़ी ध्वजाएं फहराती हैं। इनका दूसरा नाम मुरमी भी है। इनकी भाषा तिब्बती भाषाके समीप है, किंतु ये तिब्बती भाषा-भाषी शेरपा और भोटिया आदि जातियोंसे बहुत पहिले हिमालयके इस पार पहुंच गये थे। दार्जिलिङ जिलेकी सभी जगहोंमें ये कृषक या चायबगानोंके मजूरके रूपमें पाये जाते हैं। सन् १९११ ई० में २६०,६३ आदमी मुरमी भाषा-भाषी दर्ज हुए थे।

(१२) गुरुङ—नेपालमें अधिकतर यह घुमंतू और पशुपालक जाति रही है। इनकी तमङोंकी भांति अपनी स्वतंत्र भाषा है। नेपालसे नेवार-शासनके उलटनेमें इनका भी हाथ रहा। गोरखा सेनामें इनकी भरती खूब होती थी। जिलेमें इनकी जन-संख्या निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
८७३८	९,६२८	९५७५	११,१५४	१५४५५

(१३) सुब्बा (लिंबू)—लिंबू लोगोंकी उपाधि सुब्बा होती है। राई लोगोंके साथ इनका ब्याह संबंध होता है। इनके मुखों, आंखोंपर

मंगोल-मुखमुद्राकी पूरी छाप (चिपटी नाक, टेढ़ी आंखें, पीला रंग, दाढ़ी-मूछहीन चेहरा) होती है। दार्जिलिङ्ग जिलेमें रोङ्ग (लेप्चा) लोगोंसे भी उनका बहुत सम्मिश्रण हुआ है। गोरखा-सेनामें इनकी खूब भरती होती है। सन् १९११ ई० में ११८७५ और १९३१ ई० में १४७०६ लिम्बू-भाषा-भाषी दर्ज हुए थे। लिम्बू लोगोंकी संख्या निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
१४३०५	१३६०८	१४१५१	१६२८८	१७८०३

अधिकांश लिम्बू सदर और कलिम्पोङ्ग सब-डिवीजनमें निवास करते हैं।

(१४) सुनुवार—सुनुवार पहिले शिकारीका काम करते थे। आजकल ये खेती, व्यापार और सैनिक सभी कामोंमें पाये जाते हैं। इस जिले-में उनकी संख्या निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
४४२८	३८२०	३६९१	४०५५	४८२२

सुनुवार लोगोंकी अपनी मातृ-भाषा है, जिसके बोलनेवाले सन् १९११ ई० में ३५११ व्यक्ति थे।

(१५) दीवान (याखा)—यह खेती-किसानीका काम करते हैं। राई और सुब्बा नेपालके जिस इलाकेसे आये, वही इनकी भी जन्मभूमि है। वहां जो अरुण नदीके पश्चिमसे आये वह अपनेको राई कहते हैं और जो उसके पूरबसे, वह लिम्बू। इनकी भी अपनी एक मातृ-भाषा है। इनकी जनसंख्या निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
११४३	१११९	..	८५०	८२४

(१६) दमाई (दर्जी)—इनकी संख्या जिलेमें निम्न प्रकार रही है—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
४६४५	४४५३	५७८१	५५५१	८१६२

इनका पेशा दर्जीका है और गोरखा पल्टनमें भी इन्हें दर्जीके

तौरपर भरती किया जाता रहा। पहाड़में अधिकतर ये नगरों और चायबगानोंमें पाये जाते हैं।

(१७) **कामी (लोहार)**—इनका पेशा लोहारी है, अंग्रेजोंकी गोरखा-सेनामें भी यह उसी कामके लिये भरती किये जाते थे। हिमालयके और भागोंकी भांति यहां भी इन्हें अछूत माना जाता है। इस जिलेमें इनकी संख्या निम्न प्रकार है——

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
९८२६	१०९३९	११७७९	११३३१	१६२७२

कामी पहाड़के सभी भागोंमें हे, किंतु नगरों तथा कलिम्पोङ, खास-महाल एवं चायबगानोंमें अधिकतर मिलते हैं।

(१८) **सारखी (चमार)**—इनकी संख्या निम्न प्रकार रही है——

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
१८२३	१९९२	२०३६	२६३२	२७७८

ऊंच-नीच जाति-प्रथाको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये अंग्रेज गोरखा सेनामें इन्हें चमारके कामके लिये ही भरती करते थे। अधिकतर सारखी नगरों, चायबगानों और कलिम्पोङ खासमहालमें पाये जाते हैं।

(१९) **घरती**——ये मुक्त हुए दासोंके वंशज हैं। समाजमें इन्हें दबाकर रखा जाता है। जन-गणनाओंमें इनकी संख्याकी कमी इसी कारण हुई—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
३४४८	३५८४	..	२०५३	८९६

निश्चय ही ये अपने लिये घरतीका अपमानजनक शब्द नहीं स्वीकार करना चाहते, अन्यथा उनकी जन-संख्या सन् १९०१ ई० की अपेक्षा इतनी कम नहीं थी। बहुतसे घरती पिछली जन-गणनाओंमें मुजेरोंमें चले गये। मुजेरोंमें भी दासताका दाग मौजूद है, इसलिये वहांसे भी कितने ही दूसरे नामोंमें सम्मिलित हो गये। हिंदू-धर्मकी जाति-प्रथासे शोषित, पीड़ित और अपमानित जातियोंके भीतर जिस तरह भारतके और स्थानों-

में हुआ, उसी तरह यहां भी मुक्त होनेका छोटा-मोटा छिद्र देखकर निकलनेकी कोशिश की गई है। आशा है, नवभारत इन जातियोंको पूरी तौरसे मुक्त वातावरण प्रदान करेगा और उत्तरी पड़ोसी भी अपने उदाहरणोंसे इन्हें कठिनाइयोंसे निकालनेका साहस प्रदान करेगा।

(२०) **नेपाली ईसाई**–सन् १९४१ ई०में २३७३ व्यक्ति नेपाली ईसाई उल्लिखित हुए थे। इनमेंसे काफी संख्या उन लोगोंकी है, जो ब्राह्मण-धर्मी अत्याचार और अपमानके कारण धर्म-परिवर्तन करनेके लिये मजबूर हुए। ये अधिकतर दोर्जेलिङ, खरसान् और कलिम्पोङ नगरों तथा कलिम्पोङके खासमहालोंमें पाये जाते हैं।

ईसाइयोंने शिक्षा-संस्थाओं, अनाथालयोंको खोलकर और दूसरे प्रकारसे अपने धर्मका जितना अधिक प्रचार इस जिलेमें पिछली एक शताब्दीमें किया, उसे देखते हुए उनका नेपालियोंमें से २३७३ को ही ईसाई बना पाना बहुत बड़ी सफलता नहीं कही जा सकती। कलिम्पोङके आस-पास रोङ (लेप्चा) लोगोंमें ईसाई धर्मका अधिक प्रचार हुआ है; लेकिन तो भी सारे जिलेमें सन् १९४१ ई०में १२४७०में सिर्फ २५५९ रोङ ईसाई थे, बाकी ९९११ बौद्ध थे।

६–भोट-जातियां

भोट (तिब्बत संबंधी) जातियां रोङ (लेप्चा), भूटानी और तिब्बती हैं। इनके अतिरिक्त कुछ और तिब्बत-वंशी जातियोंका वर्णन नेपाली जातियों (शर्वा, तमंङ आदि) में आ चुका है। भोट-जातियोंमें इस पहाड़ी प्रदेशकी मूल जाति रोङ (लेप्चा) के अतिरिक्त सिक्किमी, भोट-भाषी शरवा (नेपाली-भोट-भाषी) डुक्पा (भूटानी भोट-भाषी) तथा तिब्बती भोट-भाषी सम्मिलित हैं। सन् १९३१ ई० में इनमें कुछकी संख्या निम्न प्रकार थी—

भूटानी-भोट भाषी (डुक्पा)	२१२४
नेपाली-भोटभाषी (शरवा)	५२९५
सिक्किमी भोट-भाषी	८९६
तिब्बती भोट-भाषी	२३१८

इस प्रकार सन् १९३१ ई० की गणनामें शर्वाके अतिरिक्त ५३३८ भोटभाषी उल्लिखित हुए थे। पहिलेकी जन-गणनाओंमें इनके अलग-अलग वर्गीकरण नहीं किये गये और सबकी सम्मिलित जन-संख्या निम्न प्रकार पायी गयी—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
९३१५	१०७६८	१०७१०	५३३८	३६१२

यदि सन् १९३१ ई० की गणनामें शर्वा भी गिन लिये जायें, तो भोट-भाषियोंकी संख्या उस समय १०६२९थी और सन् १९४१ई०में उसे जोड़नेपर १८५८१ भोट-भाषी इस जिलेमें रहते थे। भोट-भाषी शारीरिक मेहनत और कड़ी सर्दी बरदाश्त करनेमें अधिक सबल हैं। आमोद-प्रमोद और झगड़ा करनेमें उन्हें सबसे आगे पाया जाता है।

७—रोङ (लेप्चा)

इन लोगोंकी संख्या जिलेमें निम्न प्रकार पायी गयी—

१८७२	१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
३९५२	९९७२	९७०६	९६६९	१२१०१	१२४७०

यह कह आये हैं कि सन् १९४१ ई० में रोङ लोगों (१२४७०) में ७५५९ ईसाई थे। दार्जेलिङ जिलेके पहाड़ी भाग तथा सिक्किम मूलतः रोङ (रोङ—पा उपत्यकावासी) लोगोंका प्रदेश था। लेप्चा यह नेपाली लोगोंका दिया हुआ नाम है, और एक प्रकारसे अपमानसूचक है। आकार-प्रकार और भाषामें रोङ लोग तिब्बती लोगोंके समीप हैं, तो भी जान पड़ता है तमङ तथा दूसरे अपने सहवंशियोंकी भांति यह तिब्बती लोगोंसे भी पहिले, शायद तीसरी-चौथी सदीमें ही, हिमालयकी बर्फानी पर्वत-श्रेणियों को पारकर इधर आ गये। यद्यपि तिब्बती लोग सातवीं सदीमें पश्चिम और दूसरी दिशाओंमें बढ़े, किंतु दार्जेलिङ और सिक्किममें उनका आना सत्रहवीं सदीमें हुआ। उनके आनेपर रोङ लोग अपने कितने ही पुराने निवास-स्थानोंको छोड़नेके लिये मजबूर हुए, किंतु उस समय भूमिकी नहीं, निवासियोंकी कमी थी। रोङ (लेप्चा) झूम-प्रथा-

के अनुसार नये जंगलोंको काट कर दो-तीन बरस खेती करते नये स्थानों-में घूमते फिरे। इनके शासक (सिक्किम राजवंश) भी तिब्बती होते आये है, उनसे १७०६ में तिस्ताके पूरबके भाग (वर्तमान कलिम्पोङ सब-डिवीजन) को भूटानियोंने छीन लिया। रोङ (लेप्चा) स्वभावसे बहुत नरम होते हैं, और अपने पड़ोसियोंकी भाँति कठोर परिश्रम भी नहीं कर पाते। यह नेपाली जातियों एवं दूसरे भोट-भाषियोंके साथ ब्याह शादीमें बहुत स्वच्छन्दता रखते हैं, विशेषकर लिम्बू (सुब्बा) और सिक्किमी भोटभाषियोंसे इनका संबंध अधिक होता है। कलिम्पोङ सब-डिवीजनके खासमहालमें रोङ (लेप्चा) और भोटिया लोगोंकी स्वत्व-रक्षाके लिये सरकारने विशेष ध्यान दिया है और उनकी संपत्ति दूसरी जातियां नहीं खरीद सकतीं।

दार्जिलिङ शहरमें भी रोङ लोग बसते हैं, लेकिन अधिकांश कलिम्पोङ या दूसरे खासमहालों एवं सिनकोना बगानोंमें ही पाये जाते हैं। कलिम्पोङ खासमहालकी अन्य जातियोंमें रोङ जातिकी संख्या निम्न-प्रकार थी—

नेपाली	८०२८०	८१.०	प्रतिशत
रोङ	१५,९८७	१६.१	प्रतिशत
भोटभाषी	२८२९	२.९	प्रतिशत
योग	९९,०९६	१००.०	प्रतिशत

सन् १९१९–२१ ई० के भू-प्रबंध रिपोर्टमें इन तीनों जातियोंकी भूमि (संख्या) को निम्न प्रकार बतलाया गया —

नेपाली	४८४७	७१.३	प्रतिशत
रोङ	१४०९	२०.७	प्रतिशत
भोट-भाषी	५३९	८.०	प्रतिशत
योग	६७९५	१००.०	प्रतिशत

कलिम्पोङ खासमहाल और वनकी जनसंख्या उसी प्रबंध रिपोर्ट से निम्न प्रकार सूचित होती है —

नेपाली	२९३७७
रोङ	८५२२
भोट-भाषी	३२९६
योग	४१२०३

सन् १९४१ ई० की जन-गणनामें यह संख्या खासमहाल, वन और सिनकोना बगानमें निम्न प्रकार थी—

नेपाली	४७५१६
रोङ	७२६९
भोट-भाषी	२६२८

कलिम्पोङ खासमहालके ५० से अधिक रोङ या बौद्धवाली बस्तियोंमें इनकी संख्या निम्न प्रकार है—

बस्ती	रोङ	भोट-भाषी
उत्तरी कलिम्पोङ	५४०	११
बोंङ	२३४	१७
डुंग्रा	१११	३१७
भाल्लूखोप	१८७	५७
सिन्देपोङ	१९४	३५
इच्छे	९६	१६३
साङसे	२८५	५१
दलपचन	८५	१०५
लोले	२३९	६
पाला	१२८	४
सन्तुक	१०९	४६
पेयोङ	८९	३५७
साक्योङ	२८४	४९५
कागे	१२०	२५
पेदोङ (बाजार)	८४	२४३

बस्ती	रोङ	भोट-गामी
काश्योङ	३३१	३४
लादङ	६७	१९
लिङसेग्या	२६०	२६
लिङसे	१३७	२४
सिओकवीर	१५५	०
कांकीबोङ	३९१	२
सिङजी	२३८	०
समलबोङ	१३५	०
समथर	२४८	०
सुरुक	१०५	०
याङमाकङ	२८१	०
गितडुबलिङ पङ	६६५	७
गितबियोङ	१७३	२८
नम्बोङ	१४१	९०
तोदेताङला	१६३	१८२
फुटकर	३८४	२९
योग	६६०९	२६०६

८—अन्य जातियां

(१) **एंग्लो-इंडियन**—सन् १९४१ई० में इस जिलेमें २३३ एंग्लो-इंडियन पाये गये थे, जिनमेंसे अधिकांश खरसान् (१२६) और कलिम्पोङ (५६९) में रहते थे। देशके स्वतंत्र होनेके बाद कुछ एंग्लो-इंडियन, जो आधा-तिहाई यूरोपियन रंग भी रखते थे, आस्ट्रेलिया या दूसरे ब्रिटिश उप-निवेशोंमें चले गये। कलिम्पोङमें उनकी अधिक संख्या ग्रेहम्स कलोनियल होम (स्कूल) के कारण रही है, जो इधर घटकर कम हो गई है। नहीं कहा जा सकता, जिलेमें एंग्लो-इंडियनोंकी संख्या अब कितनी है। चायबगानोंमें एंग्लो-इंडियन नहीं रहते।

(२) चीनी—गत जन-गणनामें ५८८ एशियाई उल्लिखित हुए थे, जो प्रायः सारे चीनी थे। ये केवल नगरोंमें बसते हैं, जहां इनकी संख्या निम्न प्रकार थी—

दार्जिलिङ	२०८
खरसान्	५१
कलिम्पोङ	१६५
सिलिगोड़ी	१५

चीनी आमतौरसे भोट-भाषियों, राइ, नेवार तथा दूसरी जातियोंसे विवाह-संबंध करते हैं, किन्तु चीनकी सनातन-प्रथाके अनुसार चीनी पिता-का पुत्र चीनी माना जाता है। हालमें तिब्बतकी राजधानी ल्हासासे चीनी नागरिकोंको जो निकाला गया था, उसमें कुछ ऐसे भी लोग थे, जिनकी माताएं अचीनी थीं, वह स्वयं भारतमें पैदा हुए थे, और उन्होंने अपने बाप-दादोंके घरको कभी चीनमें जाकर नहीं देखा था। एक महिला, नेपाल माता-पिताकी लड़की है, जिन्होंने भारत-जात अर्ध-चीनी पुरुषसे ब्याह किया और चीनी प्रजा होनेके कारण ल्हासासे कलिम्पोङ लौटी। अब पुलिस उन्हें चीनी मानकर वीजा लाने या चीन लौट जानेके लिये मजबूर कर रही है।

४

कृषि, व्यवसाय और उद्योग

१—कृषि

(१) भूमि—सिक्किममें यद्यपि ऐसे ऊंचे स्थान है, जहां वृक्ष नहीं उग सकते, किन्तु दार्जिलिङ्ग जिलेमें ऐसे ऊंचाईके स्थान नहीं है। तो भी ९,५०० फुटसे ऊपर सर्दीके कारण अनाजकी खेती नहीं की जा सकती, किन्तु इतनी ऊंचाई-पर भी आलूकी खेती होती है। चावल, मक्का और ज्वार तो और भी नीचे ही हो सकते हैं। चाय ७००० फुटसे ऊपर नहीं लगाई जा सकती। २,५०० फुटसे नीचेके पहाड़ सीधे खड़े हैं, इसलिये वहां कृषिके लिये उपयुक्त खेत बनाना कठिन है, इसीलिये १००० और २,५०० फुटके बीचकी भूमि अधिकतर जंगलोंसे ढंकी है। तिस्ता-उपत्यकाके कुछ भागों एवं जिलेके उत्तर ओर वर्षा ६० इंच होती है और पहाड़के बाहरी भागोंमें वह २०० इंचतक पहुंच जाती है। तराईमें १२० इंच वर्षा होती है। जिलेकी ११९२ वर्गमील भूमिसे २५९ वर्गमील चायबगानों, ३३ वर्गमील सिनकोना और ४३७ वर्गमील रक्षित वनोंमें लगी है। इस प्रकार ४६३ वर्गमील भूमि बच जाती है, जिसमें खेतीकी भूमि, अरक्षित वन तथा बेकार भूमि है। चायकी भूमिसे ८० वर्गमील भूमि चायबगान मजदूरोंकी खेतीके लिये है। तिस्ता-उपत्यकाके पश्चिमी पहाड़ोंमें बहुत अधिक भूमि रक्षित वन, चाय और सिनकोना (कुनैन) में लगी है। वहां खेती विशेषतः लघुरंगितके उत्तर-पश्चिम वाले भागतक सीमित है। तिस्तासे पूरब वाले पहाड़ोंमें बहुत कम चायबगान है। यहां रक्षित बन २११ वर्गमील है। कलिम्पोङ सब-डिवीजनके ४०८

वर्गमीलमें उक्त रक्षित बनके अतिरिक्त १७६ वर्गमील सरकारी जमीदारी (खासमहाल) और २१ वर्गमील चायबगानका है। इस डिवीजन में ८४ वर्गमील ही खेतीकी भूमि है। जिलेमें भूमिका उपयोग स्थूल रूपसे निम्न प्रकार है —

	वर्गमील
रक्षितबन	४३७
चायबगान	९९
सिनकोना	३३
खेत	३२०
परती आदि	३०३
योग	११९२

१९२५ के आस-पासके भू-प्रबंधके विवरणके अनुसार भिन्न-भिन्न अनाजोंकी फसलका क्षेत्र (एकड़) निम्न प्रकार था।

अन्न	तराई	कालिम्पोंग	पश्चिमी-तिस्ता
चावल	४९५२३	८२०४	५२८
ज्वार	१८६	..	..
कोदो	..	७४५४	८१४
मक्का	४९७	२९७३९	१२०२५
सरसों	२२९२	५३२	..
गन्ना	२८२	..	..
पाट (जूट)	३६९०	..	..
रंग	२४७	..	...
;तम्बाकू	५४२	..	..
बागकी उपज	८०१	..	..
फल (नारंगी आदि)	२६५	२०३	..
आलू	३१३	३२२	१३४१
इलायची और मसाला	..	१४६६	६०२

अन्न	तराई	कलिपोङ	पश्चिमी-तिस्ता
फुटकार (खाद्य)	६२०	२९१	.
फुटकार (अखाद्य)	३८६३	..	
योग	६३१०१	६१०२७	१५९६०

तराईकी भूमि बगाल और बिहारके पडोसी जिलों जैसी है। वहांका खेतीका ढंग भी वैसा ही है। पहाड़ी इलाकेमें फसलके अनुसार खेतीके ढग भी भिन्न है। यहा सूखी खेतीमें मकई, कोदो (मंडुआ) और फाफड़ होता है, और पानीवाली खेती चावलकी है। इलायची, आलू, नारंगी और साग-तरकारी पैसेवाली फसलें हैं, जहां तीखी चढ़ाई नहीं है, वहां खेतोंको हलमे जोता जाता है, नहीं तो कुदालीसे काम किया जाता है। किसान परमा (श्रमकी अदली-बदली) प्रथाका खेतीके कामोंमें उपयोग करते हैं। बहुत कम किसान ही मजूर रखते हैं। धानके खेतोंके लिये पानी आवश्यक है। इसके वास्ते बांस या लोहेके नलोंसे पानी पासके झोरों (नालों) से लाया जाता है। पहाड़में सीढ़ीकी तरह पतले खेत देखनेमें आते हैं। कुछ खेत तो इतने पतले होते हैं, कि उनमें हल चल नहीं सकता। कुदाली, फरुवा (फावड़ा), कांटा, हसिया, मारतोल (हथौड़ा), झम्पल किसानोंके आम हथियार हैं। नेपाली लोग खुकुरी और रोङ लोग चुप्पीका इस्तेमाल लकड़ी काटनेके लिये करते हैं। थुम्से (पीठकी टोकरी) और नम्लो (शिरमें लगानेकी रस्सी) ढुलाईके काममें आती है, और मानरो (चटाई) पर अनाज सुखाया जाता है। अनाज रखनेके लिये चटाईकी बनी भखारी (बखारी) काममें लायी जाती है। रोङ (लेप्चा) लोग अभी भी कहीं-कहीं हलकी जगह नोकदार लकड़ीसे खेती करते देखे जाते हैं। कुदाल और फावड़ा भी हल की अपेक्षा उन्हें अधिक पसंद है। जंगलसे घिरे खेतोंमें वह नारंगी और इलायचीकी खेती करते हैं नेपाली बड़े परिश्रमी कृषक हैं और वह अपनी जमीनके किसी भागको बेकार छोड़ना नहीं चाहते। उन के खेत बहुत अच्छे ढंगसे बने होते हैं। वह हल-बैलका पूरा इस्तेमाल करते हैं। भोट-भाषी और नेपाली गुरुङ पशुपालक जातियोंमेंसे होनेके कारण

खेतीकी ओर कम ध्यान देते हैं, और यदि खेती करते भी हैं, तो भी पशु-पालनकी सुविधाके लिये ऊँचे उन्नतांशोंमें रहना पसंद करते हैं।

(२) अनाज (क) मक्का—(भुट्टा) पहाड़की एक प्रधान फसल है। यह एक हजारसे ७००० फुटतक बोया जाता है, यद्यपि निम्न उन्नतांशोंमें फसल अधिक अच्छी होती है। इसके लिये खेतमें पानी रखनेकी आवश्यकता नहीं है, इसीलिये सूखा खेत अनुकूल होता है। फरवरीसे अप्रैल तक बोने का समय है और फसल अगस्त या सितम्बरमें तैयार हो जाती है। पहाड़में भालू और तराईमें जंगली हाथी इसके शत्रु हैं। उपज प्रति एकड़ ८ से १० मनतक होती है। कभी-कभी मकईके खेतमें भटमास (सोया), या मंडुआ भी बो देते हैं। मक्का काट लेनेपर फाफड़ और कभी कभी गेहूँ या सरसो भी बो देते हैं। पहाड़में मक्काकी खेती अनुकूल पड़ती है, यदि, कुछ खाद भी दी जा सके। जबतक पूरे इलाकेमें शुद्ध मक्का न बोया जाय, तब तक उसकी जातिको शुद्ध रखना असंभव है।

(ख) मंडुआ (कोदो)—इसे इधरके पहाड़ोंमें कोदो कहते हैं, यद्यपि मधेस (उत्तर प्रदेश और बिहार) में कोदो और मंडुआ दो अलग-अलग अनाज हैं। कोदोका चावल होता है, जिसे भात बनाकर खाते हैं, जब कि मंडुआ रोटीके तौरपर खानेमें आता है। यहांका कोदो वही हमारा रोटी वाला मंडुआ (रागी) है। यह १००० से ५००० फुट तककी ऊंचाईपर होता है। बीज अप्रैल और मईमें डाल दिया जाता है, जिसे जून-जुलाईमें रोपा जाता है और फसल अक्तूबर-नवम्बरमें तैयार होती है। इसकी उपज ५ से ८ मन प्रति एकड़ होती है। इसका अधिकतर उपयोग जांड़ (कच्ची शराब) बनाने में होता है।

(ग) फाफड़—यह ऊंचे उन्नतांश पर (७००० फुट) तक बोया जाता है। बोनेका समय अगस्त-सितम्बर है और काटनेका दिसम्बर-जनवरी। उपज प्रति एकड़ ६ मनके करीब होती है। मधेसमें फाफड़ फलाहार समझा जाता है, जिसे लोग व्रत के दिनोंमें खाते हैं।

(ग) जौ-गेहूँ—जौ, गेहूँ (और सरसों भी) इधरके पहाड़ोंमें अधिक नहीं बोया जाता। इनकी खेती ५००० फुटतक होती है। बोनेका समय सितम्बर-अक्तूबर है और काटनेका जाड़ोंका अन्त।

(ङ) चावल—चावल या धानकी खेती तराई भूमिसे लेकर ५००० फुट की ऊंचाईतक की जाती है। पहाड़में इसे पानी-खेतमें रोपा जाता है। बीज पहिले ही अप्रैल-मईमें डाल देते हैं। रोपनेका समय जुलाई-अगस्त है और काटनेका नवम्बर-दिसम्बर। उपज १२ मन प्रति एकड़ होती है, किन्तु तराईमें फसल इससे दूनी हो जाती है। कुछ मात्रामें घेया (गाठी या मरुई धान) भी पहाड़में पैदा होता है।

(च) आलू—आलू सबसे ऊंची जगह (९००० फुट) तक बोया जाता है। इसके लिये खादकी आवश्यकता होती है। किसी-किसी जगह सालमें आलूकी दो फसलें होती हैं— एक अक्तूबरमें बोयी और जनवरी-फरवरी में खोदी जाती है, दूसरी जनवरी-फरवरीमें बोयी और जुलाईमें खोदी जाती है। आलू प्रति एकड़ ३० से १५० मनतक पैदा होता है। इस जिलेमें खानेके आलूके अतिरिक्त बीजके रूपमें बाहर भेजनेके लिये आलू बहुत पैदा किया जाता है।

२—बाग-बगीचे

(१) इलायची—यहां बड़ी या काली इलायची होती है, जो १००० से ५००० फुटतक लगती है। इसकी फसलके लिये उर्वर भूमि, छाया, कुछ गरमी और काफी सिंचाईके पानीकी आवश्यकता होती है। फसल आमतौरसे सितम्बरके बाद तैयार होती है। नयी जगह इलायचीका बाग लगानेके लिये पहिले बीज बो दिया जाता है, फिर उसे मई या जूनमें दो चार फुटके फासलेपर रोप दिया जाता है। नया इलायचीका खेत दो बरस बाद फसल देता है। तीसरे साल फसल आधी ही होती है। फिर प्रायः आठ सालतक वह पूरी फसल देता रहता है। उपज प्रति एकड़ ६ मनसे अधिक होती है। १० बरस के बाद पौधा बूढ़ा हो जाता है, और

उपज कम देने लगता है, तथा कीड़े भी लग जाते हैं। अप्रैल-मई इलायचीके फूलनेका समय है। सितम्बरमें जड़से मालाकी भांति इलायचीकी फलियां तोड़कर भट्ठीकी गरमीमे सुखा ली जाती है।

(२) **नारंगी**—दोर्जेलिङ् और सिक्किमकी यह सबसे मूल्यवान फसल है। इसका विस्तार भी बहुत बड़ा है। यहांकी ९० प्रतिशत नारंगी बाहर भेज दी जाती है। नारंगीकी दो जातियां हैं, एक छोटी तथा तने छिलकेकी होती है और दूसरी बड़ी तथा ढीले छिलके की। २००० से ४००० फुट तककी ऊंचाई नारंगीके लिये बहुत अनुकूल होती है। सिक्किम नारंगीके लिये बहुत प्रसिद्ध है। वहांसे नये पौधे लाकर मई-जून में लगा दिये जाते हैं। एक एकड़में साठ पौधे लगते हैं। ८ बरसमें बगीचा फल देने लगता है और २५ बरसतक फल देता रहता है। वृक्षों के बीच अधिक अंतर रहनेसे फल भी बड़े और अधिक होते हैं। एक एकड़ में प्रति वर्ष ८००० से अधिक नारंगियां निकलती हैं। आमतौरसे नारंगी की फसलमें बीमारी कम लगती है।

(३) **अनन्नास**—तराई और पहाड़ दोनोंमें अनन्नासकी फसल होती है। हर साल इस जिलेसे ५, ६ लाख फल बाहर भेजे जाते हैं। सिंगापूर-अनन्नास ज्यादा अच्छा समझा जाता है और वह ४००० फुटतक होता है।

इनके अतिरिक्त नीबू, जम्बीर, नासपाती, आड़ू और केला भी इस जिलेमें बहुत होता है। सिक्किम में लाछेन और लाछुङमें अच्छे किस्मके सेब पैदा होते हैं। नासपाती और आड़ू यहांके उतने अच्छे नहीं होते, कारण वर्षाकी अधिकता है।

(४) **तरकारियां**—फूलगोभी, गांठगोभी, मटरकी फलियां, अस्परेगस, सेलेरी, मूली, टोमेटो आदि बहुत तरहकी तरकारियां दोर्जेलिङसे कलकत्ता जाती हैं। भिन्न-भिन्न उन्नतांशोंके अनुसार भिन्न-भिन्न महीनोंमें एकही चीज-की फसलें होती हैं, इसलिये बहुत-सी अकालिक तरकारियां यहां सुलभ हैं। अविभक्त भारतमें तरकारियां यहांसे दूसरे दिन कलकत्ते पहुंच जाती

थी। अब उक्त रेल लाइन का अधिक भाग पाकिस्तानमें होनेसे चीजोंके भेजनेमें अड़चनें बढ़ गई हैं। तो भी दार्जीलिङ्की तरकारियां कलकत्ताके बाजारमें पहुंचती हैं।

३—पशु-पालन

(१) **गाय**—तराईमें वही ग्रामीण पशु मिलते हैं, जो दूसरे मैदानी जिलोंमें, किंतु पहाड़में कई प्रकारके पशु पाये जाते हैं। सन् १९४० ई० में इस जिलेमें १०२३६६ ढोर थे। पहाड़में बैलोंको बधिया करनेका रवाज कम है। मैदानकी अपेक्षा यहांके गाय-बैल निम्न श्रेणीके होते हैं, क्योंकि इसमें कारण चराई और आहारकी कमी भी है। नेपाली बैल (सिरी) सुन्दर पशु है। ये पहाड़ी भूमिमें चलनेमें पक्के तथा परिश्रमी होते हैं। इनको अच्छी चराई चाहिये, जिसकी कमीके कारण अब शुद्ध सिरी गाय-बैल सिक्किम और भूटानके दूरके भागोंमें ही प्राप्य हैं। जिलेके भीतर पश्चिमोत्तर नेपालकी सीमामें भी इस जातिके गाय-बैल मिलते हैं। सिरी गायें प्रतिदिन ६ सेर दूध देती हैं, जिसमें १० प्रतिशत मक्खन होता है। वह साधारण तौरसे ८ महीने दूध देती हैं। सिरी गायोंकी दोगली नसल १० से १६ सेर तक प्रतिदिन दूध देती है, यद्यपि उसमें घीकी मात्रा उतनी नहीं होती। अधिक दूधकी लालचसे दोगली नसल करनेके कारण भी शुद्ध सिरी जातिकी गायें अब लुप्त-सी हो चुकी हैं।

नेपाली गायें सिरीसे छोटी होती हैं। यह २ से ३ सेरतक दूध देती हैं, जिसमें मक्खनकी मात्रा अधिक होती है। नेपाली गायसे की हुई दोगली नसल सिरी-खच्चर है, जो ६ सेर तक दूध देती है। भूटानी या मिथुन गाय ऊंचे उन्नतांशोंके लिये अच्छा जानवर है। यह तीन या चार सेर दूध दे देती है। प्रथम विश्वयुद्धके आस-पास कई ब्रिटिश और यूरोपीय जातिकी गायें यहां लायी गयीं और उनके साथ संकर करनेसे अधिक दूध देने वाली नसलें तैयार हुईं। वह खेतीके कामके लिये अधिक उपयुक्त नहीं हैं; यद्यपि दूध अच्छा देती हैं। पहाड़ी लोग अपनी गायों-

की अच्छी सेवा करते है, लेकिन चरानेकी कठिनाईके कारण अधिकतर लोग घरमें रखकर खिलानेके लिये मजबूर हैं। अधिक दूध देनेवाली गायोंको बाहर चरानेके लिये भेजनेमें इसलिये भी संकोच किया जाता है, कि कहीं उनपर बुरी नजर न लग जाये; लेकिन इसका पशुओंके स्वास्थ्यपर अच्छा प्रभाव नहीं होता। यहां मुंह और खुरकी बीमारी कभी-कभी हो जाती है। जिलेकी २० प्रतिशत गायें यक्ष्मा रोगसे पीड़ित हैं। ६ सेर से १० सेर प्रतिदिन दूध देनेवाली गायोंका दाम लड़ाई-के दिनोंमें डेढ़ सौसे साढ़े तीन सौ था।

(२) **भैंस**–पहाड़ी इलाकेमें भैंसें बहुत कम पाली जाती है और वह भी बहुत नीचेके उन्नतांशमें ही। सन् १९४० ई० में सारे जिलेकी ११०११ भैंसोमें सिर्फ १९८२ पहाड़ी इलाकेमें थीं। पहाड़में इनको रखना बहुत कठिन है। वह दूध अधिक नहीं देतीं और खेतीके भी कामकी नहीं हैं। हां, मांसके लिये इनकी मांग अधिक है और झुंडकी झुंड भैंसें इसी कामके लिये खरीदकर नीचेसे पहाड़में भेजी जाती हैं। सन् १९४१ ई० में जब भैंस-का मांस छः आना सेर था, साढ़े पांच मनकी भैंस ४२ रुपयेमें बिकती थी। सन् १९४४ ई० में उसका दाम १८० रुपया पहुँच गया था और मांसका दाम एक रुपया सेर। आजकल मांस डेढ़ रुपया सेर है, जब कि साधारण भेड़ बकरीका तीन रुपया सेर है।

(३) **घोड़ा**–भोटिया टांघन पहाड़में सवारीके लिये बहुत अच्छा होता है। यह अधिकतर भूटान, सिक्किम या तिब्बतसे लाया जाता है। दूसरा टांघन पंथारी है, जो जिलेकी सीमापर नेपाल और सिक्किममें पाला जाता है। यह अधिकतर बोझा ढोनेका काम करता है। सन् १९४० ई० में इस जिलेमें ३००० घोड़े थे।

(४) **बकरियां**– सिंजाली शुद्ध पहाड़ी बकरी है, जो आकारमें बड़ी होती है। इसके सींग और बाल भी लंबे होते हैं। पहाड़ी जातिकी बकरी आकारमें कुछ छोटी होती है। मांसके लिये आवश्यक ६० प्रतिशत बक-रियां बाहरसे मंगाई जाती हैं। सन् १९४१ ई० में मांस १४ आना सेर था,

जब कि २५ सेरकी बकरीका दाम २२ रुपये होते थे। सन् १९४४ ई० में मांस २ रुपया सेर हो जानेपर भी बकरीका दाम ५५ रुपया तक चढ़ गया। आजकल मांसका भाव तीन रुपया सेर है। सन् १९४१ ई० की गणनामें जिले में ५४००० बकरियां थीं।

(५) भेंड़– इनकी भी कीमत बकरियों जैसी है। लाम-पुच्छरी भेड़की पूंछ लम्बी होती है। यह केवल रिलिगोड़ी सब-डिवीजनमें मिलती है। घेव भेड़ा अधिक बड़ा होता है। गुरुङ लोग भेड़ें अधिक पालते हैं। बरसातमें वे अपनी भेड़ोंको ऊँचे पहाड़ोंपर ले जाते हैं और जाड़ोंमें नीचे उतार लाते हैं। बनपाला जातिकी भेड़ोंके कान लम्बे तथा जबड़ों तक लटकते रहते हैं। मांसके लिये खर्च होनेवाली भेड़ोंमें ६० प्रतिशत बाहरसे लाई जाती हैं।

(६) सूअर–इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है, सन् १९४० ई० में सिर्फ ५७३५ पालतू सूअर थे। मगर, राई, लिंबू, तमङ, रोङ (लेप्चा) और भूटानी जैसी थोड़ी-सी जातियां ही सूअर पालती हैं। मैदानी सूअर (हररा) से पहाड़ी सूअर (पुरमी) का मांस अच्छा होता है। सन् १९४१ ई० में, जब सूअरका मांस १० आना सेर था, डेढ़ मनका सूअर १८ रुपयेमें बिकता था। सन् १९४४ ई० में मांस दो रुपया सेर हो गया और दाम भी बढ़कर ७० रुपया हो गया। आजकल मांस ढाई रुपया सेर है। आम-तौरसे लोग देशी सूअर ही पालते हैं, लेकिन एकाध जगह यार्कशायरके जैसे विलायती सूअरोंके पालनेके लिये भी फार्म खोले गये थे, किंतु इधर युरोपियनोंकी कमी होनेके कारण ऐसे फार्म बंद होते गये।

(७) मुर्गी–सिक्किमी मुर्गा बड़ा होता है और स्याकिनी छोटा। इन्हीं दो जातोंके मुर्गे यहांकी जलवायुके अनुकूल हैं। छ महीनेकी मुर्गियां अंडा देने लगती हैं। यहांकी मुर्गियां अंडा देनेमें अच्छी हैं। सफेद लघोर्न, काला-मिनोरका जातिकी मुर्गियां भी पाली गयीं, किंतु वह जल्दी रोगाक्रांत हो जाती हैं।

४—चायबगान

(१) आरंभ—दोर्जेलिङ जिलेमें २५९ वर्गमील जमीन चायबगानोंको दी गई है और चाय यहांकी आयका एक बहुत महत्त्वपूर्ण स्रोत है। सन् १८२१ई० में आसाममें जंगली चायके पौधेका पता लगा। सन् १८३४ ई० में गवर्नर जेनरल लार्ड बेंटिकने भारतमें चायकी खेतीके बारेमें सलाह देनेके लिये एक समिति नियुक्त की। कंपनीकी सरकारने ऊपरी आसाम, कुमाऊं और गढ़वालमें चाय लगानेका प्रयोग किया। सन् १९३९ ई० में आसाम-चाय-कंपनीने पहिले-पहिल चायकी खेतीका व्यवसाय आरंभ किया। सन् १८३९ ई० में जब डाक्टर कैंपबेलकी नियुक्ति दोर्जेलिङमें हुई, तो उसने चायकी खेतीका प्रयोग आरंभ किया। उसकी सफलताके बाद सरकारने बीज वितरित करके दूसरोंको इसके लिये प्रोत्साहन दिया। सन् १८५२ ई० में सूचित किया गया, कि आसामी और चीनी दोनों प्रकारकी चायकी झाड़ियां दोर्जेलिङके बगीचेमें अच्छी तरह बढ़ रही हैं। सन् १८५६ ई० तक प्रयोग इतना सफल रहा, कि अब व्यवसायी ढंगसे चायबगानोंका विस्तार किया जा सकता था। तकवार, खरसान्, पंखाबाड़ी और दूसरी जगहोंमें चायके बगीचे लगाये जाने लगे। खरसान् और दोर्जेलिङ चाय-कम्पनीने सन् १८५६ ई० में आलूबाड़ी चायबगान आरम्भ किया। दोर्जेलिङ भूमि बंधक बंकने लेबोङमें बाग लगाया। सन् १८५९ ई० में धतुरिया बगान और सन् १८६० ई० तथा सन् १८६४ ई० के बीच गीङ, आम्बोटे, तकदा और फूपछेरिङके बगीचे दोजलिङ-चाय-कम्पनीने स्थापित किये और तकवार तथा बदमताम्में लेबोङ-चाय-कम्पनीने अपने बगीचे लगाये। इसी समय मकईबाड़ी, पन्दम आदिके भी बगीचे आरंभ हुए। तराईमें चायका तजरबा पहिलेहीसे आरंभ हुआ था, किंतु पहिला बगीचा सन् १८६५ ई० में खपड़ैलके नजदीक चमतामें खोला गया। सन् १८६६ ई० तक और भी कई चाय-बगान लग गये।

(२) वृद्धि—भूमि और जलवायुकी अनुकूलताके कारण चायबगानों-

का विस्तार बड़ी तेजीसे हुआ। सन् १८६६ ई० के अंत तक १०००० एकड़ के ३९ बगीचे लग गये। उस साल ४३३००० पौंड चायकी उपज हुई। सन् १८७० ई० में ११००० एकड़के ५६ बगीचे थे, जिनमें ८००० मजूर काम करते थे, और उपज १७०८००० पौंड थी। आगे चायका विकास निम्न प्रकार हुआ—

सन्	बाग	एकड़	उपज (पौंड)
१८७४	११३	१८८८८	३९२८०००
१८८५	१७५	३८४९९	९०९०५००
१८९५	१८६	४८६५२	११७१४५००
१९०५	१४८		
१९१०	१४८	५१२८१	१४१३७५००
१९१५	१४८	५४०२४	२०३०३५००
१९२०	१४८	५९३५६	१५८५००००
१९२५	१४८	५९३५६	१८७३२५००
१९३०	१४८	५९३५६	२०८७०५००
१९३५	१४८	५९३५६	२०७९८००० (काली)
			२२८००० (हरी)
१९४०	१४२	६३०५३	२२७४३००० (काली)
			३७८५०० (हरी)

सन् १९४० ई० के बाद भी चायकी उपज बढ़ी, सन् १९४२ ई० में २६४७८५०० पौंड काली और १२४२००० पौंड हरी चाय पैदा हुई। सन् १९४३ ई० में यह मात्रा २५५९२००० पौंड और २५७२५०० पौंड थी। कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें चायबगान लगानेके लिये सरकारने भूमि नहीं दी, इसलिये वहां चायके बगीचे नहीं स्थापित हो सके। जिलेके भिन्न-भिन्न थानोंमें चायके बगीचोंकी संख्या इस प्रकार है—

थाना	चायबगान (संख्या)
दोर्जेलिङ	१९
जोरबंगला	१६
सुखिया पोखरी	९
पुलबाजार	२
रङ्ली-रङ्लिओत	९
खरसान्	२५
मिरिक	५
सिलिगोड़ी	२७
खरीबाड़ी	११
फांसीदेवा	१३
कलिम्पोङ	०
गोरूबथान	६
	१४२

सन् १९१० ई० में १२३८५३ एकड़-भूमि चायके ठीकेमें थी, जिसमें २१२८१ एकड़में चाय लगी हुई थी। सन् १९२० ई० में यह भूमि क्रमशः १४२१५२ और ५९३५६ एवं सन् १९४० ई० में १६७९७२ तथा ६३०५९ हो गयी। सन् १९४३ ई० में ठेकेमें १६५६८० एकड़ जमीन थी, जिसमें २२००० एकड़ अर्थात्, ५८.८ वर्गमीलमें चायका बाग लगा था। आज भी चायके बागोंका विस्तार होना बंद नहीं हुआ है। दोर्जेलिङ जिलेमें प्रति एकड़ चायकी उपज (पौंड) जल्पाईगोड़ीकी तुलना में निम्न प्रकार है—

सन्	दोर्जेलिङ	जलपाईगोड़ी
१९१०	२८०	.
१९१५	३९२	..
१९२१	२५२	४२६
१९२५	३२७	६६१

सन्	दोर्जेलिङ	जलपाईगोड़ी
१९३०	३५३	६१६
१९३५	३५३	५८९
१९४०	३८३	७२५

यद्यपि जलपाईगोड़ीमें प्रति एकड़ चायकी उपज अधिक है, लेकिन दोर्जेलिङकी चाय बहुत अच्छी समझी जाती है—दूसरे देशोंकी चायोंसे भी उसे अच्छा समझा जाता है। कलकत्ताके नीलाममें दोर्जेलिङकी चायका भाव प्रति पौंड निम्न प्रकार रहा है—

सन्	आना	पाई
१९१०	८	९
१९१५	१०	९
१९२०	७	५
१९२५	१६	०
१९३०	१४	९
१९३५	१२	८
१९४०	१६	०

सन् १८७० ई० में जहां चायबगानोंमें ८००० मजूर काम कर रहे थे, वहां सन् १९२१ ई० में वह ६६२७९, सन् १९४० में ६१५४० थे। १९४१ ई० की जन-गणनाके अनुसार चायबगानोंमें रहनेवाले सभी लोगोंकी संख्या १४६५०८ थी, जो कि भिन्न-भिन्न सब-डिवीजनोंके साथ थानोंमें निम्न प्रकार बँटी थी—

सब-डिवीजन	थाना	मजूर
सदर	दोर्जेलिङ	२४०४८
	जोरबंगला	२१५९४
	सुखिया पोखरी	१४३५८
	पुलबाजार	९३०१
	रंङ्गली-रंङ्गलियोत	१३२०२

सब-डिवीजन	थाना	मजूर
खरसान्	खरसान्	२०५९६
	मिरिक	१८७१०
कलिम्पोङ	कलिम्पोङ	०
	गोरुबथान	६०९४
सिलिगोड़ी	सिलिगोड़ी	१३८६७
	खरीबाड़ी	५९९९
	फांसीदेवा	८७१९

तराईके चायबगानोंमें २८५२५ मजूर काम करते थे, जिससे प्रकट है, कि तराईमें भी चायके बगान काफी हैं। छोटी लाइन से जाते या विमानसे उड़ते समय ये बगीचे सिलिगोड़ीसे पहिले बहुत दूर तक फैले हुए दीख पड़ते हैं। चायके बगीचे तराईमें ३०० फुटसे दोर्जेलिङ नगर के पास ६००० फुटकी ऊंचाई तक लगाये गये हैं। दोर्जेलिङकी चाय अपने स्वादके लिये सारी दुनियामें विख्यात है। निम्न तापमानमें उगनेके कारण उसके पत्तोंमें ये गुण पाये जाते हैं। जिन महीनोंमें तापमान और नीचे गिर जाता है, उन महीनोंकी पत्तियां और भी अच्छी होती हैं।

(३) **चायरोपण**—चायका पौधा साधारण तोरसे बीजसे उगाया जाता है। बीजके फूट निकलनेके बाद ६ माससे तीन बरस तक पौधों-को प्ररोहशालामें रखा जाता है, फिर उन्हें बगीचेमें चार फुटके अंतर-से लगा दिया जाता है। पहाड़में चायकी झाड़ी सात बरसमें वयस्क हो जाती है। दोर्जेलिङके सारे चायबगानोंमें चीनी जातिके संकरित पौधे लगे हैं, जिनमेंसे कितनोंकी आयु अब १०० वर्ष के करीब हो गयी है। बहुत-सी झाड़ियोंको नया कर दिया जाता है, क्योंकि ऐसा करनेसे अच्छी किस्मकी पत्तियां निकलती हैं, और पहिलेकी अपेक्षा तीन गुनी अधिक उपज भी होती है—प्रारंभिक झाड़ियां प्रति एकड़ पांच मन कच्ची चाय देती थी। चायबगानोंमें रासायनिक खाद

देनेका आम रवाज है, जिसके लिये अमोनिया सल्फेटका अधिक उपयोग होता है। इसका खर्च प्रति एकड़ दो सौ पौंड तक होता है। आजकल बागको बार-बार खोदना अनावश्यक समझा जाता है, यद्यपि निराई करना आवश्यक है।

(४) **चाय-निर्माण**—चुनते समय हर एक डालीकी सबसे ऊपर वाली दो-दो पत्तियां तथा पत्रकुड्मल तोड़ लिये जाते हैं। चुनी हुई पत्तियोंको १८ घंटे ढांचोंपर रखकर मुरझाने दिया जाता है। ऐसी ३०० पौंड मुरझाई पत्तिया एक रोलरमें आ जाती हैं, जिनसे १०० पौंड चाय तैयार होती है। रोलरमें घूमनेपर पत्तियां हरे रंगको छोड़ पीली और अंतमें ताम्रवर्ण हो जाती है, और उनके स्वादमें भी परिवर्तन हो जाता है। पत्तियां ९० मिनट तक रोलरमें गर्म और ठंडीकी जाती हैं, फिर सीझनेके लिये पतली तहमें फैला दी जाती है। यह सारी क्रिया रोल करने-के समयसे साढ़े तीन घंटेमें पूरी होती है। सीझी पत्तियोंको २०० डिग्री (फारेनहाइट) गरमी देनेवाली मशीनपर सुखाया जाता है, जिसमें २५ मिनट लगते हैं। अब पत्ती काली तथा सूख गई रहती है, यद्यपि अब भी उसमें ३ प्रतिशत आर्द्रता रहती है। सुखा देनेके बाद चाय तैयार करने-की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। इसके बाद तो भिन्न-भिन्न आकारकी पत्तियोंके अलग करने और मिलाने तथा पैकिंग-संबंधी दूसरे काम होते हैं। आमतौरसे चूर्णसे लेकर आध इंच लंबी पेको-पत्तीतक पत्तियोंको नौ प्रकार-के आकारमें छांटा जाता है। आजकल पत्तियां प्लाईवूड (कृत्रिम काष्ट-फलक) के बक्सोंमें बंद की जाती हैं, जिनके भीतर धातु या कागजकी तह लगी रहती है। पहाड़में ढुलाईकी आसानीके लिये ये बक्स ६५ से ९० पौंडके तैयार किये जाते हैं, नीचेके लिये और अधिक भारी बक्स बनते हैं। अधिकांश चायकी फैक्टरियां अपनी पनबिजलीसे चालित होती हैं, कुछको दार्जिलिङ-म्यूनिसिपैलिटी बिजली देती है और कितनों-ने बिजली पैदा करनेके लिये डीजेल इंजन लगा रखे हैं। कुछ चाय-कंपनियों-

के पास माल ढोनेके लिये रज्जुमार्ग (रोपवे) भी हैं, और दूसरी घोड़े या लारीसे ढुलाई करती हैं।

(५) व्यवसाय और मजूर—चायबगानोंमें ९६ प्रतिशत मजूर नेपाली हैं, किन्तु तराईमें सात ही सैकड़ा। अभी हाल तक मजूरोंकी भरती सरदार करते रहे हैं, जो प्रति मजूर तीन से पांच रुपया साल कमीशन पाते रहे। इसके अतिरिक्त भी वह मजूरोंको चूसने और चायबगानके मालिक साहबों-को खुश रखनेकी कोशिश करते हैं। साहबों और सरदारोंकी ओरसे पूरी कोशिश की जाती रही है, कि मजूर संगठित न हो सकें। प्रायः सभी चायबगान भारतके स्वतंत्र होनेके बाद भी अंग्रेजोंके हाथमें हैं—भारतीयोंने नाममात्रही चाय-व्यवसायमें हाथ लगाया है—वहां उत्पादनसे लेकर दलाली और बिक्रीतक सारे कामोंमें अंग्रेजोंकी इजारादारी थी, इसलिये भारतीय व्यवसायी भीतर घुस नहीं सकते थे। दो-तीन कम्पनियां भारतीयोंके हाथोंमें थीं। जहांतक मजूरोंका सवाल है, अभी उनकी पूछ नहीं है, और सरकारी सहयोगसे मालिकोंका ही बोलबाला है। चायबगानमें काम करनेवाले मजूरोंमें ३९ प्रतिशत पुरुष, ४३ प्रतिशत स्त्री और १८ प्रतिशत बच्चे हैं। सन् १९४७ ई० में ये प्रति-शत ३४, ४९, १७ थे। फरवरीमें कामकी सबसे अधिक भीड़ रहती है इस वक्त पुरुष मजूरोंकी मांग अधिक होती है। मार्च-अप्रैल और सितम्बर-नवम्बर पत्ती चुननेका समय है, जब कि स्त्रियोंकी मांग अधिक होती है। मईसे सितम्बरतकके वर्षाके दिनोंमें काम बहुत कम रहता है। इस समय पहाड़में पेचिश और तराईमें मलेरियाका प्रकोप रहता है। मजूरी देनेके तरीके हैं, एक प्रति-सेर पत्ती (युद्धके समय-दो पैसा) और दूसरे प्रति-बीघाकी दर। लड़ाईके समय फैक्टरीके साधा-रण मजूर ९ रु० मासिक पाते थे, दफादार १४ रुपया और चौकीदार तथा दूसरे १२ से १६ रुपया तक। मंहगाई भत्ता दोसे साढ़े तीन रुपये मासिकतक फैक्टरी-मजूरोंको मिलता था, दूसरे मजूरोंको वह एक आना रोज और बच्चोंको आध आना रोज दिया जाता था। इधर मजूरी

बढ़ी जरूर है, किन्तु जिस परिणाममें अन्न-वस्त्र महंगा हुआ है, उस परिणाममें नहीं।

यद्यपि चाय-बगानके मजूरोंके संगठनमें भारी-भारी अड़चनें हैं, किन्तु मालिकोंके संगठन—दोर्जेलिङ प्लान्टर एसोसियेशन और भारतीय प्लान्टर एसोसियेशन—पहिलेही से मौजूद हैं। यही नहीं जिलेके सभी चायबगानोंके मालिकोंका एक प्रतिनिधि बंगालकी व्यवस्थापिका-सभामें भी भेजा जाता रहा

५—जंगल

जिलेके अधिकांश जंगल रक्षित-वन हैं और बंगाल-सरकारके जंगल-विभागके प्रबंधमें हैं। रक्षित-वनमें असम्मिलित कुछ जंगल खासमहालके भीतर हैं। सन् १८३५ई० में, जब सिक्किमसे जिलेका मूल भाग लिया गया, उस समय पूरबमें बयाल और बालासान नदियोंसे पश्चिममें रङनू और महानदी तक सारी पर्वत-भूमि जंगलोंसे ढंकी थी, यही बात मेची—बालासान तथा तिस्ता—महानदीके बीचके पहाड़ोंकी भी थी, जिसे अंग्रेजोंने सन् १८५० ई० में लिया। सन् १८६५ ई० में कलिम्पोङ सब-डिवीजन जब लिया गया, तो वहां भी केवल ३५३६ आदमी बसते थे और सभी भूभागमें घना जंगल था। इसके बाद बसनेवाले आने लगे, जंगल कटने लगे। आज तो जंगल बहुत कम रह गया है। जंगल-विभाग-के हाथके जंगलोंमें भी कितने ही जंगलोंवाले गांव हैं। जिनमें सन् १९४१ ई० में १००१४ आदमी बसते थे। इनका विवरण है—

नेपाली	८६९५
दूसरे पहाड़ी	८४६
मैदानी हिन्दू	२३५
अनुसूचित जातियां	१९५
मुस्लिम	३८
अन्य	५

जिलेका जंगल तीन विभागों (सब-डिवीजनों) में बाटा है, जिसके रेंज निम्न प्रकार हैं—

दार्जेलिङ— ७ रेंज—(१) निम्ना—उपत्यका
(२) तकदा
(३) मिचेल
(४) घूम-सिमाना
(५) तङ्लू
(६) सिङलीला
(७) दार्जेलिङ

खरसान्— ५ रेंज—(१) सिवोक
(२) सुकना
(३) पंखाबाड़ी
(४) बागडोगरा
(५) खरसान्

कलिम्पोङ— ६ रेंज—(१) कलिम्पोङ
(२) पंखासार
(३) चेल
(४) नेवरा
(५) जलढका
(६) उढारित

जंगल-विभागके अफसरों और कर्मचारियोंकी संख्या निम्न प्रकार है—

दार्जेलिङ डिवीजन—१ गजतित अफसर, ७ रेंजर, ५ उपरेंजर, १० फारेस्टर, ८ क्लर्क और ७० जंगल-गार्ड।

खरसान् सब-डिवीजन—४ गजतित अफसर, ६ रेंजर, ५ उपरेंजर, ११ फारेस्टर, ७ क्लर्क और ४६ जंगल-गार्ड।

कालिम्पोङ डिवीजन–६ रेंजर, ५ उपरेंजर, १० फारेस्टर, ११० जंगल-गार्ड तथा दूसरे ।

जिलेके जंगलोंका आय-व्यय कुछ सालोंका निम्न प्रकार रहा–

सन्	आय (रुपया)	व्यय (रुपया)
१९२५–२६	४९१०००	३१८५००
१९३०–३१	६५४०००	३९७५००
१९३५–३६	४२८५००	३७९५००
१९४०–४१	४२१५००	३२२५००
१९४१–४२	५८४०००	३८८०००
१९४२–४३	९४९५००	..

तिस्ता नदीके पश्चिमवाले इलाकेके उत्तरी भागमें पर्वतोंके रीढ़ों-पर जंगल हैं और महारंगित तथा तिस्ता नदीके किनारोंपर पहाड़ोंकी खड़ी उतराई जंगलोंसे ढंकी है ।

दोर्जेलिङ सब-डिवीजन–इसके जंगल ६०० फुट (तिस्ता-उपत्यका) से लेकर १२००० फुट (सन्दक्पू) तक फैले हुए हैं । दोर्जेलिङ सब-डिवीजन मे ७२७८१ एकड़ जंगल है ।

खरसान् सब-डिवीजन–इस सब-डिवीजनमें ७१९५१ एकड़ जंगल है, जिसमें ५८ एकड़ पिछले २० सालोंमें बढ़ा है । सन् १९२६ ई० के बाद जंगलोंमें वृद्धि नहीं हुई है ।

कालिम्पोङ सब-डिवीजन–इस सब-डिवीजनकी ४१२ वर्गमील भूमि में २१० वर्गमील जंगल है, जो तिस्ता नदीके बायें तट और जलपाईगोड़ी की उत्तरी सीमाके साथ-साथ है । इस सब-डिवीजनके कुछ जंगल ४००० से ५००० फुटकी ऊंचाईपर ही हैं ।

इस प्रकार सारे जिलेका रक्षित-वन ४३७ वर्गमील है, जिसका विवरण इस प्रकार है,–

दोर्जेलिङ विभाग	७३००० एकड़
खरसान् विभाग	७२००० ,,
कलिम्पोङ विभाग	१३५००० ,,
	२८०००० एकड़

इनके अतिरिक्त तराईमें भी थोड़ा सा जंगल है।

६—सिनकोना बगान

(१) **आरम्भ**—सिनकोना, जिसकी छालसे कुनैन बनायी जाती है, मूलतः दक्षिणी अमेरिकाके बोलिविया और पेरुका पौधा है। स्पेन-द्वारा जीते जाने के बाद जब ईसाई मिशनरी वहां पहुंचे, तो उन्हें इसका शीत-ज्वर-नाशक गुण मालूम हुआ। लेकिन यूरोपमें इसे सन् १६३९ ई० (शाहजहां के शासन-काल) में पेरुके स्पेनी वाइसरायकी बीबी सिनकोनाने पहुंचाया और उसीके नामपर इस पौधेका नाम सिनकोना पड़ा। सिनकोनाकी छालसे कुनैन पहिले-पहिल सन् १८२० ई० में फ्रांसमें निकाली गई। कुनैनकी मांग और बढ़ी, जिससे एक ओर उसका मूल्य बहुत बढ़ गया और दूसरी ओर दक्षिणी अमेरिकाके सिनकोना-जंगलोंके नष्ट होनेका डर पैदा होने लगा। इंग्लैंडने सन् १८३५ ई० में हास कार्लके नेतृत्वमें एक अभियान दक्षिण-अमेरिका भेजा, जिसने वहांसे बीज लाकर जावामें सिनकोनाकी खेती शुरू की। सन् १८५९ ई० में क्लेमेंट मर्खमके नेतृत्वमें एक ब्रिटिश अभियान भेजा गया, जिसके फल-स्वरूप भारतमें सिनकोनाकी खेती आरंभ हुई। बहुत समय तक जावा और भारतके बगीचे ही सिनकोना प्रदान करते थे। लेकिन २०वीं सदीकी पहिली दो दशाब्दियोंमें पूर्व-अफ्रीका, मध्य-अमेरिका, मलयू, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हिन्दचीन और कोरियामें भी खेती शुरू होगई। सोवियतने भी काकेशशमें सिनकोनाके बगीचे लगाये। मर्खमके अभियानकी अधिकांश सामग्री उटकमंड (नीलगिरि) में ले जाई गई, जहां १०० एकड़

सिनकोना-बाग लगाया गया, जिससे प्राप्त नमूनेको फिर कलकत्ताके सर-कारी वनस्पति-उद्यानमें लगाया गया। उसके अध्यक्ष डाक्टर एंडरसन डच-ढंगका अध्ययन करनेके लिये सन् १८६१ ई० में जावा भेजे गये, और बहुतसे स्वस्थ पौधोंके साथ लौटे, जिनमेंसे कुछ उटकमंड भेज दिये गये और कुछ बंगालमें रखे गये। दोर्जेलिङमें पहिली पौधशाला सिंचेल (दोर्जेलिङ) में लगाई गई, किंतु वहांका जलवायु अधिक कठोर देखकर उन्हें लेबोङमें परिवर्तित कर दिया गया। यहां वे पौधे अच्छी तरह बढ़े। फिर एक स्थायी बागके लिये अनुकूल स्थान ढूढ़ते हुए रङबीको पसंद किया गया। सन् १८६१—६९ई० के बीच वैज्ञानिक परीक्षण और बागकी समस्याओं का अध्ययन होता रहा। सन् १८६९—७०ई० में थोड़ी मात्रामें छाल निकलनी शुरू हुई। उस वक्त पांच जातिके सिनकोना पौधे लगाये गये थे। मद्रास प्रदेशमें नीलगिरि तथा दूसरी जगहोंमें सिनकोनाके बाग अब भी लगे हुए हैं। उत्तरी भारतमें रङबी (रोङजो) के बगानको बढ़ाया गया और फिर रियाङ-उपत्यकामें भी उसकी खेती सन् १८८७ ई० से होने लगी। यही दोनों भू-भाग अब मङपू सिनकोना-बगान हैं, जहां १२००० एकड़ भूमिमें से ४००० एकड़में सिनकोनाके वृक्ष खड़े हैं।

(२) वृद्धि—पहिले कुछ निजी खेतियां भी सिनकोनाकी हुईं, किंतु धीरे-धीरे यह व्यवसाय सरकारके हाथमें ही रह गया। देशमें मलेरिया-के कारण मांग बढ़ी, जिसकी पूर्तिके लिये सन् १९०० ई० में एक नया बाग मनसोङमें लगाया गया, जहांकी ८००० एकड़ भूमिमेंसे ३५०० एकड़में सिनकोनाकी बारी खड़ी है। सन् १९३८ ई०में एक तीसरा बगान कलिम्पोङ-के जंगल-विभागके रोङपो स्थानमें खोला गया, जहां १६०० एकड़में सिनकोनाके बाग हैं। एक चौथा बगान खरसान् जंगल-विभागमें लतसंचोर जगहमें सन् १९३६ ई०में खोला गया। [illegible] पौंड कुनैन पैदा करनेका है। जिस [illegible] जरूरत होगी। जिलेमें छालकी वार्षिक उपज निम्न प्रकार रही है—

साल		उपज पौंड (आधा सेर)
१८६९–७०	से १८७८–७९	११३०००
१८७९–८०	से १८८८–८९	३२१०००
१८८९–९०	से १८९८–९९	५१८०००
१८९९–१९००	से १९०८–९	५३३०००
१९०९–१०	से १९१८–१९	५६५०००
१९१९–२०	से १९२८–२९	६८६०००
१९२९–३०	से १९३८–३९	१२०००००
युद्धकालमें		१७०००००

पहिले-पहल सन् १८७४–७५ई० की सालमें ४८ पौंड कुनैन बनाई गई, और उसे सन् १८७६–७७ ई० में सार्वजनिक उपयोगके लिये दिया गया। सूखी छालमें एक अम्ल मिलाकर सत्तको सींचा जाता है और पीछे उसमें क्षार (अल्काली) के साथ कुनैन तैयार की जाती है। सन् १८७८ ई० और १८८७ ई० के बीच ८२०२३ पौंड (वार्षिक ५८५८ पौंड) कुनैन निकाली गयी। पीछे कुनैन निकालनेकी अधिक वैज्ञानिक शैलीको स्वीकार करनेपर सन् १८८७ ई० में ३३१ पौंड कुनैन निकाली गयी तथा अगले साल २००० पौंड,सन् १८९५-९६ ई० तक १०००० पौंड और अगले १० सालोंमें कुनैनकी उपज १६००० पौंड हो गयी। सन् १९०७ ई० में नयी मशीनोंके साथ नया कारखाना काम करने लगा, जिससे उस साल २७००० पौंड वार्षिक कुनैन तैयार की गयी। लड़ाईके समय वार्षिक उपज ७०००० पौंड थी, जिससे युद्ध-कालमें बड़ी सहायता मिली।

(३) **रोपण**–पहिले सिनकोनाकी कलम लगाई जाती थी, लेकिन अब बीजको ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। सिनकोनाका बीज बहुत छोटा और हल्का, आध छंटाकमें ६०-७० हजार बीज होते हैं। मार्चमें बीजकी बीहन डाली जाती है, जो तीन-चार सप्ताहमें अंकुर देती है। आधी इंचके हो जानेपर पौधे दूसरी क्यारीमें रोप दिये जाते हैं। कुछ सप्ताह बाद फिर तीसरी बार क्यारीमें चार–चार इंचके फासलेसे लगा दिये जाते

हैं। सारे जाड़े भर पौधे वहीं रहते हैं और अंतमें वर्षाके आरंभमे उन्हें बागमें लगाया जाता है। यहां पौधोंके लिये डेढ़-डेढ़ फुटके अन्तरसे गड्ढे खुदे रहते हैं। तीसरे वर्षसे फसल निकलने लगती है। आठवें साल सारे पौधोंको छांट दिया जाता है, और उनसे नये गोजे निकलते है, जो आठ साल तक और फसल देते हैं। इसके बाद उन्हें जड़से निकाल दिया जाता है।

(४) **कुनैन-निर्माण**—सिनकोनाकी हरी छालको लकड़ीके हथोड़े-से पीटकर चाकूसे निकाला जाता है। फिर उसे धूप या तापमें पूरी तौरसे सुखा दिया जाता है। इस छालको मशीनोंके भीतर डालकर बहुत बारीक पीस दिया जाता है। फिर रासायनिक प्रक्रिया आरंभ होती है।

इस जिलेके सिनकोना बगानोंमें काम करनेवाले १३ गजतित अफ-सर ५ अगजतित अफसर, और १४ क्लर्क हैं। इनके अतिरिक्त सिनकोना बगानोंम १३२०७ आदमी रहते हैं, जिनमें ८९० पहाड़ी हैं सन् १९४४ ई० में केवल ९ अगजतित असफर और २२ क्लर्क पहाड़ी थे।

७—उद्योग

जिलेमें अधिक लाभदायक व्यवसाय और बड़ी-बड़ी नौकरियां पहाड़-के बाहरके लोगोंके हाथोंमें हैं, जिसके कारण जिलेके साधारण निवासियोंकी आर्थिक अवस्था गिरी हुई है और उसीके कारण उच्च शिक्षाकी भी कमी है। यह आर्थिक तथा शिक्षा-संबंधी पिछड़ापन बंगालियों तथा मैदानी व्यवसायियोंके प्रति पहाड़वालोंके असंतोष का कारण है। जबतक कारण-को दूर नहीं किया जाता, तबतक यह असंतोष घटेगा नहीं, बल्कि बढ़ेगा और दोर्जेलिङ जिला तथा सिक्किमको अलग प्रदेश बनानेकी मांग बढ़ती ही जायेगी।

(१) **लकड़ीका कोयला**—चाय और सिनकोनाके बागोंके बाहर १३२३६४ आदमी जिलेमें खेतीका काम करते हैं। चायबगानके

ठेकेकी भूमिमें १४६५०८ व्यक्तियोंकी गुजर-बसर होती है, जिनमेंसे भी कुछ खेती करते हे। अन्दाजा लगाया गया है, कि एक एकड़ चाय के लिये एक काम करने वालेकी आवश्यकता होती है और जिलेमें ६३००० एकड़में चाय लगी है। सिनकोना-बगानमें फैक्टरीके कामको छोड़कर १३५०७ व्यक्ति काम करते है। फैक्टरीमें बहुत थोड़े आदमियोंकी आवश्यकता होती है। सरकारी जंगलोंमें १००१४ व्यक्ति काम करते है। काफी संख्या लकड़ीके कोयला बनाने वालोंकी है। साधारण समयमें डेढ़ लाख बोरा कोयला जिलेमें खर्च होता है। युद्धके समय खर्च साढ़े तीन लाख बोरातक बढ़ गया था। लकड़ीसे कोयला पुराने ढंगसे बनाया जाता है, जिसके कारण कोलतार तथा कितनी ही दूसरी मूल्यवान रासायनिक वस्तुएं नष्ट हो जाती है। बिना पूंजीके सिर्फ शारीरिक बलके भरोसे इस अपव्ययको रोका नही जा सकता। बहुतसे लोगोंकी यही जीविका है। भद्रावती (मैसूर) की तरह यहां इसका एक उद्योग नही खड़ा किया जा सकता, क्योंकि अधिक यंत्रीकरणसे बहुत लोग बेकार हो जायँगे।

पहिले जंगलमें वृक्षको काट कर गिरा दिया जाता है, फिर उसके कई टुकड़े कर लिये जाते हैं। कोयलेकी भट्ठी बनाते वक्त बड़े बोटे नीचे रखे जाते हैं और उसके ऊपर छोटे फिर और छोटे, अंत में छोटी शाखाएं और झाड़ियां रख दी जाती है। यह कोशिश की जाती है, कि वायुके लिये स्थान कमसे कम रहे। कोयलेवाले एक दूसरेके काममें सहायता करते हैं। एक भट्ठेमें १५००० घन फुट लकड़ी-का स्थान रहता है। लकड़ी सजा देनेके बाद उसे ६ से ९ इंच मोटी मिट्टी से लेप दिया जाता है, सिर्फ सिरपरसे नीचे तक तीन फुट लम्बा तीन फुट चौड़ा छेद रखा जाता है। सिर और बगलमें हवा जानेके लिये कुछ और भी छिद्र पहिले होते है, जिन्हें लकड़ीमें आग लग जानेपर बंद कर दिया जाता है। दो दिन तक आग जलती है। इस वक्त सभी छेद बंद रहते हैं और लकड़ी बिना हवाके ही भीतर-भीतर जलती है। जलने-

के अनुसार भट्ठी सिकुड़ती है और उसकी दीवारमें कई दरारें फट जाती हैं। कोयलेवाले बड़ी सावधानीसे देख-भाल करते हैं और इन दरारोंको गीली लकड़ी तथा मिट्टीसे बंद करते रहते हैं। होशियार कोयलेवाले जान जाते हैं कि कब उनकी भट्ठी पूरी तौरसे जल गई। उस समय ज्वाला नीले रंगकी निकलने लगती है। अब भट्ठीको बगल-से तोड़ दिया जाता है और गीली मिट्टी फेंककर कोयलेकी परीक्षा की जाती है। अच्छी तरहसे जला कोयला चमकदार काले रंगके डलोंका होता है, और कम जला या कच्चा कोयला भूरे रंगका होता है। अधिक जला हुआ छोटे-छोटे टुकड़ोंमें हो जाता है और उसमें राख मिली रहती है।

तैयार भट्ठीको बगलसे तोड़कर जलते कोयलेको कीचड़में ठंडा किया जाता है और फिर उसे बोरोंमें बंद करके ढो ले जाते हैं। एक भट्ठी जलानेमें करीब तीन सप्ताह लगते हैं। बरसातमें भट्ठीको चटाईसे ढांक दिया जाता है। एक भट्ठीमें १० से १२ गाड़ीतक कोयला निकलता है। बरसातमें मात्रा कुछ कम होती है, क्योंकि उस वक्त लकड़ीमें से कुछ अधिक राख निकलती है। लकड़ी काटनेसे कोयला तैयार करने तक एक आदमीको दो मास लगते हैं। तराईमें कोयला बनानेका दूसरा ढंग है जिसे चीनी शैली कहते हैं। इसमें धरतीके ऊपर भट्ठी खड़ा करने-की जगह लकड़ीको गड्ढेमें सजाया जाता है। हवाको रोकनेके लिये लोहेकी चादरोंसे चारों ओर ढांक दिया जाता है इससे उपज अधिक होती है। लकड़ीको ढोनेकी अपेक्षा कोयला बनाके ढोनेमें कम श्रम लगता है, इसीलिये कोयलेकी भट्ठी कटे वृक्षके पास ही लगायी जाती है। १३० से १५० घन फुट लकड़ीसे, जिसे ढोनेके लिये ४ गाड़ियोंकी आवश्यकता होगी, १३ बोरा कोयला निकलता है, जो कि एक गाड़ीपर ढोया जा सकता है। एक आदमी दो बोरा कोयला पांच मीलतक आसानीसे ले जा सकता है, लेकिन २० घनफुट को ले जानेके लिये १० आदमियोंकी आवश्यकता होगी।

लड़ाईके दिनोमे कोयलेकी मांग बढ जानेसे दोर्जेलिङमें डेढ़ रुपया बोराकी जगह वह २ रु० १० आ० बोरा बिकने लगा था और आजकल (सन् १९४९–५० ई०) में कलिम्पोङमें दाम ४ रुपया बोरा है ।

(२) **लकड़ी-चिराई**–चिराई अधिकतर पुराने ढंगसे होती है । जगल-विभागने सन् १९२८ ई० में लकड़ी-व्यवसायियोंके चढ़े मोलको तोडने एवं घटिया प्रकारके शालके बोटोंको उपयुक्त बनानेके लिये एक आरा मिल खोली । वह १०, १२ बरसों तक घाटेमें चलती रही । सन् १९४० ई० में उसमें सुधार किया गया, जिसके कारण सन् १९३९ ई० की १८० घनफुट वाली उपज, सन् १९४४ ई० में १००० घनफुट हो गयी । लकड़ीका बेकार होना भी ३५ प्रतिशत की जगह २० प्रतिशत रह गया । इस कारखानेमें ढाई सौ मजूर काम करते हैं, जिनमें २ प्रतिशतसे अधिक पहाड़ी नहीं हैं । दोर्जेलिङ हिमालय रेलवे जंगलकी लकड़ीको कारखानेमें पहुंचाती है । सरकारी कारखानेके अतिरिक्त दो निजी आरा मिलें भी हैं, जिनमें एक गोल आरा सिल्लियोंको काटने और दो गोल आरे फिरसे चीरनेके लिये इस्तेमाल होते हैं । इन कारखानोंमें से, प्रत्येकमें २० आदमी काम करते हैं । इनके अतिरिक्त सिलिगोड़ी, नक्सलबाड़ी, बागडोगरा और सिवोकमें कुछ और जगहोंपर हाथकी चिराईका भी काम होता है, जिनमें गोरखपुर और नेपालके आराकश जाड़ेमें आकर काम करते हैं । सन् १९३९–४५ ई० में सिलिगोड़ीमें कुछ प्राइवेट कारखानोंने प्लाईवूड बनाना भी शुरू किया । आसामकी रेलका केंद्र होनेसे सिलिगोड़ी नगर बड़ी तेजीसे बढ़ रहा है, जिससे लकड़ीकी चिराई आदिका व्यवसाय और बढ़ता जा रहा है, और जंगलकी लकड़ीकी मांग मकानों, रेलके डब्बोंके बनानेके लिये और अधिक हो रही है ।

(३) **बिजली उत्पादन**–इस जिलेमें सरकारी सर्वेके अनुसार निम्न मात्रामें बिजली प्राप्त करनेके स्रोत हैं –

(संपूर्ण)	बरसाती नदीसे (किलोवाट)	हिमानी नदी (किलोवाट)
दोर्जेलिङ जिला	११५३०	७१०००
सिक्किम सीमान्तपर	२०७८०	८००००
	३२३१०	१११०००

ऊपरका आकलन जाड़ेकी अल्पतम जलमात्राके खयालसे किया गया है। जाड़ेके दिनोंमें दोर्जेलिङ खरसान् और कलिम्पोङके नगरोंमें बिजलीका सबसे अधिक व्यय १२१६० किलोवाट है। लड़ाईके बादके १० सालोंके लिए निम्न मात्रामे बिजलीकी आवश्यकता आंकी गयी थी—

स्थान	किलोवाट
नगर और गांव	३०००
चायबगानोंमें (सब)	१४००
चाय-कारखानोंमें बिजली-ताप	१६०००
	२०४००

सिलिगोड़ीके एक उद्योग-प्रधान नगर बननेपर बिजलीका खर्च और बढ़ जायेगा। दोर्जेलिङ हिमालय रेलवेको बिजलीसे चलानेके लिये ३००० से ५००० किलोवाट बिजलीकी आवश्यकता होगी। चाय संचरणके लिये दुवारमें भी ७००० किलोवाट और सुखानेके लिये ७०००० किलोवाटकी आवश्यकता होगी। इस प्रकार बिजलीके विकासके लिये इस जिलेमें भारी स्रोत तथा उपयोग-क्षेत्र हैं।

यद्यपि भारतवर्षका सबसे पुराना पनबिजली स्टेशन १० नवम्बर सन् १८९७ ई० को सिद्रापोङमें यहीं चालू किया गया था, किंतु आगे जिलेके बिजली स्रोतको विकसित करनेका प्रयत्न नहीं किया गया। पनबिजलीके इतने साधन रहते हुए भी कलिम्पोङमें तेलके इंजनसे बिजली तैयारकी जाती है। बढ़ती हुई मांगकी पूर्तिके लिये हालमें और भी तेल-इंजनकी मशीनें मंगाई गयी हैं, यह तब जब कि हमारे देशमें मिट्टीके तेल और पेट्रोलकी तथा विदेशी-विनिमयकी भी भयंकर रूपसे कमी है। आजकलके बिजली-उत्पादनका ब्योरा इस प्रकार है—

		दोर्जेलिङ	खरसान्
मशीन क्षमता	(किलोवाट)	१९६०	४००
अल्पतम उपज	(अप्रैल)	६८०	३०
अधिकतम उपज	(किलोवाट)	१५०६	१४०
बेंची इकाई	(१९४३–४४)	३२४६०००	७०२७६४
,,	(१९४४-४५)	५१९१०००	.
अनौद्योगिक इकाई	(१९४३-४४)	२१४८०००	१६३५२४
,,	(१९४४-४५)	३४३१०००	..
जन-संख्या,	(१९४३-४४)	५००००	१५०००
प्रति-इकाई दाम (आना)-			
प्रकाश		४	६
तापन (प्रथम सौ इकाई)		७५	७५
तापन (सौ इकाई से ऊपर)		.५०	५०

दोर्जेलिङ नगरपालिका (म्युनिसिपैलिटी) बरसातके दिनोंमें तापन व बिजली के दामको प्रति इकाई एक पैसा कम कर देती है। पनबिजली कारखानेके अतिरिक्त दोर्जेलिङ में नगरपालिकाके पास २०० किलोवाटका एक डीजेल इंजन बिजली स्टेशन लेबोङके करीब है। सन् १९४१ ई० में दोर्जेलिङ नगरपालिकाको बिजलीसे दो लाखकी आमदनी हुई थी। खरसान् पनबिजली स्टेशनको तैयार करनेमें गोयनका कम्पनीको साढ़े तीन लाख रुपया लगाना पड़ा। कलिम्पोङ बिजली-पूर्तिके स्वामी अ० क० बनर्जी और उनके पुत्र हैं। इसकी पूंजी तीन लाखकी है। जैसा कि पहिले कहा गया, यहां बिजली तेल-इंजनमें तैयार की जाती है। पहिले ४०-४० किलोवाटके दो शक्ति-जनक काम कर रहे थे, सन् १९४३ ई०में १४० किलोवाटका एक तीसरा जनक भी लगाया गया। अधिकसे अधिक १२० किलोवाट बिजली यहां (जन-संख्या १५,०००) तैयार की गई है। सन् १९४३-४४ ई० में ८७६४८ इकाई बिजली बेंची गयी थी। उस समय प्रति-इकाई बिजलीका

दाम प्रकाशके लिये पांच से आठ आना और तापनके लिये ढाईसे साढ़े तीन आना था।

दोर्जेलिङके बिजली-कारखानेमें ११४, खरसानके ३३ और कलिम्पोङके कारखानेमें १८ आदमी काम करते थे। इन तीन बड़े बिजली कारखानोंके अतिरिक्त चायबगानोंमें कितनों हीके पास पनबिजली या डीजेल इंजनसे बिजली तैयार होती है

८—व्यापार

दोर्जेलिङ जिला और सिक्किमका व्यापार एक ओर पूरबमें भूटान, उत्तरमें तिब्बत और पश्चिममें नेपालके साथ है, तो दूसरी ओर सिलिगोड़ी होकर बंगाल और बिहारसे भी उसका अच्छा खासा व्यापार है।

(१) **सिलिगोड़ी द्वारा व्यापार**—मार्च सन् १९४२ ई० को समाप्त होनेवाले वर्षमें बाहरसे सिलिगोड़ी ८१५०५ टन माल भेजा गया और सिलिगोड़ीसे बाहर ३७०४६ टन। जिलेमें पेट्रोलका खर्च युद्धके समय २० से २५ हजार गैलन मासिक था। साधारण समयमें यात्रावाली मोटर-बसोंके लिये ११०५० गैलन, मालकी लारियोंके लिये १८००० गैलन मासिक खर्च है। इनके अतिरिक्त प्राइवेट गाड़ियोंमें १०२०० गैलन लगता है। जिलेमें दोर्जेलिङ २, कलिम्पोङ ७, खरसान्, बागडोगरा और सिलिगोड़ीमें ६ पेट्रोल पम्प हैं। किरासिन तेलका मासिक विवरण साधारण समयमें निम्न प्रकार रहा—

	टीन	गैलन
सिलिगोड़ीसे	१५८४	६३३६
खरसान्से	१२९२	५१६८
कलिम्पोङसे	१५००	६०००
दोर्जेलिङ से	२९१२	११६४८

पेट्रोल और तेल सारा सिलिगोड़ी स्टेशन होकर आता है।

कलिम्पोङका दो प्रतिशत व्यापार भूटानके साथ है—भूटानसे मोम, कस्तूरी, लाह और सूअरके बाल आते हैं।

तिब्बतका व्यापार सबसे अधिक कलिम्पोङसे होता है, जिसका रास्ता पेदोंङ और जालेपला होकर है। कलिम्पोङ और गङतोकतक माल खच्चरोंपर आता है और नीचे तिस्ता-उपत्यका होकर बैलगाड़ी या लारी परिवहनका काम करती है। तिब्बतके ऊनको गङतोकसे लाकर भी उसे कलिम्पोङ पहुँचाया जाता है, क्योंकि ऊनके साफ करने और गांठ बांधनेका सुभीता कलिम्पोङमें ही है। गङतोकके रास्ते खच्चर-की ढुलाईमें २० मीलकी कमी हो जाती है, इसलिये यदि गङतोकने और अधिक विकास किया तो कलिम्पोङके लिये आसान नहीं होगा। तिब्बतसे आनेवाले मालमें सबसे महत्वपूर्ण ऊन है। करीब एक लाख मन ऊन प्रतिवर्ष सीधे तिब्बतसे कलिम्पोङ आता है और १९ हजार मन गंङतोक होकर। कलिम्पोङकी समृद्धिमें अबतक यही तिब्बती ऊन कारण रहा। पहिले ऊनकी गांठें कलकत्ता-द्वारा लिवरपोल भेजी जाती थीं। सन् १९२० ई० से वह सीधे अमेरिका भी भेजी जाने लगीं। यह व्यापार मवाड़ी या कुछ मात्रामें तिब्बती व्यापारियोंके हाथमें है। सालमें ५०,००,००० रुपयेका ऊनका कारबार होता है। ऊनकी सफाई और गांठ-बंधाई आदिमें यहांके बहुतसे आदमी काम करते हैं। ऊनके बाद दूसरा महत्व-पूर्ण पण्य कस्तूरी है। यह ज्यादातर नेपाली लोगोंके हाथमें है। कस्तूरी-की सबसे अधिक मांग पंजाबमें है और वह कुछ बंबई द्वारा अरब-देशोंमें भी भेजी जाती है। कस्तूरीका कारबार सालमें ३० लाखका है। इसके अतिरिक्त दो लाखका समूरी चर्म तथा दूसरी मूल्यवान खालोंका भी कारबार होता है। यह खालें अमेरिका और इंगलैंड जाती हैं। भारतमें उनको सिझाकर तैयार करनेका कोई प्रबंध नहीं है। प्रतिवर्ष दो लाखका चर्म भी तिब्बतसे आता है। भारतसे तिब्बत जानेवाली चीजें ऊनी-सूती कपड़े, लोहे, तांबे, पीतलकी चीजें और चदरे, लेखन-सामग्री, अनाज-गुड़, सूखे फल, बादाम, पिस्ता, रंग, रासा-

यनिक वस्तु, मिट्टीका तेल, मोमबत्ती, लालटेन, बिजली-बैटरी, अल्मोनियम-चीनी-बर्तन, मोती-मूगा-रत्न, सीमेंट, चमड़ेकी चीजें, सिगरेट, तंबाकूके पत्ते, दवाइयां, कास्मेटिक्स भी भेजी जाती हैं। लड़ाईके समय तिब्बतके साथ व्यापार भारतके प्रतिकूल हो गया था—अर्थात् आयात-निर्यातसे अधिक हो गया था, इसलिये लड़ाईके पहिले रुपयेका तिब्बती सिक्का सात साङकी जगह २.८ ही रह गया। आजकल फिर रुपया ६ साङतक पहुँच गया है।

(२) **नेपालसे व्यापार**—नेपालके साथ व्यापार तीन रास्तोंसे होता है:—सिरिकखोला, लोधमा, रिम्बिकसे बिजनबारी और पुलबाजार। बिजनबारीतक माल भारवाहकों द्वारा आता है। वहांसे दार्जेलिङ रज्जुमार्ग-द्वारा या पुलबाजार होते हुए खच्चरों द्वारा भेजा आता है। यद्यपि बिजनबारी और पुलबाजार २००० फुट ही ऊँचे हैं, किंतु व्यापारिक रास्तेको १०००० फुटके डांडोंको पार करना पड़ता है।

नेपालका माल गोरखिया और पशुपति नगरसे होते हुए सुकियापोखरी, सिमाना, मानेभंज्याङ या मिरिक (दार्जेलिङ जिला)—द्वारा आता है। सुकियापोखरी और सिमानासे घूम और दार्जिलिङतक पक्की सड़क है, अत: माल लारियोंपर भेजा जा सकता है। मानेभंज्याङ से भी कच्ची सड़क है। इधरके बाजार ५०००से ७००० फुटकी ऊँचाईपर अवस्थित हैं।

नेपालसे तराईके व्यापार-मार्ग हैं—चनिचरिया (नेपाल) से नक्सलबाड़ी, भद्रपुर (नेपाल) से अधिकारी और गलगलिया (सीमापर बिहारमें)। गलगलियातक रेल जाती है, नक्सलबाड़ीमें रेल और सड़क दोनों हैं। नेपालसे आलू-अनाज जैसी चीजें आती हैं। इनके अतिरिक्त पाट और सरसोंका तेल भी आता है। बदलेमें वहां कपड़ा तथा दूसरी कारखानेकी बनी चीजें भेजी जाती हैं। सुकियापोखरी आदिके बाजारोंसे प्रतिवर्ष सात लाखका माल भेजा जाता है। बिजनबारीके मार्गसे प्रतिवर्ष ३०००० मन आलू और सुकियापोखरीके बाजारोंसे ६५००० मन आलू-

का निर्यात होता है। तराईके रास्ते ढाई लाखके करीबका सूती कपड़ा, नमक, तांबे पीतलके चद्दरे, लोहा, मिट्टीका तेल, चीनी आदिको भेजा जाता है और आयातमें एक लाख मन चावल २५००० का सरसों तेल तथा कुछ मात्रामें मक्का और आलू भी आता है। गलगलियाके रास्ते नेपालका धान और चावल आता है, जिसके कूटनेकी मिलें गलगलिया और सिलिगोड़ीमें हैं।

(३) **दोर्जेलिङका निर्यात**—चाय दोर्जेलिङकी मुख्य निर्यात वस्तु है। इसके उत्पादनके बारेमें पहिले लिखा जा चुका है। प्रायः सारी चाय सिलिगोड़ीके रास्ते बाहर भेजी जाती है। चायके बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण निर्यात नारंगी का है। सिक्किमके अतिरिक्त कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें १०७० एकड़ और सदर-सब-डिवीजनमें २३० एकड़ नारंगीके बाग हैं। नवम्बरके बाद तीन-चार महीने नारंगीका मौसम है। फूलनेके समय ओला पड़ जानेपर नारंगीकी फसलको बड़ी क्षति होती है। नारंगीके बगीचे सभी पहाड़ी लोगोंके हैं। सितंबरमें ही कलकत्ताके व्यापारी आकर फसलोंको खरीद लेते हैं। नारंगियोंको तोड़कर कलिम्पोङ, तिस्ता, सोमबरिया, मटेली और मांतीगड़्हाके बाजारोंमें भेज दिया जाता है। प्रतिवर्ष दस लाख रुपयेकी आमदनी नारंगीकी फसलमें होती है। अच्छी फसल होनेपर ५०००० मन नारंगी तिस्ताके रास्ते बाहर जाती है। इनकी १००० नारंगियोंके हिसाबसे थोक बिक्री होती है। एक-एक बक्समें साढ़े तीन सौसे चार सौ तक नारंगी रहती है। सन् १९२५ ई० में कलिम्पोङ में ८ से १२ रुपया हजार नारंगी बिकी थी। सन् १९३१ ई० में वह गिर कर ६ रुपया हजार रह गयी। सन् १९३६ ई० में वह १२ से २० रुपया हजार पहुँची। सन् १९४४ ई० मे दाम २० से ३० रुपयेतक हो गया था, जब कि कलकत्तामें दाम प्रतिबक्स (प्रायः ४०० फल) १४ से २० रुपयेतक था। दोर्जेलिङ जिलेकी अपेक्षा भी अधिक नारंगी सिक्किमसे बाहर जाती है और उसका रास्ता भी तिस्ता-उपत्यका होते सिलिगोड़ी ही है।

(४) बड़ी इलायची—यह भी इस जिलेके निर्यातकी एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है ; यद्यपि इलायची चायका मुकाबिला नहीं कर सकती, जो कि सन् १९४० ई० में तीन करोड़ रुपयेके करीब की बिकी थी। तो भी अकेले कलिम्पोङमें प्रतिवर्ष चार-पांच लाख रुपयेकी इलायची पैदा होती है, सारे जिलेमें उपज दस लाखसे ऊपर की है। बड़ी इलायची अधिकतर पंजाब भेजी जाती है। कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें इसकी वार्षिक उपज दस हजार मन है। इलायचीके कारण ही कलिम्पोङके भूटानके हाथसे निकलकर भारतमें मिलनेके बाद ही मारवाड़ी व्यापारी यहां पहुंचे। व्यापारी लोग इसकी फसलका सौदा पहिले ही कर लेते हैं और कुछ अग्रिम भी किसानोंको दे देते हैं। पासके नेपाली प्रदेश और सिक्किमकी इलायची भी सिल्ला-उपत्यका, सदर-सब-डिवीजन और खरसान् सब-डिवीजन (बिजनबारी, पुलबाजार, सिङला) द्वारा बाहर जाती है। कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें इसके मुख्य बाजार हैं— कलिम्पोङ, अलगड़हा, गिदब्योङ, निम्ला और सीमबरिया। सन् १९१४-१८ ई०के महायुद्धके बाद इसका मूल्य ११० रुपया मनतक चला गया था; इसके बाद गिरते-गिरते सन् १९२७ ई० में ९ रुपया मन हो गया। फिर २० रुपया मनतक पहुँचा और द्वितीय विश्वयुद्धके समय ९५ रुपयेतक पहुँचकर सन् १९४२-४३ ई० में वह ४२ रुपया मन रह गया।

तरकारियां अप्रैलसे नवम्बरतक इस जिलेसे कलकत्ता भेजी जाती हैं, जिनका वार्षिक परिमाण ५०००० मन है। इनके अतिरिक्त अस्सी हजारसे एक लाख मनतक बीजका आलू भी जिलेसे प्रतिवर्ष बाहर भेजा जाता है। चिरैता, मंजीठ नेपालसे इसी रास्ते बाहर जाता है। संक्षेपमें दार्जिलिङ जिला चाय, नारंगी, तरकारियां, बीज-आलू, इलायची, चिरैता, मंजीठ, कच्चा चमड़ा, छाल और लकड़ी बाहर भेजता है और यहांकी आयातकी चीजें हैं—चावल, गेहूंकी वस्तुएं, चीनी, पेट्रोल, मिट्टीका तेल, गुड़, बिजलीकी चीजें, मकानकी चीजें, कागज, कुदाली, हंसिया आदि कृषिके हथियार, एल्मोनियमकी चीजें,

लोहेकी चीजें, ऊनी-सूती कपड़े, पत्थर कोयला, दियासलाई, सरसोंका तेल, चमड़ेका सामान, जूता, तांबे-पीतलके बर्तन और चादरें, नमक, रासायनिक वस्तुएं (सोडा और खाद), मांसके पशु, साबुन, चीनी-बर्तन, छाता, लालटेन, मोटर और उसके पुरजे।

(५) भीतरी व्यापार—जिलेमें सरकारी नियंत्रणके अंदर बहुत-सी बाजारें हैं, जिनमें काफी स्थानीय व्यापार होता है। निम्न बाजार-सूचीमें 'क' नामवालीमें २० लाखके ऊपरका सौदा होता है, 'ख' वालीमें १५ से २० लाख तकका, 'ग' वालीमें ८ से १५ लाख तक और 'घ' वालीमें ८ लाखसे कमका।

सदर सब-डिवीजन

दोर्जेलिङ	क	रङ्लीरंङलिओत	घ
सुकियापोखरी	ख	मुनादा	,,
घूम (जोरबंगला)	ग	रङबूल	,,
पुलबाजार (बिजनबारी)	,,	लोधमा	,,
सिमाना	घ	रिम्बिक	,,
मानेभंज्याङ	,,	सिङला	,,
पोखरिया बोङ	,,	गीङ	,,
लोपचू	,,	पटिअबास	,,
तकदा	,,	लेबोङ (भोटियाबस्ती)	,,

खरसान् सब-डिवीजन

खरसान्	ख	महानदी	घ
मिरिक	ग	सौरेनी	,,
टुंङ	घ	तिनधरिया	,,
घैयाबारी	,,		

कलिम्पोङ सब-डिवीजन

कलिम्पोङ	क	अलगढ़हा	घ
तिस्तापुल	ग	लाभा	,,

सोमबारिया	ग	गीदब्योङ	घ
पेदोङ	घ	रम्बी	,,

सिलिगोड़ी सब-डिवीजन

सिलिगोड़ी	क	खरीबाड़ी	घ
नक्सलबाड़ी	ग	पानीघट्टा	,,
मोतीगड़हा	,,	मिबोक	,,
बागडोगरा	,,		

९—वित्त

व्यापार और कृषिमें वित्तिक सहायताका काम मुख्यतः मारवाड़ी व्यापारियों तथा उनके बाद बिहारियोंके हाथमें है। इनके अतिरिक्त कुछ पश्चिमी प्रदेशोंके लोग बीज-आलू, नारंगी, चिरैता, मंजीठ, शूकरकेश आदि व्यापारमें अग्रिम सहायता देते हैं। चायके उद्योगमें वित्त-नियंत्रण अब भी अंग्रेजोंके हाथमें हैं। जिलेमें इम्पीरियल बैंक, लायड बैंक, सेन्ट्रल बैंक आरियन बैंककी शाखाएं काम करती हैं। इनके अतिरिक्त मारवाड़ी साहूकारोंकी भी बहुत-सी कोठरियां लेन देनका काम करती हैं। इलायची, नारंगी, आलू और भीतरी उपयोगकी सभी चीजोंका व्यापार मुख्यतः मारवाड़ी व्यापारियोंके हाथमें है। दोर्जेलिङ जिलेके विकासमें मारवाड़ी व्यापारियोंका बड़ा हाथ रहा, इसे अंग्रेज लेखकोंने भी माना है। दोर्जेलिङ नगरमें जेठमल भोजराजकी कोठी सन् १९३५ ई० में स्थापित हुई कलिम्पोङमें भी मारवाड़ी कोठियां अंग्रेजोंके आते ही स्थापित होने लगीं। एक अंग्रेज अधिकारीने कलिम्पोङमें उनके आरंभिक अध्यवसायके बारेमें लिखा है—

"मारवाड़ी व्यापारियोंने आकर इलायचीको बड़े पैमानेपर खरीदना शुरू किया। उनके कारण कृषिकी उपजकी मांग भी बढ़ी। नेपाली कृषकोंने पहुंचकर अंग्रेज सरकारके हाथमें आये इस इलाकेमें खेती करनी शुरू की। उन्होंने झूम-प्रथाकी जगह हल द्वारा सुव्यवस्थित खेती आरंभ की, जिसके लिये आवश्यक पूंजी मारवाड़ी साहूकारोंने प्रदान की।

आरम्भमें यह उधार नगदकी अपेक्षा जिन्सके रूपमें होता था, जिसका दाम महाजनके दामके लाभके अनुसार पैसेमें गिना जाता था । पीछे क्रमशः नगद रुपया निश्चित सूदपर दिया जाने लगा । ''

जिलेके विकासमें मारवाड़ियोंने अग्रदूतका काम किया । आज भी सभी वित्तिक और व्यापारिक क्षेत्रोंमें उन्हींका एकाधिपत्य है । शिक्षा-के कारण अब पहाड़ी लोगोंमें भी चेतना आई है और वे इस एकाधिपत्यको बड़े असंतोषकी दृष्टिसे देखते हैं । उनके पास इतनी पूंजी नहीं है, कि कोई बड़ा कारबार शुरू करें । पूंजी होनेपर भी उन्हे संगठित मारवाड़ी व्यापारियोंका सामना करना पड़ता है । मारवाड़ी व्यापारी केवल भीतरी व्यापार ही में नहीं, तिब्बतके कपड़े आदिके व्यापारपर भी एकाधिपत्य रखते हैं । सन् १९४९ ई० में दो तिब्बतीय-नेपाली व्यापारियोंने सीधे मिलों-से कपड़ा मंगाकर तिब्बत भेजना चाहा, जिसपर मारवाड़ी व्यापारियोंने एक होकर अड़ंगा लगाया । इसे अदूरदर्शिता ही कहा जा सकता है, क्योंकि दो चार पहाड़ी व्यापारियोंको मिला लेनेपर उनकी सामूहिक ईर्ष्याका भाजन न बनना पड़ता, किंतु 'अर्थी दोषं न पश्यति ।''

मारवाड़ी व्यापारियोंके बाद दूसरा नंबर बिहारी व्यापारियोंका है । यद्यपि इनकी कोठियां उतनी बड़ी-बड़ी नहीं हैं, किंतु छोटे-छोटे दूकानदारोंमें इनकी संख्या अत्यधिक है । ये कुछ महाजनीका काम भी करते हैं । कलिम्पोङमें कुछ व्यापार व्यवसाय भिन्न-भिन्न जातियों-में निम्न प्रकार बंटे हैं—

(१) अनाजका थोक व्यापार तथा मनिहारीका १० प्रतिशत और खुदरा व्यापार १५ प्रतिशत पहाड़ी लोगोंके हाथमें है ।

(२) यहांकी तीनों फार्मेसियां (दवाईखाने) बंगालियोंके हाथ-में हैं ।

(३) जूता और दूसरी चमड़ेके चीजोंके बनानेका कारबार ९० प्रतिशत चीनियों और १० प्रतिशत पहाड़ियोंके हाथमें है । मकान बनानेकी सामग्रीके व्यापारमें थोड़ा-सा भाग पहाड़ियोंके हाथमें है ।

पीनलके गर्तनके कारबार भोजनालय और मोटरड्राइवरी बहुत कुछ पहाड़ी लोगोंके हाथमें है।

(४) तिब्बतके साथ यातायातका काम तिब्बती और नेपाली लोगोंके हाथमें है।

(५) सरकारी बड़ी नोकरियोंमें पहाड़ी लोगोंका भाग बहुत कम है, यह भी बंगाली-पहाड़ी वैमनस्यका एक कारण है। गजटित नौकरियोंमें ६० प्रतिशत बंगालियों और ४० प्रतिशत अंग्रेजों तथा एंग्लो-इंडियनोंके हाथमें थी। युरोपियनोंके न रहनेपर भी उसी मात्रामें पहाड़ी अफसर नहीं नियुक्त हुए। अगजटित नौकरियोंमें भी ४० प्रतिशत बंगाली (जिसमें कुछ बिहारी भी हैं) और ६० प्रतिशत पहाड़ी हैं। कानूनी पेशेमें ४० प्रतिशत बंगाली, ४० प्रतिशत पहाड़ी और २० प्रतिशत बिहारी हैं। चिकित्सा—व्यवसायमें ४० प्रतिशत बंगाली, ४० प्रतिशत युरोपियन (सन् १९४४ ई० में) और २० प्रतिशत पहाड़ी हैं। शिक्षकोंमें ५० प्रतिशत पहाड़ी २० प्रतिशत बंगाली और बिहारी एवं ३० प्रतिशत युरोपियन और एंग्लो-इंडियन रहे।

१०—चीजोंका भाव

व्यापार और राजनीतिक क्षेत्रमें पहाड़ी-अपहाड़ीका जो वैमनस्य खड़ा हुआ है, उसका कारण आर्थिक और शिक्षा संबंधी पिछड़ापन ही है, इसमें संदेह नहीं। उधर जीवनोपयोगी चीजोंका भाव जिस तरह महँगा होता गया, उसी प्रकार मध्यम-वर्गकी अवस्था और चिन्तनीय होती गयी है, जिसके कारण वैमनस्य और उग्र रूप लेता जा रहा है। राजनीतिक क्षेत्रमें इसको कम करनेकी कोशिश जरूर की जा रही है। पश्चिम बंगालकी सरकार जानती है, कि दार्जेलिङ-वासियोंका वैमनस्य केवल ऊपरी नहीं है। यहांके लोगोंने सन् १९४९ ई० में केन्द्रीय (विधान) सभाके उप-चुनावमें कांग्रेसके उम्मीदवारको हराकर गोरखा-लीगके आदमीको चुना। इससे स्पष्ट है कि हवाका रुख किधर है। पहाड़ी लोगोंको सरकारी

तौर से संतुष्ट करनेकी कोशिश जरूर शुरू हुई है। इसीलिये छात्रोंके कम होनेपर भी दोर्जेलिङ नगरमें एक युरोपियन (सेंट मिकाइल) स्कूल-की भव्य इमारत लेकर डिग्री कालेज खोल दिया गया है। कलिम्पोङ-में भी बंग-सरकार एक अच्छा हाई स्कूल खोलना चाहती है। लेकिन, जबतक इस जिलेको बंगाल राज्यके भीतर स्थानीय पूर्ण स्वतंत्रता नहीं दी जाती, तबतक झगड़ा दूर होना संभव नहीं मालूम होता।

चावल यहाका मुख्य भोजन है, यद्यपि अधिक गरीब लोग मक्का और दूसरे अनाजोंपर गुजर करते हैं। सन् १८७१ ई० मे चावल और नमकका भाव निम्न प्रकार घटता-बढ़ता रहा—

सन्	चावल (प्रतिमन)	नमक (प्रतिमन)
	रु०—आ०	रु०--आ०
१८७१	२—४	. .
१९०३	३—६	४—८
१९०७	६—०	३—०
१९१०	३—१२	२—१४
१९१२	५—०	३—०
१९१३	६—११	३—०
१९१४	५—११	..
१९१५	७—८	४—०
१९१६	७—०	५—०
१९१८	५—०	६—०
१९१९	८—०	५—०
१९२१	७—१२	४—८
१९२४	५—११	५—११
१९२६	९—०	४—४
१९२७	९—८	४—८
१९२८	९—०	५—०

सन्	चावल (प्रतिमन)	नमक (प्रतिमन)
	रु० आ०	रु० आ०
१९२९	८— ०	५— ०
१९३०	६—११	३—१२
१९३१	४— ८	३—१२
१९३२	५— ०	३—१२
१९३३	५— ०	३—१२
१९३६	५— ०	३—१२
१९३७	५— ०	३—१२
१९३८	५— ०	३— ०
१९३९	५— ०	३—१०
१९४०	५— ८	४— ०
१९४३	४०— ०	...
१९४५	१३—१२	१३— ०
१९४९	१८— ०	१३— ०
१९५० (फरवरी)	२६— ०	१३— ०

५

यातायात

१—रेल

दोर्जेलिङ जिलेमें १७००० बैलगाड़ियां काम करती हैं, जिनमें ७०० ही भाड़ेपर चलती हैं। अधिकतर गाड़ियां एक-एक आदमीके पास एक-एक हैं। बहुत थोड़े ऐसे आदमी हैं, जो भाड़ेके लिये १०, १२ गाड़िया रखते हैं। दोर्जेलिङ हिमालय रेलवेके पास सन् १९४५ई०में ३८ इंजन और बहुतसी सवारी तथा मालके डब्बे थे। इसका कारखाना तिनधरियामें है, जिसमें ३८१ आदमी काम करते हैं। रेलवेके पास ६०० कमकर हैं। यह रेलवे सिलिगोड़ीसे दोर्जेलिङ और सिलिगोड़ीसे गेलखोला (कलिम्पोङ) तथा सिलिगोड़ीसे नक्सलबाड़ी तक चलती है। अब सिलिगोड़ीसे नक्सलबाड़ी तक मीटर लाइन बन गयी है। दोर्जेलिङ तत्कालीन भारतकी राजधानी कलकत्ताके ग्रीष्मावासके रूपमें बढ़ा। ३ फरवरी सन्१८५५ ई० में ई०आई० रेलवे चालू की गयी थी, जो बढ़ते-बढ़ते सन् १८६० ई० में हवड़ासे २१८ मीलपर गंगाके किनारे साहबगंज तक पहुँच गयी। उस समय लोग कलकत्तासे साहबगंजतक रेलसे आते थे। गंगा पार हो डिगराघाटतक बैलगाड़ी मिलती थी, जिसमें गाड़ीकी मंद गति ही नहीं बल्कि गरमीकी झुलसानेवाली धूप भी यात्रियोंको तंग करती थी। डिगराघाटसे लोग पूर्णिया, किसनगंज और तितलिया होते हिमालयके चरणोंमें पालकी, डाक, टट्टू या बैलगाड़ीसे पहुँचते थे। तितलियामें अब भी तबकी छावनीके बैरकोंके ध्वंस मिलते हैं। तितलियासे ५६ मीलका प्रदेश उस वक्त मच्छरों, मलेरिया तथा जंगली जानवरोंसे भरा जंगल था। फिर पहाड़की सीधी चढ़ाई आती, तब पंखाबारी, खरसान् होते दोर्जेलिङको पहुँचते थे। अप्रैल सन्१८४८ ई०में

हूकरने करागोला घाटसे सिलिगोड़ी तककी यात्रामें पालकीपर २४० रुपया खर्च किया था।

२८ सितंबर सन् १८६२ ई० को बंगाल आसाम रेलवे खुली। उस समय यह रेल रानाघाट तक आई। सिलिगोड़ीतक १८ जून सन् १८७८ ई० को पहुँची। लेकिन अभी सांडाघाट पर पक्का पुल नहीं बना था, इसलिये यात्रियोंको नावद्वारा पार होना पड़ता था। सांडाघाटके पुलकी योजना सन् १९०९ ई० में आरंभ हुई। सन् १९१२ ई० में उसके खम्भोंपर काम लगा और दो सालके भीतर खम्भे तैयार हुये। यह सारा पुल दोनों छोरोंके विस्तारको लेकर १५ मील लम्बा है, जिसे पूरा करनेमें ५ साल लगे। ८४ लाख रुपया पुलके छोरके विस्तारमें खर्च हुआ और स्वयं पुल-पर ३ करोड़ ९१ लाख लगे। इसके खम्भोंको तैयार करनेके लिये १६० फुट गहरे गोले भूमिमें गलाये गये। सबसे गहरे पुलके कूंएं दुनियामें यही हैं। यह पुल ५३८० फुट लम्बा है। यह पुल ४ मार्च सन् १९१५ ई० को यात्राके लिये खोल दिया गया और इसका नाम तत्कालीन वाइसरायके नामपर हार्डिंग पुल पड़ा। सांडाघाटके पुलके बाद दोर्जेलिङकी यात्रा कलकत्तावालोंके लिये बड़े सुखकी हो गई।

तराईसे दोर्जेलिङ जानेके लिये सन् १८३९ ई० में प्रथम सैनिक सड़क बनायी जाने लगी थी, जो सन् १८४२ ई० में ८ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुई। तराईसे चक्कर काटती यह सड़क खरसान् पहुँचती है। खरसान्से देवगिरि डांड़ेके साथ सिंचेल पहुँचती है। फिर जोरबंगला तक उतराई करके जलपहाड़की सड़कसे मिलकर चौरस्ता पहुँच जाती है। सैनिक सड़ककी चढ़ाई ज्यादा तेज थी और पहियेवाली सवारियोंके अनुकूल नहीं थी, इसीलिये सन् १८५१ ई० में दूसरी सड़क (गाडी सड़क) बनायी जाने लगी, जो सन् १८६८ ई० में तैयार हुई। इसी सड़कके किनारे-किनारे आज-कल दोर्जेलिङ हिमालय रेलवे चलती है। इस सड़क-पर प्रति मील ९०००० रुपया खर्च करना पड़ा और प्रति वर्ष डेढ़ लाख मरम्मत पर लगता। पीछे इसे दोर्जेलिङ रेलवेको दे दिया गया।

दोर्जेलिङ हिमालय रेलवेको बनानेसे पहिले सिलिगोड़ीसे गाड़ी-सड़क-द्वारा लोग तांगे या पैदल यात्रा करते थे। इसी तकलीफको दूर करनेके लिये एक कंपनी बनाई गई, जिसने सन् १८८० ई० में ट्रामवे लाइन चालू की। मार्च सन् १८८० ई० में वायसरायके आगमनके समय पहिला इंजन जोड़ा गया, उस समय ट्रामवे तिनधरिया तक हो गयी थी। इसके बाद घोड़े या दूसरी सवारीसे जाना पड़ता था। ४ जुलाई सन् १८८१ ई० को ट्रामवे दोर्जेलिङ तक पहुँच गयी और उसका नाम दोर्जेलिङ हिमालय रेलवे रख दिया गया। आरम्भमें इस रेलवे लाइन पर ३५०० पौंड प्रति मील खर्च पड़ा, जो पीछे और बढ़ गया। दोर्जेलिङ हिमालय रेलवे दोर्जेलिङ जाते समय सिलिगोड़ीसे मील भर पर ७०० फुट लम्बे महानदीके पुलको पार करती है। जाड़ोंमें यह उथली-सी मालूम होती नदी वर्षामें बड़ी विशाल और तीव्र धारा-वाली बन जाती है। यह नदी ऊपरकी ओर (भांवरमें) एक जगह एक मील धरतीमें अन्तर्द्धान हो जाती है। सिलिगोड़ीसे चलने पर पहिला स्टेशन पंचनई पड़ता है, जो कि तीन मील पर है। सिलिगोड़ी (३९२ फुट) से ७ मील-पर सुकना (५३३) स्टेशन पड़ता है। यहांसे कुछ चढाई शुरू हो जाती है। १२ वें मीलपर रोङतोङ पड़ता है। आगे चुनभट्टी (२००० फुट), तिनधरिया (२८२२ फुट, सिलिगोड़ीसे २० मील), घैयाबारी (३५१६ फुट, २४ वां मील,) पगलाझोड़ा, महानदी स्टेशन (४१२ फुट), खरसान्, टुङ स्टेशन (५६५६ फुट), सुनादा (६५५२ फुट), फिर उच्चतम स्थान घूम (७४०७ फुट ४७ वां मील), जहांसे ४ मीलमें ६०० फुट नीचे उतरकर दोर्जेलिङ स्टेशन (६८१२ फुट, सिलिगोड़ीसे ५२ वां मील) आता है।

सिलिगोड़ीसे किशनगंज तक ७० मीलकी लाइन पहले पहाड़ी रेलवे थी, जो अब आसाममें जोड़नेके लिये मीटर-लाइन (अवध-तिरहुत-रेलवे) में बदल दी गयी। सिलिगोड़ीसे १४ वें मीलपर सीधे पश्चिम नक्सलबाड़ी स्टेशन है। यह नेपालकी सीमाके नजदीक एक अच्छा बाजार है। रास्तेमें विशेषकर पक्की सड़कके किनारे कितने ही चायबगान हैं। सिलिगोड़ीसे आठ मीलपर सड़कसे कुछ हटकर बागडोगराकी विमान-भूमि (अड्डा)

है। नक्सलबाड़ीसे रेल दक्षिण-पश्चिम दिशामें चलती सिलिगोड़ीसे २९ मील पर बिहारकी सीमाके थोड़ा-सा भीतर और नेपाल-सीमासे भी केवल एक ही मील पर गलगलिया पहुँचती है। यहांसे १८ हजार मन चावल तथा हजार मनके करीब पाट प्रति वर्ष बाहर भेजा जाता है। गलगलियासे रेल चावल और पाटके केन्द्रों ठाकुरगंज और अलुआबाड़ी होती किशनगंज (पूर्णिया) पहुँचती है।

तिस्ता-उपत्यकामें गेलखोलाको रेलवे लाइन पहाड़ी सिलिगोड़ीसे उत्तर-पूरबकी ओर बगराकोटकी सड़कके साथ जाती है। प्रायः १३ मील पर सिवोक स्टेशन है, २९ वें मीलपर गेलखोलाकी लाइन खतम हो जाती है। यहां-से कलिम्पोङको माल रज्जु-मार्गसे भेजा जाता है, जो रेलवेकी ही संपत्ति है।

सन् १९४२-४३ ई० में पहाड़ी रेलपर चलनेवाले मुसाफिरोंकी संख्या निम्न प्रकार थी—

दोर्जेलिङ सड़क	३०८८७२
सिलिगोड़ी-किशनगंज	४५९२०४
तिस्ता-उपत्यका	३५९८८

२—मोटर-यात्रा

प्रथम विश्व-युद्धके बाद इस देशमें मोटरोंका प्रचार बढ़ा। इसी समय दोर्जेलिङ जिलेमें बहुत-सी मोटरकी सड़कें बनीं। मोटरवाली सड़कोंसे कुछ स्थानोंकी दूरियां निम्न प्रकार हैं—

से	को	मील	समय
दोर्जेलिङ	लेबोङ	५	२५ मिनट
,,	जोड़पोखरी	१३	१ घंटा
,,	मानेभंज्याङ	१६	१॥ ,,
,,	आठमील	१२	१ ,,
,,	तिस्तापुल (रंगली-द्वारा)	३१	२॥ ,,
,,	तिस्तापुल (पोशक-द्वारा)	२२	२ ,,

से	को	मील	समय
दोर्जेलिङ	तिस्ता (सिलिगोड़ी-द्वारा)	८२	५॥ घंटा
,,	सकोखोला (,, ,,)	१०२	६॥ ,,
,,	,, (पोशक-द्वारा)	४५	३॥ ,,
,,	मार्तम	६०	४ ,,
,,	गंङतोक (सिलिगोड़ी-द्वारा)	१३०	१० ,,
,,	,, (पोशक-द्वारा)	७०	५ ,,
,,	फूपछेरिङ	८	॥ ,,
,,	बदम्ताम्	११	१॥ ,,
,,	मांजीटार	१४	२ ,,
,,	तकवार	६	१ ,,
,,	नकदा कलव	१७	१। ,,
,,	कलिम्पोङ (सिलिगोड़ी-द्वारा)	९२	६ ,,
,,	,, (पोशक-द्वारा)	३२	३ ,,
,,	सिलिगोड़ी (गाड़ी सड़क-द्वारा)	५२	३ ,,
,,	,, (पोशक-द्वारा)	५५	४॥ ,,
,,	रियाङ	२६	२॥ ,,
,,	विरिक	३२	२॥। ,,
,,	सिङताम	४	॥। ,,
,,	कालीझोड़ा	३७	३। ,,
सिलिगोड़ी	कलिम्पोङ	४२	३ ,,
,,	तिस्तापुल	३२	२॥ ,,
,,	मार्तम्	५५	५॥ ,,
,,	गङतोक	६८	६॥ ,,
तिस्तापुल	कलिम्पोङ	१०	१ ,,
,,	संकोखोला	१८	१॥। ,,
,,	मार्तम्	२५	२॥ ,,

से	को	मील	समय
तिस्तापुल	गङतोक	३८	३॥ घंटा
कलिम्पोङ	संकोखोला	२८	२॥ ,,
,,	मार्तम्	३५	३॥ ,,
,,	गङतोक	८८	५ ,,
,,	पेदोङ	१२	१ ,,

३—रज्जु-मार्ग

कलिम्पोङसे गेलखोला तक रेलवेका रज्जु-मार्ग (रोप वे) है। इस मार्गका १८ मीलकी सड़ककी बोझा ढोनेवाली गाड़ियोंसे मुकाबला है। गोयनका कंपनीका बिजनबारीसे दोर्जेलिङ तकका एक रज्जु-मार्ग (५ मील) है, जिसका ८ मील लम्बी सड़कसे मुकाबिला है। जिलेकी कितनी ही चाय-कंपनियोंने भी कुछ छोटे-छोटे रज्जु-मार्ग कायम किये हैं। पनबिजलीके उत्पादन बढ़ने तथा जिलेके उद्योग-प्रधान होनेपर रज्जु-मार्गकी यहां बहुत गुंजाइश है। शायद वह भी समय आये, जब जापानकी तरह रज्जु-मार्ग यात्रियोंके लिये भी इस्तेमाल किये जायें।

चाय-कंपनियोंके कुछ रज्जु-मार्ग निम्न प्रकार हैं—

नाम	मील	शक्ति
मुंडाकोठी-धोजिया	१॥	तेल इंजन
शराबभट्ठी-रिङतोङ	२	बिजली
रिगतोङ-बालासान	२	,,
बालासान-मुर्मा	२	जल-शक्ति
लिजा चायबगान	१॥	जल-शक्ति
धुबों ,,	३/४	पन-बिजली
गोपालधारा ,,	१	जल-शक्ति
नमरिङ ,,	३/४	पन-बिजली
पोशक ,,	३	,,

नाम	मील	शक्ति
बैयाबारीसे तिङलिङ	१/२, ३/४, १	गुरुत्वाकर्षण
फुगुरिया चायबगान	३।४	,,
सिङवल्ली ,,	१/८, ३/४, १	,,

४—पुराना यातायात

हिमालयमें अब भी ऐसे कितने ही स्थान हैं, जहां उसी तरहके कठिन रास्ते मौजूद हैं। सिक्किम राजवंश मूलतः तिब्बती था, इसलिये वह गर्मियोंमें टोमो (चुम्बी) में रहना अधिक पसन्द करता था। सन् १८३० ई० में तराईसे सिक्किम जानेके दो मार्ग थे—एक 'नागरी' डांड़ा और दूसरा 'सब्बुकगोला', तीसरा रास्ता महानन्दा उस वक्त तक परित्यक्त हो गया था। सन् १८३५ ई० में कंपनीके हाथमें आनेपर यहां रास्तेकी समस्या बड़ी कठिन थी। सन् १८३८ ई०में प्रकाशित एक दोर्जेलिङ-पथ-प्रदर्शिकाके अनुसार कलकत्तासे पहाड़ तक जानेमें डाकके द्वारा ९८ घंटे लगते थे—

कलकत्तासे मालदा	५८ घंटा
मालदासे दिनाजपुर	१६ ,,
दिनाजपुरसे तितलिया	२० ,,
तितलियासे पहाड़ी तली	८ ,,

दोर्जेलिङ पहुँचनेमें ५ दिन लग जाते थे, और तकलीफ तथा खर्चकी तो बात ही क्या।

५—सड़कें

(१) केन्द्रीय सड़कें—

यह कह चुके हैं, कि मोटरोंके प्रचारके बाद सड़कोंका विकास अधिक तेजीसे हुआ। छोटी आस्टिनने पहिले-पहिल सकरी पहाड़ी सड़कोंका रास्ता खोला। यद्यपि थोड़ी-सी सड़क छोड़कर बाकी तिब्बत और सिक्किम जानेवाली सड़कें मोटर लायक नहीं है, किन्तु उनका भी व्यापारिक और सैनिक महत्त्व है, इसीलिये केन्द्रीय सरकारके लोक-

कार्य-विभागने उनको अपने हाथमें लिया है। तिस्तापुलसे रोङ्पू (१५ मील) और आगे गङ्तोकतक केन्द्रीय लोक-कार्य-विभागकी सड़क है। दूसरी महत्त्वपूर्ण सड़कें बंगाल सरकारके संचार-विभागके हाथमें हैं।

(२) **राज्य-सड़कें और पुल**—

(अ) **सड़कें**—राज्यकी ३११ मील लम्बी सड़कोंमें २१६ पक्की हैं, जिनपर कुछ साल पहिले साढ़े चार लाख रुपये वार्षिक खर्च होते थे। इन सड़कोंमें कुछ हैं—

(क) (**पहाड़ी**) **गाड़ी-सड़क**—इस सड़कके बारेमें पहिले कहा जा चुका है। आज-कल इस सड़कका उतना उपयोग नहीं है, क्योंकि सिलीगोड़ीके लिये सीधी जानेवाली सड़क इससे अधिक अनुकूल पड़ती है।

(ख) **तिस्ता-उपत्यका-सड़क**—यह सड़क सिलिगोड़ीसे सिवोक (१२ मील) तक मैदानमें फिर तिस्ता पुलतक पहाड़में गयी है। तिस्ता पुलसे रोङ्पू होते इसकी एक शाखा गङ्तोक फिर उसीकी दो शाखाएं ऊपर-नीचे होकर तिब्बतकी सीमा लाछेन, लाछुंङ और नातूलातक हैं। तिस्तापुलसे दूसरी शाखा (ऋषि सड़क) कलिम्पोङको गयी है, जहांसे वह तिब्बतकी सीमापर जालेप्ला पहुँचती है। सिवोकसे आगे तिस्तापर कारोनेशन (मुकुट बंधन) पुल है, जिसपरसे आसाम जानेवाली पक्की सड़क जाती है। सिलिगोड़ीसे दोर्जेलिङ और सिलिगोड़ीसे कलिम्पोङतककी सड़कें बहुत कुछ टार की हुई हैं।

(ग) **ऋषि सड़क**—यह सड़क कलिम्पोङसे तिब्बतकी और सिक्किमकी सीमातक २६ मील जाती है। जालेप-ला पार करनेपर फरीजोङ होते आगे ल्हासाका रास्ता है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण सड़क है और इसका प्रबंध राज्य (प्रान्त) सरकारके हाथमें है। पहिले कलिम्पोङतक ही मोटर जाती थी, लेकिन अब मोटरें अलगड़हा तथा जीप पेदोङतक जा सकती हैं।

(घ) **सिवोक—बागराकोट सड़क**—यह साढ़े नौ मील लम्बी सड़क सिलिगोड़ी तथा तिस्ता-उपत्यकाको आसाम रेलवेसे मिलानेके लिये बनी थी। लड़ाईके समय इस सड़कमें और सुधार किया गया। विभाजनके

बाद भारतके भीतर-भीतर आसामके साथ संबंध इसी सड़कसे रहा, जब तक कि सन् १९५० ई० के आरंभमें आसामसे जोड़नेवाली रेलवे लाइन नहीं खुल गयी ।

(ङ) **सिलिगोड़ी नक्सलबाड़ी सड़क**—यह सड़क पौने १४ मील लम्बी ५ टन तककी लारियोंके लिये उपयुक्त है । विभाजनके बाद इस सड़कका उपयोग बहुत बढ़ गया, अब सिलिगोड़ीतक अवध-तिरहुत रेलवेकी लाइन चालू हो जानेपर भार कम हो जायेगा ।

इस सड़कसे उत्तर क्रमशः २२।, ८।।, ५। मील लम्बी मोतीगड़हा-खरसान्-सड़क, तिरहाना—नक्सलबाड़ी-सड़क और तिरहाना-बागडोगरा सड़कें हैं । इनका प्रबंध प्रांतीय सरकार करती है । आखिरी दोनों सड़कें वर्ष भर भारी लारियोंके लिये खुली रहती हैं । मोतीगड़हा-खरसान्-सड़क पर पहिले ९ मीलतक ५ टनकी लारी चल सकती है, किंतु पंखाबारीतक बोझ हलका चाहिये । आखिरी ५ मील कच्ची घोड़ा-सड़क है ।

गंगा-दोर्जेलिङ सड़कका २ मील छोर इस जिलेकी तराईमें पड़ता है । युद्धके समय इस सारी सड़कमें सुधार कर दिया गया, जिससे करागोला घाटतक मोटरें और लारियां जा सकती हैं । मोटरसे दोर्जेलिङ आनेवाले इस सड़कसे आ सकते हैं । सिलिगोड़ीसे कटिहारतक सड़क एक है, वहांसे एक सड़क गंगासे उत्तर, उत्तर मुजफ्फरपुर और छपरातक चली जाती है, जहांसे मोटर-द्वारा गोरखपुर, लखनऊ पहुंचा जा सकता है । कटिहारसे दूसरी सड़क गंगा-किनारे करागोला घाटतक पहुँचती है, फिर नावसे गंगा पार हो साहबगंजसे कलकत्तातक मोटर-सड़क बनी हुई है । पाकिस्तानके भीतर न जानेकी इच्छा रखनेवाले इस सड़कसे अपनी मोटर पर दोर्जेलिङ पहुंच सकते हैं । कलकत्तासे सबसे आरामकी यात्रा तो कलकत्ता-सिलिगोड़ी रेल ही थी, किंतु उसका अधिक भाग पाकिस्तानमें होनेसे बहुत कठिनाइयां उत्पन्न हो गयी हैं । लाइनके खुलनेके बाद भी तरद्दुद तभी दूर होगा, यदि पाकिस्तान कस्टम सीमापर युरोपके देशोंकी भांति पार होनेवालेके सामान पर मोहर लगा दी जाये । अभी तो पाकिस्तान सरकार और उसके कस्टम

अफसरकी भलमनसाहत पर सब कुछ निर्भर है। कलकत्तासे सीधी अधिक सुविधाजनक रेल-यात्रा तभी होगी, जब कि साहबगंज या भागलपुरके पास पुल बन जायेगा। आसाम और गंगाके उत्तरी भागके पार तथा दोर्जेलिङ एवं आसामकी चायका निर्यात कलकत्तासे ही होता है, इसलिये ऐसे पुल और यातायातकी बड़ी आवश्यकता है।

(च) **घूम-सिमाना सड़क**—यह घूमसे नेपालकी सीमातक जानेवाली १० मीलकी सड़क है। पहिले इसका नाम नेपाल-सीमा सड़क था। यह प्रान्तीय सरकारके प्रबंधमें है। सड़क पक्की और भारी लारियोंके चलने लायक है। पूर्वी नेपालके महत्त्वपूर्ण व्यापारका यह अच्छा संचार-साधन है।

(छ) **पोशक सड़क**—यह १७ मीलकी सड़क तिस्ता पुलसे गाड़ी-सड़कपर जोरबंगलातक जाती है। जोरबंगलासे ६ मीलतक भारी बोझके लिये उपयुक्त है, किंतु बाकी हिस्सेमें मोटरकार, जीप या हलकी लारी जा सकती है। इस सड़कपर जोरबंगलासे छठे मीलसे एक और सड़क तकदा छावनीतक जाती है।

(ज) **रंगिल सड़क**—यह सड़क दोर्जेलिङ नगरसे रंगित नदी तक और वहांसे तिस्ताके साथ चलती है। सारी सड़क साढ़े १७ मीलकी है, जिसमें ८ मील खच्चरोंके जाने लायक कच्ची है। लेबोङसे मांझीटार पुल और चम्पापुलसे तिस्ता-द्वारा पोशक-झोड़ातक सड़क पक्की है जिसपर मोटर लारियां चलती हैं।

(झ) **सिमाना बस्ती-दूधेझोड़ा सड़क**—पौने २३ मील लम्बी सड़कमें यह सवा १९ मील पक्की है, जिसमें हलकी लारियां जा सकती हैं।

इन सड़कोंके अतिरिक्त प्रान्तीय सरकार कुछ खच्चरोंकी सड़कोंका भी प्रबंध करती है, जैसे—

(ञ) **सिमाना बस्ती-फलूत सड़क**—नेपालकी सीमाके साथ-साथ ३५ मील जाती है। पर्यटकोंको यह बहुत प्रिय है।

(ट) **जंगीगारद सड़क**—यह सड़क कलिम्पोङसे गोरुबथान तक

२४ मील लम्बी है, जिसमें साढ़े ८ मील पक्की सड़क है। इस सड़कसे दुवार जाया जा सकता है।

प्रान्तीय सरकारके बनवाये पुलोंमें से कुछ निम्न प्रकार हैं—

(क) **तिस्ता पुल**—यह कलिम्पोङसे १० मील नीचे तिस्ता नदीपर पड़ता है। इसे बंगालके दुःख्यात गवर्नरके नाम पर अन्डरसन-ब्रिज कहा जा रहा है। यह सीमेंट-फौलादका पुल सन् १९३३-३४ ई० में २६९९९९ रुपयेके खर्चसे बनाया गया। पुल १८ फुट चौड़ा और देखनेमें बहुत सुन्दर है।

(ख) **कारोनेशन पुल**—सिलिगोड़ीसे १४ मीलपर तिस्ता नदीके ऊपर बना है। यह ५६३ फुट लम्बा है, जिसके बीचके दोनों पायोंका अन्तर २७६ फुट तथा ऊँचाई १३२ फुट है — बीचमें पानीके तलसे पुलका मेहराब १७३ फुट ऊंचा है। भारतमें यह पहिला इतना बड़ा पुल है, जो खोखले कंक्रीट बक्सोंसे बनाया गया है। इस पुलका उद्घाटन १२ मार्च सन् १९४१ ई० को हुआ था।

(ग) **महाराजा नन्दी पुल**—यह सिवोक नदीपर सिलिगोड़ीसे १२ मीलपर है। सन् १९४९ ई० में १०३००० रुपये लगाकर इसे तैयार किया गया। इसमें ३३ खंम्भे हैं, जिनमें नदीके भीतरवाले दोनों खम्भे एक दूसरेसे सौ फुटपर लगाये गये हैं।

(घ) **लिश नदी पुल**—यह सिवोक बागराकोट-सड़कपर कंक्रीटका पुल है, जिसका बीचका मेहराब ६८ फुट चौड़ा है। इसपर ३५८६८ रुपया खर्च हुआ था।

(ङ) सिवोक बागराकोट सड़कपर कोलाई, गोमती और रोङदोङ नदियोंपर भी लोह-सीमेंट (फेरो-कंक्रीट) के पुल हैं।

(च) पंखाबारीमें बालासान नदीपर एक झूला-पुल है।

(छ) दोर्जेलिङ जिलेको सिक्किम राज्यसे जोड़नेवाला एक झूला-पुल महारंगित नदीपर माझीटारमें है।

(ज) महारंगितपर चंपामें एक झूला पुल है। यह भी इस जिलेको सिक्किम राज्यसे मिलाता है।

(झ) तिस्ता-उपत्यका सड़कपर रङ्बी (कालीखोला) नदीपर एक झूला-पुल है। पुराने पुलकी बगलमें नया कंक्रीटका पुल सन् १९५० ई० में तैयार हुआ। पुराने पुलपर मोटर और लारियोंको खाली करके ले जाना पड़ता था।

(३) जिला-बोर्डकी सड़कें—

जिलापालिका (जिला-बोर्ड) की ३५५ मील लम्बी ६८ सड़कें हैं, जिसमें २१ मील छोड़कर सभी सड़कें कच्ची हैं। जिला-बोर्ड प्रति वर्ष इन पर ७०००० रुपया खर्च करता है। इसमें ५०६ रुपया प्रति मील पक्की और ९६ रुपया प्रति मील कच्ची सड़कोंकी मरम्मतमें व्यय होता है। जिलापालिकाके पास एक जिला इंजीनियर और पांच ओवरसियर हैं। सन् १९२२ ई० से पहिले इस जिलेमें जिला-बोर्ड नहीं था। उस वक्त इन सड़कोंपर पुल आदिका प्रबंध भी नहीं था। अब उनपर कई झूले, खम्भे या लकड़ीके पुल हैं। इन सड़कोंके अतिरिक्त दोर्जेलिङ-सुधारनिधि, जंगल-विभाग और खासमहालकी भी सड़कें हैं। जिलेकी सभी तरहकी मुख्य-मुख्य सड़कों और उनकी भार-क्षमता निम्न प्रकार है—

(क)—पहियेवाले यानोंके योग्य नाम—

नाम	भार-क्षमता
१. स्टेशनसे सिलिगोड़ी	१४ मन
२. मोतीगड़हा पर्वत-गाड़ी	५ टन (१४० मन)
३. मोतीगड़हा-नवसलबाड़ी	,,
४. स्टेशनहाता-सड़क (सिलिगोड़ी)	१४ मन
५. नयी कचहरी-सड़क	,,
६. तिरहाना-बागडोगरा	५ टन
७. सिलिगोड़ी बाजार	१४ मन
८. सुकना-अदलपुर	साढ़े १० मन
९. पानीघाटा-कदमा	५ टन

	नाम	भार-क्षमता
१०.	तिरहाना-नक्सलबाड़ी	५ टन
११.	मोतीगड़हा-खरसान् सड़क	,, (नवें मील तक)
१२.	दोर्जेलिङ पर्वतगाड़ी-सड़क	१४ मन (सुकनासे आगे)
१३.	घूम-सिमाना बस्ती	,,
१४.	लेबोङ सड़क	,,
१५.	पोशक सड़क	१४ मन (छठें मीलसे तिस्तातक ६। मन)
१६.	हुम सड़क	१४ मन
१७.	तिस्ता-उपत्यका	१२। मन
१८.	पश्चिमी रिवसा-सड़क (कलिम्पोङ)	१४ मन
१९.	ऊपरी गाड़ी-सड़क (,,)	,, ,,
२०.	निचली खच्चर सड़क (,,)	,, ,,
२१.	रिङकिङपोङ सड़क (,,)	,, ,,
२२.	रियाङ जानेवाली सड़क (,,)	,, ,,
२३.	ऋषि सड़क	,, (कलिम्पोङ से अलगड़हा ६॥ मन)
२४.	सिलिगोड़ी-सिवोक सड़क	१४ टन
२५.	सिवोक-बागराकोट सड़क	८ टन
२६.	गंगा-दोर्जेलिङ सड़क	१४ मन
२७.	जोरबंगला-सिंचेल सड़क	६½ मन
२८.	सिमानाबस्ती-दुधियाझोड़ा सड़क	,,
२९.	रंगित सड़क	,,
३०.	मांजीटार पुल सड़क	,,

(ख) खच्चर सड़कें

३१. दौ-पर्वत स्कूल सड़क (खरसान्)

३२. दौ-पर्वत, दोनों स्कूलोंको मिलानेकी सड़क

३३. पुरानी रंगित

३४. पानीघट्टा-दुधियाझोड़ा

नाम

३५. पर्वत गाड़ी सड़ककी लघु सड़क

३६. कलकत्ता सड़क

३७. सिमाना बस्ती—फलूत

३८. जंगी गारद सड़क

३९. ऋषि सड़क और जंगी गारद सड़कको मिलानेकी सड़क

जिला-बोर्डकी सड़कें काफी हैं, जिनमेंसे कितनोंपर पहियेवाले यान चलते हैं और कितनोंपर केवल बेपहियेके। इनमेंसे कुछ ५ मनसे ऊपरवाली सड़कें निम्न हैं—

१. सीमास्तम्भसे ७ वें रोडतक	५ टन
२. नक्सलबाड़ी—खरीबारी	"
३. खरीबारी—गलगलिया	५ टन
४. मोतीगड़हा—नक्सलबाड़ी सड़कसे घुखु झोडा	"

जिला बोर्डकी कुछ खच्चर-सड़कें निम्न प्रकार हैं—

१. दोर्जेलिङ—छोटी रंगित

२. पुलबाजार—कोलबोङ

३. रोङबुल—नम्सुपुल

४. बालासान—रोङबुल पुल

५. सुनादा—बालासान

६. बदमतान्—बारनिशबेग

७. पासिमबोङ—तुङसोंङसे १३ वीं सड़क

८. पोशक सड़कसे छठें मीलपर छावनी

९. सुनादा भट्ठीसे नाम्सु

१०. रोङ बोङ—सीमान्त सड़क

११. कलिम्पोङ-बोङबस्ती

इनमेंसे कुछ सड़कोंपर कितनी ही दूर तक पहियेवाली सवारियां भी चल सकती हैं।

(४) जंगल-विभागीय सड़क

(क) पहिये वाली सड़कें

१. पुरानी सैनिक बैलगाड़ी सड़क
२. सिनकोना-लालकूटी गाड़ी सड़क
३. सुकियापोखरी-मानेभंज्याङ गाड़ी सड़क
४. मानेभंज्यांङ-बतासे गाड़ी सड़क
५. दिलाराम सड़क (बगोरासे दोर्जेलिङ पर्यन्त गाड़ी सड़क)
६. सुकना—सिवोक सड़क
७. रिशिसुङ-लाभा गाड़ी सड़क
८. केन्द्रीय गाड़ी सड़क
९. दक्षिण सीमा गाड़ी सड़क
१०. दलगांव-दुवार गाड़ी सड़क

इनमें प्रथम दोर्जेलिङ और खरसान् के जंगल-विभागोंमें हैं, २ से ४ तककी सड़कें दोर्जेलिङ विभागमें है, ५ और ६ खरसान्-विभागमें और बाकी. कलिम्पोङ जंगल-विभाग में।

(ख) बेपहिया सड़क

१. टूङ स्टेशनसे बगोरा (खरसान्)	
२. बगोरा-माना	(कलिम्पोङ विभाग)
३. कमेशी बेपहिया सड़क	(,, ,,)
४. नोम ,, ,,	(,, ,,)
५. फागु ,, ,,	(,, ,,)

६—डाक-तार

दोर्जेलिङ बंगाल-सरकारकी द्वितीय राजधानी तथा दिल्लीके राजधानी बननेसे पहिले भारतका द्वितीय ग्रीष्म-राजधानी था, इसलिये यहां डाक-तारका बड़े पैमानेपर प्रबंध आवश्यक ही था। १९४३-४४ में नगरके मुख्य डाकघर तथा उप-डाकघरोंमें प्रतिदिन ३२०४ बिना रजिस्ट्रीके

पार्सल आते थे। वार्षिक तारोंकी संख्या ८१७८९ तथा रजिस्ट्री किये हुए पत्रोंकी ५९८३६, डाक-पार्सलोंकी ५६६९१ और रेडियो लाइसेन्सदारोंकी संख्या ८८८ थी। उस साल १८०२९८१ रुपयेके मनी-आर्डर आये। दार्जिलिङ जिलेमें नगरके मुख्य डाकघरके अतिरिक्त घूम, जलपहाड़, लेबोङ, उत्तर विंदु (नार्थ प्वाइंट) और दार्जिलिङ बाजारमें छोटे डाकघर हैं। मुख्य डाकघरके अधीन इस जिलेमें, सिक्किम और तिब्बतके ३१ छोटे डाकघर काम करते हैं। मुख्य डाकघरकी तिमंजिला पत्थरकी सुन्दर इमारत है, जिसके साथ ही पोस्टमास्टर और सिगनल कर्मचारियोंके निवास-स्थान भी हैं। इस इमारतका उद्घाटन २ मई सन् १९२१ ई० को हुआ था।

मुख्य डाकघरके अतिरिक्त जिलेके ४३ डाकघरोंमें २४ उप-डाकघर और ४८ शाखा डाकघर हैं। बागडोगरा, गयागंगा, घूम, जलपहाड़, कलिम्पोङ, खरसान्, लेबोङ, मिरिक, उत्तर विंदु, पानीघट्टा, रंङलीरंङ-लिओत, सिलिगोड़ी, सुकियापोखरी, तिनधरिया और तिस्ता पुलके १५ उप-डाकघर हैं। जिलेमें २८१ मील डाकका रास्ता है—दार्जिलिङ-सिलिगोड़ी, दार्जिलिङ-लेबोङ, गेलखोला-कलिम्पोङ, गेलखोला-गङ्तोकमें डाककी मोटरें चलती हैं। डाकघरों और दूसरे स्थानोंमें १५५ लेटरबक्स हैं।

तार-इंजीनियरी विभागके पास ३०० मीलकी तार-लाइन है। दार्जिलिङसे कलकत्ताके लिये सीधी तार-लाइन है। इसके अतिरिक्त यातुङ (तिब्बत), कलिम्पोङ, गङतोक, सैदपुर, मिरिक और लेबोङके साथ सीधी लाइनें हैं, जो कि बद्ध-चक्कर शैलीसे काम करती हैं। दार्जिलिङ-सैदपुर चक्करपर सुनादा, टुङ, खरसान्, तिनधरिया और सिलिगोड़ीके तारघर हैं। दार्जिलिङ-यातुङ चक्करमें कलिम्पोङ, रेनोक, गङतोक और यातुङ पड़ते हैं। तार-लाइनकी देख-भालके लिये एक इंजीनियर सुपरवाइजर, दो सब-इन्स्पेक्टर और ५ लाइन मैन काम करते हैं। नियंत्रक अधिकारी तार-विभागका एस० डी० ओ० सैदपुरमें रहता है, जो बंगाल-आसाम हातेके कलकत्ता पूर्वी विभागके विभागीय इंजीनियर के अधीन है।

८

लड़ाईके समय ८५० टेलीफोनवाले लोग जिलेमें रहे, जिनके लिये विनिमयके पांच स्थान हैं। सभी विनिमय दोर्जेलिङसे संबंधित हैं, जहांसे बाहर ट्रंक-काल जाती है। चार विनिमय-स्थान हैं—दोर्जेलिङ, कालिम्पोङ, खरसान्, नगरीस्पर और नकशा।

७—डाक-बंगले

जिलेमें स्थान-स्थानपर बहुतसे पर्यवेक्षण बंगले बने हुए हैं, जो मुख्यतः पर्यवेक्षक अधिकारियोंके उपयोगके लिये हैं, किंतु आवेदनकी स्वीकृतिपर उनमें यात्री भी रह सकते हैं, किंतु तभी जब कि वहां अधिकारी न ठहरे हुए हों। जोरपोखरी-तङलू फलूतके रास्तेके बंगले पर्यटकोंके लिये ही बनाये गये हैं, लेकिन इनके लिये भी पहिलेसे आज्ञा ले लेनी आवश्यक है। पर्यवेक्षण बंगलोंकी सूची निम्न प्रकार है—

(१) **केन्द्रीय-सरकारी**—(आज्ञादायक इक्जीक्यूटिव इंजीनियर, सेन्ट्रल पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट, गङतोक में):—

(क) मल्ली (तिस्ता-रोङपू सड़कपर तीसरा मील)

(ख) पेदोङ (ऋषि सड़कपर २२ वां मील)

(२) **राज्य-सरकारी** (आज्ञादायक, इक्जीक्यूटिव इंजीनियर दोर्जेलिङ)—

(क) पोशक (जोरबंगलासे तिस्ताकी सड़कपर १५ वां मील)

(ख) सिलिगोड़ी

(ग) तिनधरिया (दोर्जेलिङ पर्वतगाड़ी सड़कपर १७ वें मीलके पास)

(घ) खरसान् (दोर्जेलिङ पर्वत गाड़ी सड़कपर ३० वें मील)

(ङ) कालीझोडा (सिवोक तिस्ता सड़क पर सिलिगोड़ीसे साढ़े १६ वें मीलपर)—

(च) बीरिक (सिवोक-तिस्ता सड़कपर पौने २२ वें मीलपर)

(छ) तिस्ता पुल (सिवोक-तिस्ता सड़कपर साढ़े ३२ वें मीलपर)

(ज) कलिम्पोङ (ऋषि सड़कपर १० वां मील)

(३) **जिला पालिकीय** (आज्ञादायक) चेयरमेन दोर्जेलिङ जिला बोर्ड—

(क) लोधमा (पुलबाजार-सुवेरकुम सड़कपर दोर्जेलिङ्गसे १७ वें मील पर)
(ख) सिरीखोला (,, २८ वें मील)
(ग) नम्सु
(घ) नक्सलबाड़ी (तराई)
(ङ) खरीबारी (तराई)
(च) फांसीदेवा (,,)
(छ) सिलिगोड़ी (,,)
(४) **दोर्जेलिङ विकास निधिक**—(डिप्टी कमिश्नर, दोर्जेलिङ)
(क) बदमताम् (रंगित सड़कपर दोर्जेलिङसे छठा मील)
(ख) जोरपोखरी (घूम-सिमानाबस्ती सड़कपर घूमसे ८ वां मील)
(ग) तङ्ग्लू (सिमानाबस्ती फलूत सड़कपर जोरपोखरीसे १०वां मील)
(घ) सन्दकपू (सिमानाबस्ती फलूत सड़कपर तङ्ग्लूसे १४ वें मीलपर दो बंगले)
(ङ) फलूत (सिमानाबस्ती-फलूत सड़कपर)
(च) सिञ्चेल (घूमसे डेढ़ मीलपर दो बंगले)
(५) **खासमहालीय**—(डिप्टी कमिश्नर दोर्जेलिङ)
(क) लोपचू (पोशक सड़कपर दोर्जेलिङसे १५ वें मीलपर)
(ख) लिङ्लिङ दोर्जेलिङसे १९ वें मीलपर)
(ग) तकलिङ (लिङ्दिङसे ७ वें मीलपर)
(घ) झेपी (पुलबाजार-सुवेरकुम सड़कपर दोर्जेलिङसे १२ वें मीलपर)
(ङ) डंगिया (दोर्जेलिङसे पुलबाजार होकर १३ वें मीलपर)
(च) पुलुङदुङ (घूम और सुकियापोखरी होकर दोर्जेलिङसे १४ मील)
(छ) पंखाबारी (मकेतीगड़ा-खरसान् सड़कपरसे खरसान् ७ वें मील)
(ज) दलपचन (ऋषि रोड़पर कलिम्पोङसे ६ वें मीलपर)
(झ) अलगड़हा (,, ,, साढ़े ९ वें मीलपर)
(ञ) कागे पेदोङ-(कागे सड़कपर कलिम्पोङसे २० वें मीलपर)

(ट) काकीबोङ (रेली-काकीबोङ सड़कपर कलिम्पोङसे ९वें मीलपर)
(ठ) सिङजी (,, ,, ,, १८ वें मीलपर)
(ड) नम्बोङ (,, २२ वें मीलपर)
(ढ) समथर (सिङजी-समथर सड़कपर कलिम्पोङसे २० वें मीलपर)
(ण) गितदुबलिङ (कलिम्पोङ बुधबारे रोडपर कलिम्पोङसे १४ वें मीलपर)
(त) मानजीङ (बुधबारे-मानजीङ सड़कपर, कलिम्पोङसे २४ मील)
(थ) फापरखेती (जंगीगारद सड़कपर कलिम्पोङसे २५ मील)
(द) गोरुवथान (,, ,, ३३ वें मीलपर)
(ध) कुमाई (मटेली रेल स्टेशनसे ८ वें मीलपर)
(न) पातेनगोदक (कुमाई-झोलङ-पातेनगोदक सड़कपर मटेली स्टेशनसे १९ वें मीलपर)
(प) नोदे (पातेनगोदक ताङताअरितर सड़कपर मटेलीसे २९ वें मीलपर)
(फ) ताङता (,, ,, ३८ वें मीलपर)
(ब) लोले (कलिम्पोङसे ८ मीलपर तथा रेली नदीके बगलेजिला-बोर्ड वाले पुलसे ३ रे मीलपर)

(६) **दोर्जेलिङ हिमालय रेलवेके बंगले**—(जेनरल मैनेजर, दोर्जेलिङ हिमालयन रेलवे)

(क) सिलिगोड़ी (दो बंगला)
(ख) रियाङ रेलवे स्टेशन (तिस्ता-उपत्यकामें)

(७) **मङपू सिनकोना विभागीय**—सुपरिन्टेन्डेन्ट, सिनकोना मङपू)

(क) सुरेल (रङबी झूला पुलसे १० वें मील और मङपू से २ रे मील)
(ख) मनसोङ (तिस्ता-उपत्यकामें सुकियाखोलासे ६ वें मील और कलिम्पोङसे १० वें मीलपर)
(ग) रोङगो (कुमाई चायबगानसे १० वें मीलपर)

(८) जंगल विभागीय—दोर्जेलिङ डिवीजनल फारेस्ट अफसर
(क) बनासे (६८८८ फुट, जोरपोखरीसे साढ़े १० मील उत्तर-पश्चिम)
(ख) देवरापानी (६१५० फुट, जोरपोखरीसे ४ मील दक्खिन)
(ग) लेप्चाजगात (७३०० फुट, घूमसे पश्चिम ५ मील मोटर सड़कपर)
(घ) पल्माजुआ (७२५० फुट, नक्लूसे ७ मील उत्तर-पूर्व, बनासेसे ८ मील उत्तर-पश्चिम)
(च) रम्मम् (७९५८ फुट, रिम्बिकसे १२ मील उत्तर, फलूतसे पौने ९ मील दक्खिन-पूर्व)
(छ) रिम्बिक (७५०० फुट, पल्माजुआसे ७ मील उत्तर-पश्चिम)
(ज) रङ्गबी (७३००, फुट, घूम स्टेशनसे साढ़े ६ मील पूर्व)
(झ) रङ्गीरुङ (६२५० फुट, घूमसे साढ़े ३ मील उत्तर-पूर्व)
(ञ) तकदा (५४७० फुट, दोर्जेलिङ से मोटर-द्वारा १६ मील दक्खिन-पूर्व)
(९) डिविजनल फारेस्ट अफसर खरसाङ्—
(क) डोहिल (खरसाङ् स्टेशनसे ढाई मील, बंगाल जंगल स्कूलके समीप)
(ख) बांकुलोंग (बालासान नदीके पश्चिमी तटपर अम्बरिया झूलापुलसे चौथाई मील)
(ग) खंरेबाड़ी (पानीघट्टासे ४ मील पश्चिम लोहागढ़के नजदीक)
(घ) व्यङ्टूबी (बागडोगरा स्टेशनसे डेढ़ मील उत्तर)
(ङ) सिलिगोड़ी (रेल स्टेशनसे १ मील)
(च) सुकना (सुकना स्टेशनके पास)
(छ) लतपन्चोर (कालीझोडासे ११ मील तिस्ता और महानदीके बीचकी पर्वतश्रेणी पर)
(ज) माना (महलदीरमके पास लतपन्चोरसे ५ मील)
(झ) बगोरा (टुङ रेलवे स्टेशनसे ४ मील पर पहाड़के ऊपर)

(१०) **कलिम्पोङ डिवीजनल फारेस्ट अफसर--**

(क) दलपचन (कलिम्पोङसे ६ मील खच्चर सड़कपर)

(ख) रिशिमुङ (कलिम्पोङसे १४ मील)

(ग) पखासारी (ध्वस्तप्राय)

(घ) पसीलिङ (कलिम्पोङसे ३ मील जंगीगारद रोडके किनारे)

(ङ) जोलेगांव (रिशिमुङसे १० मील दक्खिन)

(च) तारखोला (तिस्ता-उपत्यकामें गेलखोलासे ११ मील)

(छ) नजोक (रियाङ रेलवे स्टेशनसे दो मील तिस्ताके किनारे)

(ज) मांङपोङ (दुवारमें सिवोकसे साढ़े ५ मील)

(झ) चुनभट्ठी (दुवारमें बागराकोट रेल-स्टेशनसे १ मील)

(ञ) बरगिश (चुनभट्ठीसे ५ मील दुवारमें)

(ट) बुरीखोला (दुवारके डामडिम रेलवे स्टेशनसे ९ मील)

(ठ) खुमानी (दुवारमें , मटेली स्टेशनसे ५ मील)

(ड) सामसिङ (दुवारमें, मटेली स्टेशनसे ६ मील)

(डाक-बंगलोंमें रहनेकी अनुमति लेनेके लिये कोष्ठकमें लिखे अफसरोंके पास आवेदन-पत्र भेजना चाहिये। आमतौरसे सिक्किमके बंगलोंमें प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दो रुपया लिया जाता है, दोर्जेलिङ जिलेमें साढ़े तीन रुपया और सारे बंगलेका अधिकतम १० रुपया।)

(८) विशिष्ट बंगले—

बंगला	मील-दूरी		ऊंचाई (फुट)	कमरे शयन	भोजन	बैठक	चारपाइयां
१. सिंचेल (पुराना)	६	दोर्जेलिङसे	८०००	४	१	०	४
२. ,, (नया)	६	,,	,,	२	१	०	४
३. बदमताम्	७	,,	२५००	२	०	०	४
४. लोपचू	१५	,, ४ पोशकसे	५३००	२	०	०	४
५. जोरपोखरी	१३	,, १० नोङलूसे	३४००	२	१	०	५
६. तोङलू	१०	जोरपोखरीसे १०सन्दकपूसे	१००७४	२	१	०	४
७. सन्दकपू	१४	तोङलूसे, १२ फलूतसे	११९२९	२	१	०	५
८. फलूत	१३	सन्दकपू, १७ देन्तम	११८११	२	१	०	४
९. देन्तम	१७	फलूत, १२ पमिओंची	४५००	२	१	०	४
१०. पमिओंची	११	देन्तम, १० रिन्छेनपोङ	६९२०	२	१	०	४
११. रिन्छेनपोङ	१०	पमिओंची, १३ चाकुङ	६३००	२	१	०	४
१२. चाकुङ	१३	रिन्छेनपोङ, २०दोर्जेलिङ	२१००	४	१	०	४
१३. रुङपो	११	मल्ली, ९ पक्योङ	१२००	४	१	१	४
१४. संकाखोला (वर्दङ)	६	रोङ्पू, १९ कलिम्पोङ	१४००	३	२	१	४
१५. मरतम	६	संकोखोला, १० गङतोक	२१८०	२	१	०	४

बंगला	मील—दूरी	ऊंचाई (फुट)	शयन	कमरे भोजन	बैठक	चारपाइयां
१६. गङ्तोक	१० मग्नस, १६ गाड़ीसड़क, ५२, ६३ दोर्जेलिङसे	५८००	५	२	०	४
१७. पाक्योङ	९ रोङ्पु, १० गङ्तोक, १८ पेदोङ	४७००	२	१	०	४
१८. केवजिङ (सोसिङ)	१० पमिओंची, १० रिन्छेंनपोङ	६०००	२	१	०	४
१९. तेमी	१० केवजिङ, ११ नमची	५०००	२	१	०	४
२०. सोङ	१२ तेमी, १५ गङ्तोक	८५००	२	१	०	४
२१. नमची	११ वदमतम्, १५ चाकुङ	५२००	२	१	०	४
२२. अरी	१२ पेक्योङ, ८ पेदोङ	४७००	३	१	०	४
२३. रेनोक	६ अरी, १५ पेदोङ	३२००	१	१	०	४
२४. रोङ्ली	९ सेदोन्छेन, १५ रोङ्पु	२७००	२	१	०	४
२५. सेदोन्छेन	१३, ९ रोङ्ली	६५००	१	१	१	४
२६. ग्नातोङ	९ सेदोन्छेन	१२३००	२	२	०	४
२७. कापुप	८ ग्नातोङ, ३ जालेप्ला	१३०००	२	०	०	२
२८. पुसुम (कर्पोनिङ)	१० गङ्तोक	२५००	२	१	०	४
२९. चङ्गू	११ पुसुम	१२६००	२	१	१	४
३०. दिकछू (रियतदोङ)	१६ गङ्तोक, १६ सिङगिक	२१५०	२	१	०	४

बंगला	मील-दूरी	ऊँचाई (फुट)	कमरे शयन	भोजन	बैठक	चारपाइयां
३१. सिङ्गिक	१० दिकछु	४६००	२	१	०	४
३२. टुङ	८ सिङ्गिक	४८००	२	१	०	४
३३. चुङथाङ	५ तुङ	५३५०	२	१	०	४
३४. लाछेन	१३ चुङथाङ	८८००	२	१	०	४
३५. थङ्गू	१३ लाछेन	१२८००	२	१	०	४
३६. लाछुङ	१० चुङथाङ	८८००	२	१	०	४
३७. युमथङ	८ लाछुङ	११७००	२	१	०	४
३८. झेपी	१०½ रिम्बिक, १२ दोर्जेलिङ	४७००	०	०	०	४
३९. पेदोङ	१२ कलिम्पोङ, ५ रेनांक	४९००	४	२	०	४
४०. तिस्तापुल	२३ दोर्जेलिङ, ३ पोगंक	७१०	२	०	०	३
४१. पोशक	१३ ,, ४ लोप्चू	२६००	३	१	०	६
४२. बिरिक	१० निम्ना पुल, ५ कालीझोडा		२	१	०	५
४३. कालीझोडा	५ बिरिक, १६ सिलिगोड़ी	५५०	२	१	०	३
४४. मल्ली	५ कलिम्पोङ, ११ वदमताम्	४१००	२	१	०	४
४५. *कलिम्पोङ	३२ दोर्जेलिङ २३ पगडंडीसे	४१००	४	२	१	४

* १-३७ तकके आज्ञादाता डिप्टी कमिश्नर, (दोर्जेलिङ) हैं, बाकीके एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, दोर्जेलिङ डिवीजन, दोर्जेलिङ।

६

स्वास्थ्य-रक्षा

१—स्वास्थ्य समस्या

ऊँचाईके अनुसार स्थानोंका स्वास्थ्य अच्छा होता है। २५०० फुटसे नीचे स्वास्थ्यकर स्थान कम है। तराई तथा तिस्ता-उपत्यका तो अत्यन्त अस्वास्थ्यकर स्थान हैं। दोर्जेलिङ्के समान ऊँचाई (६५०० और ७५०० फुट) पर औसत तापमान ५० डिग्री फारेन्हाइट रहता है। वहां नमी कुछ अधिक रहनेपर भी जलवायु अच्छा और भोजन सुपच होता है। ४००० से ८००० फुटकी ऊँचाईको अत्यधिक स्वास्थ्यकर कहा जा सकता है।

मलेरिया तराईका अभिशाप है। २ और १० वर्षके बीचके बालकोंमें तिल्लीके बढ़नेके अनुसार मलेरियाका क्षेत्र माना जाता है। १० प्रतिशत-से कम तिल्ली बढ़ी होनेवाले स्थान स्वास्थ्यकर हैं। १० और २० प्रतिशत-के बीचको नरम मलेरिया-क्षेत्र कहते हैं। २५ से ५० प्रतिशतवाले स्थान भारी मलेरिया-क्षेत्र तथा ५० प्रतिशतके ऊपरके मलेरियाके गढ़ माने जाते हैं। तराईमें ९० प्रतिशत तक बालकोंकी तिल्ली बढ़ी मिलती है, और तिस्ता जैसी कुछ पहाड़ी उपत्यकाओंमें वह २० प्रतिशतसे कम है। ४००० फुटसे ऊपर मलेरियावाले मच्छरोंके प्रसवके लिये अनुकूल स्थान नहीं होता, यद्यपि सिक्किममें ५७०० फुटतक मलेरियावाले मच्छर देखे जाते हैं। २००० से ३५०० फुटतक मलेरियाकी घटनायें कम मिलती हैं और ४००० फुटसे ऊपर तो बाहरसे लाये हुए ही मलेरियाके रोगी मिलते हैं।

कालाजरका भी एक लक्षण प्लीहा बढ़ना है। एक प्रकारकी बालू-मक्खीके काटनेसे इसके कीटाणु शरीरमें प्रवेश करते हैं। सन् १९३०—३४ ई० के बीच जिलेके अस्पतालोंमें भरती होनेवाले रोगियोंकी संख्यासे

मालूम हुआ, कि यह बीमारी बढ़ रही है। इसका क्षेत्र ३००० फुट तक पाया गया है।

यक्ष्मा (तपेदिक) के लिये सन् १९३७ ई० में कलिम्पोङमें सर्वे की गयी, तो पता लगा, कि परीक्षित व्यक्तियोंमें ८५ प्रतिशत यक्ष्माके चंगुलमें फंसने लायक है। बंगाल राज्यमें कलकत्ताके बाद दोर्जेलिङ जिले ही का नंबर था, जहां यक्ष्मासे मृत्यु अधिक हुई।

कुष्ठके बारेमें सन् १९३७ ई० में सर्वे की गयी थी, जिससे सिलिगोड़ी सब-डिवीजनमें २.३ प्रतिशत इस रोगके रोगी मिले। पहाड़में इसकी मात्रा कम है, पेचिश (संग्रहणी) का रोग पहाड़में अधिक पाया जाता है। यह छूतकी बीमारी है। हैजा तराई और निचली पहाड़ीमें ही देखा जाता है। चेचक कभी-कभी यहां मैदानसे लायी हुई देखनेमें आती है। सन् १९४४ ई० में टाइफसकी बीमारी फैली, जिससे बहुत-सी मृत्युएं हुई।

२—स्वास्थ्यरक्षा-प्रबन्ध

सन् १९२२ से १९३२ ई० तक लोक-स्वास्थ्यका दायित्व जिला-पालिकाके ऊपर था। जिसके नीचे सिविल-सर्जनका नियंत्रण था। सन् १९३२ ई० में एक जिला-स्वास्थ्य-अधिकारी नियुक्त किया गया। सन् १९४२ ई० में एक देहाती स्वास्थ्य-योजना तैयार की गयी, जिसके अनुसार जिलेके अधिकांश भागको १५ इकाइयोंमें बांट दिया गया और हर इकाईके लिये एक देहाती स्वास्थ्य-अधिकारी नियुक्त कर दिया गया। इसके अतिरिक्त हाटों और दूसरे केंद्रोंमें एक चलता-फिरता अधिकारी भी नियुक्त किया जानेवाला था, किंतु युद्धके कारण योजना पूरी तौरसे काममें नहीं लायी जा सकी। भिन्न-भिन्न सरकारी संस्थाओंका स्वास्थ्यपर निम्न प्रकार वार्षिक व्यय है—

(१) जिलापालिका

स्थापनाएं	४७०० रु०
अस्पताल	२११०० ,,

टीका	८००० रु०
सफाई	३७००० ,,
जलपूर्ति	४६०० ,,

(२) नगरपालिका (दार्जिलिङ)

दार्जिलिङ-म्युनिसिपैलिटी उक्त विषयोंपर प्रति वर्ष ६ लाख रुपया खर्च करती है और अन्यान् म्युनिसिपैलिटीका खर्च निम्न प्रकार है—

चिकित्सा	६२०० रु०
टीका	७५० ,,
जलपूर्ति	५९०० ,,
संरक्षण	१२००० ,,
मोरी	५२०० ,,

कालाजारपर इस जिलेमें कुछ वर्षोंमें निम्न प्रकार धन खर्च किया गया—

नाम	१९४१	१९४२	१९४३
आरंभिक टीका	१३३०६	११४८३	१०१००
पुनःटीका	५१८२६	६६४३६	३५६००
कालाजार	२६३७	१९५०	..

जिलेमें जन्म और मृत्युके आंकड़े निम्न प्रकार थे—

सन्	जन्म	प्रति सहस्र	मृत्यु	प्रति सहस्र
१९३५	१२८१९	४०१५	१०३९९	३२५३
१९४०	११४८९	१५९४	९१९५	३१२६
१९४१	११३२९	३००८	१०७१७	२८४६
१९४२	१०८०८	२८७२	—	२७३८
१९४३	९६८८	२५७२	११२५८	२९८९

३–जल-पूर्ति

सन् १९३७ ई० में गितदुबलिङ्गमें पेचिश (डिसेन्ट्री) की भयकर महामारीके फैलनेके बाद देहाती पानीके स्रोतोंको सुरक्षित रखनेकी ओर ध्यान गया। सन् १९४० ई०में १०००० रुपयेके खर्चसे १०००० फुट पानीके नल देहातोंमें लाये गये। अब निम्न स्थानोंमें जलकी व्यवस्था की गयी है:–

सदर सब-डिवीजनमें–सुकियापोखरी, सिमाना, तकदा-छावनी, तकदा-खासमहाल, शोरथाङ, लेप्चाजगात, मङ्पू सिनकोना-बगान, मानेभंज्याङ, कोल्बोङ, सुनादा, तीनमाइल बस्ती, बिजनबारी और पुलबाजार।

खरसान् सब-डिवीजनमें–पंखाबारी, मिरिक और तिनधरिया।

कलिम्पोङ सब-डिवीजनमें–अलगड़हा, पेदोङ, गितदेबलिङ, कांकीबोङ रम्बि बाजार, रियाङ और कालोझोड़ा।

दार्जेलिङ नगरके लिये सिंचेल पर्वतबाहुके ३० से अधिक चश्मोंका पानी घूमके ऊपरके सरोवरोंमें लाया जाता है। वहां थिरानेके बाद उसे साफ करके तीन जलधानियोंमें भेजा जाता है। गरमीके दिनोंमें, जब चश्मोंका पानी कम हो जाता है, कोनखोलासे पानीको ऊपर पंप किया जाता है। पानीके आगमके सभी रास्ते सुरक्षित किये गये हैं। दार्जेलिङ-नगर-पालिका १९००० रुपया जल-कार्यपर खर्च करती है। उसका प्रतिदिन-का खर्च ७५०००० गैलन, अर्थात् आदमी पीछे २० गैलनसे अधिक है।

खरसान् नगर-पालिकाको प्रतिदिन १५३००० गैलन छने और ४०००० गैलन अनछने जलकी आवश्यकता होती है। अनछने जल केवल ८ सार्वजनिक पाखानोंके धोनेमें काम आता है। वहां जल-कार्यपर १,२९,००० रुपये और वार्षिक रक्षाका खर्च ३७०० रुपया है।

कलिम्पोङ जल-कार्यका प्रबंध बंग-सरकारके लोक-स्वास्थ्य-विभागके इंजीनियरी शाखाके हाथमें है। कलिम्पोङ बाजारसे साढ़े १८ मीलपर अवस्थित नम्छू और रेली नदियोंके दोनों स्रोत इसके उद्गम हैं, जहांसे पानी बाजारसे १२ मीलपर अवस्थित संसेर (लावा) की जलधानीमें लाया जाता है। वहांसे ६॥ इंचके मोटे पाइपों-द्वारा ढाई मील नीचे ३० लाख

गैलनवाली जलधानीमें जमा किया जाता है। नगरका प्रतिदिन औसत खर्च २१००० गैलन है, जिसपर प्रति वर्ष ११००० रुपया खर्च किया जाता है। कलिम्पोङ जल-कार्यको पौने ९ लाख रुपयेके खर्चसे सन् १९२२ ई० में तैयार किया गया था। पहिले लोगोंका विश्वास था, कि यहांके पहाड़ी जलमें अबरख मिला हुआ है, जिसके कारण पेचिश हो जाया करती है। यह खयाल गलत है। आगन्तुकोंको पेचिश जलके कारण नहीं, बल्कि जल-वायुके परिवर्तन और अधिक भोजनके कारण होती है।

४—मलनाली-व्यवस्था

भारतके सभी गांवोंकी तरह पहाड़में भी मलवाहनका प्रबन्ध न होनेसे गंदगी अधिक देखी जाती है। दार्जेलिङ नगरमें मलनालीका प्रबंध है, जिसका संबंध वहांके कितने ही घरों और ५३ सार्वजनिक पाखानोंसे है। अधिकांश घरोंका मल हाथसे हटाया जाता है। सभी जमा किये मलोंको सेप्टिक टैंकोंमें साफ किया जाता है और उसके द्रव भागको बस्तियोंसे दूरके झोड़ोंमें डाल दिया जाता है। खरसान्‌की मलनाली-व्यवस्थासे बाजारके थोड़ेसे घरों तथा १० सार्वजनिक पाखानोंका संबंध है। इसके पाइप ८००० फुट लम्बे हैं। मलको एक सेप्टिक टैंकमें ले जाकर उसके द्रव भागको नगरके बाहर झोड़ों (नालों) में फेंक दिया जाता है। कलिम्पोङके विकास-क्षेत्रके घरोंमें जल-प्रवाहित मलनाली-व्यवस्था आवश्यक है। बाजारमें कुछ घरों तथा ८ सार्वजनिक पाखानोंके लिये ५००० फुटकी मलनाली लगी हुई है। सेप्टिक टैंकमें साफ करनेके बाद मलके द्रव भागको बाजारके नीचे वाले झोड़ोंमें फेंक दिया जाता है। कलिम्पोङकी मलनाली सन् १९३० ई० में बनकर तैयार हुई। सिलिगोड़ी-बाजारमें मलनालीका कोई प्रबंध नहीं है, और पाखाना हाथसे हटाया जाता है।

५—चिकित्सा-संस्थाएं

जिलेमें पर्याप्त संख्यामें अस्पताल तथा औषधालय (डिस्पेन्सरी) मौजूद हैं। अधिकांश चायबगानोंमें बहुत बड़े द्वार-औषधालय और

एक डाक्टर मौजूद रहता है। कुछ चायबगानोंमें तो १० चारपाइयोंतकके अस्पताल भी हैं। दार्जेलिङ्ग हिमालय रेलवेके तिनधरिया अस्पतालमें १४ चारपाइयोंका प्रबंध है और खरसान्, दार्जेलिङ्ग तथा सिलिगोड़ीमें इसके बहिर्द्वार औषधालय हैं। सारी रेलवेके लिये एक मुख्य चिकित्सा-अधिकारी और ७ सहायक चिकित्सा-अधिकारी हैं। सिलिगोड़ी सब-डिवीजनमें नक्सलबाड़ीमें एक प्रथम श्रेणीका सरकारी अस्पताल है, जिसमें ८ पुरुष तथा ३ स्त्री रोगियोंके लिये चारपाइयां हैं।

बंगाल सरकारके सञ्चार और कार्य-विभागने कालीझोड़ा और तिस्ता-पुलमें औषधालय खोल रखे हैं। सिनकोना-विभागने मङ्पूमें १० चार-पाइयोंका अस्पताल तथा एक साधन-संपन्न औषधालय स्थापित किया है। उसकी ओरसे मनसोङ्ग और कुमाईमें भी औषधालय है। स्काट-मिशनकी ओरसे सुकियापोखरी, पुलबाजार, किजोङ्ग, नम्बोङ्ग और तोदेताङ्गलामें, एवं रोमन-कैथलिक-मिशनकी ओरसे भोगीभिटा, गयागंगा तथा कलिम्पोङ्गके पास दो और स्थानोंमें औषधालय जारी हैं। जिला-पालिकाका एक अच्छा औषधालय पेदोङ्गमें है, जिसके अस्पतालमें ७ पुरुष और ७ स्त्री रोगियोंके लिये चारपाइयां हैं। यहां अन्तर्द्वार रोगियोंकी संख्या ३५० और बहिर्द्वारकी ४४०० प्रति वर्ष होती है। इनके अतिरिक्त देहाती स्वास्थ्य उपचारकी १४ टुकड़ियां योग्य चिकित्साधिकारियोंके अधीन लड़ाईके समय निम्न स्थानोंमें काम कर रही थीं। (१) सुकियापोखरी, (२) सिङ्गला (३) विजनबारी, (४) लोधमा, (५) तकदा, (६) मिरिक, (७) सुकना, (८) अलगड़हा, (९) गोरुबथान, (१०) सामसिङ्ग, (११) मोती-गड़हा, (१२) बागडोगरा, (१३) फांसीदेवा और (१४) खारीबारी।

दार्जेलिङ्ग नगर—यहां कई महत्त्वपूर्ण चिकित्सा और स्वास्थ्य-संबंधी संस्थायें हैं। सौ साल पहिले दार्जेलिङ्ग नगरकी स्थापना ही स्वास्थ्याश्रम और सेनीटोरियमके खयालसे की गयी थी। यहां दो अच्छे सेनीटोरियम हैं। एडन सेनीटोरियम उसी इमारतके एक भागमें है, जिसमें एडन अस्पताल है। यहां पहिले ७० युरोपियनोंके रहनेका स्थान था। उस समय बहुत

भेद-भाव रखा जाता था, इसलिये महाराज कूचबिहारके दानरूपमें प्राप्त जायदाद तथा दूसरे लोगोंके दानसे सन् १९२९ ई०में लेविस जुबली सेनी-टोरियम भारतीयोंके लिये स्थापित किया गया। इसमें १९२ आदमियोंके रहनेका स्थान है, जिसमें यक्ष्मा-रोगियोंके लिये अलग घर है। २३ व्यक्तियों-को निःशुल्क प्रविष्ट किया जाता है।

एडन अस्पतालमें १२ चारपाइयां हैं। यहां रोन्तोगेन (एक्स-रे) तथा आधुनिक चिकित्सा-संबंधी दूसरे भी यंत्र हैं। जैसा कि पहिले कहा गया, यह युरोपियन लोगोंके उपयोगके लिये ही संचालित होता था, जिसमें पूरा परिवर्तन भारतकी स्वतंत्रताके बाद ही हो पाया। दोर्जेलिङ नगर-पालिकाके अधीन विक्टोरिया अस्पताल चल रहा है, जिसे जुलाई सन् १९४८ ई०में प्रांतीय सरकारने अस्थायी तौरसे ले लिया। इस अस्प-तालमें १०० चारपाइयां हैं, जिनमें ३० स्त्रियोंके लिये हैं और ६ केबिन। इसकी सुन्दर इमारत सर हरिशंकर पालके दानसे बनी है।

टी० बी० अस्पताल सन् १९४६ ई० में बना था, जिसमें अब २६ चारपाइयोंका प्रबंध है।

संक्रामकरोग-अस्पतालका आरंभ सन् १९०९ ई०में चेचकके बीमारों को अलग रखनेके लिये हुआ। सन् १९३३ ई० में विस्तृत करके इसमें स्थायी कर्मचारी-वृन्द नियुक्त कर दिये गये। आज-कल इसमें २० चार-पाइयोंका प्रबंध है। इसका प्रबंध भी नगर-पालिकाके हाथमें है।

घूममें मार्टीन दातव्य औषधालय भी अच्छा काम कर रहा है। इसकी स्थापना सन् १९३२ ई०में हुई थी। दोर्जेलिङमें एक और घूममें भी एक मातृ-सेवासदन स्थापित है। नगर-पालिकाकी लोक-स्वास्थ्य-प्रयोगशाला भी स्वास्थ्यके क्षेत्रमें अच्छा काम कर रही है।

खरसान् नगर—यहां नगर-पालिकाका खरसान् नगर अस्पताल है। इसमें २८ पुरुष और १३ स्त्री रोगियोंके लिये चारपाइयां हैं। दो कमरे शुल्क देनेवाले रोगियोंके लिये हैं। टी० बी० के कमरेमें ४ स्त्री और ४ पुरुष रोगियोंके रहनेका स्थान है।

सन् १९३७ ई० में २० चारपाइयोंके साथ खरसान्में दे-टी० बी० सेनीटोरियम खुला। इसका आरंभ यादवपुर टी० बी० अस्पतालकी एक शाखाके तौरपर हुआ। सन् १९४१ ई०में श्री पी० सी० करके दान द्वारा रोन्तगेन (एक्स-रे) यंत्र स्थापित हुआ। सन् १९४२ ई० में चारपाइयां बढ़ाकर ४८ कर दी गयी और सरकारने सेनीटोरियमको बढ़ानेके लिये पासके जंगलमेंसे २० एकड़ जमीन दे दी। सन् १९४२ ई० में एक बहिर्द्वार उपचारालय (क्लीनिक) भी काम करने लगा। खरसान् असैनिक चिकित्साधिकारीके अधीन विक्टोरिया बालक विद्यालय तथा डौ-हिल बालिका विद्यालयके बच्चोंके लिये एक केंद्रीय अस्पताल चल रहा है, जिसमें ३३ चारपाइयां है। इसके साथ बहिर्द्वार औषधालय भी है। संत मेरी कालेजके साथ ही सन् १८७९ ई० में एक बहिर्द्वार औषधालय काम कर रहा है।

कलिम्पोङ नगरमें स्काटलैंड चर्च मिशनने सन् १८९३ ई० में चार्टरी अस्पताल खोला। मिशनके अधीन इस अस्पतालके अतिरिक्त कलिम्पोङमें एक कुष्ठ अस्पताल और बाजारमें एक औषधालय भी है। इस मिशनने नम्बोङ और तोदेताङतामें भी बहिर्द्वार औषधालय खोल रखे हैं। चार्टरी अस्पतालका प्रबंध वहांके डाक्टर और नर्सोंकी एक समिति करती है, जिसका अध्यक्ष एस० डी० ओ० पदेन होता है। इस अस्पतालमें नेपाली, रोङ (लेप्चा) और तिब्बती लड़कियोंको नर्स तथा धातृकी शिक्षा बंगाल नर्सिंग कौन्सिल परीक्षाके लिये दी जाती है। लड़कोंको कम्पाउंडरकी शिक्षा मिलती है। लड़ाईके समय इस अस्पतालमें दो अंग्रेजी और दो भारतीय डाक्टर थे, साथ ही ३ अंग्रेज नर्स और ३ भारतीय नर्स, १८ शिक्षाकाम, ३ प्रशिक्षित कम्पाउंडर एवं दो उम्मेदवार कम्पाउंडर काम कर रहे थे। कर्मचारी-वृन्दके लिये निवासगृह मौजूद हैं। मिशनकी मददके अतिरिक्त सरकार ६७३५ और ३०५९ रुपयोंकी वार्षिक सहायता देती है। सरकारने दो सब-असिस्टेंट-सर्जनोंको भी अपनी ओरसे मुफ्त दे रखा है। सन् १९२० और १९२८ ई० में इस अस्पतालमें

पेचिश और टी० बी० की अलग गृहश्रेणी खोली गयी । उसी वक्त दूसरी गृहश्रेणी शल्यचिकित्सा तथा प्रसूतिके लिये भी तैयार हुई । जिला-पालिका-ने सन् १९२६ ई० में चेचकके लिये भी एक छोटी-सी इमारत बना दी । सारे अस्पतालमें १४२ चारपाइयोंका स्थान है । १० कमरे निजी रोगियोंके लिये हैं । इस अस्पतालके कामका महत्त्व नीचेके आंकड़ोंसे मालूम होगा—

		१९४१	१९४२	१९४३
रोगी	(अन्तर्द्वार)	..	..	३७१९
,,	(बहिर्द्वार)	..	..	६८८२
शल्यक्रिया	(अन्तर्द्वार)	४८८	४५५	३८३
,,	(बहिर्द्वार)	१५४	१७०	१८५

मिशनके कुष्ठ-अस्पतालमें १०० चारपाइयां हैं । इसे सरकार १६८० ए० वार्षिक अनुदान करती है । तिब्बती रोगियोंके लिये बाजारमें भी एक औषधालय खोला गया है । सन् १९३० ई० में ईसाई-मिशनने गरीब माताओंकी सहायताके लिये एक उपचारालय खोला । सन् १९३६ ई० में बाजारमें एक टी० बी० औषधालय भी खोला गया, जो बंगाल यक्ष्मा-विरोधी समाजसे संबद्ध है ।

सिलिगोड़ी नगर—जिला-पालिकाका यहां एक अस्पताल है, जिसमें पहिले २२ पुरुष और ६ स्त्री रोगियोंके लिये चारपाइयां थीं । अब उन्हें बढ़ा दिया गया है, लेकिन तब भी एक बढ़ते हुए नगरकी आवश्यकताओंको वह पूरा नहीं कर सकती । पहाड़ी और बड़ी रेलोंने भी अपने नौकरोंके लिये यहां औषधालय खोले हैं ।

७

शिक्षा

१—कमिश्नरियों द्वारा शिक्षा-प्रचार

दोर्जेलिङके पहिले बंगाल-सरकार और पीछे भारत-सरकारकी ग्रीष्म-राजधानी बन जानेके कारण यहां सरकारी आर्थिक सहायता मिलनेका अधिक सुभीता था। जलवायु अधिक अनुकूल होनेसे भी युरोपियन मिश-नरियोंने जहां यहां यूरोपियन स्कूलोंको स्थापित करनेमें उदारता दिखलाई, वहां ईसाई-धर्मके प्रचारके लिये भी अनेक संस्थाएं कायम कीं। पहाड़के लोगोंके पिछड़ेपनसे भी उन्हें लाभ उठानेका अच्छा मौका मिला और इस प्रकार यह जिला ईसाई प्रचारकों और प्रचारक-संस्थाओंका गढ़ बन गया। यहां शिक्षा-प्रसारमें भी सबसे अधिक हाथ ईसाई प्रचारकोंका ही रहा है। स्काटिश चर्च मिशन इसमें सबसे आगे था। अंग्रेजी राज्यकी स्थापना-के पहिले सिक्किमके कुछ संपन्न लोग ही अपने बच्चोंको अध्यापक रखके पढ़ाते थे। बौद्ध विहारोंमें तिब्बती पुस्तकोंके घोखने भरकी शिक्षा दी जाती थी। सबसे पहिले सन् १८५० ई० के आस-पास मिस्टर स्टाटने निजी तौरसे ईसाई प्रचारकका काम करते हुए दोर्जेलिङमें रोङ (लेप्चा) लोगोंके लिये एक प्रारंभिक स्कूल खोला। इसके बाद जर्मन-मिशनरी आये। सन् १८४९ ई० में पादरी नीबेलने लेप्चा-पाठावली तैयार की, और लड़कोंके लिये स्कूल खोले। लेकिन जिलेमें देशी भाषा-द्वारा शिक्षाकी विशाल योजना तबतक आरंभ नहीं हुई, जबतक कि पादरी विलियम मैकफार्लेनने सन् १८६९ ई०में अपने कामका आरंभ नहीं किया। उसने पहिले कुछ अध्यापकोंको तैयार करनेके लिये एक प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) स्कूल खोला। हिन्दीकी व्यापकता-को देखकर उसने यह उचित समझा, कि शिक्षा हिन्दी-माध्यम-द्वारा दी

जाय। मैकफार्लेनकी सिफारिशपर सरकारने कितनी ही छात्र-वृत्तियां भी प्रदान कीं। उन आरंभिक दिनोंमें थोड़ेसे पढ़े हुए छात्रोंको स्कूलमें रख रखना जीते मेढकोंका तौलना-सा था। पादरी मैकफार्लेनने अनुत्साहित न हो स्वयं ही शिक्षकका भी काम किया। उसके प्रयत्नसे कितने ही अध्यापक तैयार हुए, जिनके द्वारा सरकार जिलेके कई भागोंमें प्रारंभिक पाठशालायें खोलनेमें सफल हुई। सन् १८७३ ई० में जिलेमें २५ स्कूल थे, जिनमें ६५० लड़के-लड़कियां पढ़ते थे। स्काटिश चर्च मिशनके मैक-फार्लेनके उत्तराधिकारी पादरियोंने शिक्षा-प्रसारको और आगे बढ़ाया। यद्यपि पीछे दूसरे ईसाई मिशन भी कार्यक्षेत्रमें आये, किन्तु स्काट-मिशनका काम सबसे आगे रहा।

सन् १९०७ ई० में जिलेमें ७० प्रारंभिक स्कूल थे, जिनमें २४२० लड़के और ३०० लड़कियां शिक्षा पा रही थीं। सन् १९४४ ई० में इनकी संख्या निम्न प्रकार थी—

स्कूल संख्या	लड़के	लड़कियां	औसत (उपस्थिति)
२९९ (बालक)	१०१६६	१४२४	८६४५
१९ (बालिका)	२१५	११६७	९५४

जिलेके इन स्कूलोंमेंसे १२० स्काट-मिशनके थे और १० रोमन-कैथलिकोंके। इससे पता लग जायेगा, कि शिक्षापर ईसाई संस्थाओं और धर्मका कितना प्रभाव रहा। इनके मुकाबिलेमें रामकृष्ण-वेदान्त-आश्रमने तीन और बौद्ध-तरुण-मिशनने चार प्रारंभिक स्कूल खोल पाये, सो भी बहुत पीछे। दोर्जेलिङ-नगरपालिकाने अपने प्रबंधके भीतर मूलिक योजनाकी दो निःशुल्क प्रारंभिक पाठशालाएं लड़कों और लड़कियोंके लिये अलग-अलग खोली है। बालकोंकी प्रारंभिक पाठशालामें ३४० लड़के तथा १० अध्यापक हैं और बालिकाओंकी पाठशालाओंमें १२३ लड़कियां तथा ७ अध्यापिकाएं हैं। खरसान् नगर-पालिकाके भीतर बालकोंकी दो प्रारंभिक पाठशालाएं हैं, जिनमें २०९ लड़के पढ़ते हैं। एक मकतब (उर्दू-पाठशाला) भी है, जिसमें ३२ लड़के हैं।

२—छात्र-छात्राएं

पाठशाला जाने योग्य अवस्थाके लड़कोंमेंसे ५६. ६ प्रतिशत और लड़कियोंमेंसे ९. २ प्रतिशत प्रारंभिक स्कूलोंमें पढ़ने जाते हैं। सन् १९४३-४४ ई० में लड़के-लड़कियोंके स्कूलोंके लिये आयके स्रोत निम्न प्रकार थे—

	बालक (रुपया)	बालिका (रुपया)
सरकार	३२२६८	७१०९
जिला-पालिका	३३९६	३६०
नगर-पालिका-निधि	२०६७६	११०६४
फीस की आय	९८६७	१६८७

बालक-स्कूलोंपर ११९२७५ तथा बालिका-स्कूलोंपर ३२८८५ रुपया व्यय हुआ। बाकी व्यय मिशन और वैयक्तिक-निधियोंसे प्राप्त हुआ।

३—शिक्षणालय

(१) **प्रारंभिक शिक्षा**—जिलेमें प्रारंभिक शिक्षाका विस्तार निम्न तालिकामें मालूम होगा—

सन्	स्कूल संख्या		छात्र-संख्या		व्यय (रुपया)	
			बालक	बालिका	सरकारी	निजी
१९१६-१७	बालक	२०७	४१५३	३४३	२२९८१	८५२५
	बालिका	८	०	४६८	३२८४	०
१९२१-२२	बालक	२१६	६६०२	३९९	२६६७५	१३८९९
	बालिका	११	३०	३७४	२१५८१	६७३०
१९३१-३२	बालक	२६१	५९७४	४९४	३७२००	२४३७३
	बालिका	१७	१७१	५११	५३५१	७३४४
१९४१-४२	बालक	२११	८८२९	१३६९	६६९४५	५८२५१
	बालिका	२१	२८०	९७१	१५२४६	११६०४

(२) **उच्च-विद्यालय शिक्षा**—द्वितीय विश्वयुद्धके आरंभके समय (३१-३-४४) इस जिलेमें बालकोंके लिये ६ उच्च (हाई) तथा १२ मध्य

(मिडिल) इंगलिश स्कूल एवं बालिकाओंके लिये ४ उच्च तथा ४ मध्य इंगलिश स्कूल थे, जिनका ब्योरा निम्न प्रकार था—

	कुल संख्या	पहाड़ी बालक	पहाड़ी बालिका
बालक उच्च-स्कूल	२१२२	१२९७	०
बालक मध्य-स्कूल	१६२९	११२३	७२
बालिका उच्च-स्कूल	१२६६	२८	७३३
बालिका मध्य-स्कूल	५७०	९२	२४५

जिनपर व्यय निम्न प्रकार हुआ—

	सरकारी-निधि	निजी-निधि	योग
बालक उच्च अंग्रेजी स्कूल	४२३११	६१२७५	१०३५९८
बालक मध्य ,, ,,	१७०१८	२४२६४	४१२८२
बालिका उच्च ,, ,,	१६२५७	३१७६७	४८५२४
बालिका मध्य ,, ,,	५९३४	११९९१	१७९२५

उस समय जिलेमें बालकोंके निम्न छ उच्च अंग्रेजी स्कूल थे—

(१) सरकारी उच्च अंग्रेजी स्कूल (दार्जेलिङ)
(२) सेंट राबर्ट ,, ,, ,, दार्जेलिङ (रोमन कैथलिक)
(३) सेंट अलफान्सेस ,, ,, ,, खरसान् (,, ,,)
(४) स्काटिश युनिवर्सिटी मिशन इंस्टीट्यूशन, कलिम्पोङ
(५) पुष्पारानी उच्च अंग्रेजी स्कूल, खरसान् (असहायित)
(६) सिलिगोड़ी स्कूल (सहायित)

बालकोंके १२ मध्य अंग्रेजी स्कूल निम्न स्थानों में हैं—

(१) दार्जेलिङ
(२) दार्जेलिङ (हिमाचल हिन्दी भवन विद्यालय)
(३) सुकियापोखरी (स्काट मिशन)
(४) मिरिक (" ")
(५) पेंदोङ (रोमन कैथलिक)

(६) घूम
(७) खरसान्
(८) फांसीदेवा
(९) खरीबाड़ी
(१०) नक्सलबाड़ी
(११–१२) कलिम्पोङ

लड़कियोंके ४ हाई स्कूल निम्न प्रकार हैं–

(१) नेपाली बालिका उच्च स्कूल, दोर्जेलिङ; जिसमें २१ मार्च सन् १९४४ ई० को ४६४ विद्यार्थियोंमें ३७ पहाड़ी लड़के, ३३१ पहाड़ी लड़कियां और बाकी भारतीय ईसाई थे।

(२) महारानी बालिका स्कूल, दोर्जेलिङ, जिसकी अधिकांश छात्राएं बंग-भाषा-भाषिणी हैं।

(३) सेंट जोजफ बालिका उच्च-स्कूल, खरसान् (रोमन कैथलिक)।

(४) कलिम्पोङ बालिका उच्च स्कूल (स्काट चर्च मिशन)

कलिम्पोङमें पहाड़ी बच्चोंके लिये सेंट फिलोमिना मध्य अंग्रेजी बालिका दिन स्कूल है, जिसका प्रबंध सेंट जोजफ देक्लुनीकी रोमन-कैथलिक साधुनियोंके हाथमें है, और इसको सरकारसे आर्थिक सहायता मिलती है। दोर्जेलिङ रोमन कैथलिक लोरेतो कन्वेंटसे संबद्ध सेंट तेरेसा मध्य अंग्रेजी स्कूल पहाड़ी बच्चोंके लिये है। इसके २०० विद्यार्थियोंमें अधिकांश बालिकाएं हैं।

(३) छात्र-वृत्तियां–ईसाई शिक्षण संस्थाओंने छात्रवृत्ति और दूसरे तरीकोंसे पहिले ही से शिक्षाके लिये आकर्षण पैदा करना चाहा था। उनके कामको देखते हुए सरकारको उसकी आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई और सन् १९४१ ई० से ही उसने अंतिम प्राइमरी परीक्षा पास छात्रोंके लिये छात्रवृत्ति देनी आरंभ की। प्रथम श्रेणीकी छात्रवृत्ति प्रतिमास ३ रु० दो बरसके लिये मिलती है, जो उस साल छ पहाड़ी लड़कों, एक बंगाली लड़के और ६ बंगाली लड़कियोंको दी गयी। द्वितीय श्रेणीकी

छात्रवृत्ति दो रुपया प्रतिमास दो वर्षके लिये दी जाती है, जिसे उस साल २७ पहाड़ी लड़कों, १२ पहाड़ी लड़कियों, १४ बंगाली लड़कों, ३ मुसलमान और ५ अनुसूचित जाति तथा १ बंगाली लड़कीको दिया गया।

प्रति वर्ष कमसे कम ३ मध्यम श्रेणीकी छात्रवृत्ति दी जाती है, जिसमें एक सबके लिये खुली है, एक मुसलमानके लिये रक्षित है और एक या अधिक शिक्षामें पिछड़ी हुई जातियोंके लिये रक्षित है। सन् १९३३ ई० से १९४३ ई० तकके बीच खुली मध्यम छात्रवृत्ति ३ पहाड़ी लड़कोंको मिली और १४ रक्षित छात्रवृत्ति भी उन्हें दी गयी।

४—कालेज शिक्षा

एक डिग्री कालेज दो ही साल पहिले दार्जेलिङ्गमें स्थापित हुआ। यह सरकारी संस्था है, तथा इस बातका परिचायक है, कि बंगाल-सरकार अपने पहाड़ी नागरिकोंको उच्च शिक्षाके लिये सुविधा प्रदान करना चाहती है। किंतु, आर्थिक तौरसे पिछड़ी जातियां कहां तक खर्चीली विश्व-विद्यालयकी शिक्षासे लाभ उठा सकती हैं? यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि ईसाई मिशनरियोंको ही शिक्षा-द्वारा धर्म-प्रचार करनेमें इस तरहकी आर्थिक सुविधा प्राप्त थी।

स्काटिश युनिवर्सिटी मिशन इन्स्टीट्यूशन (कलिम्पोङ्ग) में आई० ए० (एफ० ए०) तककी शिक्षा दी जाती है। इसमें सन् १९५० ई० में ६० विद्यार्थी कालेजकी क्लासोंमें पढ़ते थे। यह तथा कुछ युरोपीय शिक्षणालयोंमें भी कालेजकी शिक्षा दी जाती है।

५—विशेष शिक्षणालय

विशेष स्कूलोंमें १५० पुरुष और १९२ महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। पहाड़में अवस्थित इन शिक्षणालयोंमें छात्रोंकी संख्या निम्न प्रकार थी—

स्कूल	छात्र	छात्राएं
शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल	१५	१५
औद्योगिक स्कूल	६३	२७७
अन्ध स्कूल	१२	..
संस्कृत पाठशाला	३८	..
बौद्ध विहार स्कूल	३२	..

शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल जिलेमें तीन है, जिनमेंसे एक कलिम्पोङमें लड़कोंके लिये स्काच मिशनकी ओरसे खुला है। लड़कियोंके लिये दो प्रशिक्षण स्कूल हैं, जिनमेंसे एक कलिम्पोङमें स्काच मिशनका है (३१ मार्च सन् १९४८ ई० को ५ छात्राएं), और दूसरा खरसान्में सेंट जोजफ स्कूलमें रोमन कैथलिक मिशनका है, जिसमें दस छात्राएं शिक्षा पा रही थीं।

(१) **अन्ध स्कूल**--सन् १९४० ई० में कुमारी मेरी स्काटने अन्धोंके लिये एक स्कूल कालिम्पोङमें खोला। यहां पुस्तक-शिक्षाके साथ संगीत और हस्तशिल्प भी सिखलाया जाता है। स्कूलमें चार अध्यापक है, जिनमें-से एक अंध शिक्षक बहाला-अंध-स्कूलमें शिक्षा पाये हैं। विद्यार्थियोंके रहनेके लिये ५ कुटीर है, जिनमें एक शिक्षक देख-रेखका काम करता है।

(**बौद्ध विहार स्कूल**)--सिर्फ घूममें है, जिसे सरकार और दोर्जेलिङ म्युनिसिपैलिटी ३० रुपया मासिक सहायता देती है। ईसाइयोंसे पांच-गुनी संख्या रखने तथा शिक्षामें पिछड़े होनेपर भी बौद्ध शिक्षण-संस्थाओंके लिये इस तरहकी वृत्ति बतलाती है, कि अंग्रेजी सरकार कहां तक धर्ममें तटस्थता रखती रही।

रोमन कैथलिक मिशनका एक अनाथालय कालिम्पोङमें है, जिसमें ४०, ५० लड़कियोंकी शिक्षा-दीक्षा होती है। पढ़ाईके लिये उच्च स्कूलकी कक्षाएं भी खुली हैं। इस मिशनका एक औद्योगिक तथा टेक्निकल स्कूल लड़कोंके लिये खरसानमें है, जिसमें बढ़ईगीरी, छापाखाना, जिल्दसाजी, कपड़ा-बुनाई, सिलाई, बेंत और चमड़ेका काम सिखलाया जाता है।

(२) **कलिम्पोङ-औद्योगिक स्कूल**--औद्योगिक शिक्षा देनेका काम

करता है। इसे स्काच-मिशनरी श्री जे० ए० ग्रेहमकी स्त्री श्रीमती कैथरिन ग्रेहमने सन् १८९७ ई० में पहाड़ी स्त्रियोंको गोटा-पट्टा बनाना सिखलानेके लिये खोला था, जिसमें कि उन्हें घरके कामके साथ-साथ कुछ और आय करनेका मौका मिले। पीछे इसमें बढ़ईगीरी, फूल, बूटेकारी, कालीनकारीकी शिक्षा भी सम्मिलित कर ली गयी। आज इसमें १२ शिक्षण-विभाग हैं, जिनमें कपड़ा-बुनाई, रंगाई, चमड़ेका काम, मोजा-बुनाई, छापाखाना, चित्रकारी, कपड़ा-छपाई और राजगीरीके काम भी शामिल हैं। इसके प्रबंधके लिये एक प्रबंधक बोर्ड है, किंतु अंतिम तौरसे यह मिशनकी संपत्ति है। सन् १९२४ ई० में ७५००० रुपयेकी पूंजी जमा करके इस स्कूलकी कंपनी विधिके अनुसार रजिस्ट्री करा दी गयी। स्कूलसे जो कुछ लाभ होता है, उसे भागदारोंमें न बांटकर कार्यके विस्तारमें लगाया जाता है। स्कूलमें ईसाई और गैर-ईसाईका भेद-भाव नहीं रखा जाता और न शिक्षाके लिये कोई फीस ली जाती है। जबतक जीविका भरके लिये पैसा न कमाने लगें, तबतक विद्यार्थियोंको आर्थिक सहायता दी जाती है। यह शिक्षणालय बड़ा जनप्रिय है। सन् १९४४ ई०में इसमें ३५० छात्र-छात्राएं शिक्षा पा रहे थे। आज-कल उनकी संख्या और बढ़ गयी है। युद्धके समय यहांके सीखे अधिकांश बढ़ई, दर्जी तथा दूसरे सेनाकी टेक्निकल नौकरियोंमें सम्मिलित हो गये थे। दोर्जेलिङ जिला तथा पश्चिमी दुवारके काम करनेवाले बहुतसे बढ़ई और दर्जी इस स्कूलमें शिक्षा पाये हैं। अब यहांके शिक्षितोंकी पीढ़ियां चलने लगी हैं। भारतके कितनेही नगरोंमें यहांके छात्रोंकी बनाई चीजोंके वितरणका प्रबंध है। उनके विक्रय तथा थोड़ी-सी सरकारी सहायताके साथ यह स्कूल चल ही नहीं रहा है, बल्कि खूब फल-फूल रहा है।

(३) अन्य—इन स्कूलोंके अतिरिक्त वयस्कोंकी शिक्षाके लिये ७५ रात्रि-पाठशालाएं भिन्न-भिन्न स्थानोंमें चल रही हैं, जिनमें ३१ मार्च सन् १९४४ ई० को ९०३ व्यक्ति शिक्षा पा रहे थे। इन पाठशालाओंमें लिखना-पढ़ना और गणित (निम्न प्रारंभिक वर्गतक) तथा स्वास्थ्यके

साधारण नियमोंकी शिक्षा दी जाती है। अधिकांश रात्रि-पाठशालाएं किसी दिन-प्रारंभिक स्कूलके साथ संबद्ध हैं, और उनमें पढ़ानेके लिये अध्यापकोंको ५ रुपया मासिक ऊपरसे दे दिया जाता है।

चायबगानोंमें ५७ स्कूल और १७ रात्रि-पाठशालाएं काम कर रही हैं। इनमें यद्यपि चौथी क्लासतक की है, किंतु, अधिकांश निम्न प्रारंभिक पाठशालाएं हैं। स्कूली आयुके बच्चोंमें से बहुत थोड़े (१६९३) पढ़ने जाते हैं। इसका कारण चायबगानोंमें सस्ते लड़कोंका कामपर लगाना है। जैसे ही लड़के पत्तियां चुनने या किसी और कामके करने योग्य हो जाते हैं, वैसे ही उन्हें स्कूलसे हटाकर पैसा कमानेमें लगा दिया जाता है।

६—तराई और पहाड़में शिक्षा

अभी मालूम होगा, कि तराईकी अपेक्षा पहाड़ी भागमें शिक्षा-प्रसार अधिक है। इसका बहुत कुछ श्रेय ईसाई मिशनरियोंको है, इसमें संदेह नहीं। तराईमें ७० बालकोंके और ४ बालिकाओंके प्रारंभिक स्कूल, ३ बालक मध्य अंग्रेजी स्कूल, १३ मकतब, एक लघु-मदरसा और एक बालकोंका हाई स्कूल है। ३१ मार्च सन् १९४४ ई० को तराई और पर्वतीय भूभागमें छात्र-छात्राओंकी तुलनात्मक संख्या निम्न प्रकार थी—

	बालक		बालिकाएं	
	पहाड़ी	तराई	पहाड़ी	तराई
प्रारंभिक स्कूल और मकतब	७६८५	१२७२	२१५६	२२०
द्वितीयक स्कूल—				
उच्च अंग्रेजी स्कूल (बालक)	१८०६	३१६	०	०
,, ,, (बालिका)	७२	०	११९४	०
मध्यम अंग्रेजी स्कूल (बालक)	१२७५	२३०	१००	२४
,, ,, (बालिका)	९५	२४	३९०	६१
लघु-मदरसा (बालक)	७४	५७	०	१७

सन् १९४१ ई० की जन-गणनाके अनुसार जिलेके दोनों भागोंमें स्त्री-पुरुषोंकी संख्या निम्न प्रकार थी—

	पुरुष	स्त्री
पर्वतीय भाग	१४९,३३८	१३७३००
तराई	५०५७३	३९,३४४

इसे देखनेसे मालूम होगा, कि पहाड़में तराईसे तिगुने (१४९,३३८:५०५७३) पुरुष हैं, किंतु वहां छात्रोंकी संख्या उससे कहीं अधिक (१०९०७:१८९९) पायी जाती है। यदि स्कूली आयुके लड़कोंको सारी जनसंख्याका दशांश मान लिया जाय, तो पहाड़ और तराईके निम्न प्रतिशत बालक बालिकाएं स्कूलमें जाते हैं—

	बालक	बालिकाएं
पर्वतीय भाग	७३.७	२८.०
तराई	३७.५	८.२

७—जिले की शिक्षा-संस्थाएं

(१) **सरकारी उच्च स्कूल (दोर्जेलिङ)**—यह स्कूल सन् १८६० ई० के आस-पास स्थापित हुआ था। सन् १८७४ ई० में एक तिब्बती बोर्डिंग स्कूल खोला गया था। सन् १८९२ ई० में दोनों स्कूलोंको मिलाकर उच्च स्कूलके रूपमें परिणत कर दिया गया। उच्च स्कूलमें पहिले दो विभाग थे, जिनमेंसे एक सभी जातियोंके लड़कोंके लिये था और दूसरा विशेष विभाग भूटानो, रोङ (लेप्चा) और तिब्बती लड़कोंके लिये। सन् १९३७ ई० में विशेष विभागको तोड़ दिया गया और उसकी जगह स्कूलकी अन्तिम क्लासें खोली गयीं, लेकिन वह जनप्रिय नहीं हुईं, इसलिये उन्हें भी सन् १९३७ ई० में बंद कर दिया गया। यह स्कूल कलकत्ता विश्वविद्यालयकी मैट्रिक्यूलेशन-परीक्षाके लिये छात्रोंको तैयार करता है। इस स्कूलमें ५ भारतीय और ४ पुरानी भाषाएं सिखलायी जाती हैं। इसकी प्रबंध समितिमें ६ असरकारी सदस्य

दार्जिलिङके बंगाली, बिहारी, तिब्बती, नेपाली, ईसाई और मुस्लिम सम्प्रदायोंकी ओरसे होते हैं। सन् १९४४ ई० में इसमें ३८९ छात्र पढ़ते थे, जिनका भाषा-अनुसार वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

बंगाली	१८३
नेपाली	१६०
हिन्दी	३९
भोटिया और रोङ	८७
	३८९

इन छात्रोंमें १८ मुसलमान, ६८ बौद्ध, १७ ईसाई, २ जैन और बाकी ब्राह्मण-धर्मी हिंदू थे।

(२) **स्काटिश यूनिवर्सिटी मिशन इंस्टीट्यूशन कलिपोङ**—दार्जेलिङमें स्थापित एक छोटेसे स्कूलको हटाकर सन् १८८७ ई० में कलिम्पोङमें स्थापित किया गया यहा मैट्रिकतक लड़कों तथा एफ० ए० तक लड़के-लड़कियों दोनोंकी शिक्षा होती है। इसके साथ एक ट्रेनिंग स्कूल भी है, जहां प्रारंभिक स्कूलोंके शिक्षक तैयार किये जाते हैं। सन् १९४४ ई० में ७५० (आज-कल १२००) लड़के हाई स्कूल विभागमें पढ़ते थे, जिनमेंसे ६५० पहाड़ी थे। कालेज-विभागमें ३० (आज-कल ६०), और प्रशिक्षण-विभागमें १५ छात्र थे। जिलेके स्कूलोंके प्रायः सभी प्रशिक्षित शिक्षक इसी शिक्षणालयके भूतपूर्व छात्र हैं।

(३) **स्काच मिशन बालिका उच्च स्कूल और प्रशिक्षण कालेज (कलिम्पोङ)**—इस बालिका विद्यालयमें नेपाली, रोङ (लेप्चा) और तिब्बती छात्राएं पढ़ती हैं। कुछ थोड़ेसे चीनी और हिन्दी-भाषी भी हैं। सन् १९४४ ई० में उच्च स्कूलमें ५०४ और १९४९ में ७२ एवं प्रशिक्षण-क्लासोंमें ५ (सन् १९४९ ई० में २४) छात्राएं पढ़ रही थीं। मध्यम क्लासोंतक शिक्षाका माध्यम नेपाली है और उच्च क्लासोंमें अंग्रेजी, आगे किस

तरहसे परिवर्तित किया जायेगा, इसे कहना कठिन है, यद्यपि अच्छा यही मालूम होता है, कि नेपाली भाषाको ही उच्च क्लासोंमें भी माध्यम बना दिया जाय ।

(४) युरोपीय शिक्षणालय—दोर्जेलिङ जिलेका विकास ही मुख्यतः अंग्रेज शासकोंने अपने हितके लिये किया था। सर्द मुल्कके लोगोंके अनुकूल जलवायु होनेके कारण जैसे यहां दोर्जेलिङ, खरसान्, कलिम्पोङ नगरोंके रूपमें सेनीटोरियम नगर स्थापित किये गये, उसी तरह यहां अंग्रेज बालक-बालिकाओंकी शिक्षाके लिये यह कितने ही स्कूल भी कायम किये गये, ये केवल अंग्रेजोंकी संतानोंकी शिक्षण-संस्थाएं थीं। पीछे भारत और इंग्लैंडमें यातायातकी सुविधा हो जानेके बाद, अंग्रेज सरकारी नौकरों और व्यापारियोंने शिक्षाके लिये बच्चोंको देश भी भेजना शुरू किया और यहांके स्कूलोंका पहिलेवाला एकाधिपत्य कम हो गया। तो भी अंग्रेज शासनके अंतिम समय तक यहांके युरोपियन स्कूलोंकी वृद्धि और समृद्धि रुकी नहीं। आज शिमला, उटकमंड आदिके युरोपीय स्कूलोंकी भांति यहां भी अंग्रेज और एंग्लो-इंडियन बच्चोंकी संख्या कम हो गयी है, किंतु उनका स्थान लेना हिंदू-आंग्लियन बच्चोंने शुरू किया है।

स्वतंत्र भारतके भारतीय शासक अंग्रेजीके बिना अपनेको अनाथ समझते हैं। वह इन युरोपीय स्कूलोंपर न्योछावर हैं। इन काले शासकोंमेंसे कुछ-को शायद किसी थर्ड-क्लासी युरोपीय स्कूलमें पढ़नेका मौका भी मिला हो, किंतु लालसा तो उस शिक्षासे वंचित और अवंचित सभीके दिलोंमें बराबर ही है। इस वर्गके शिरोमणि हमारे प्रधान मंत्री हैं, जिन्हें इंग्लैंडके सर्व-श्रेष्ठ आभिजात्य स्कूलमें स्कूली शिक्षा समाप्त करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और आज उनकी अंग्रेजियत-भक्ति कितनी उग्र है, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थितिमें यदि हमारे छुटभैये शासक अपने सुपुत्रों और सुपुत्रियोंको युरोपीय स्कूलोंमें शिक्षा दिलाना अपना परम कर्त्तव्य, समझें तो इसमें आश्चर्य ही क्या? वैसे होता, तो युरोपीय स्कूलोंकी वही

हालत हुई होती, जो भारतकी स्वतंत्रताके बाद अंग्रेज नौकरोंकी हुई; किंतु पिछले ढाई वर्षोंके तजरबेसे पता लगता है, कि अभी भी इनके संरक्षकोंकी कमी नही है। एकाध ही स्कूल किसी सरकारी या भारतीय शिक्षण-संस्थाओं द्वारा खरीदे गये हैं, नहीं तो वह अब भी चल रहे हैं। इन स्कूलोंका रंग केवल गोरेकी जगह अब गंगा-जमुनी हो गया है, किंतु वेष-भूषा और रहन-सहन युरोपीय है। सरकारी उच्च-नौकरियोंको कुछ खास वर्गोंकी मिलकियत बनाये रखनेके लिये यह आवश्यक भी है, कि उनके लिये वही पात्र समझ जायें, जो अधिक खर्चीली तथा अधिक बहिर्देशिक वातावरणमें शिक्षा पाये हों। युरोपीय स्कूलोंमें शिक्षा-प्राप्त छात्रोंमेंसे किसीने कला और विज्ञानके किसी क्षेत्रमें हमारे यहां कृतविद्यता नहीं दिखलायी, तो भी मोटे-मोटे वेतनके प्राप्त करनेके लिये यह शिक्षा बहुत सहायक हुई, इसमें किसे संदेह है? ऊँची नौकरियां पानेकी लालसावाले ही नहीं, बल्कि अब तो हमारे पूँजीशाह भी अपने पुत्र-पुत्रियोंको इन पावन तीर्थोंमें भेजने लगे हैं। उस दिन एक आधुनिक सेठानी अपने दो दस वर्षसे कमके बच्चोंको एक युरोपीय स्कूलसे छुट्टियोंके लिये घरपर लिये जा रही थीं। वह अपनी माता सेठानीके साथ मारवाड़ीकी जगह फरफर अंग्रेजी बोल रहे थे। निस्संदेह ये बच्चे हमारे भविष्यके उद्योगपति हो युरोप और अमेरिकाके पूँजीशाहोंसे किसी बातमें कम नही होंगे। अफसोस यही है, कि पुरानी दुनिया डगमगा रही है। यदि ५० वर्ष पहिले यह अवसर मिला होता, तो इसकी उपयोगिताके बारेमें क्या कहना?

बालिकाओंको युरोपियन स्कूलोंमें क्यों भेजा जाता है, यह समझना कठिन नहीं है। यद्यपि इन देशी मेमोंमेंसे शायद ही कोई सरकारी नौकरियोंमें जायेंगी, किंतु देशी साहबोंको तो कोई मेम ही पसन्द आयेगी। ३० बरस पहिलेकी अपने दोस्त सन्तरामकी सुनायी बात याद आती है। वह पंजाबके एक गांवके स्कूलमें गये, जिसे किसी परदेशागत मिशनने खोला था। उसमें लड़कियोंको भी अंग्रेजी पढ़ाई जाती थी। सन्तरामजीने

उनसे जब अंग्रेजी पढ़ानेकी आवश्यकताके बारेमें संदेह किया, तो उत्तर मिला -"चंगा खसम ते पा लवेगी"। चंगा खसम लिवानेकी इच्छा ही शायद हमारे हिंदू-आंग्लियन शासकों और सेठोंको अपनी लडकियां इन युरोपियन स्कूलोंमें भेजनेके लिये मजबूर कर रही है। ये स्कूल यद्यपि अंग्रेजोंके लिये थे, किंतु नाम उन्होंने युरोपियन दे रखा था। उनके लिये यह शिक्षा बिल्कुल स्वाभाविक और आवश्यक थी, क्योंकि वे अपने देशसे दूर रहकर अपनेको इसी तरह निर्लेप रख सकते थे। वह एशियाई रहन-सहन और संस्कृतिको अपना नहीं सकते थे, और न उसे अच्छी दृष्टिसे ही देख सकते थे। ऐसी अवस्थामें उनके लिये दूसरा रास्ता ही क्या था? लेकिन, हमारे आजके शासक ऐसी माथापच्चीके लिये दिमाग नहीं रखते। गतानुगतिक हो वे उसी राहपर चलते जा रहे है। उनकी कृपासे अभी दोर्जेलिङके युरोपीय स्कूलोंको अस्तित्त्व मिटनेका डर नही है। इन स्कूलोंकी स्थापनाका उद्देश्य बतलाते हुए एक अंग्रेज लेखकने लिखा था, दोर्जेलिङका प्रारंभिक विकास सरकारी नौकरों (अंग्रेजों) के स्वास्थ्योपयोगी होनेके कारण था, इसलिये यह आश्चर्य नहीं है, यदि उन युरोपीय सरकारी नौकरोंके बच्चोंके लिये यहां भी स्कूल बनानेकी आवश्यकता समझी गयी, जो कि अपने बच्चोंको अपनी जन्मभूमिमें शिक्षा दिलानेके लिये भेज नहीं सकते थे। पहिले छोटे पैमानेपर स्कूल खोले गये थे, किंतु उनकी अवस्था डांवाडोल रही। धीरे-धीरे वे जमने लगे। इनका उद्देश्य था, कि युरोपियन तथा एंग्लो-इंडियन बच्चोंको ऐसी शिक्षा और रहन-सहन का प्रबंध किया जाय, जिसके कि उनके माता-पिता अपने देशमें आदी थे*।

(दोर्जेलिङ) (क) लोरेतो कान्वेंट–यह सबसे पुराना युरोपीय स्कूल सन् १८४६ ई० में स्थापित हुआ था। इस बालिकाओंके विद्यालयका प्रबंध

---

* Arthur Jules Dash. Darjeeling Gazetteer (1947) P. 271.

कैथलिक साधुनियां करती हैं। पहिले यह स्नोव्यु (हिमाल-दर्शन) में था, जहांसे सन् १८९२ ई०में वर्त्तमान इमारतमें लाया गया। सन् १९०५ ई०में इसकी संगीतशाला भी तैयार हो गयी। अस्पतालके अतिरिक्त यहांपर एक स्केटिंग रिंक भी है। स्कूलके साथ कर्मचारियोंके पृथक् निवास-स्थान भी बने हुए हैं। यहांकी अधिकांश शिक्षिकाएं साधुनियां हैं। यहां केम्ब्रीज जुनियर हाई स्कूल परीक्षाकी पढ़ाई होती है। नृत्य-संगीत (युरोपीय) और चित्रण सिखानेका विशेष प्रबंध है। स्कूलके कई क्रीड़ा-क्षेत्र तथा एक अच्छा पुस्तकालय है। यहां पहिले ढाई सौके करीब छात्राएं पढ़ती थीं, जिनमें १६० छात्रावासमें रहती थीं। द्वितीय विश्वयुद्धके समय यह संख्या और बढ़ी थी।

(ख) सेंट पाल स्कूल (बालक) दोर्जेलिङ्—इस स्कूलकी स्थापना सन् १८६४ ई० में ३० विद्यार्थियोंसे हुई थी। सन् १८४८ ई० से इसी नामका एक स्कूल चौरंगी मुहल्ले (कलकत्ता) में चल रहा था, जिसको बेचकर इस स्कूलकी स्थापना की गयी। स्थापनाके समय इसके पास एक ही इमारत थी। विद्यार्थियोंके साथ-साथ मकानोंकी संख्या भी सन् १८९५ ई० तक बढ़ती गयी। फिर सन् १९०७ ई० तक स्कूलका ह्रास होता रहा, जब कि सौके करीब छात्र रह गये। उसके बाद वृद्धि होने लगी और यह सन् १९३६ ई० तक पहिलेकी तरह हो गया। सन् १९४४ ई० में इसमें २५७ विद्यार्थी थे, जो सभी छात्रावासमें रहते थे। यद्यपि पहिले भारतीय बालकोंके लिये सुविधा नहीं थी, किंतु पीछे २५ प्रतिशतके भीतर उन्हें लेना स्वीकार किया गया। सन् १९४४ ई० में इस स्कूलमें १३ अध्यापक और ५ अध्यापिकाएं थीं, जिनमेंसे आधे अंग्रेजी विश्वविद्यालयोंके उपाधिधारी थे। स्कूलमें केम्ब्रीज-जुनियर तथा कलकत्ता युनिवर्सिटीके इन्टरमिडियेट आर्ट और साइन्सकी परीक्षाके लिये पढ़ाई की जाती है। इसके पास दोर्जेलिङ्के सबसे अच्छे क्रीडा-क्षेत्र और टेनिस-आंगन हैं। इस स्कूलकी इमारत दोर्जेलिङ् नगरसे ५०० [illegible] अवस्थित है, जहांसे हिमाल-शिखरोंका अत्यन्त सुन्दर दर्शन होता है।

अभागमें नार ब्लाकमें बनी है। स्कूलका गिरजा कुछ हटकर नीचे बना है, जिसका उद्घाटन सन् १९३५ ई० में हुआ। यह स्कूल नगरके प्रायः सभी भागोंसे दिखलाई पड़ता है।

(ग) सेंट माइकेल बालिका विद्यालय—(अब सरकारी डिग्री कालेज) सन् १८८६ ई० में कलकत्ताके एक बिशपने दोर्जेलिङ बालिका स्कूलके नामसे एक स्कूल स्थापित किया था, जिसे सन् १८९५ ई० में सेंट जान बपटिस्टकी साधुनियोंके हाथमें दे दिया गया। सन् १८९९ ई० के तूफानमें स्कूलकी इमारत नष्ट हो गयी, किंतु प्राणोंकी क्षति नहीं हुई। कुछ समय तक प्रान्तीय गवर्नरने अपने दरबार-हालको इसके लिये साधुनियों-को दे दिया। सन् १९०० ई० में यह रिचमंड हिलमें आ गया, जहां जंगल-विभागने एक अच्छा स्थान इसके लिये दे दिया। सितंबर सन् १९०४ ई० में स्कूलकी इमारतों और नये गिरजा-घरका उद्घाटन हुआ। बीचमें पड़े नाम "डायोसेन बालिका स्कूल" को छोड़कर सन् १९२९ ई० में इसका नाम सेंट माइकेल स्कूल रख दिया गया। यहांपर छात्राओंको केम्ब्रीज स्कूल सर्टीफिकेट, जूनियर स्कूल सर्टीफिकेट, रायल ड्राइंग सोसायटी (लंदन), रायल म्युजिक एकेडेमी (लंदन), लंदन नीडिल-वर्क इंस्टीट्यूटकी परीक्षाओंके लिये तैयार किया जाता था। अंग्रेजी शासनके हटनेके बाद स्कूल बंद हो गया और इसकी इमारतोंको लेकर सरकारने यहां डिग्री कालेज खोल दिया है।

(घ) सेंट जोजफ (बालक) कालेज दोर्जेलिङ—यह नगरसे बाहर लेबोङके रास्तेमें नार्थ-प्वाइंट (उत्तर बिन्दु) में अवस्थित है। इसकी स्थापना सन् १८८८ ई० में हुई थी। जेसुइट साधु इसका प्रबंध करते हैं। पहिले यह एक छोटीसी जगहमें चल रहा था। सरकारने पीछे एक बहुत सुन्दर स्थान बर्चहिलसे उत्तर नीचेकी ओर दे दिया, जहां मकानोंके बन जानेके बाद सन् १८९१ ई० में स्कूल चला गया। सरकारी सहायतासे इस कालेजके पास अपनी बहुत सुन्दर इमारतें, भौतिक-विज्ञान और रसायनकी प्रयोगशालाएं, एक सिनेमा-हाल और कई क्रीड़ा-क्षेत्र हैं। यहांके अधिकांश शिक्षक रोमन

कैथलिक जेसुइट साधु हैं। यहां बच्चोंको सीनियर केम्ब्रीज परीक्षाके लिये तैयार किया जाता है। कालेज-विभागमें कलकत्ता-विश्वविद्यालय-के विज्ञान और साहित्यके इंटरमिडियेटकी पढ़ाई होती है। स्कूलमें ७ से १२ वर्षके लड़के लिये जाते हैं। कालेज-विभागमें प्रथम या द्वितीय श्रेणीमें मैट्रिक पास छात्र प्रविष्ट किये जाते हैं। यहांके अधिकांश विद्यार्थी कैथलिक हैं। सन् १९४४ ई० में यहां ३९० विद्यार्थी पढ़ रहे थे, जिनमेंसे ३१७ छात्रावासमें रहते थे। कुछ सिक्किमी, नेपाली और तिब्बती लड़कोंके अतिरिक्त ३१ भारतीय लड़के भी इस साल पढ़ रहे थे। कालेज-विभागमें ३० लड़के थे, जिनमें अधिकांश पहाड़ी थे। सन् १९४४ ई० में छात्रावास सहित हर एक विद्यार्थीकी फीस ९५० रुपया वार्षिक थी।

(ङ) **मौंट हर्मोन स्कूल, दार्जेलिङ**—यह अमेरिकन मेथोडिस्ट मिशनरियोंका स्कूल है, जिसमें बालक-बालिकाओंकी सह-शिक्षा होती है। "ईसाई प्रभाव, शिक्षण तथा पथप्रदर्शनके अधीन मिशनरियों तथा दूसरे अंग्रेजी-भाषी माता-पिताओंके बच्चोंकी मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शिक्षाके लिये" इस स्कूलकी स्थापना सन् १८९५ ई० में हुई। नार्थ-प्वाइंटमें एक सौ एकड़ भूमिपर इस स्कूलकी इमारतें तथा क्रीड़ा-क्षेत्र बने हुए हैं। बंगाल सरकार स्कूलके अध्यापकोंके वेतन तथा संचालनके लिये आर्थिक सहायता देती है। बंगाल-युरोपीय स्कूलोंके लिये शिक्षा-विभाग द्वारा निर्धारित हाई स्कूली पाठ्यक्रम यहां चालू है। यहां २१ मार्च सन् १९४४ ई० को २४८ छात्र पढ़ते थे, जिनमें १३० लड़के थे। कुल छात्रोंमें १९१ युरोपीय या एंग्लो इंडियन थे, बाकी ५७ यहूदी, पारसी और भारतीय थे। २०१ विद्यार्थी छात्रावासमें रहते थे। स्कूलकी मुख्य इमारत क्वीन्स-हाल है, जो भारतकी शिक्षा-संबंधी सर्वश्रेष्ठ इमारतोंमें एक है। यहां ३८ अमेरिकन, अंग्रेज, स्काच, और एंग्लो-इंडियन शिक्षक अध्यापनका काम करते हैं।

(च) **सिंगमारी स्कूल दार्जेलिङ**—यह स्कूल युद्धके कारण देशमें शिक्षाके लिये न भेजे जा सकनेवाले अंग्रेज बच्चोंके लिये सन् १९४१ ई० में खुला था और युद्धके बाद भी जारी रहा। यहां लड़के केम्ब्रीज स्कूल

सर्टीफिकेट तथा जुनियर परीक्षाओंके लिये तैयार किये जाते हैं। स्कूलमें लड़कियोंके साथ छोटे बच्चोंकी भी शिक्षा होती है। सन् १९४४ ई० में संख्या ७४ थी, जिनमें ३४ छात्रावासमें रहते थे।

(छ) **विक्टोरिया बालक स्कूल (खरसान्)**—यह खरसान्का सबसे पुराना युरोपियन स्कूल है, जिसकी स्थापना सन् १८७९ ई० में हुई थी। पहिले यह उसी मकानमें था, जिसमें आज-कल एस० डी० ओ० रहते हैं। सन् १८८० ई० में इसको डौहिलमें स्थानान्तरित कर दिया गया। सन् १८९७ ई० में पृथक् करके लड़कोंके लिये वर्त्तमान विक्टोरिया स्कूल खोल दिया गया और डौहिल स्कूल लड़कियोंके लिये रह गया। विक्टोरिया स्कूल सरकारी स्कूल है, जो मुख्यत: रेलके एंग्लो-इंडियन नौकरोंके बच्चोंके लिये खोला गया था। पीछे सरकारी नौकरोंके लड़के और बादमें साधारण युरोपियन और एंग्लो-इंडियन बच्चोंको भी लिया जाने लगा। केम्ब्रीज स्कूल सर्टीफिकेट एवं कलकत्ता विश्वविद्यालयकी आई०ए० परीक्षाके लिये लड़के यहां तैयार किये जाते हैं। स्कूल खरसान्के ऊपर डौहिलकी पीठपर बड़े सुन्दर स्थानपर अवस्थित है। इसके मकान बड़े भव्य तथा अच्छी प्रयोगशालाओंसे युक्त हैं।

(ज) **डौहिल बालिका स्कूल (खरसान्)**—सन् १८९७ ई० में इसे विक्टोरिया स्कूलसे अलग किया गया और सन् १८९८ ई० में मध्यम स्कूलके रूपमें यहां बच्चे पढ़ रहे थे। द्वितीय महायुद्धके अंतमें इसमें २०० छात्रोंकी गुंजाइश थी। यह सरकारी स्कूल है, जो आरम्भमें एंग्लो-इंडियन तथा अधिवासी युरोपीय जातिके सरकारी नौकरोंके लड़कोंके लिये बनाया गया था। सन् १९४४ ई० तक इसकी अधिकांश छात्राएं इसी जातिकी होती थीं और केवल १४ बच्चे शिक्षा पा रहे थे। यहां सीनियर और जुनियर केम्ब्रीजके लिये पढ़ाई होती है जिसके साथ संगीत, गृहविज्ञान, चित्रकला आदि भी सम्मिलित हैं। यह स्कूल भी विक्टोरिया स्कूलके पास हीमें अवस्थित है। दोनों स्कूलोंके लिये एक सम्मिलित अस्पताल है।

(झ) **सेंट हेलेन कालेज (खरसान्)**—सन् १८९० ई० में इसे रोमन

कैथलिक साधुनियोंने स्थापित किया। सन् १८९१ ई० में इसे बड़े मकानमें ले जाना आवश्यक हुआ। सन् १८९७ ई० के भूकम्पमें मकानको बहुत क्षति हुई। सन् १८९९ ई० में वर्त्तमान इमारतकी नींव डाली गयी और सन् १९०० ई० से वह उसीमें आ गया। लड़ाईके अंतमें यहां २०० के करीब छात्राएं शिक्षा पा रही थीं। यहांकी अधिकतर अध्यापिकाएं साधुनिया हैं। केम्ब्रीज-लोकलकी परीक्षा दिलाई जाती है। संगीतकी तरफ विशेष ध्यान दिया जाता है। स्कूलके पास टेनिस, हाकी, बेडमिंटन आदि-के लिये अच्छे क्षेत्र हैं।

(ञ) गोथेल स्मारक स्कूल (खरसान्)—कलकत्ताके एक रोमन-कैथलिक लार्ड-पादरीके स्मरणमें मुख्यतः युरोपियन और एंग्लो-इंडियन कैथलिक लड़कोंकी शिक्षाके लिये इस स्कूलकी स्थापना हुई। इसमें गैर-ईसाई तथा दूसरे संप्रदायोंके ईसाई बच्चोंको भी लिया जाता है। सन् १९४४ ई० में इसमें २२५ लड़के पढते थे, जिसमें १९ को छोड़ सभी छात्रावासमें रहते थे। केम्ब्रीज स्कूल और जूनियर स्कूलकी परीक्षाएं यहां दिलाई जाती हैं।

कलिम्पोङ—कलिम्पोङ के दो स्कूलों (ट) स्काच मिशन स्कूलके और (ठ) औद्योगिक स्कूलके बारेमें हम कह चुके हैं।

(ड) डाक्टर ग्रेहम होम्स (कलिम्पोङ)—पहिले "सेंट ऐन्ड्रूज कलोनियल होम्स" नामसे विख्यात यह बहुत महत्वपूर्ण युरोपियन शिक्षा-संस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०० ई० में डाक्टर जे० ए० ग्रेहमने की और वहीं मृत्युके समय (१५ मई सन् १९४२ ई०) तक इसके अवैतनिक अधीक्षक रहे। इसका उद्देश्य है "पूर्णतः या अंशतः अंग्रेज अथवा दूसरी युरोपीय जातियोंके लड़कोंको प्रोटेस्टेंट सिद्धान्तके अनुसार ऐसी शिक्षा और प्रशिक्षण देना, जिसमें कि वह ब्रिटिश उपनिवेशोंमें जा बसने अथवा दूसरी जगह उपयुक्त कार्य करने योग्य हो सकें।" कलिम्पोङ बाजारसे ऊपर ४५००-५००० फुटकी ऊँचाईपर पहाड़के किनारे ६११ एकड़ भूमिमें यह शिक्षण-संस्था फैली हुई है। सारे पर्वतगात्रपर इसके बहुतसे कुटीर

हैं, जिनमेंसे प्रत्येकमें २४ से ३४ लड़कोंके रहनेके लिये स्थान है। यहां ६०० बच्चोंके रहनेका स्थान है—सन् १९५० ई० में ४८० बालक-बालिकाएं पढ़ती थी। कुटीरोंमें नौकर नहीं हैं, और सारा काम लड़के-लड़कियां स्वयं करती हैं। होम (भवन) के पास १८ कुटीर, १ अस्पताल, १ पृथक्करण-गृहश्रेणी, ८ स्कूली मकान, ११ कर्मचारी-निवास और संस्थापककी पत्नीकी स्मृतिमें बना एक प्रार्थना-मंदिर, प्रबंध-गृह, तैराकी-स्नानागार आदि हैं। स्कूलमें सीनियर केम्ब्रीज तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयकी मैट्रिक परीक्षाकी पढ़ाई होती है। इसके २६ अध्यापकोंमें अधिकांश अंग्रेज हैं, (या थे)—जिनमेंसे आधे विश्वविद्यालयोंके ग्रेजुयेट हैं। सन् १९४४ ई० तक इस स्कूलमें ३११० बच्चे आये। आज होम द्वारा शिक्षित बच्चे दुनियाके सभी भागोंमें पाये जाते हैं, जिनमें कुछ बहुत जिम्मेवारीके पदोंपर हैं।

(ढ) सेंट जोजफ कान्वेंट (कलिम्पोङ)—मैदानी स्कूलोंमें पढ़ानेवाली रोमन कैथलिक साधुनियोंके सेनीटोरियमके तौरपर सन् १९२२ ई० में इसकी स्थापना हुई। फिर सन् १९२६ ई० में यह युरोपियन तथा एंग्लो-इंडियन बालिकाओंका छात्रावासीय स्कूल बन गया। सन् १९४४ ई० में इस स्कूलमें १४० छात्रावासी एवं ५० दिन वाले बच्चे पढ़ते थे, जिनमें २५ पार्वतीय थे। यहाँ ८ वर्ष तकके बालक भी ले लिये जाते हैं। केम्ब्रीज सीनियर तथा ट्रिनीटी कालेज संगीतकी परीक्षाओंकी पढ़ाई होती है।

(५) हिमाचल हिन्दी भवन—हिन्दीका राष्ट्रभाषाके नाते दोर्जेलिङ जिलेके लिए महत्त्व तो है ही, साथ ही नेपाली (गोरखा) भाषाके साथ बहुत कम अंतर होनेके कारण जिलेके नगरसे लेकर गांव तक हर जगह यह समझी जाती है। नेपाली शिक्षित जन हिन्दी-पत्रों और पुस्तकोंको उतनी ही आसानीसे पढ़ लेते हैं, जितनी कि बिहारके साधारण शिक्षा-प्राप्त लोग। वस्तुतः नेपाली भाषा राष्ट्रभाषासे उससे कहीं अधिक समीप है, जितनी कि मैथिली, मगही या भोजपुरी। तो भी हिन्दी नहीं चाहती कि नेपालीके साहित्य-क्षेत्रमें आगे बढ़नेके लिये

किसी तरहकी रुकावट हो। नेपाली भाषा-भाषी हिन्दीको उसी तरह राष्ट्रभाषा मानते हैं और उसके साथ पूर्ण स्नेह रखते हैं, जैसे कि मगही, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, बुंदेली, मालवी, राजस्थानी आदि भाषावाले। साथ ही इस जिलेमें हिन्दी-भाषा-भाषियोंकी संख्या सन् १९४१ ई० में ९०००० के करीब थी, जिसमें ७७००० तराईमें रहते थे। पहाड़में हिन्दी-भाषा-भाषियोंकी संख्या १२००० से ऊपर है--जिनमें अधिकांश बिहारी और पूर्वी उत्तर-प्रदेशके हैं। सदर-सब-डिवीजनके १६५८ हिन्दी-भाषियोंमें १००० से अधिक दार्जेलिङ नगर-में रहते हैं। खरसान् सब-डिवीजनमें ७२३ चायबगानोंमें एवं ३७३ नगरों और बाजारोंमें रहते हैं। कलिम्पोङ सब-डिवीजनके १४३८ हिन्दी-भाषियोंमें १७९ चायबगानोंमें और बाकी नगर और बाजारोंमें रहते हैं। इसलिये हिन्दीकी ओर हिन्दी-भाषियोंका ध्यान जाना आवश्यक था, तो भी हिन्दी-भाषा-भाषी व्यापारियोंको अपने व्यापारसे फुरसत नहीं थी और अशिक्षित श्रमजीवियोंसे इसके लिये आशा क्या हो सकती थी? शिक्षित-अर्धशिक्षित हिन्दी-भाषियोंकी संख्या इतनी कम थी, कि वह इस ओर अधिक कुछ नहीं कर सकते थे। इसीलिये हिन्दी-भाषियोंकी शिक्षा और हिन्दी-साहित्यके प्रसारकी रुचिका प्रथम प्रदर्शन बहुत पीछे जून सन् १९२१ ई० में हुआ, जब कि प्रयाग-निवासी प्रोफेसर ब्रजराजकी प्रेरणा-से एक हिन्दी प्रचारिणी संस्था स्थापित करनेका उत्साह लोगोंमें हुआ और "शुभस्य शीघ्रम्" के अनुसार कुछ नवयुवकोंने दूसरे ही दिन इस विचार-को कार्यान्वित करनेका संकल्प किया। उसी दिन दार्जेलिङ जिलेकी इस प्रमुख संस्था "हिमाचल हिन्दी-भवन" की स्थापना हुई। एक छोटेसे पुस्तकालय तथा वाचनालयके रूपमें पासङ बिल्डिङके ७ नम्बरके मकान-के बरामदेमें "भवन" का कार्य आरंभ हुआ। तरुणोंमें नवीन उत्साह था। अतः स्थानीय गवर्नमेंट हाई स्कूलके कई छात्रोंने अपने हाथों मेज-कुर्सी वाचनालयके लिये बनाये।"...क्रमशः यहांके हिन्दी तथा अन्य भाषा-भाषी सहृदय एवं उदार सज्जनोंने स्वयं सदस्य बनकर दान-द्वारा

तथा अन्य प्रकारसे इस नवजात हिन्दी प्रचारिणी संस्थाको पुष्ट करनेमें अपना सहयोग प्रदान किया। फलतः थोड़े ही समयमें पुस्तकों एवं पत्रिकाओंकी संख्यामें सन्तोषजनक वृद्धि हुई।

"आगामी वर्ष अर्थात् सन् १९३२ ई० में स्थानीय म्युनिसिपैलिटीके तत्कालीन चेयरमेन मिस्टर ओ० एम० मार्टिन एम० ए० आई० सी० एस० तथा सर्वप्रिय वाइस-चेयरमैन, कलकत्ता विश्वविद्यालयके हिन्दी-विभागके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नलिनीमोहन सान्यालके भ्रातुष्पुत्र रायबहादुर सच्चिदानन्द सान्याल एम० ए० बी० एल० की विशेष कृपासे "भवन" को म्युनिसिपैलिटीसे प्रतिमास २०) रुपयाकी रियायतके साथ बत्तीस रुपये तेरह आने तीन पैसेके स्थानमें बारह रुपये तेरह आने तीन पैसे मासिक किरायेपर एक मकान प्राप्त हो गया। इस मकानका उद्घाटन श्रीयुत् ब्रजमोहनजी बिड़लाके कर-कमलोंसे सम्पन्न हुआ तथा उन्हीके सभापतित्वमें भवनका प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसरपर बिहारके लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यिक तथा भागलपुर सेकेन्डरी ट्रेनिंग स्कूलके तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्रीयुत् कालिका प्रसाद (स्वर्गीय), बी० ए० बी० टी० भी यहां पधारे थे। इसी मकानमें "भवन" ने अपने जीवनका पूरा एक युग व्यतीत किया। पीछे सन् १९४४ ई० के अप्रैल मासमें अपनी लकड़ीकी कुटिया तैयार हो जानेपर यह मकान छोड़ दिया गया तथा उसके बदलेमें "भवन" को म्युनिसिपैलिटीसे मासिक ४०) रुपयेकी सहायता प्राप्त होने लगी।

"मकानकी सुविधा प्राप्त कर लेनेके बाद "भवन" के कार्यक्रमने एक ठोस रूप धारण किया तथा इस पार्वतीय प्रान्तमें हिन्दी भाषा तथा साहित्यके प्रचारकी योजनाको सफल बनानेके लिये निम्नलिखित साधनोंका अवलम्बन किया जाना निश्चित हुआ।"

(क) हिन्दी पुस्तकालय तथा निःशुल्क वाचनालय स्थापित करना तथा कराना।

(ख) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा)

तथा अन्य उपयोगी परीक्षाओंका प्रचार करना तथा उनमें सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियोंके अध्ययन-अध्यापनकी समुचित व्यवस्था करना।

(ग) हिन्दी पाठशालाएं खोलना तथा खुलवाना।

(घ) हिन्दी भाषामें उपयोगी पुस्तक प्रकाशित करना।

"इसी वर्ष दोर्जेलिङमें अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी परीक्षाओंके प्रचारार्थ हिमाचल-हिन्दी-भवनमें परीक्षा-केन्द्र स्थापित किया गया। परीक्षार्थियोंके निःशुल्क अध्यापनकी भी कई स्थानोंमें समुचित व्यवस्था की गयी। प्रथम वर्षमें इस केंद्रसे "सम्मेलन" की प्रथमा परीक्षा-में सात परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए, तथा सन् १९३३ ई० से मध्यमा-परीक्षामें भी परीक्षार्थी सम्मिलित होने लगे।

"भवन" के कार्यकर्त्ताओंका ध्यान स्थानीय हिन्दी-भाषी बच्चोंकी शिक्षाकी ओर आकर्षित हुआ। दोर्जेलिङमें हिन्दी-भाषी जनताकी कमी न थी, परन्तु, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यहां एक भी ऐसी पाठ-शाला न थी, जहां हिन्दीकी शिक्षा दी जाती हो और जब हिन्दीकी ही शिक्षा-का कोई प्रबन्ध न था, तब उसके माध्यमसे शिक्षा देनेका तो कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। अतः इस अभावकी पूर्तिके लिये चेष्टा आरंभ कर दी गयी। जनता तथा अधिकारियोंने इस विचारका अभिनन्दन किया। फलस्वरूप सन् १९३४ ई० में एक शिशु-हिन्दी-पाठशालाकी स्थापना की गयी। वही पाठशाला इस समय हिन्दी-मिडिल-इंग्लिश स्कूलके रूपमें वर्त्तमान है। जिसमें बालक तथा बालिका दोनोंके लिये सह-शिक्षा-की व्यवस्था की गयी है। इस स्कूलमें ६ शिक्षक काम करते हैं, बालिकाओंको सिलाई-बुनाई सिखानेके लिये एक शिक्षिका भी नियुक्त की गयी है। इसके संचालनमें प्रतिमास ५००) रु० व्यय होता है।

"सन् १९३६ ई० में निरक्षरता-निवारणार्थ एक रात्रि-पाठशाला खोली गयी। इस पाठशालाको अधिकारियोंकी कृपासे म्युनिसिपैलिटी-से मासिक सहायता भी प्राप्त हुई, किंतु दुर्भाग्यवश श्रमजीवियोंने उससे

समुचित लाभ नहीं उठाया । अतः लगभग सात वर्षोंके बाद सन् १९४३ ई० में यह पाठशाला बंद कर दी गयी ।

"इस वर्ष "भवन" के सदस्योंका ध्यान स्थानीय हरिजनोंकी शिक्षाकी ओर भी आकर्षित हुआ और उन्होंने एक हरिजन पाठशाला खुलवानेका प्रयास आरंभ किया, पर इसी बीच स्थानीय डिस्ट्रिक्ट इन्स्पेक्टर आफ स्कूल, श्री युत् कृष्णबहादुर गुरुङ बी० एस०सी० बी० टी० के उत्साहपूर्ण उद्योगसे दोर्जेलिङ म्युनिसिपैलिटीने १ जुलाई सन् १९३८ ई० को अपनी ओरसे एक हरिजन पाठशाला स्थापित कर इस महान् अभावकी पूर्ति कर दी । इस पाठशालासे स्थानीय हरिजन पर्याप्त संख्यामें लाभ उठा रहे हैं, तथा उन्हें अवकाशके समय अध्ययनमें सुविधा प्रदान करनेके उद्देश्यसे इसमें दोपहर तथा रात्रि दोनों ही समय पढ़ाई होती है । उन्हें निःशुल्क पुस्तकें तथा स्लेट आदि देनेकी भी व्यवस्था की गयी है । इस पाठशालामें आरंभसे ही कुलीन मध्यदेशीय ब्राह्मण अध्यापकका काम कर रहे हैं ।

"इस प्रकार "भवन" का कार्य-क्षेत्र क्रमशः विस्तृत होता गया । फल-स्वरूप इसने एक केंद्रीय संस्थाका रूप धारण कर लिया है तथा इसके अन्तर्गत अथवा इससे सम्बद्ध शाखाएं, इसके उद्देश्योंकी पूर्ति कर रही है—

१- सार्वजनिक पुस्तकालय,

२- निःशुल्क वाचनालय,

३- निःशुल्क हिन्दी प्रचार विभाग,

४- हिन्दी साहित्य परिषद,

५- हिन्दी मिडिल इंग्लिश स्कूल, तथा

६- संस्कृत पाठशाला ।

"सन् १९३७ ई० में उपर्युक्त शाखाओंके सफल संचालनार्थ एक निजी मकानकी आवश्यकता हो जानेके कारण "भवन" के अधिकारियोंने स्थानीय म्युनिसिपैलिटीसे निजी मकान बनानेके लिये नगरके मध्य भागमें उपयुक्त भूमि प्रदान करनेकी प्रार्थना की । उनकी यह प्रार्थना स्वीकृत हुई तथा भवनको एक केन्द्रीय स्थानमें फर्नडेल रोडपर अवस्थित १२ पोल

जमीन केवल दस रुपये वार्षिक मालगुजारीपर प्राप्त हुई। उसका प्रबंध ग्रहण करनेके लिये म्युनिसिपैलिटीके नियमानुसार "भवन" के सदस्योंकी एक सार्वजनिक सभामें एक न्यास-मंडल (बोर्ड आफ ट्रस्ट) का निर्माण किया गया। एक दीवार दिलाई गयी, जिसमें १२४० रु० खर्च पड़े। पर दुर्भाग्यवश द्वितीय महासमर-जन्य बढ़ती हुई असुविधाओंके कारण उस समय भवन-निर्माणका काम स्थगित कर देना पड़ा।

"मकानके लिये नकशा बनवानेके साथ-साथ इधर द्रव्य-संग्रहका कार्य भी जारी था। इस शुभ कार्यके लिये सर्व-प्रथम फरवरी सन् १९३७ ई० में पटना सिटीके सब-डिवीजनल अफसर रायसाहब कृपानारायण सिंहने २०० रुपयेका दान दिया तथा उसके अतिरिक्त उनके द्वारा पटनेसे १५३ रु० का दान और भी प्राप्त हुआ। "भवन" के लिये नया भवन बन जाना आवश्यक है। "भवन" के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओंने इस ओर प्रयत्न भी जोरोंसे आरंभ कर दिया, पर प्रस्तावित भवन-निर्माणकी योजना-को पूर्णतया कार्यान्वित करनेके लिये उन्हें ७५००० रुपयेकी आवश्यकता है, जिसमें अभी तक नकद केवल २२००० रुपयेके लगभग प्राप्त किया जा सका है। सौभाग्यवश भवनके सभापति रायबहादुर सेठ श्री लक्ष्मी-नारायणजी सुखानीके सुयोग्य पुत्र श्रीयुत् देवीदयालजी सुखानीने अपने फर्मकी ओरसे ऊपरका सम्पूर्ण तल्ला बनवा देनेकी उदारता प्रदर्शित की है। तथापि शेष दो तल्लोंके निर्माण तथा आवश्यक फर्नीचर आदिके लिये लगभग ४० हजार रुपयेकी अभी भी आवश्यकता है।" भवनके पंचदश वार्षिक कार्यविवरण (सन् १९४५-४६ ई०) से।

हिन्दी-मिडिल-इंग्लिश-स्कूल—भवनने सन् १९३४ ई०की वसंत पंचमीके दिन एक निःशुल्क हिन्दी पाठशालाके रूपमें इस विद्यालयकी स्थापना की। इस शिशु-संस्थाकी पुष्टि और संवर्धन में श्री भैरवदासजी मेड़दा (श्री जेठमल भोजराज फर्मके बैंक-मैनेजर), पं० ज्वालाप्रसाद शर्मा, पं० मातादीन पाण्डेय, पं० लालजीसहाय, श्री जंगबहादुर प्रसाद, श्री देवीदयाल सुखानी

श्री केदारमल मिश्री आदिका विशेष हाथ रहा । पाठशालाकी प्रगति निम्न प्रकार हुई—

सन्		नगरपालिकासे अनुदान (रुपया प्रतिमास)
१९३४	शिशुपाठशाला	..
१९३५	निम्न प्रारंभिक स्कूल	६०
१९३६	तीसरी श्रेणी	,,
१९३७	अपर प्राइमरी स्कूल	७५
१९३८	पञ्चम श्रेणी	,,
१९३९	पूर्ण मिडिल इंगलिश स्कूल	१२५

सन् १९४१-४२ ई० से प्रान्तीय सरकार भी स्कूलको ५० रुपया मासिक सहायता देने लगी ।

यह ठीक है, कि हिन्दी-भाषियोंने यहां कार्य पीछे आरंभ किया और उनकी पीठपर सरकारका वरदहस्त भी नहीं था, तो भी भवनपर हिन्दी-भाषियों तथा पर्वतवासियोंका प्रेम है और अपनी सामर्थ्यानुसार सभी सहायता करना चाहते है, यह सन् १९४५-४६ ई० में प्रकाशित दाताओंकी सूचीसे पता लगता है । इस सूचीके अनुसार आठ-नौ रकमोंको छोड़ बाकी धन छोटे-छोटे दाताओंकी ओरसे मिले, जिनमें हिन्दी-भाषियोंके अतिरिक्त ५० से अधिक दाता पार्वतीय (छेत्री, गुरूङ, प्रधान, देवान, लामा, सुब्बा, गहतराज, थापा, राई, ठकुरी, मुखिया) हैं । भवनके वास्ते सहायता प्राप्त करनेके लिये जिलेके सभी स्थानों तक नहीं पहुँचा जा सका, तो भी दोर्जे-लिङ, आलूबाडी, जलपहाड़, जोरबंगला, भोटियाबस्ती, सिंगमारी, पतलिया-बांस, लेबोङ, गिंगबाजार, लोधमा, सुकियापोखरी, रिमाना, पोखरियाबांङ, सुनादा, खरसान् (कर्सियाङ), मोतीगढ़ा, तिस्ता बाजार, कलिम्पोङ गङ्गतोक, नयाबाजार (सिक्किम), खमदुम (सिक्किम), सिङलाम (सिक्किम), रोङपू (सिक्किम) के लोगोंने सहायता प्रदान की ।

(६) **नेपाली साहित्य सम्मेलन**—इसकी स्थापना सन् १९२४ ई० में हुई । यह नेपाली साहित्यकी अच्छी सेवा कर रहा है ।

८

दोर्जेलिङ् नगर

नगर

अंग्रेजोंने अपने भ्रष्ट उच्चारणसे दोर्जेलिङका दार्जिलिंग बना दिया। कुछ लालबुझक्कड़ोंने इसे दुर्जयलिङ्ग बनाना चाहा है। उन्हें मालूम नहीं, कि यह उस समयका नाम है, जब इस अंचलमें संस्कृतज-भाषा-भाषी नहीं आये थे। तिब्बती शब्द "दोर्जेलिङ" का शब्दार्थ है वज्रद्वीप। लिङ या द्वीप वाले सैकड़ों विहार तिब्बत और सिक्किममें मिलते हैं, स्वयं दोर्जेलिङमें तमङ लोगोंके विहार (मठ) का नाम "टशी तर्ग्ये लिङ" है। कितनी ही बार इन लिङ-अन्त विहारों (गुम्बाओं) के कारण पासमें बस गये गांव भी लिङ नामके हो जाते हैं। दर्शन गिरि (अबजर्वेटरी हिल) पर दोर्जेलिङ नामका एक विहार था, जिसके कारण नगरका यह नाम पड़ा।

जलपहाड़ तथा लेबोङकी छावनियोंको लेकर ४.८८ वर्गमील और उसके बिना दोर्जेलिङ नगरपालिकाका क्षेत्रफल ४.०८ वर्गमील है। लंबाई (घूमसे लेबोङ तक) ८ मील और चौड़ाई १ मील है। सन् १९४१ ई० की जन-गणनाके अनुसार दोनों छावनियोंको लेकर २७२२२ व्यक्ति नगरमें बसते थे। जनगणना जाड़ोंमें हुई थी, जब कि गर्मियोंके सैलानी अनुपस्थित थे।

दोर्जेलिङ नगर निम्न-हिमालय श्रेणीमें उत्तर अक्षांश २७ ३ और पूर्व देशान्तर ८८°१६ में अवस्थित है। कलकत्ता यहांसे ३६९॥ मील दक्षिण है। यह नगर घूम-सिंचेल पर्वत-भित्तिसे उत्तरकी ओर निकली पर्वत-बाहुपर बसा है। पर्वत-भित्ति घूम (७४०० फुट) से एकाएक कटापहाड़के शिखर (७८८६) के रूपमें ऊँची हो जाती है, फिर धीरे-धीरे नीची होती

जलपहाड़में ७५२० फुट एवं चौरस्तापर ७००२ फुट रह जाती है। यहांसे फिर ऊँची होती है। चोरस्ताके उत्तर वेधशालागिरि (अबजर्वेटरी हिल) और तकवार है। ये दोनों बाहुएं आगे तेजीसे नीचे गिरती ३००० फुट पर बहती रंगित नदीकी धारको छूती हैं। वेधशाला तथा भुजंगिरिसे दूर तक फैले हिमालयका सुन्दर दृश्य आंखोंके सामने आता है।

गर्मियोंमें भी दोर्जेलिङका तापमान ७० डिग्रीसे ऊपर शायद ही कभी जाता है और जाड़ोंके दिन-रातमें वह ४० और ३५ डिग्रीके बीच रहता है। इस प्रकार इस नगरीमें ग्रीष्मका पता नहीं है। सबसे सुहावना समय है मार्चसे मई, जब कि बसन्तश्री अपनी लुभावनी माया फैलाती है। उस समय कभी-कभी फुहारें पड़ जाती हैं। जूनसे आधे अक्तूबर तक वर्षा (१३१ इंच वार्षिक*)-काल घरमें बैठे रह या खिड़कियोंसे झांककर आनंद लेनेका समय है। इस सारे समयमें जब वर्षा नहीं होती, तो आकाश प्रायः मेघाच्छन्न रहता है और घरके भीतर ही आमोद-प्रमोद या लिखना-पढ़ना हो सकता है। वर्षान्तके बाद महीने सवा-महीनेकी शरद-ऋतु होती है, जब कि एक बार फिर कितने ही सैलानी वज्रद्वीपकी सड़कोंपर घूमते दिखाई पड़ते हैं। इस समय इस पहाड़की नारंगियां तथा लाछेन-लाछुङके सेब बाजारमें भरे मिलते हैं, यद्यपि नारंगियां (सामतोले) अभी अपने मोहक रंगमें नहीं रहतीं। अधिक सर्दी दिसंबर और जनवरीमें पड़ती है।

शिमला (७०५७ फुट) के बाद दोर्जेलिङ भारतकी पर्वतपुरियोंमें सबसे ऊँचा (६८१२ फुट) है, यदि घूम (७४१७ फुट) को ले लें, तो दोर्जेलिङ शिमलाका भी मुकाबिला आसानीसे कर सकता है—

* **कुछ दूसरे स्थानोंकी वर्षा (इंच) से यहांकी तुलना कीजिये—**

दोर्जेलिङ	१३१.५	शिमला	६३.५७
कलिम्पोङ	८६.२०	नैनीताल	८६
खरसान्	१६१.२६	कलकत्ता	६२.५६
मद्रास	५०.७८	बंबई	७०.६३
दिल्ली	२७.८४	चेरापूंजी	४२६

	ऊँचाई (फुट)
सिलाङ्ग	४९८७
श्रीनगर	५२५०
अलमोड़ा	५५००
नैनीताल	६४००
मंसूरी	६६००
दोर्जलिङ्ग	६८१२
शिमला	७०५७

(१) **नगरकी सड़कें**–दोर्जेलिङ्गकी प्रधान सड़कें हैं–

(क) **जलपहाड़ रोड**–सन् १८३९ ई० में दोर्जेलिङ्ग पहुँचनेके लिये जो पहिली सड़क–सैनिकपथ (मिलिटरी रोड)–बनायी गयी, उसीका अंतिम भाग जलपहाड़ रोड है। यह नगरके पर्वत-पृष्ठपर होते चौरस्ता तक गया है। चौरस्तावाले छोरसे चलनेपर सेंटपाल-स्कूल-गिरजा होते अपेक्षाकृत कड़ी चढ़ाई चढ़के जलपहाड़ छावनी तथा दीघापतिया राजाका "गिरिविलास" भवन आता है। आगे परेड-फुटबाल-मैदान, अस्पताल तथा बैरकें हैं। फुटबाल-मैदानसे कटापहाड़की दोनों ओरसे इसकी दो शाखाएं हो जाती हैं, जो दोनों ही घूम जाती है। इनमें बायेंवाली थोड़ी दूर जाकर जोर-बंगलासे आध मीलपर पुराने कलकत्ता रोडसे मिल जाती है और दाहिनी शाखा चंद्राकार घूमती जोर-बंगलापर कलकत्ता रोडसे। इसी मिलन-स्थानके पास पुलिस थाना और धर्मशाला है।

(ख) **कार्ट (बैलगाड़ी) रोड**–मिलिटरी रोड (सैनिक सड़क) की चढ़ाई-उतराई अधिक खड़ी थी, इसलिये पहियेवाली सवारियोंके लिये सिलिगोड़ीसे ५१ मीलकी यह सड़क सन् १८६१ ई० में आरंभ करके सन् १८६९ में समाप्त की गयी। इसी सड़कके साथ-साथ दोर्जेलिङ्ग हिमालय रेलवे चलती है, जो दोर्जेलिङ्गमें आकर समाप्त हो जाती है, किन्तु, सड़क लेबोङ्ग कार्टरोड-के नामसे लेबोङ्ग तक चली जाती है। नगरकी यह बहुत महत्त्वपूर्ण सड़क है। इसीके दोनों किनारोंपर नगरकी घनी आबादी है। इसी पर बर्द्धमान राज-

प्रासाद है, जो गवर्नर-प्रासादसे प्रतिद्वन्द्विता करता है। आगे इसीपर रलांग्स् होटल, मारवाड़ी धर्मशाला, रोपवे (रज्जुमार्ग)--स्टेशन और फिर बाजार है। आगे लेबोङकी ओर जाते समय उसके किनारे या कुछ हटकर और बहुतसे हिंदू टाउनहाल, गोपालमंदिर, राधाकृष्ण-मंदिर, जामा-मस्जिद (मदरसा, मुसाफिरखाना सहित) जैसे दर्शनीय स्थान हैं। बोटानिकल गार्डेन (वनस्पति-उद्यान) इसीके पास जरा नीचे पड़ता है। आगे लोरेतो कान्वेंट (बालिका विद्यालय), तथा कचहरी होके युरोपियन कब्रिस्तान इसीके ऊपरी किनारेपर है, जिसमें फाटकके पास ही हुंगरीय महापर्यटक कुरोसी जोमा सन्दोर (अलेयजन्डर जोमा दे-कोरो) अप्रैल सन् १८८२ ई० से (जन्म सन् १७८८, ई० मृत्यु ११-४-१८४२ ई०) अनन्तनिद्राविलीन है। आगे सरकारी कालेज (भूतपूर्व डाउसेन बालिका विद्यालय) और अन्तमें घूमकर उत्तर विंदु (नार्थ-प्वाइंट) पर रोमन कैथलिकोंका संट जोजफ कालेज है। आगे सड़क निर्जन प्राय-सी पहाड़की दूसरी ओरसे चक्कर काटती लेबोङ छावनी और उसके घुड़दौड़के मैदानपर पहुँचती है। संट जोजफके पाससे एक रास्ता नीचे सिङला-बाजार जाता है, जिससे चाकुङ होते सिक्किमका प्रसिद्ध विहार पद्मा-यङ-चे (पमीओंची) पद्म सरस्वती (दोर्जेलिङसे ८२ मील) पहुँचा जा सकता है, किन्तु वहां पहुँचनेके लिये ६८८२-२५००-६९२० फुट चढ़ते-उतरते चलना पड़ेगा।

(ग) लेदन-ला (मेकन्जी) रोड---चौरस्ता (माल) से दो-तीन मिनट स्टेशनकी ओर चलनेपर नेहरू (भूतपूर्व कर्माशियल और आकलैंड) रोड और राबर्टसन रोडके संगमपर मिलनेवाली चौथी सड़क प्रसिद्ध तिब्बत-राजनीतिके विशेषज्ञके नामपर लेदन-ला कही जाती है। यह आगे लेजीसे उतरती रेलवे स्टेशनके पास पहुँचती है।

(घ) नेहरू (कमर्शियल-आकलेंड रोड)--लेदन-ला पथके समाप्ति-स्थानसे नेहरू रोड आरंभ होता है। इसके दाहिने आकलैंड रोड और बायें राबर्टसन रोड है। इसे दोर्जेलिङका हरिसन रोड समझिये। सभी बड़ी-

दोर्जेलिङ परिचय–
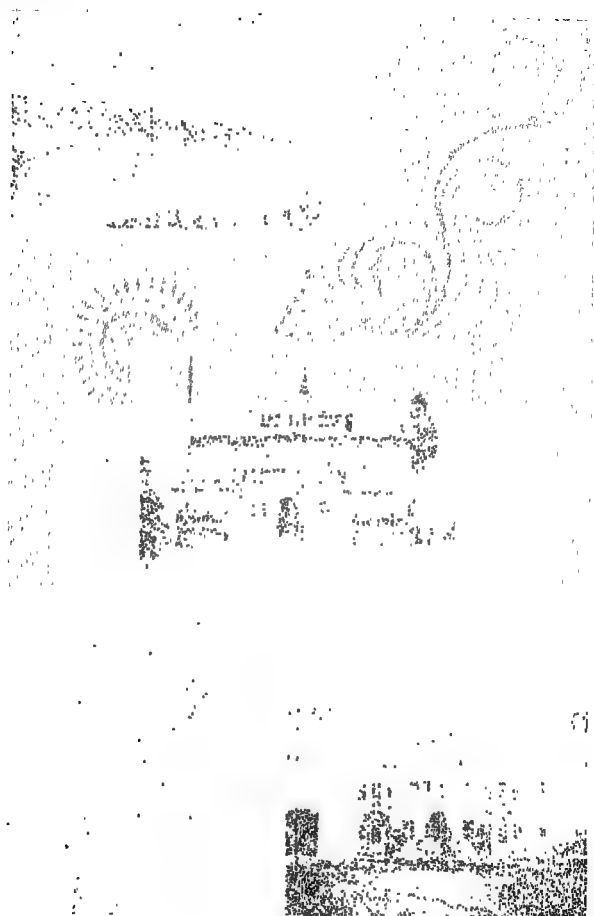
(ऊपर) दोर्जेलिङ हिम-शिखर, (मध्य) दोर्जेलिङ बौद्ध-बिहार,
(नीचे) दोर्जेलिङ राज्य-भवन

दोर्जेलिङ परिचय—

(ऊपर) दोर्जेलिङ नगर, (मध्य) दोर्जेलिङ मेला भूमि,
(नीचे) दोर्जेलिङ से हिमालय की शोभा

बड़ी दूकानें इसी रोडपर अवस्थित हैं। इस सड़कसे आगे ऊपरकी ओर चढ़के माल (चौरस्ता) पर पहुंचा जा सकता है।

आकलैंड रोड—यह अब नेहरू रोडमें सम्मिलित है, जो लेदन-ला रोडके संगमके आगे पूर्वकी ओर बढ़ते रेलवे-लाइनके समीप घूम पहाड़ रोडपर पहुंचता है। इससे चलकर घूम (बौद्ध) विहार पहुँचा जा सकता है। यह मार्ग घुड़सवारीके लिये अच्छा है। घूम स्टेशनसे छ-सात मिनट चलनेपर युरोपीय ढंगका "पाइन होटल" है, जिसकी चारों ओर क्रिप्टोमेरियाके वृक्ष लगे हैं, स्थान सुन्दर है। दोर्जेलिङसे इस सड़कपर जानेपर कोतवालीझोरा, मेरीबिला, कागझोरा, विक्टोरियाझोरा आदि कितने ही नाले और चश्मे राहमें पड़ते हैं, जिनपर अच्छे पुल बने हुए हैं। इनकी गति तथा कल-कल ध्वनि बहुत प्रिय लगती है। नेहरू रोडके नगरमें प्रवेश करनेके स्थानपर ऊपरकी ओर बायें एल्गिन होटल है और दाहिने नगरका सबसे फैशनेबुल होटल माउंट एवरेस्ट है, फिर दोर्जेलिङ क्लब (भूतपूर्व प्लान्टर्स क्लब)। आगे टाउनहाल (नगरशाल) पड़ता है, जिसके बाद एक सड़क है, जिसे पहिले कामर्शियल रोड कहा जाता था, अब इन दोनों हीका नाम नेहरू रोड है। माउंट एवरेस्ट होटलतक मोटर जाती है। एवरेस्ट होटलके पाससे मेकिन्टोश रोड, फिर एलिसि रोड होते नातिदूर जलपहाड़ आ जाता है।

(ङ) पुराना कलकत्ता रोड—यह सड़क भी घुड़सवारीके उपयोगकी है। यह चौरस्तासे घूमतक चार मील चली जाती है। इस सड़कपर आबादी बहुत कम है। चौरस्ता (माल) से दक्खिन-पूरबसे आरंभ करके टट्टुओंके रखनेके स्थानको बायें छोड़ प्रायः डेढ़ सौ गज जानेपर ऊपरकी ओर जलपहाड़ रोड दिखलाई पड़ता है और दाहिनी ओर एक रास्ता तुङसुङ बस्तीकी ओर उतरता है। दोनोंके बीचमें पुराना कलकत्ता रोड है। इसपरसे उत्तर और पूरबकी दिशाओंमें दूरवर्ती पर्वतोंका सुन्दर दृश्य सामने दिखलाई पड़ता है। पूरबकी ओर नीचे महारंगित-उपत्यका है और पश्चिमकी ओर हरे-हरे फूलोंके कालीन जैसे अनेकों चायबगान लगे हैं। दोर्जेलिङ

(वज्रद्वीप) पहाड़से हजारों फुट नीचे की ओर एक खड्ड है। खड्डके पार हरे वनोंसे ढंका लोपचू पहाड़ है, जिसके दाहिने व्याघ्रगिरि (टाइगर-हिल) और सिंचेल शिखर हैं। उनके कटि प्रदेशमें तिस्ता-उपत्यका सड़क बलखाती दिख-लाई पड़ती है। चौरस्तासे डेढ़ मीलपर नेपाली बौद्धोंका समाधिस्थान लग-गाती है, जिसमें मृतक भस्मावशेषोंको रखनेके लिये कितने ही छोटे-बड़े स्तूप बने हैं। आगे जानेपर आलूबारी बस्ती आ जाती है। थोड़ा और बढ़नेपर जलपहाड़ रोड नीचे होकर कलकत्ता रोडमें मिल जाता है। घूम स्टेशनसे आध मील इधर जोरबंगला पहुँचनेपर जलपहाड़ रोड नीचे आ इससे मिल जाता है।

(च) पश्चिम माल रोड—यह चौरस्तासे निकलनेवाली प्रधान सड़क है, जिसके किनारे ही डाकबंगला, सरकारी दफ्तर, सेंट एन्ड्रूज गिरजा, बालोद्यान (चिल्ड्रेन्स पार्क), जिमखाना क्लब, म्युजियम (जादूघर) और अन्तमें राज्यपाल-भवन (गवर्नर-प्रासाद) है।

(छ) पूर्व माल रोड—इस सड़कपर अधिक घर नहीं है। यह महाकाल-शिखर (अवजर्वेटरी-हिल) के पूर्व-पार्श्वसे राज्यपाल-भवन होते चौरस्ता चला गया है। रास्तेमें वृक्षोंकी छायामें एक हवाघर है, जहांपर ही पौन सौ वर्ष पहिले दोर्जेलिङ (वज्रद्वीप) नामक बौद्ध विहार था।

(ज) पूर्व और पश्चिम वर्चहिल (भुर्ज-पर्वत) रोड—राज्यपाल-भवनके फाटकसे यह सड़क शुरू होती है। दोर्जेलिङ पहाड़के पश्चिम ओर होते बर्चहिल (भुर्ज-पर्वत) तक पश्चिमी बर्चहिल रोड चला जाता है। इसीके नीचे सरकारी डिग्री-कालेज (भूतपूर्व सेंट माइकेल बालिका विद्यालय) युरोपीय कब्रिस्तान, स्नोव्यु रोडके चौरस्ते आदि पड़ते हैं। फिर यह पार्ककी प्रदक्षिणा करता पूर्वकी ओर आगे पूर्व बर्चहिल रोड बन जाता है। उसके बाद प्रायः दो मील चलकर दक्षिणसे रंगित रोडमें जा मिलता है। इसी मोड़के पास "स्टेप्साइड" भवन है, जिसमें देशबन्धु चितरंजनदासने अपना शरीर छोड़ा था और यहींसे होकर भुवालके राजकुमारका "शव" श्मशान ले जानेकी बात कही गयी थी।

(ट) रंगित रोड—चौरस्तासे यह सड़क एक मील नीचे उतरते भोटिया-बस्ती होते मांजीटार झूला पुलपर पहुँचती है। वहांसे लेबोङ कार्ट रोड पार करती नीचेकी ओर धीरे-धीरे आध मील जाकर लेबोङ-घुड़दौड़के नीचे कोनवाली बस्तीमें तेजीसे उतरती है। वहांसे आगे चलकर गिग विहार आता है, फिर सातवें मीलपर बदमनाम् डाकबंगला मिलता है।

(ठ) विक्टोरिया रोड—रेलवे-स्टेशनसे प्रायः आधमीलपर और कार्ट रोडके साथ घूमकी ओर यह रास्ता तेजीसे उतरकर एक समतल-सी भूमिपर पहुँचता है, जहांसे दाहिनी ओर विक्टोरिया पुल कुछ ही मिनटोंमें आ जाता है। वहांसे प्रायः ५० गजके करीब जाकर बायीं ओर घूमसे कुछ दूरपर नीचे मैग्यिम रोडमें मिल जाता है। वहांसे फिर वह आगे टी० बी० अस्पतालके पास जाता है। उक्त अस्पतालसे थोड़ी दूर-पर एक दूसरी सड़क बायीं ओर हिंदू श्मशानको जाती है। यहींसे भुवाल राजकुमारका शव गायब हुआ था। यह सड़क दोर्जेलिङ जेल, हरिदास हट्टा बस्ती, हैपीवेली चायबगान और अंतमें सिगमारीके नीचे छूतकी बीमारीवाले अस्पतालपर पहुँचती है। यहांसे वह तेजीसे ऊपरकी ओर चढ़ती लेबोङ कार्ट रोडसे थोड़ा नीचे सिङताम् रोडको पार करती है और फिर तेजीसे ऊपर चढ़ते लेबोङ कार्ट रोडसे थोड़ा ऊपर पश्चिम बर्चहिल रोडमें मिलकर खतम हो जाती है।

वस्तुतः दोर्जेलिङके अधिकांश दर्शनीय स्थान पश्चिम रोड, माल रोड, नेहरू रोड, लेदन-ला रोड और कार्ट रोडके किनारे ही हैं।

२—दर्शनीय स्थान

(१) महाकाल—इसे अवजर्वेटरी हिल कहा जाता है, जिसकी ऊँचाई ७१६३ फुट अर्थात् दोर्जेलिङ रेलवे स्टेशनसे ३५१ फुट अधिक है। चौरस्तासे पूर्व माल रोड होते महाकाल पहुँचा जा सकता है। दोर्जेलिङ विहारका मूल स्थान यही है, जहांपर सन् १७६५ ई०में रोङ (लेप्चा) लोगों-ने दोर्जेलिङ (वज्रद्वीप) नामक बौद्ध विहार बनाया था। सन् १८१५ ई० में

गोरखा सेनाने उसे लूटा था, तो भी विहार सन् १८७८ ई० तक मौजूद था। अंग्रेजोंके विलास-भवनोंके बीच यह विहार उन्हें खटकता था, विशेषकर सेंट एन्ड्रूज गिरजेके ऊपर इसका होना और भी अधिक खटकता था (सेंट एन्ड्रूजकी स्थापना सन् १८४४ ई० में इसकी पहाड़की पश्चिमी ढलानपर हुई)। इसीलिये धर्ममें तटस्थ अंग्रेज सरकारने विहारको यहांसे भोटिया बस्तीमें हटवा दिया। तो भी महाकालकी पाषाण-गुफा सूनी नहीं हुई। हिन्दू अपने महाकाल शिव और बौद्ध अपने बौद्ध महाकालकी पूजा करनेके लिये यहां पहुँचते रहे। तीन-चार मूर्तियां अब भी यहां मौजूद हैं। ब्राह्मण और बौद्ध पंडे-पुजारी भी वहां रहते हैं। देवस्थानके चारों ओर मंत्र छपे कपड़ोंकी ऊपर-नीचे लम्बी ध्वजाएं फहराती हैं। यह स्थान ऐसा है, जहां बंगाली, विहारी, मारवाड़ी, नेपाली हिन्दू एवं सिक्किमी, भूटानी, तिब्बती बौद्ध आकर एक समान पूजा करते हैं। मानों सारी भारतीय संस्कृतिका इस उजड़े तीर्थपर समागम होता है। ऊपरसे थोड़ा नीचे उतरनेपर एक सुरंग है, जिसके मुंहपर पत्थरका एक शिवलिंग स्थापित है। गुहासे ५,७ हाथ भीतर तक जाया जा सकता है। वहां बिल्कुल अंधेरा है। लोगोंका विश्वास है कि इस सुरंगसे ल्हासा पहुँचा जा सकता है और कोई-कोई कहते हैं, कि यह सुरंग कूचविहारकी कालीबाड़ी तक गयी है।

(२) **म्युजियम आदि**—महाकालसे नीचे उतरकर चौरस्तापर पहुँचा जा सकता है, जहांसे पूर्व दिशामें रंगित रोडसे कुछ उतरनेपर देशबन्धु चित्तरंजन दासका मृत्युस्थान "स्टेप्साइड" मिलता है। यहांसे फिर लौटकर चौरस्ता पहुँच उत्तरकी ओर पश्चिम माल रोडके साथ सरकारी दफ्तरोंकी पंक्तियां आ जाती हैं। आगे सेंट एन्ड्रूज गिरजाके पास वालोद्यान है। उद्यान-के नीचे म्युजियम है, जहां बहुत तरहके पशु-पक्षियोंके मृत-शव संगृहीत हैं, म्युजियम दोपहरको थोड़ी देर छोड़ १० बजेसे पांच बजेतक खुला रहता है।

(३) **वनस्पति-उद्यान** (बोटनिकल गार्डेन)—बाजारके उत्तरी छोरपर तरकारीकी दूकानें हैं। यहांसे आगे बायीं ओरके कोनेसे एक छोटा-सा रास्ता वनस्पति-उद्यानमें जाता है। पूर्वी हिमालयके नाना प्रकारके

वृक्ष और वनस्पति इस उद्यानमें लगाये गये हैं। पृथ्वीके और दूसरे शीतल स्थानोंकी वनस्पतियोंका भी यहां अच्छा संग्रह है। यह पहाड़की ढलानपर दूरतक १८ एकड़में फैला हुआ है। एक जगह यदि यहां कितनी ही जातिके देवदार हैं, तो दूसरी जगह बहुत प्रकारके बान (वंज, बजांठ, ओक) कहींपर रोडोडेन्ड्रोन (ब्रूश, गुरांश) की जाति-उपजाति है, तो कहींपर मग्नोलिया की। हमारे पहाड़ोंमें अपने यहांके बहुतसे वृक्षों और वनस्पतियोंके नाम अब भी प्रचलित हैं। यदि अंग्रेजी नामोंके साथ-साथ देशी नामोंको भी यहां लिख दिया जाता, तो दर्शकोंकी अधिक ज्ञानवृद्धि हो सकती, किन्तु अभी तो वृक्षोंको छोड़ दार्जिलिङकी सड़कों और पहाड़ोंपर भी अंग्रेजी नामोंकी ही छाप है।

(४) **विक्टोरिया-जलप्रपात**—वनस्पति उद्यानसे दक्षिणकी ओर निकलनेपर चांदमारी (चानबारी) मिलती है। यह मध्यवित्त बंगाली मुहल्ला है। यहां विक्टोरिया रोड मिलता है, जो बहुत दूरतक दार्जिलिङ-को घेरे हुए है। इस सड़कसे दक्षिणकी ओर जानेपर ऊपरसे रज्जु-मार्गपर मालका आवागमन दिखलाई पड़ता है। आध मील जानेके बाद एक बड़ा पुल आता है, जिसके बायें विक्टोरिया-जलप्रपात है। यहां पानीकी धार ८० फुटसे नीचे गिरती है। ग्रीष्मकालमें यद्यपि यह धार बहुत छोटी हो जाती है, किंतु वर्षाकालमें यह बहुत विशाल और दर्शनीय बन जाती है।

(५) **बर्द्धमान राजप्रासाद**—प्रपातके ऊपरवाले पुलको पार करके आगे जानेपर राज्यपाल-भवनकी तरह ही नील रंगके गोल गुम्बज वाला महाराजा बर्द्धमानका विशाल प्रासाद है। यहांसे ऊपर चलकर कार्ट रोड-पर पहुँचा जा सकता है, जिसके द्वारा उत्तर ओर कुछ दूर चलनेपर रेलवे-स्टेशन आ जाता है। प्रपातसे विक्टोरिया रोड होते कुछ दूर लौटनेपर दाहिने वाले पहिले रास्तेसे चलनेपर कुछ ऊपर चढ़नेके बाद दार्जिलिङका रामकृष्ण-वेदान्त-आश्रम है। इसमें होमियोपैथिक दातव्य चिकित्सालय, पाठशाला, स्कूल और मंदिर हैं। आश्रममें स्टेशनसे थोड़ा नीचे उतरकर भी पहुँचा जा सकता है।

(६) **जलपहाड़ छावनी**—चौरस्तासे दक्षिणकी ओर जलपहाड़ रोड चढ़ाईका रास्ता है। यह पहाड़के ऊपर ही ऊपर दक्षिण और घूमकी तरफ जाता है। सड़कसे आगे जानेपर पहिले संटपाल्स स्कूल और दीघापतिया राजाका "गिरि-विलास" भवन मिलता है। वहांसे आगे पल्टनके अस्पताल, सैनिकोंके निवास-गृह, अस्त्रागार और खेलोंके मैदान हैं। पहिले यहां गोरी सेना रहा करती थी, आज-कल भारतीय सेना रहती है। यहां भी दूर तक दिगन्तव्याप्त मनोरम हिम पर्वत-श्रेणी उसी तरह दिखाई पड़ती है, जैसे महाकालके शिखरसे। यदि घूम जानेकी इच्छा हो, तो जलपहाड़ रोडसे आगे चलते वहां पहुँचा जा सकता है। जलपहाड़ से मील भर उत्तर लौटनेपर इलेसी रोड द्वारा बायें उतरते मेकिन्टोश रोड आता है और अंतमें माउंट एवरेस्ट होटलके पास नेहरू (आकलैंड) रोड। होटलके नीचे वूडलैंड रोड आता है, जिससे उतरते सीधे स्टेशन पहुँचा जा सकता है। वूडलैंडकी दोनों तरफ दोर्जेलिङमें बहुत व्यापक रूपसे काम करने वाले स्काचमिशनका छापाखाना, गिरजा और दूसरी संस्थाएं हैं। आकलैंड रोडसे सीधे जानेपर कमर्शियल रोड (जो दोनों अब नेहरू रोड हैं)-द्वारा दोर्जेलिङके "बड़ाबाजारमें" पहुँचा जा सकता है। नेहरू रोड न जाकर मोड़के बाद दूसरी और पुराना पोस्टआफिस रोडका मोड़ है। इसी रास्ते के ऊपर सेंट्रल होटल है। होटलकी बायीं ओरसे माउंट प्लीजेन्ट रोड होते भी बाजारमें पहुँचा जा सकता है। बाजारसे कार्ट रोड द्वारा ६, ७ मिनटमें स्टेशन पहुँचा जा सकता है।

(७) **भोटिया बस्ती**—यह एक दर्शनीय स्थान है। नगरके मजूर, नौकर-चाकर, खानसामा आदिका काम करने वाले भोटिया तथा कितने ही बाबू और दूकानदार जैसे मध्यवित्त तिब्बती लोग भी इसी जगह रहते हैं। *सन् १८७८-७९ ई० तक महाकाल शिखरके ऊपर अवस्थित बौद्ध* विहारको भी यहीं स्थानान्तरित कर दिया गया। यहां रोङ (लेप्चा), शरबा, भूटानी, तिब्बती सभी तरहके तिब्बती भाषा-भाषी रहते हैं। वहां जानेके लिये चौरस्तासे पूर्वकी ओर जानेवाले रंगित रोडको पकड़ना चाहिये।

फिर "स्टेप्माइड" के बाद पूर्वी वर्चहिल रोडके मोड़को पारकर उत्तरी बंगाल-राइफल-सैनिक-पुलिसका अड्डा मिलता है। वहांसे कुछ नीचे एव चौरस्तासे आध मीलकी उतराईपर भोटिया बस्ती है। बस्तीसे नीचे वही गोम्पा (विहार) है, जो ७० साल पहिले महाकाल शिखरपर थी। महाकालकी भांति यहांपर बांसोंके ऊपर लंबाईमें बंधी कम चौड़ी, किंतु अधिक लंबी सफेद ध्वजाएं फहराती हैं, जिनके ऊपर तिब्बती अक्षर किंतु संस्कृत-भाषामें बहुत तरहके मंत्र छपे हैं। विहारके भीतर निचले तलमें बुद्ध और महायान-तंत्रयानके देवी-देवताओंकी मूर्तियां हैं और ऊपरी तलेपर कंजूरकी १०३ और तंजूरकी २३५ पोथियां कपड़ेमें बांधकर क्रमसे रखी गयी हैं। इन ३३८ वेष्ठनोंमें १०००० के करीब भारतीय ग्रंथोंके तिब्बती अनुवाद सुरक्षित हैं। आज उन ग्रंथोंमेंसे डेढ़ सौसे अधिक हमारे देशमें मूल-भाषामें नहीं रह पाये हैं। इनमें केवल बौद्धधर्म और दर्शनके ही दुर्लभ ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि कालिदासका मेघदूत, दंडीका काव्यादर्श और श्रीहर्षका नागानन्द नाटक भी मौजूद है। महान् वैयाकरण चंद्रगोभी (चंद्र) ने "चंद्रालोक" नाटक लिखा था, जिसका संस्कृत मूल लुप्त हो चुका है, किंतु उसका तिब्बती भाषान्तर इस ग्रंथ-राशिमें मौजूद है। भोटिया बस्तीके साधारण लोगोंके मिथ्या-विश्वासोंको देखते वक्त यह भी ध्यानमें रखना चाहिये, कि इनकी इस ग्रंथ-राशिमें भारतके उस महान् दार्शनिक और अप्रतिम तार्किक बुद्धिवादी धर्मकीर्ति (६०० ई०) के भी सात न्याय ग्रंथ मौजूद हैं, जिससे शताब्दियोंतक भारतके रूढ़िवादी कांपते थे और जिसने अक्लमारे लोगोंके पांच लक्षणोंको बतलाते हुए कहा था—

"वेदप्रामाण्यं कस्यचित् कर्तृ वादः स्नाने धर्मेच्छा जातिवादावलेपः।
संतापारंभः पापहानाय चेति ध्वस्तप्रज्ञानां पंच लिंगानि जाड्ये॥"

(वेद या किसी ग्रंथको प्रमाण मानना, किसी ईश्वरको दुनियाका बनानेवाला मानना, नहानेमें धर्म मानना, जातिभेदको मानना और पाप छुड़ानेके लिये उपवास आदि करना यह अक्लमारे हुए लोगोंकी जड़ताके पांच लक्षण हैं।)

बर्मियोंकी भांति तिब्बती लोगोंकी मुखमुद्रा चीनियोंसे अधिक मिलती है। चीनने भी भारतसे धर्म, दर्शन और कितनी ही बातें सीखी, किंतु चीनके पास अपनी लिपि पहिले हीसे मौजूद थी, जो ध्वनि-संकेतपर नहीं बल्कि अर्थ-संकेतपर निर्भर थी। आज भी उसीका चीनमें प्रचार है, यद्यपि उसके कारण कितनी ही कठिनाइयां पैदा हो गयी हैं। चीनी लिपिमें ध्वनिको ठीक-ठीक नही उतारा जा सकता, इसलिये उसमें विदेशी नामोंका लिखना बहुत कठिन है। बर्मा और तिब्बतके पास कोई पुरानी लिपि नहीं थी। उन्होंने तत्कालीन भारतीय लिपिके एक रूपको अपनाया। तिब्बतकी लिपि ईसाकी छठीं शताब्दीकी उत्तर-भारतीय मौखरि-लिपिसे समानता रखती है। हर एक अबौद्ध दर्शकसे यह आशा नहीं की जा सकती, कि वह सारी महायान-देवावलिसे परिचित होगा। किंतु हमारे शिक्षित दर्शकोंका भी यहांकी देव-मूर्तियोंमे ब्रह्मा, विष्णु, शिव या रामसीताका ढूंढ़ना क्या हास्यास्पद नहीं है? विहारमें सर्वोच्च सिंहासनपर भगवान बुद्धकी मूर्ति प्रतिष्ठापित है, जिसके साथ अनेक बोधिसत्त्व और कहीं-कहीं बौद्ध तांत्रिक मूर्तियां भी सौम्य या बीभत्स रूपमें देखी जाती है। मूर्तियां तिब्बतका आविष्कार नही हैं। जिस वक्त भारतमें बौद्ध धर्म विद्यमान था, नालन्दा और विक्रमशिलाके विहार उच्च शिक्षाके अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र थे, उस वक्त हमारे यहांके देवालयोंमें भी यही मूर्तियां होती थीं। तिब्बतने तो केवल कुछ अपने भी आचार्यों और सिद्धोंको उसमें जोड़ दिया है, अतः उनकी मूर्तियां भी इन विहारोंमें मिलती हैं।

विहारकी मूर्तियां ही नहीं, उसके द्वारों, गवाक्षों आदिमें भी भारतीयताकी छापका होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि इन कलाओंमें भारत तिब्बतका गुरु रहा। गोम्बा (विहार) के भीतर कुछ गोल-गोल ढोलके सिखले जैसी मनियां लगी हुई हैं, जिनको घुमाना श्रद्धालु बौद्ध पुण्यार्जनका एक साधन समझते हैं। आकारके अनुसार इन मनियोंके भीतर एक लाखसे करोड़ों तक "ॐमणि पद्मे हुं" जैसे कितने ही संस्कृत-मंत्र हाथके बने कागजोंपर छापकर रखे हुए हैं। घुमाकर एक फेरा करानेका

मतलब है, उतने मंत्रोंके जपका पुण्य प्राप्त करना। इसे कोई-कोई मूढ़-धारणा कह सकते हैं, किंतु जीभ या हाथके प्रयोगमें भी तो कोई बहुत अंतर नहीं है।

(८) **लेबोङ**—भोटिया-बस्तीसे एक सीधी पगडंडीसे उतरकर लेबोङमें पहुँचा जा सकता है। पहिले छोटी पगडंडी है, फिर खच्चर-सड़क मिल जाती है। लेबोङ जानेका एक दूसरा रास्ता दोर्जेलिङ बाजारसे कार्ट-रोड होकर भी है, जिससे जानेपर पाच मील जाना पड़ता है। मोटरसे जानेवालोंके लिये वही रास्ता आसान है। लेबोङ सैनिक छावनी है। किसी समय वहा गोरे सैनिक रहा करते थे, अब उनका नाम भर शेप है। यहांके बैरकोंमें अब उतने सैनिक नहीं रहते, लेकिन फुटबाल, क्रीडाक्षेत्र, परेड-मैदान अब भी कई हैं। यहां एक घुड़दौड़ मैदान भी है, जिसमें कभी बहुत रौनक हुआ करती थी। यहीं एक बंगाली तरुणने बंगालके एक जालिम गवर्नरपर बम फेंका था, किंतु वह बाल-बाल बच गया।

(९) **सेंट जोजेफ कालेज**—लेबोङसे कार्ट रोड द्वारा लौटते समय दो-ढाई मीलके बाद सड़कके किनारे रोमन कैथलिक साधुओं द्वारा परिचालित सेंट जोजफ कालेजकी भव्य इमारत मिलती है। इस कालेजकी इमारतें और क्रीड़ाक्षेत्र आदि बहुत दर्शनीय है।

(१०) **जोमाकी समाधि**—कार्ट रोडसे बाजारकी ओर चलते पहिले नीचेकी ओर देशी ईसाइयोंका कब्रिस्तान, फिर आगे बायी ओर ऊपरी किनारे-पर युरोपीय कब्रिस्तान है, जिसमें फाटकके पास "अलेक्जेण्डर जोमा" की समाधि है। इसी हुंगरीय महान पर्यटकने पश्चिमी युरोपको तिब्बती साहित्यका सबसे पहिले अच्छा परिचय कराया था। समाधिके ऊपर ईंट-पत्थरका अठकोना स्तंभ खड़ा है, जिसकी तीन तरफ लेख खुदे हुए हैं—दो लेख मग्यार (हुंगरी) भाषामें और एक एसियाटिक सोसायटी बंगालका अंग्रेजीमें। जोमा सन्दोर विश्वके अमर पर्यटकों और गवेषकोंमें है। वह तिब्बत-में आखिरी बार जानेकी तैयारी करके दोर्जेलिङ पहुँचा था, जब कि ११ अप्रैल सन् १८४२ ई० को यहीं उसका देहान्त हो गया। निश्चय ही उसकी

आते हैं। अंग्रेजी शासनकालमें ग्रीष्मके समय यहां अंग्रेज नर-नारियोंकी पिकनिक और उद्यान भोज हुआ करते थे। उस वक्त स्वच्छता भी अधिक थी और सभी चीजोंमें व्यवस्था दिखलाई पड़ती थी। पिछले दो वर्षोंमें इन बातोंमें बहुत कमी आ गयी है, किंतु, निराश होनेकी आवश्यकता नहीं, शिक्षा और अर्थागमका तल जबतक ऊँचा नहीं होता, तभीतक यह अवस्था है और तलको ऊँचा करना हमारे लिये अनिवार्य है।

(१३) **मसजिद-मन्दिर**—

(क) **मसजिद**—सेंट्रल होटलसे नीचे उतरनेपर दारोगा-बाजारमें मुसलमानोंकी जुमा-मसजिद है। कहा जाता है, किसी मुसलमान श्रद्धालुने १८ वीं शताब्दीके अंत (सन् १७८६ई०) में अर्थात् दोर्जेलिङकी स्थापनासे भी आधी शताब्दी पहिले इसकी स्थापना की थी, किंतु यह बात प्रामाणिक नहीं जंचती। हां, सन् १८५१ और १८६२ ई० के बीच नासिर-अली खां और कुछ दूसरे मुसलमानोंने यहां पहिले-पहिल एक मसजिद निर्माण की। पीछे मसजिदके साथ मकतब और एक मुसाफिरखाना भी बन गया। मुसाफिरखानेका प्रबंध बहुत अच्छा है, और उसमें जाति-धर्मका कोई भेद-भाव नहीं रखा जाता, खाली होनेपर कोई भी यात्री वहां आकर निःशुल्क ठहर सकता है। कुछ कोठरियां सपरिवार ठहरनेके लिये भी हैं।

(ख) **मंदिर**—नीचे बाजारमें जानेपर बाजारके डाकघरके नजदीक हिंदू मंदिर है। इस स्थानपर सन् १८३३ ई० में कोई पूजा-स्थान था। वर्तमान मंदिरको एक पेंशन-प्राप्त सैनिक सूबेदार तथा बादमें स्थानीय पुलिस-अफसर रणजीत सिंहने बनवाया और खर्चके लिये ३४००० रुपयोंकी निधि स्थापित की है। मंदिरमें मुख्यतः राधाकृष्णकी मूर्तियां हैं। इतने केंद्रीय स्थानमें होनेपर भी मंदिरके भीतर जानेपर उसकी गन्दगी और अस्तव्यस्तताको देखकर आदमीको ग्लानि हो उठती है। यहां किसी पुजारीके स्वार्थ और दुष्प्रबंधका सवाल नहीं है, बल्कि देखना यह है, कि ऐसे मंदिरको देखकर किसी विदेशीके दिलमें हिंदू-धर्मके प्रति क्या धारणा होगी। धीरधामके नवीन मंदिरको

देख लो, वह साफ और सुन्दर इमारत है, उसे देखकर विदेशी हिंदू-धर्मके प्रति अपनी धारण बना सकेगा, यह कहनेसे काम नहीं चलेगा; क्योंकि यह हिंदू-मंदिर नगरके केंद्रमें है, यहां जितने आदमी पहुँचते हैं, उतने दूसरी जगह नहीं पहुँच सकते। हिंदी-भाषी हिंदुओंके लिये यह और भी लज्जाकी बात है, क्योंकि यह उन्हीका मंदिर समझा जाता है।

मंदिरके पास ही दोर्जेलिङकी बड़ी हाट है, जिसमें रविवारको बड़ा और शनिवारको कुछ कम जोर-शोर रहता है। यहींपर तरह-तरहकी तरकारियां और दूसरी चीजें आस-पासके गांवोंसे आकर बिकती हैं।

(१४) **हिंदू पब्लिक-हाल**—इसका पूरा नाम नृपेंद्र नारायण हिंदू पब्लिक हाल है। कूचविहारके राजा नृपेंद्र नारायणके एक हजार रुपये-के दानसे पहिले एक छोटा-सा मकान बनाया गया था, जो, सन् १९०६ ई० में जल गया। उसके बाद दोर्जेलिङके सरकारी वकील एन० बनर्जीके अध्यवसायसे सन् १९०८ ई० में नयी इमारत बनकर तैयार हुई। इसके साथ वाचनालय और पुस्तकालय भी है। पहाड़में आनेवाले हिंदू यात्रियोंके मनोविनोद तथा सम्मिलनके लिये यह अच्छा स्थान है। दोर्जेलिङ बंगाली एसोसियेशन (स्थापना सन् १९४०ई०) इस हालका सदुपयोग करता है।

(१५) **गोरखा दुःखनिवारक सम्मेलन हाल**—यह दोर्जेलिङके गोरखा एसोसियेशनका भवन है, जिसके पड़ोस हीमें हिमाचल हिंदी भवनकी इमारत बन रही है। इसकी व्याख्यानशाला काफी बड़ी और नगरके सभा सम्मे-लनके लिये बड़ी उपयोगी है। इमारतको बने अभी थोड़े ही दिन हुए और उसमें अब भी कुछ काम बाकी है, किंतु इसके देखनेसे विश्वास हो जाता है, कि निद्रित नेपाली अब जागने लगे हैं और वे संघबद्ध हो काम करनेके महत्त्वको समझते हैं।

(१६) **टाउनहाल**—मेकेन्जी और आकलैंड (नेहरू) सड़कोंके मिलनेके स्थानके पास यह नगरकी भव्य इमारत है, जो सन् १९२१ ई० में ढाई लाख रुपयेके खर्चसे बनकर तैयार हुई, जिसमेंसे आधा कूचविहारके महाराजाने दिया।

(१७) **गंधमादन-विहार**—यह छोटा कागझोगमें अवस्थित है और सन् १९२८ ई० में बनकर तैयार हुआ। इसके साथ एक मंदिर और एक विश्राम-भवन है।

(१८) **हिंदू धर्मशाला**—जजबाजारमें स्टेशनसे ४—५ मिनटके रास्ते-पर श्री भुवनलाल शिवलालकी बनवाई यह धर्मशाला है। धर्मशाला साफ-सुथरी है। इसमें छोटे-बड़े सभी तरहके आदमियोंके रहने लायक कमरे और कोठरियां हैं। सैलानियोंकी भीड़के समय जब मकानोंका मिलना कठिन हो जाता है, तो यह धर्मशाला बड़े काम आती है।

(१९) **तमङ-विहार**—इस टशी-तर्गे-लिङ विहारको सन् १९२६ ई० में दोर्जेलिङ तमङ बौद्ध संस्थाने बनाकर तैयार किया। विहार छोटा किन्तु सुन्दर है। यह सड़कसे थोड़ा नीचे हटकर है। इसारत तिनमंजिला और छत तिब्बती-नेपाली ढंग की है।

(२०) **धीरधाम**—यह नेपाली ढंगका शिवालय है, जिसकी स्थापना सन् १९३९ ई० में हुई। मिश्रित नेपाली वास्तुकलाका इसमें प्रयोग किया गया है। मंदिर स्वच्छ और ऐसे स्थानपर बना है, जहांसे नगर अच्छी तरह दिखाई पड़ता है।

(२१) **तरुण बौद्ध संस्था (यंगमैन बुद्धिस्ट एसोसियेशन)**—रंगित रोडपर अवस्थित बौद्ध विहारके पास ही इस संस्थाका स्थान है। हिमालयके इस अंचलमें बौद्ध बहुत पिछड़े हुए हैं। बौद्ध तरुणोंने अपने इस संगठन-द्वारा शिक्षा-प्रचारका काम अपने हाथमें लिया है। इसकी ओरसे एक दर्जनसे अधिक प्रारंभिक स्कूल चल रहे हैं।

(२२) **शिक्षण संस्थाएं**—

दोर्जेलिङ जिलेकी उच्च शिक्षण-संस्थाएं निम्न प्रकार हैं—

लोरेतो कान्वेंट	(स्थापित सन् १८४७ ई०)
सेंट पाल स्कूल	(,, सन् १८६३ ई०)
सेंट जोजफ कालेज	(,, सन् १८८८ ई०)
गवर्नमेंट उच्च (हाई) स्कूल	(,, सन् १८८१ ई०)

मौंट हर्मोन (बालिका) विद्यालय (स्थापित सन् १८९५ ई०)
सेंट तेरेसा (बालिका) विद्यालय (,, सन् १९२६ ई०)
सेंट राबर्ट स्कूल (,, सन् १९३४ ई०)
गवर्नमेंट डिग्री कालेज (,, सन् १९४८ ई०)
इसके बारेमें पिछले अध्यायमे कह चुके हैं।

(२३) **अन्य दर्शनीय स्थान–**

पुराना युरोपीय कब्रिस्तान (सन् १८६५ ई०) कार्ट-रोडपर।
जेल (सन् १८६५ ई०)
चानबारी
युनियन चैपल गिरजा (सन् १८६९ ई०) नेहरू रोडपर।
विक्टोरिया अस्पताल (सन् १९०३ ई०) हाटके पास ही ऊपर।
पारसी कब्रिस्तान (सन् १९०७ ई०) सिंगमारीमे।
चीनी क्लब (सन् १९१३ ई०) एडन सेनीटोरियमके पीछे।
सेंट कोलम्बा गिरजा (स्काच-मिशन, सन् १८९४ ई०) रेलवे स्टेशन-के पास ही।
इमाकुलेट कान्सेप्शन गिरजा (सन् १८९३ ई०) लोरेतो कान्वेंटसे संबद्ध।

(२४) होटल–दोर्जेलिङमें काफी युरोपीय होटल थे, किंतु पिछले दो वर्षोंमें उनकी संख्या कम हो गयी है और पाठकोंके हाथमें इस पुस्तकके जाने के समय तक उनकी संख्या और भी कम हो जायेगी, या नाम परिवर्तन हो जायेगा।

यहांके युरोपीय होटल थे–

१. स्विस होटल–माउंट एवरेस्ट होटलके नीचे।

२. मौंट एवरेस्ट–नेहरू (आकलैंड) रोडपर सबसे बड़ा और बहुत सुन्दर ढंगका बना होटल है।

३. कोन्जे विला–नेहरू (आकलैंड) रोडपर।

४. मिंटो विला– ,, ,, ,,

५. वेलव्यु होटल–नेहरू रोड (कमर्शियल रो) पर।

६. पार्क कन्फेक्शनरी और रेस्तरों--(कमर्शियल रो) पर ।
७. वीचवूट हाउस--लेदन-ला- (मेकेन्जी), रोडपर ।
८. वाशिंगटन रेस्तोरां-- ,,
९. लोबो रेस्तोरा और बोर्डिंग हाउस-- ,,
१०. माल्व्यु होटल--राबर्टसन रोडपर ।
११ सेंट्रल होटल-- ''
१२. एल्गिन होटल-- ''
१३. होटल बिडमियर--पश्चिम माल ।
१४. मे-फेयर--टाउनहालके पास ।
१५. स्लीगो हाल-- ''
१६. मार्गरेट बाकर--चौरस्तापर ।
१७. एडन सेनीटोरियम--हाटके पास ।
१८. रुबी हाल--इंपिरियल बैंकके पास ।
भारतीय होटल है--
१९. स्नोव्यु होटल--कार्ट-रोडपर ।
२०. हिंदू बोर्डिंग--लेदन-ला (मेकेन्जी) रोडपर ।
२१. सेंट्रल बोर्डिंग--बेडल रोडपर ।
२२. लुइस जुबली सेनीटोरियम--रेलवे स्टेशनसे नीचे ।

१

कलिम्पोङ् नगर

१—नगर

कलिम्पोङ वस्तुतः कलोनपुङका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है मंत्रि-फटक—कलोन तिब्बती भाषामें मंत्री या महामात्यका पर्याय है। हो सकता है, यहां पहिले सिक्किम (डञजोङ) या भूटान (डुग्युल) का कोई कलोन रहता हो। यह हमें मालूम है, कि सन् १७०६ ई० में भूटानियोंने दालिङ (वर्त्तमान कलिम्पोङ सब-डिवीजन) को सिक्किमियोंसे छीन लिया, तबसे सन् १८६५ ई० तक, जब कि यह अंग्रेजोंके हाथमें आया, ५९ वरसोंतक यहां भूटानी लोगोंका शासन रहा, यद्यपि निवासी अधिकांश रोङ (लेप्चा) ही थे। अंग्रेजोंके हाथमें आते समय सारे कलिम्पोङ सब-डिवीजनकी जन-संख्या ३००० थी। सन् १९०४ई० में, जब कि कर्जनने तिब्बतके ऊपर सैनिक अभियान भेजा, कलिम्पोङका महत्त्व बढ़ गया, क्योंकि यही सैनिक अभि-यानका आधार-स्थान था। तो भी सन् १९०७ ई० तक यह १००० की आबादीका एक गांव भर था। सन् १९४१ ई० में इसकी जनसंख्या १२००० हो गयी और पिछले ९ वर्षोंमें उससे भी अधिक बढ़ी है। कलिम्पोङ सब-डिवीजनके ४१२ वर्गमील क्षेत्रफलमें आधा अर्थात् २१० वर्गमील जंगल है, तो भी नगरके आस-पास जंगल बहुत कम रह गया है। यह नगर देवलो (डेलो ५५९० फुट) और दूरबीन डांड़ा (४५०० फुट) इन दो पर्वतश्रेणियोंके मिलन स्थानपर ३९३३ फुटकी ऊँचाईपर बसा है। इस स्थानको कलिम्पोङ-बाजार कहते हैं। इसकी एक ओर आबादियां ऊँची होते ग्रेहम होम्समें जाकर ४६५० फुटपर पहुँच जाती है और दूसरी ओर उतनी ही ऊँचाई-पर दूरबीन डांड़ाके ऊँचे स्थानोंके बंगले हैं। कलिम्पोङ तिस्ता-पुलसे

सड़क-द्वारा साढ़े ९ मील और पगडंडीसे ६ मील पड़ता है। इस सड़कको रिशि (ऋषि) रोड कहते हैं, जो कलिम्पोङसे आगे अलगड़हा, पेदोङ होते तिब्बतकी सीमाको जाती है। इस सड़कपर ढाई-तीन मीलतक कलिम्पोङकी बस्ती बसी हुई है। मुख्य बस्तीके पश्चिमी छोरपर कचहरी, रव-जेल, डाकखाना और थाना है। फिर बाजार शुरू हो जाता है, जो पूरबमें बिजली पावर-हाउसपर जाकर खतम होता है। वैसे दोर्जेलिङमें भी बहुतसे देशोंके लोग मिलते हैं, किंतु कलिम्पोङ उससे कहीं अधिक पंचमेल-अन्तर्राष्ट्रीय नगर है। यदि बुध और शनिवारके दिन हाटमें चले जायें, तो वहां आपको भूटानी, तिब्बती, रोङ (लेप्चा), मारवाड़ी, बंगाली, नेपाली, बिहारी और कुछ युरोपियन नर-नारी ही नहीं मिलेंगे, बल्कि पेकिंग और मंचूरिया तकके चीनी, साइबेरिया तकके मंगोल, यहांतक कि मध्य-एसिया तकके किर्गिज-कजाक भी देखनेको मिलेंगे। एसियाके बहुतसे देशोंकी भाषाओंके पढ़नेका यहां सुभीता है। तिब्बती, चीनी और मंगोल-भाषाओंके तो यहां अच्छे पंडित इतने अधिक मिलते हैं, जितने दूसरी जगह मिलने कठिन हैं। तिब्बतकी उथल-पुथलके बाद तो यह नगर और भी शरणार्थी विद्वानों, कलाकारों, सामंतों और साधुओंका शरण-स्थान बन जायेगा। अभी भी तिब्बतका सबसे बड़ा मूर्तिकार यहां रहता है। वैसे भी कलिम्पोङ तिब्बत-का द्वार है। पिछली आधी शताब्दीसे तिब्बतके साथ भारतका व्यापारिक आदान-प्रदान कलिम्पोङ हीके रास्ते होता रहा। नहीं कहा जा सकता, कि लालचीनके साथ हमारे देशका भावी संबंध शत्रु, मित्र, तटस्थ किस प्रकारका होगा। यदि हमारे संबंध अच्छे नहीं हुए और महान् चीनके भीतर रहनेके कारण तिब्बत वस्तुतः हमारे लिये निषिद्ध देश हो गया, तो भी वह सूक्ष्म-छिद्र जिससे छन-छन कर एक दूसरेको क्षीण प्रकाश मिलेगा, यही कलिम्पोङ होगा। यह भी हो सकता है, कि कलिम्पोङ दोनों ओरके कूटनीतिक गुप्तचरोंका अड्डा बन जाये, (जो अब भी कुछ हदतक है) और जिसमें भारत और एसिया ही की नहीं, विश्वकी दूसरी शक्तियां भी दिलचस्पी लेवें।

कलिम्पोङमें हर तरहकी भाषा और हर तरहकी वेश-भूषा देखनेमें आती है। सभी तरहकी वेश-भूषाका सामान यहां तैयार किया जा सकता है। यहां आप कजाक भोजन भी पा सकते है और मंगोल भी। चीनी और तिब्बती भोजन-प्रकारो को तो शंघाई रेस्तोरां और गम्फू रेस्तोरांमें जाकर किसी वक्त भी आप चख सकते हैं।

२—होटल

हिमालयन होटल कचहरीके पास अंग्रेजी ढंगका होटल है। इसके अतिरिक्त हिलव्यु होटल, तृप्ति होटल, हिमाचल विश्रामागार (चंद्रालोक-के पास) तीन और होटल है, जिनमें साधारण व्ययपर अच्छी तरह रहा जा सकता है। अधिकांश सैलानी कुछ दिनोंके लिये बंगला लेकर रहते हैं, इसलिये यहां होटलोंकी उतनी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। दोर्जेलिङ और कलिम्पोङ दोनों ही ग्रीष्मके प्रवासके लिये बहुत अनुकूल स्थान हैं। दोनोंकी अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। दोर्जेलिङ उन लोगोंको अधिक पसन्द आयेगा, जो भीड़के जीवनको अधिक पसन्द करते है, जिन्हें क्लबके जीवन, नृत्य तथा गपशपसे अधिक प्रेम है, जो बाजारके धक्कमधक्का और क्रय-विक्रयको अधिक पसन्द करते हैं। कलिम्पोङ उन्हें अधिक पसन्द आयेगा, जो अधिक एकांत-प्रेमी हैं, जिन्हें परिमित मित्र-मंडली से ही संतोष हो सकता है।

इसका यह अर्थ नही, कि कलिम्पोङमें सैलानियोंके लिये आवश्यक चीजोंका अभाव है, या यहांके हाट-बाजारमें भीड़ नहीं होती। कलिम्पोङका बाजार भी छोटे रूपमें वैसा ही चहल-पहल रखता है, जैसा दोर्जेलिङका, बल्कि तिब्बतसे बराबर आते-जाते रहनेवाले खच्चरों और उनके चालकोंकी रंग-बिरंगी पोशाक और सरलता तथा अनभिज्ञताके कारण कलिम्पोङ दूसरा ही आकर्षण रखता है। यहां भोटिया-बस्तीमें जाकर तिब्बतकी नर-नारियोंको देखनेकी आवश्यकता नहीं है, यहां तो उनकी बड़ी संख्या सभी जगह पायी जाती हैं।

३—कलिपोङ्-बाजार

कलिम्पोङ्के मुख्यतः तीन भाग हैं। बीचमें मुख्य बाजार, पश्चिममें विकास-क्षेत्र (डेवेलप्मेंट एरिया) और पूर्व में मिशन तथा होम्स। मुख्य बाजारको किसी योजनाके अनुसार नहीं बनाया गया, इसलिये इसकी सड़कें और गलियां टेढ़ी-मेढ़ी हैं। थानासे मुख्य सड़क-द्वारा जानेपर बड़ी-बड़ी दूकानें मिलती हैं, जहां सिर्फ यात्रियोंके उपयोगकी चीजें ही नहीं, बल्कि तिब्बत भेजी जानेवाली या वहांसे आनेवाली चीजें भी मिलती हैं। दोर्जेलिङ् जहां सिर्फ अपने उपयोगकी चीजें रखता है, वहां कलिम्पोङ्को तिब्बत और मध्य-एसियाका भी खयाल रखना पड़ता है। यहां जहां मारवाड़ियों और बिहारियोंकी छोटी-बड़ी दूकानें हैं, वहां कितने ही नेपाली तथा तिब्बती सार्थवाहोंकी दूकानें और कार्यालय भी हैं। साढ़े नौ मीलसे आरंभ करके इन दूकानोंको पार करते दसवें मीलपर हमें मुख्यतः चीनी और तिब्बती दूकानें मिलती हैं, जिनमें बहुत-सी तिब्बती और चीनी कलाकी चीजें मिल सकती हैं। कलिम्पोङ्के चीनी शिल्पकार चमड़ेकी बहुत तरहकी तथा सस्ती चीजें बनाते हैं। दूकानें आगे प्रायः आध मीलतक चली गयी हैं। फिर मुख्य सड़कसे एक सड़क दाहिने नीचेकी ओर मुड़ती है। इसके द्वारा निचले बाजारपर पहुँचा जा सकता है। इस सड़कपर तिब्बत जानेवाले सौदोंकी मुख्यतः मारवाड़ी व्यापारियोंकी दूकानें हैं। यहां आप मारवाड़ी दूकान-दारोंको तिब्बती और नेपाली भाषा फर-फर बोलते पायेंगे। व्यापारियोंको वस्तुतः भाषा सीखनेका बहुत सुभीता होता है, वह उनके लिये अनिवार्य भी है। यह निचली सड़क डवर सिंह (रेली) रोड होकर चौरस्तेपर मिल जाती है। चौरस्तेसे आरंभ होकर डवर रोड और रिशि (ऋषि) रोडके बीचमें निचला बंक रोड है, जो आगे रिशि रोडमें मिल जाता है। यह सड़क मोटर वर्कशाप तथा मोटरके पुर्जोकी दूकानोंका केंद्र है। चौरस्तासे उत्तर मल्ली रोड गम्पो रेस्तोरांसे होते भालूखोपकी तरफ जाता है। गम्पो-रेस्तोरांसे थोड़ा ही आगे इन्डस्ट्रियल स्कूल है, जिसके कुछ विभाग सड़कके नीचे भी हैं।

४—यातायात

मल्ली रोड नीचे उतरते भाल्लूखोपतक सड़क और पीछे पगडंडी होकर मल्ली गांवमें पहुंचता है, जहां नेपाली ब्राह्मण—छत्रियोंका श्मशान है। मल्ली तिस्ता—पुलसे गङतोक जानेवाली सड़कके नीचे है। चौरस्तेसे एक सड़क नीचे उतरकर मोटरके अड्डेपर पहुंचती है। यहांसे मोटरें सिलि-गोड़ी, दोर्जेलिङ और गङतोकको जाती हैं। अलगड़हा और पेदोङके लिये जीप भी मिल सकती है। कलिम्पोङसे सिलिगोड़ीतक एक सीट टेक्सीका किराया ८ रुपया है, दोर्जेलिङका १४ रुपया और गङतोकका ६ रुपया। जीपमें अलगड़हाका किराया प्रति व्यक्ति ३ रुपया और पेदोङ तक ४ रुपया है। यदि और सवारी न हो, तो सारी टेक्सी का किराया प्रायः चौगुना लगता है। कलिम्पोङसे सिलिगोड़ीके लिये हल्की बस भी मिलती है, जिसका किराया ४, ५ रुपया है। मोटरके अड्डेके पास शंघाई रेस्तोरां है, जिसमें चीनी ढंगका भोजन मिलता है। मोटर अड्डेके नीचे मेला-मैदान (ग्राउंड) है। यहां पहिले मेला लगा करता था, जिसमें इलाकेकी उपज तथा पशुओंका क्रय-विक्रय एवं नाच-तमाशे हुआ करते थे। आजकल वह बंद है। लेकिन, फुटबालके मौसममें अब भी यहां रौनक हो जाती है, और सारे कलिम्पोङके नर-नारी बन-ठन कर यहां खेल देखने आते हैं, जिससे पता लगता है, कि हिमालयके इस छोटे नगरके नर-नारी भी कितने विनोद-प्रिय हैं। कभी-कभी तिब्बती मंडली भी मेला-मैदानमें अपना तंबू गाड़ देती है। नागरिकोंके लिये दूसरा विनोदका स्थान यहांका सिनेमा-घर (मेला-मैदानके उत्तर-पूर्व) है, जो टीनके छतके नीचे एक मामूली-सी अस्थायी इमारतमें है। नगरके अनुरूप सिनेमा-घरकी आवश्यकता है। इसके लिये काम भी कुछ साल पहिले लग गया था, लेकिन कई बरसोंसे दीवारें आधी बनी खड़ी हैं।

५—ईसाई मिशन

नगरके पूर्वी पर्वत डेलोकी जड़में रिशि रोडसे ऊपर स्काच-मिशनका विस्तृत हाता है। यहीं कलिम्पोङकी सबसे ऊँची और भव्य इमारत मेक-

फार्लेन-गिर्जा है । स्काच-मिशनने इस जिलेमें शिक्षाका काम बड़े व्यापक रूपसे किया है, जिसके अग्रदूत पादरी मेकफार्लेन थे । मिशनके हातेके भीतर ही, इंडस्ट्रियल स्कूल, इंटरमिडियेट कालेज, बालिका हाई स्कूल तथा चेरीटरी अस्पतालकी इमारतें हैं । मिशनके इंटरमिडियेट कालेज (स्काटिश युनिवर्सिटी मिशन इंस्टीट्यूशन) में १२०० विद्यार्थी पढ़ते हैं और बालिका विद्यालयमें ७१२ छात्राएं । इन शिक्षा-संस्थाओंके बारेमें हम अन्यत्र लिख चुके हैं ।

६—तिरपाई डांड़ा

रिशि रोडपर १० वें मीलसे ऊपरकी ओर तारखोला सड़क है, जो तिरपाई-डांड़ापर पहुंचती है । यहां दो छोटी गोम्पायें हैं । बड़ीको तिब्बतके एक महात्मा गेशे रिम्पाछेने स्थापित किया । उनका मुख्य विहार टोमो (चुम्बी) के तुङका स्थानमें है । इस विहारमें २५, ३० भिक्षुओंके रहनेका स्थान तथा भव्य प्रतिमागृह है । गेशे रिम्पोछेके देहान्तके बाद अवस्था उतनी अच्छी नहीं रही, किंतु अब भी विहारमें कितनी ही दर्शनीय वस्तुएं हैं । इसमें जप करनेके १०८ प्रार्थनाचक्र (मानी) हैं । विहारके प्रवेश द्वारके पास दीवारमें भवचक्र चित्रित है, जिसमें प्राणियोंके आवागमन (देव, दानव, नर, पशु, नरक) का दृश्य अंकित किया गया है । दीवारपर चारों महा-राजों वैश्रवण (कुबेर), धृतराष्ट्र, विरूढ़क और विरूपाक्षके चित्र भी हैं । ये बुद्धकालीन भारतके चार मुख्य देवता थे, जिनका महत्त्व समयके बीतनेके साथ गिरता गया और अब कुबेर (वैश्रवण) को छोड़कर बाकी सभी विस्मृत हो गये हैं । विहारकी शालामें भिक्षुओंके बैठकर पूजा-पाठ करनेके लिये पीठोंकी पंक्तियां हैं । यहां मुख्य प्रतिमा भगवान बुद्ध की है, जिनके दाहिने प्रधान शिष्य सारिपुत्र और बायें मौद्गल्यायन हैं । विहारके ऊपरी तलपर भी १००० बुद्ध प्रतिमाएं और एक कोठरीमें तांत्रिक देवता हैं । विहारके बाहर आंगन है, जिसमें धार्मिक अभिनय तथा दूसरे कृत्य संपन्न होते हैं । इस विहारसे निकलकर तिरपाई गांवसे थोड़ा ऊपर जानेपर ओझा-लामाका निवास मिलता है । कुछ पैसा भेंट चढ़ाकर

दर्शक अपने भाग्यके बारेमें यहां पूछ सकता है । तिरपाईके नीचे एक और छोटा-सा विहार है ।

७—कलिम्पोङकी शिक्षा-संस्थाएं

(१) **ग्रेहम होम्स**—अर्थात् सेंट एन्ड्रूज कलोनियल होमके बारेमें हम पहिले कह चुके हैं । तिरपाईसे और आगे होम्सकी विस्तृत भूमि (६११ एकड़) है । यह कलिम्पोङकी सबसे ऊँची आबादी है। सन् १९५० ई० में इसमें ४८० लड़के-लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, जिनमें अधिकतर एंग्लो-इंडियन थे । पहिलेसे छात्रोंकी संख्या कम हो गई है, और कुछ कुटीर खाली पड़े हैं, जो सैलानियोंको किरायेपर मिल जाते हैं ।

(२) **सेंट जोजफ कान्वेंट** (सन् १९२२ ई०)-८ वें मीलके ऊपर यह रोमन कैथलिक साधुनियों द्वारा संचालित बालिका विद्यालय है । इसके छात्रावासमें १४० विद्यार्थियोंके लिये स्थान है । सन् १९४९ ई० में संख्या १३० रही, जिनमें कुछ दिनकी छात्राएं थीं ।

(३) **अंधस्कूल** (सन् १९४० ई०) ९ वें मीलपर सड़कके नीचे है ।

(४) **जुबली हाई इंग्लिश स्कूल** (सन् १८३४ ई०)—इसमें हिन्दी और बंगलाके माध्यम-द्वारा शिक्षा दी जाती है ।

(५) **टाउन हाई स्कूल**—अल्प साधनसे इस स्कूलने अपने कार्य-कर्ताओंके उत्साहके बलपर बहुत जल्दी तरक्की कर ली । यहां शिक्षाका माध्यम नेपाली है ।

(६) **चीनी स्कूल**—इसका नाम चुंङ-वा-सो-शौ है । यह थानेसे चौथाई मील आगे बोङ रोडपर अवस्थित है । चीनी लड़के-लड़कियोंके लिये यह अच्छा स्कूल है । इसकी स्थापना सन् १९४१ ई० में हुई थी । लोगोंने चंदा करके ८०००० रुपयेमें स्कूलकी इमारतका निर्माण कराया, जो चीनी वास्तुकलाके अनुसार बनायी गयी है । शिक्षाका माध्यम चीनी है, अंग्रेजी और हिंदी भी पढ़ाई जाती है । यहां पांच अध्यापक और ७४ विद्यार्थी हैं । छात्रावासमें १० विद्यार्थियोंके लिये स्थान है ।

८—धर्मोदय-विहार

अंध स्कूलके पास ही सड़कके ऊपर यह बौद्ध विहार कुछ ही वर्ष पहिले स्थापित हुआ। हिमालयके इस अंचलमें बौद्धोंमें धार्मिक जागृतिका यह प्रतीक है। तिरपाईके विहार, जहां महायान बौद्ध धर्मका प्रतिनिधित्व करते हैं, वहां धर्मोदय स्थविरवादका प्रतिनिधि है। विहारकी ओरसे नेवार भाषामें "धर्मोदय" नामकी मासिक पत्रिका निकलती है, और कितनी ही बौद्ध धर्म-संबंधी पुस्तकें भी इसकी ओरसे प्रकाशित हुई हैं। इस विहारसे संबंध रखनेवाले भिक्षुओंने सिंहल (लंका) में जाके पाली भाषाका अच्छा अध्ययन किया है। यहां एक पुस्तकालय भी है। कलिम्पोङके श्री मणिहर्ष ज्योति जैसे नेपाली बौद्ध व्यापारी तथा भिक्षु अमृतानंद जैसे बौद्ध साधु इस संस्थाकी ओर विशेष ध्यान रखते हैं, और इस चिंतामें हैं, कि कैसे इसे और अधिक लोकोपयोगी बनाया जाये।

९—दूरबीन डांड़ा बस्ती

कलिम्पोङके पश्चिम ओरकी पहाड़ीपर नगरको और अधिक विकसित करनेका जो प्रयत्न हुआ है, उसीके परिणाम-स्वरूप इस पहाड़के ऊपर और अगल-बगलमें बहुतसे स्वच्छ सुन्दर बंगले बन गये हैं। इस क्षेत्रको कलिम्पोङ-विकास-क्षेत्र (डेवेलप्मेंट एरिया) कहते हैं, जिसका क्षेत्रफल १८३३६५ एकड़ है और ऊंचाई ३४०० से ४६५० फुट। इस क्षेत्रका परि-माण सन् १९२८-२९ ई० में और फिर सन् १९४२ ई० में हुआ था, फिर इसे प्रथम और द्वितीय दो भागोंमें बांटकर आबाद करनेके लिये टुकड़ोंमें बेंचा जाने लगा। मांग इतनी अधिक हुई, कि कुछ ही वर्षोंमें प्रथम भागकी सभी टुकड़ियां बिक गयीं। अब द्वितीय भागमें ही टुकड़े मिल सकते हैं। नियम है, कि इस क्षेत्रमें बननेवाले घर और उनका पास-पड़ोस अधिक साफ-सुथरा रहे, इसीलिये हर एक बंगलेमें सेप्टिक टैंक लगानेका नियम रखा गया है। लड़ाईके अन्तिम समय और बादमें भी मकान बनानेकी सामग्री दुर्लभ होनेके कारण उतनी तेजीसे नये मकान नहीं

बन सके। तो भी कितने ही अत्यन्त सुन्दर और सुखद बंगले दूरबीन डांड़ेपर हैं। स्वतंत्रताके बाद अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये, जिसका प्रभाव यहांके बंगलोंपर भी पड़ा और अब दो-चारको छोड़कर बाकी सभी कलकत्ताके सेठ लोगोंके हाथोंमें हैं। हमारे मारवाड़ी बन्धु पुराने कालमें चाहे कितने ही रूढ़िवादी रहे हों, लेकिन समयके साथ अब उनमें भी परिवर्त्तन हो रहा है, विशेषकर नयी पीढ़ीमें; तो भी परिवर्त्तनकी गति अभी धीमी ही मालूम होती है। यह इसीसे पता लगता है, कि कितनोंने बहुत सौंदर्यपूर्ण साफ-सुथरे स्नानगृहोंको तोड़कर उन्हें पुराने ढंगका बनवा डाला है। वे कुछ वर्षोंतककी प्रतीक्षा करनेके लिये भी तैयार नहीं हुए। निश्चय ही उनकी अगली पीढ़ी आधुनिक ढंगके—जिन्हें गलतीसे हम युरोपीय कहते हैं-स्नानागारों, शयन, अध्ययन-प्रकोष्ठको को अधिक पंसद करेगी। अंग्रेजोंकी भगदड़के समय मकान बड़े सस्ते बिके, ६-६, ७-७ लाखके मकान डेढ़-पौने दो लाखमें चले गये। होम्सकी एकान्तता और रमणीयता दूसरी तरह की है, जो विद्यार्थी-जीवनके लिये अधिक अनुकूल है। यदि वहां छात्रोंकी संख्या और कम हुई, तो उसके और भी कुटीर खाली हो जायेंगे और शायद उसमेंसे कुछको दूसरे कामोंके लिये लगाना पड़ेगा। तब शायद उधर भी ग्रीष्म-प्रवासियोंका जाना-आना हो। दूरबीन-डांड़ाके बंगले एकान्त-प्रेमी ग्रीष्म-प्रवासियोंके लिये अधिक अनुकूल हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र भी कलिम्पोङके इसी भागको पंसद करते थे। दार्जिलिङ (१२६.४२") की अपेक्षा यहां वर्षा भी कम (८६.२०") होती है। तापमान भी यहां इतना नरम रहता है, कि आदमी बारहों महीने आसानीसे रहकर काम कर सकता है।

१०—हिम-शिखरोंका दर्शन

दूरबीनकी कोठियोंसे हिम-शिखरोंकी पंक्तियोंका सुन्दर दर्शन होता है। दक्षिणसे उत्तरकी ओर क्रमशः सन्दकपू (११९११ फुट), फलूत (११७९० फुट), कबरू (२४००६ फुट) खङछेनजुंगा, कांचनजंघा

(२८१४६ फुट), सिङ्वू (२२३९६ फुट), सिनिअलचू (२२६०० फुट), लामा-अम्देन (१९,२५० फुट), खङ्चनजौ (२२७०० फुट), कालशिला (१७५०० फुट), नातूला (१४८०० फुट), जालेपला (१४३९० फुट), के शिखर दिखलाई पड़ते हैं। दूरबीन-डाड़ाको घेरे एक बहुत अच्छी सड़क है, जो सैलानियोंके प्रातः-सायं भ्रमण-पथका भी काम देती है।

तिब्बतकी सीमाके पासवाले स्थानों तथा सिक्किमकी यात्राओंके लिये कलिम्पोङ भी अच्छा आरंभ-स्थान है। यहां सभी तरहकी चीजें, सवारियां, तथा नौकर-चाकर मिल सकते हैं। जालेपला पार करके तिब्बत जानेका प्रधान रास्ता यहींसे होकर जाता है, जिसपर जगह-जगह डाक-बंगले बने हुए हैं। कलिम्पोङसे गङ्तोकतक मोटर जाती है और वहांसे सिक्किमके बहुतसे दर्शनीय स्थानोंमें पैदल या घोड़े-द्वारा पहुँचा जा सकता है।

कलिम्पोङकी पिछले ५० सालकी बढ़ती हुई समृद्धि आज परीक्षा-स्थानपर पहुँच रही है। साम्यवादी चीनका एक भाग साम्यवादी तिब्बत, यदि व्यापारके लिये अपना द्वार खोले रखता है, तो कलिम्पोङका महत्त्व और भी बढ़ सकता है, क्योंकि सामंती तिब्बतकी अपेक्षा साम्यवादी तिब्बतकी मांग और अधिक होगी। यदि द्वार बंद हो जाता है, तो इसका कलिम्पोङको बहुत धक्का लगेगा। केवल सैलानियोंके भरोसे यह फल-फूल नहीं सकता। कलिम्पोङ बरसातमें बहुत अच्छी किस्मका अन्नास पैदा करता है और जाड़ोंमें अच्छे किस्मकी नारंगियां यहां बहुत मिलती हैं, किन्तु इस नगरने उद्योग-धन्धे स्थापित करनेके लिये कोई प्रयत्न नहीं किया।

१०

खरसान् नगर

१—नगर

खरसान् दोर्जेलिङ जानेवाली रेलके ऊपर सिलिगोड़ीसे ३२ मील और दोर्जेलिङसे १९ मीलपर समुद्रतलसे ४८६४ फुटकी ऊंचाईपर बसा है। १८ वी सदीमें सिक्किम राज्यके भीतर रहते समय खरसान् रोङ(लेप्चा) लोगोंका एक गांव था। पीछे इसे नेपालने ले लिया था। सन् १८३५ ई० में मोरङका इलाका जब अंग्रेजोंके हाथमें आया, तो यह भी दोर्जेलिङ जिले में मिला लिया गया। दोर्जेलिङकी पुरानी सड़कके रास्तेपर पड़नेसे इसका महत्त्व बढ़ा और अब जनसंख्याके लिहाजसे कलिम्पोङसे यह बहुत पीछे नही है। सन् १९४१ई० में इसकी जनसंख्या ९८०० थी, जो अब बढ़कर १४००० से ऊपर हो गयी है। सिलिगोड़ीसे मोटरसे यहां आनेमें दो घंटे और रेलसे साढ़े तीन घंटे लगते हैं। यद्यपि यह कलिम्पोङ (३९३३ फुट)से करीब हजार फुट ऊँचा है, किन्तु अपेक्षाकृत अधिक गरम है, क्योंकि औसत तापमान यहांका ६० डिग्री है। वर्षा यहां कलिम्पोङ (८६.२०) और दोर्जेलिङ (१३१.५) दोनोंसे अधिक (१६५. इंच) होती है, जिसका कारण इसके दक्षिणमें सिवालिक श्रेणीमें एक भी रोकनेवाले पहाड़का न होना है, जिससे निचले बादल सीधे यहां पहुंच जाते हैं।

जिस वक्त कलकत्तासे सिलिगोड़ी रेल नहीं आई थी और लोग पैदल साहबगंज (भागलपुर जिला) आ, कारगोलाघाटपर गंगा पार हो दोर्जेलिङ आते थे, उस वक्त गंगासे पूर्णिया, किशनगंज होते सिलिगोड़ी पहुंचकर पहाड़पर चढ़ने खरसान् आना पड़ता था। आज भी दोर्जेलिङ आनेवाली रेलके अधिकांश भाग पूर्वी पाकिस्तानमें होनेके कारण यात्रामें बड़ी गड़-

बड़ी है । इससे पहिले दार्जेलिङकी यात्रा विशेषकर ऊँचे दर्जेके यात्रियोंके लिये बड़े आराम की थी । शामको सियालदह (कलकत्ता) में गाड़ीमें सो जानेपर सबेरे सिलिगोड़ी पहुँच जाते थे । आज पाकिस्तानकी रेलोंके बारेमें जो रवैया है, उससे भारतको दार्जेलिङ यात्राका दूसरा प्रबंध अवश्य ही करना पड़ेगा । जबतक भागलपुरके आस-पास गंगा पार पुल नहीं बन जाता, तबतक फिर सौ बरसके पुराने रास्तेसे किंतु रेल-द्वारा यात्रा करनी होगी । कलकत्तासे साहबगजतक बड़ी लाइनकी रेल है और गंगा-पार मनिहारीसे छोटी लाइन अब सीधी सिलिगोड़ीतक पहुंच जाती है । इसमें रातके सोनेका आनंद नहीं आ सकता, क्योंकि बीचमें गंगाको स्टीमरसे पार करना पड़ता है । यात्राको सुखद तभी बनाया जा सकता है, जब कि गंगापर एक पुल बनाकर गंगासे सिलिगोड़ीतककी लाइनको बड़ी लाइन कर दिया जाये । वैसे तो भारतकी सभी लाइनोंको एक नापका बनाना आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना बीचमें मालको एक गाड़ीमेंसे दूसरी गाड़ीमें लादनेमें बहुत श्रम और समयका अपव्यय होता है । शायद इसका आरंभ नई कलकत्ता-सिलिगोड़ी-लाइनसे करना पड़े ।

खरसान्की १४००० जनसंख्यामें बंगाली १००० हैं । दार्जेलिङ हिमालय रेलवेका मुख्य कार्यालय होनेसे यहां दफ्तरके कर्मचारियोंकी काफी संख्या है, जिनमें अधिकतर बंगाली हैं । यात्रियोंके ठहरनेके लिये दो धर्मशालाएं हैं। वर्द्धमान राजाका महल तथा हवाखोरीके दूसरे भी कुछ भवन हैं । यहां चार-पांच हिंदू मंदिर, रामकृष्ण-मिशन, बौद्ध विहार, मस्जिद, ईसाई साधुओंका मठ आदि धर्म-स्थान हैं । कलकत्तामें बिकनेवाली भाजी-तरकारियोंमें अधिकतर खरसान्से जाती हैं । पार्वतीय लोगोंके लिये अर्था-गमका यह अच्छा ढंग रहा है । पाकिस्तानसे जानेवाली रेल द्वारा तर-कारियां दूसरे दिन कलकत्ता पहुँच जाती थीं । नये रास्तेसे ले जानेमें अधिक समय लगेगा, जो हरी भाजियोंके लिये अच्छा नहीं है । खरसान्के पास-पड़ोसमें साग-भाजीका काम कुछ युरोपीय और दूसरे भारतीय भी करते हैं ।

खरसान्‌का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुन्दर है। यहांसे उत्तर केवल हिमालयकी हरी अरण्यानी और आगे हिमाच्छादित शिखरमाला ही नहीं दिखलाई पड़ती, बल्कि दक्षिण ओर देखनेपर तराईकी शस्यश्यामला भूमि बिलकुल पैरोंके नीचे मालूम होती है। हिम-शिखरोंमें खङ्‌छेन्-जुंगा (कंचन-जंघा) भी एक है, जो हिमालयके सबसे ऊँचे शिखरोंमे दूसरा नंबर रखता है। यहांके ईगल-क्रेग और डौहिल चोटियोंसे चारों ओरका दृश्य बड़ा मनोरम दिखाई पड़ता है। उत्तर ओर शुकियासे नागरी-डांड़ा और महलदीरमका पहाड़ है। इन दोनोंके बीच ४००० फुट नीचे खड्डमें बालासान नदी बहती है। खरसान् महलदीरम पहाड़ीपर अवस्थित है। दक्षिणमें ईगल-क्रेगके चरणमें पंखाबारी होती सिलिगोड़ीकी सड़क उतरती दिखाई पड़ती है। पंखाबारी यहांसे ७ मील नीचे है। रेलकी सड़क छोड़कर इस सड़कसे जानेपर सिलिगोड़ी २१ मील है। खरसान् शहरके उत्तर डौहिल पहाड़ पासमें लगा हुआ है। इसी सुन्दर स्थानपर सरकारी खर्चसे यूरोपियन और एंग्लो-इंडियन लोगोंके लिये विक्टोरिया स्कूल और डौहिल बालिका विद्यालयकी सुन्दर इमारतें और क्रीड़ा-क्षेत्र तैयार किये गये हैं।

खरसान्‌से दोर्जेलिङकी ओर जानेपर पहिला स्टेशन है टुंग (५६५६ फुट) दूसरा सुनादा (६५५२ फुट) और फिर घूम (७८३६ फुट) होते दोर्जेलिङ पहुँचा जा सकता है। सुनादासे दो मील नीचे होपटाउनमें एक अंग्रेजी उपनिवेश बनानेकी तैयारी की गयी थी, किंतु उसमें सफलता नहीं मिली। यहां रेलवे लाइनके नीचे दोर्जेलिङतक गोभी, मटर आदिकी खेती की जाती है।

२—शिक्षण-संस्थाएं

विक्टोरिया स्कूल	(सन् १८७९ ई०)
डौहिल बालिका स्कूल	(सन् १८९८ ई०)
सेंट हेलन कालेज	(सन् १८९० ई०)
गोथेल मेमोरियल स्कूल	(सन् १९०७ ई०)
सेंट अल्फान्सस स्कूल	

वन-विद्यालय और खनिज स्कूल,

सेंट मेरी ट्रेनिंग कालेज (ईसाई साधुओंके प्रशिक्षणके लिये),

जेम्स लाज (मानसिक तौरसे अक्षम बच्चोंके लिये)

खरसान्‌में साधारण अस्पतालके अतिरिक्त एक टी० बी० अस्पताल भी है। यहां रेशमके कीड़े पालनेका एक स्टेशन बंगाल सरकारने खोल रखा है।

३—पनबिजली स्टेशन

दार्जिलिङ जिला पनबिजलीके स्रोतोंसे भरा हुआ है। भारतका सबसे पुराना पनबिजली स्टेशन दार्जिलिङ नगरके लिये सिद्रापोङ में १० नवम्बर सन् १८९७ ई० को स्थापित हुआ था, तो भी कामको और आगे नहीं बढ़ाया गया। गोयनका कंपनीने साहस करके सन् १९३२ ई० में एक पनबिजली स्टेशन खरसान्‌से तीन मीलपर स्थापित किया। वहां रिन्छेन्ताङ नदीका पानी एक मीलतक ले जाकर एक जलधानीमें डाला जाता है, जहांसे १२ इंच मोटे पाइपसे सीधे ११०० फुट नीचे गिराके बिजली तैयारकी जाती है। गोयनका कंपनीने अपने साहस-द्वारा इस आक्षेपको बहुत पहिले धो दिया, कि मारवाड़ी पूंजीपति उत्पादक-उद्योगमें पूंजी लगानेसे भागते हैं।

खरसान्‌से नीचे ८ मीलपर तिनधरिया (३५१६ फुट) रेलवे स्टेशन, दार्जिलिङ हिमालय रेलवेकी वर्कशापका केंद्र है। स्टेशनसे एक मील ऊपरकी ओर जानेपर पगलाझोरा (पागलनाला) मिलता है। यह बरसातमें अपनी ध्वंसलीलामें सचमुच ही पागल बन जाता था। इसकी ध्वंसक शक्तिको कम करनेके लिये उससे बहनेवाले जलको दो-तीन धारोंमें बांट दिया गया है।

४—विश्रामालय

दो धर्मशालाओंके अतिरिक्त सैलानियोंके ठहरनेके लिये यहां कसिनो, प्लेन्सव्यू और स्नोव्यु जैसे कई होटल तथा बोर्डिंगहाउस हैं।

११

सिक्किम

१—भूमि

भारत संघका यह एक छोटा-सा भूभाग मध्य-तिब्बतकी सीमापर एक बड़े महत्त्वपूर्ण स्थानमें अवस्थित है । ल्हासा जानेवाला प्रधान मार्ग जिस जाल्पेप-लासे जाता है, वह सिक्किमके भीतर है । जालेप-लाके पासकी दूसरी जोत नातूला भी सिक्किमके भीतर ही है, जहांसे गङतोक होकर आने-जाने वाले तिब्बती कारवां आते हैं । इनके अतिरिक्त मध्य-तिब्बतके लिये एक तीसरी चलती जोत कोंगराला है, जो लाछेन होकर तिब्बत जानेमें मिलती है । कोंगराला तिब्बत और सिक्किमकी सीमापर है । आगे लाल तिब्बतके साथ संबंध जोड़नेमें इन जोतोंका सैनिक और व्यापारिक महत्त्व और भी बढ़ेगा ।

सिक्किमकी लंबाई उत्तर दक्खिनमें ७० मील, चौड़ाई ४० मील एवं क्षेत्रफल २७४५ वर्गमील है । इसमें ९९ ग्राम और १२२००० लोग बसते हैं । सिक्किमको नेपाली लोग सुक्खिम कहते हैं और रोङ (लेप्चा) भाषामें भी यही नाम प्रचलित है, किंतु तिब्बती लोग इसे डङ-जोङ कहते हैं । यह सारा प्रदेश तिस्ता नदीके पनढरमें हिमाच्छादित उत्तुंग शिखरोंके भीतर अवस्थित है । इसके उत्तर और दक्खिनमें कितनी ही बड़ी-बड़ी सनातन हिमानियां (ग्लेशियर) हैं, जिनके पास ही हिमालयके कंचनजंगा (२८१४६) तथा काङ (१८२८० फुट), नरतोङ (२२००० फुट), काबरू (थायाबाता २४००२ फुट), सिमको (२२३६९ फुट), शिविर (२४०८९ फुट), लोङ्पो (२२८००फुट), जोङखङ (२४३४४ फुट), दोदङ निमा(२२७०० फुट), कोरेयशो (२११०० फुट), चोमो-चुन्मो (२२४२०

फुट), पावोहुंरी (२३१८० फुट), चुगालुङ (१८०२० फुट) जैसे उच्च शिखर हैं।

सिक्किमसे हिमगिरिमालाको पार करनेकी कुछ जोतें हैं—

भूटानके लिये—	
पङ्गोला	१०१२६ फुट
[illegible]कूला	..
नि[illegible]ला	..
तिब्बतके लिये—	..
जालेप-ला	..
नातूला	..
याकला	..
कांला	१८५०० फुट
टङ्कार ला	..
ठङ्का ला	..
पटरा ला	..
गोरा ला	..
नेकोङ ला	..
डोङ्कया ला	१९,१३१ फुट
डान्ती ला	१७३९३ फुट
कोङ्गरा ला	..
नाकूला	..
नेपालके लिये—	..
छोते नीमाला	१८५०० फुट
जोङ्सोङ ला	..

सिक्किमकी प्राकृतिक बनावट बहुत सरल है। इसके पहाड़ोंकी नीचेकी खाड़ियोंमें जितनी नदियां बहती हैं, वे सभी तिस्ताकी शाखाएं हैं, किंतु प्राकृतिक दृश्य यहां बहुत प्रकारके पाये जाते हैं। जहां सिक्किमके निचले

दोर्जेलिङ परिचय–
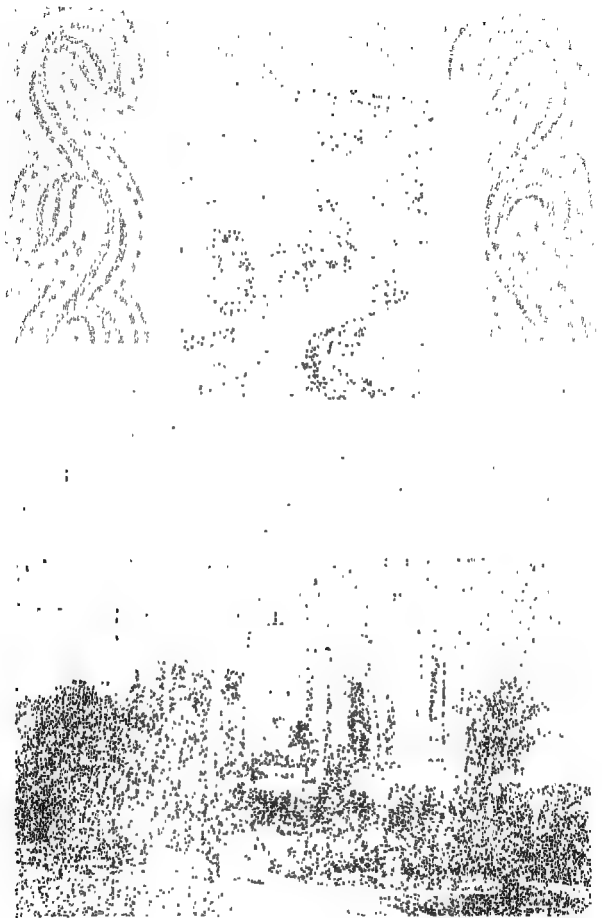
(ऊपर) दोर्जेलिङ बतासे रेलवे लाइन, (नीचे) दोर्जेलिङ महाकाल

दोर्जेलिङ परिचय–
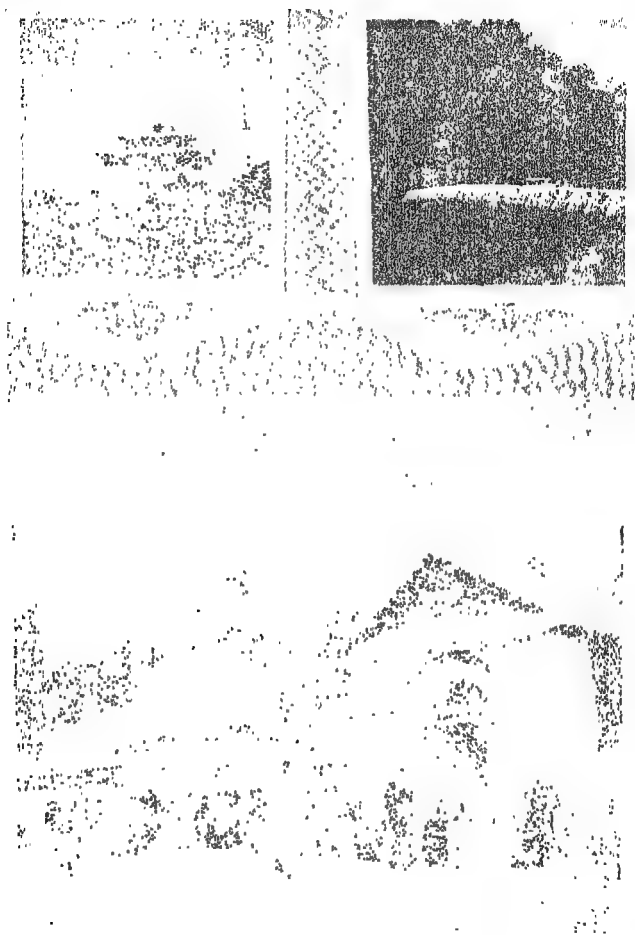
(ऊपर बायें) सिक्किम-गनोक गुंबा १९३८, (ऊपर दायें) कालिम्पोङ-तिस्ता पुल १९३८, (नीचे) दोर्जेलिङ हिन्दू मन्दिर और हाट

भागमें बहती तिस्ताका तट गरम और विशाल वृक्षों तथा लताओंसे ढंका है, वहां ऊपरी भागोंमें सनातन हिम पड़ा रहता है। अपने रूप-वैचित्र्यमें यह हिमालयका अद्वितीय प्रदेश है। तापमान भी निम्ना (रोङ्पू १२००फुट) में गरम और ऊपर बहुत ठंडा रहता है।

२--इतिहास

सिक्किमका इतिहास यद्यपि १८वीं सदीसे पहिले अन्धकारावृत है। कुछ लोग लिखते हैं, कि यहां बौद्धधर्म भी इसी शताब्दीके आस-पास आया, किंतु यह बात ठीक नहीं जंचती। यद्यपि प्राचीन समयमें तिब्बतसे भारतका सम्बन्ध नेपाल-उपत्यका होकरके था, इसलिये सिक्किमके आज-कलके रास्ते भारतीय और तिब्बती धर्म-प्रचारकोंके उपयोगमें नहीं आते थे, किंतु पद्मायङ्चे (पमाओंची) बौद्ध विहार सन् १४५० ई० में स्थापित हुआ था और दुब्दी विहार तो उससे भी पहिले स्थापित हो गया था। हो सकता है, १७वीं, १८वीं सदीमें करग्युत्-पा (श्वेत-तंत्रवादी) संप्रदायका प्राबल्य बढ़नेसे अधिकांश परम्पराएं वहींतक जाती हैं, जिसके कारण यह धारणा बनी कि बौद्धधर्म यहां १७वीं सदीमें आया और उससे पहिले लोग बोन-धर्मी भूत-प्रेत वादी थे। पासकी टोमो (चुम्बी) उपत्यका में अभी भी कुछ गांव बोन-धर्मियोंके हैं, इसलिये यदि यहां भी कुछ बोन-धर्मी रह गये हों, तो कोई आश्चर्य नहीं, किंतु इससे यह समझना गलत होगा कि १७वीं सदीसे पहिले यहां बौद्धधर्म नहीं था। ङुकपा (करग्युत्पा) संप्रदाय १७वीं सदीमें तिब्बतसे भागे कुछ लामाओं द्वारा यहां बढ़ने लगा। उनका प्रथम केंद्र पद्मायङ्चेके पास योक्सम्में स्थापित हुआ। सिक्किमका शासक-वंश उसी समयके आस-पास मध्य तिब्बतके सामंती परिवारोंसे संबद्ध आ रहा है, जिसके कारण ल्हासाके लामाका प्रभाव भी यहांपर कम नहीं रहा। १८वीं सदीके अंतमें सिक्किम राज्यमें कलि-म्पोङ लिए हुए दोर्जेलिङ जिलेका पहाड़ी भाग ही नहीं, बल्कि तराई भी शामिल थी। सन् १७०६ ई० में भूटानने तिस्ताके पूरबका भू-भाग दार्लिङ

(वर्तमान कलिम्पोङ सब-डिवीजन) ले लिया। १८वीं सदीके अन्तमें गोरखा राज्य पूरबकी तरफ बढ़ता तिस्तातक आके रुक गया। उस समय सिक्किमकी अवस्था अच्छी नहीं थी, जिससे गोरखोंके साथ संघर्षके बाद ईस्ट इंडिया कम्पनीको अपना पैर इधर बढ़ानेका मौका मिला। यह हम बतला चुके हैं, कि नेपाली युद्धके बाद सुगौलीकी संधि (सन् १८१६ ई०) के अनुसार नेपाल सिक्किमकी ४००० वर्गमील भूमि छोड़नेको मजबूर हुआ, जिसे बेकार समझकर तितलियाकी संधि (१० फरवरी सन् १८३७ ई०) के अनुसार अंग्रेजोंने सिक्किम राजाको लौटा दिया। आगे किस तरह दार्जिलिङके पासका थोड़ा-सा भू-भाग सन् १८३५ ई० में अंग्रेजोंने लिया और पीछे झगड़ा बढ़ाते हुए सन् १८६० ई० में कालिम्पोङ-सब-डिवीजन छोड़ वर्तमान दार्जिलिङ जिलेकी सीमा पूरी की, यह भी हम बतला चुके हैं। ११ नवम्बर सन् १८६५ ई० को सिक्किमकी पुरानी भूमि कलिम्पोङ सब-डिवीजनको भी अंग्रेजोंने भूटानसे छीन लिया। सन् १८६० ई० से सिक्किम प्रदेशकी जो सीमा थी, वही आज भी है। आरंभमें तिब्बत-ने सिक्किमके साथ चले आये अधीनताके संबंधको लेकर कुछ विरोध किया, किन्तु अंग्रेज राजाकी पीठपर थे, इसलिये उनकी चलने नहीं पायी। एकबार तिब्बती लोग १२ मील सिक्किमके भीतर आकर किला बनाने लगे, जिसके कारण अंग्रेजोंने सेना भेजी और तिब्बती सेना जालेप-ला पार भाग गयी। अन्तमें सन् १८९० ई० में सिक्किम और तिब्बतकी सीमा निश्चित की गयी और सिक्किम अंग्रेजी राज्यके अधीन बन गया। पहिले सिक्किम रियासत बंगाल सरकारके अधीन समझी जाती थी, किंतु सन् १९०४ ई० में तिब्बतके विरुद्ध सैनिक अभियान भेजनेके समय रियासतका संबंध सीधे भारत-सरकारसे कर दिया गया। स्वतंत्रताके बाद महाराजाने राज्यको भारत-संघमें सम्मिलित करना स्वीकार किया, किंतु न जाने किस बुद्धिमानी-से उसे भारत-संघकी इकाइयोंमें शामिल नहीं किया गया। राज्यमें दूसरी भारतीय रियासतोंकी भांति प्रजापर निरंकुश शासन चला आ रहा था, अंग्रेज उतनी ही हदतक दखल देना चाहते थे, जितना कि उनका स्वार्थ

मजबूर करता था। किंतु दूसरी रियासतोंकी राजनीतिक जागृतिका प्रभाव यहां भी पड़ना आवश्यक था, विशेषकर १५ अगस्त सन् १९४७ ई० के बाद, जब कि अंग्रेज शासन भारतसे खतम हो गया। लेकिन, यहांके सामंती शासक प्रजाके हाथमें अधिकार सौंपना पसंद नहीं करते थे। कुछ संघर्ष भी चला, थोड़े दिनोंके लिये प्रजाके प्रतिनिधियोंकी सरकार भी स्थापित हुई; किंतु उसकी राजा या युवराजसे बनी नहीं, इसपर राजाके प्रस्तावानुसार शासन करनेके लिये भारत सरकारने अपना एक अफसर नियुक्त किया। पहिले अंग्रेजोंका पोलिटिकल एजेंट सिक्किमके शासनका अन्तिम सूत्रधार था। आज भारत सरकारने पोलिटिकल एजेंटको भी अपने स्थानपर कायम रखा है और एक दूसरे आई०सी०एम० अफसरको भी दीवान बनाकर भेज दिया है। पोलिटिकल अफसरका काम अब तिब्बतके साथ भारतके संबंधको सुचारु रूपसे चलाना रह गया है। यहांकी सवा लाख प्रजामें करीब तीन-चौथाई नेपाली हैं। प्रजा आशा रखती थी, कि सिक्किममें भी जन-शासनका सूत्रपात होगा, लेकिन उसे निराश होना पड़ा। दोर्जेलिङ जिलेमें कांग्रेसी सरकारने पर्वतवासियोंके भावोंका खयाल नहीं किया, इसके फलस्वरूप एसेम्बलीके चुनावमें कांग्रेसी उम्मीदवारको हार जाना पड़ा। इससे यह भी मालूम होता है, कि सिक्किममें नोकरशाही शासन स्थापित करना बुद्धिमानी नहीं है। भूटानने भारत-संघके भीतर रहना स्वीकार कर लिया है, किंतु वहांके शासक भी अपनी निरंकुशताको ढीला करनेके लिये तैयार नहीं हैं। वहांकी भी बहुसंख्यक प्रजा नेपाली है। नेपाली लोग सिक्किमी और भूटानी जनताकी उपेक्षा करना नहीं चाहते। वे चाहते हैं कि दोर्जेलिङ जिला, सिक्किम राज्य और भूटानमें जनतांत्रिक शासन स्थापित हो। यही नहीं वे तो इसके लिये भी उत्सुक हैं, कि तीनों राजनीतिक इकाइयोंको तोड़कर एक पूर्व-हिमाचल-प्रदेश बना दिया जाये। किंतु, अभी केंद्र इसके लिये तैयार नहीं मालूम होता। कहा जाता है, कि यह छोटा प्रदेश शासन-भारको उठा नहीं सकता। देशका खर्चीला शासन-यंत्र—जो अंग्रेजी शासनकी बुरी वरासत है—हमारे

देशकी एक बड़ी समस्या है, जिसे हल करना जरूरी है। कोई जरूरत नहीं कि हम नवाबी ठाटवाले गवर्नरों और लेफ्टिनेंट-गवर्नरोंको अपने राज्यपालों तथा उपराज्यपालोंके रूपमें कायम रखें। यदि देशने आई०सी०एस० नौकर-शाहों तथा अंग्रेजोंके साथ होड़ लगाना चाहा, तो हम लुटिया डुबाये बिना नहीं रहेंगे। आखिर अजमेर, कुर्ग, हिमाचल-प्रदेश जैसे उपराज्यपालोंके प्रदेश जो बने हैं, उनकी जनसंख्या तो छ लाखसे ऊपर जनसंख्या रखनेवाले इस प्रदेशसे कम ही है। हिमालयके इस अंचलकी इस गुत्थीको सुलझाना आवश्यक है। उत्तरमें लाल जगत्‌की सीमा आ जानेसे तो वह और भी अनिवार्य हो गया है। क्या यहांकी जनताकी आकांक्षाओंको ठुकराना हमारी राजनीतिक सूझ है? क्या नेपालकी भांति सिक्किम और भूटानको संघ सीमाके बाहर रखना उसे विवाद-ग्रस्त क्षेत्र नहीं बनाना है?

३—जाति और धर्म

सिक्किमके पुराने निवासी रोङ (लेप्चा) हैं, किंतु पिछले सौ सालोंमें दोर्जेलिङ जिलेकी भांति नेपाली जांगर चलाने वालोंने आकर इस निर्जन प्रदेशकी कायापलट कर दी है। यहांकी सवा लाखकी जनसंख्यामें अब रोङ सप्तमांशसे अधिक नहीं हैं। लाछेन-उपत्यकामें लोपा जातिके तिब्बती भाषा-भाषी रहते हैं। सिक्किमका राजधर्म बौद्ध-धर्म है, किंतु उसके मानने-वाले तिब्बती या उसी वंशकी बोलियां बोलनेवाले लोगोंतक ही सीमित हैं।

४—विहार (गोम्पा या गोम्बा)

यहांके मुख्य-मुख्य बौद्ध विहार (गोम्पा) निम्न हैं—

रंगितकी ऊपरी दो शाखाओंमें—

रिन्छेनगाङ, ल्हुन्चे, टशीदिङ, पद्मायङ्चे, (पमीओंची), सङ्ग-छोलिङ तिङलिङ, दुब्दी, हुङरी, रालङ।

तिस्ताके आस-पास—

डोलिङ, युङनङ, सिङताम्, रुम्टेक्, पाछुक, फोडङ, लबरङ, तुमलुङ, हेनसाङ, ग्याथङ, रिङबोम्, लिङताम्, चुङथाङ।

ऊपरी तिस्ताकी शाखाओंपर—

लाछेन, लाछुङ ।

इनमें डाकबंगलोंवाली सड़कोंके पास पड़नेवाली गोम्पाएं है-पद्मायङ्चे, रुमटेक (दोर्जेलिङ-गङतोक मार्गपर सोङ स्थानसे छ मील नीचे), कर्तो गोम्पा (पाक्योङके एक मील नीचे), हुङचे (चाकुङके समीप), चुङथाङ (तिस्तापर लाछेनके आगे), सङा-छोलिङ (देन्तमसे पद्मायङचीके रास्तेपर, पद्मायङचेसे तीन मील)।

बंगलेवाली सड़कोंसे दूरके रास्तोंपर निम्न गोम्पाएं हैं-करमुवारी (पद्मायङचेसे ९ मील), टशीदिङ (दोर्जेलिङ-गङतोक रास्तेपर क्योजिङसे ७ मील), तुङलोङ (गङतोकसे १२ मील उत्तर), दोलिङ (क्योजिङसे डेढ़ मील पूरब), तालुङ (सिगिकसे तीन दिनका रास्ता)।

५—गङतोक्

सिक्किमकी राजधानी ५८०० फुट ऊँचाईपर बसी है। यह पुरानी बस्ती नहीं है। पहिले राजधानी तुङलोङमें थी, जो गङतोकसे १३ मील उत्तर है और वहां अब भी एक अच्छी गोम्पा है। अंग्रेज पोलिटिकल अफसरका निवासस्थान बन जानेपर गङतोक सिक्किमकी द्वितीय राजधानी बन गया और अंतमें राजधानी यहीं हट आयी, और यहां राजमहल, टाउनहाल, अस्पताल, रेजीडेन्सी (पोलिटिकल अफसरके निवास), थाना, हाई स्कूल तथा कितने ही और अच्छे-अच्छे मकान बन गये। नातूला पार कर यहांसे तिब्बतमें पहुँचना नजदीक है। बाजार भी जमकर अब अच्छा खासा कस्बा बन गया है। गङतोकसे कलिम्पोङको बराबर डर बना रहता है। राजभवन नये ढंगकी इमारत है, जिसके पास ही नई गोम्पा है, जिसकी तीन तल्लेकी इमारत बनानेमें तिब्बतके कितने ही निपुण शिल्पियों तथा कलाकारोंने अपना कौशल दिखलाया है। इसके बननेमें तीन साल लगे। राजप्रासादसे कुछ ही मिनटों चलनेके बाद डाकबंगला मिलता है। यह डांड़ेपर ऐसी जगह बना है, जहां तिस्ता-उपत्यका होकर सिलिगोड़ी और

कलिम्पोङसे आनेवाली मोटर सडक और दिक्चूसे आनेवाली सड़क मिलती है। यहांसे उत्तर जानेवाली सड़कपर डाक-घर और रेजीडेन्सीके मकान हैं। रेजीडेन्सी ऊपरी भागमें बड़ी सुन्दर जगहपर अवस्थित है। इसका बाग भी बहुत सजा हुआ है। मोटरवाली सड़क उत्तर-पूरबमें नातूलाकी तरफ कनूगोनङतक जाती है। एक सड़क राजप्रासाद और गोम्पा दोनोंकी परिक्रमा करके डाकबंगलेपर आ मिलती है। यह सड़क पहाड़की रीढ़पर चलती है और ऊपरसे दोनों तरफका दृश्य भव्य लगता है। गोम्पाके आगे राजकीय कालीन कारखाना है, जहां वनस्पति-के रंगका इस्तेमाल किया जाता है। यहांसे नीचे जानेपर बाजार मिलता है, जहां तिब्बत जानेवाली बहुत तरहकी चीजे मिलती हैं, सिक्किम अपनी नारंगियोंके लिये सदासे मशहूर रहा है, अब वहां सेव और अंगूरके बगीचे भी लगाये जाने लगे हैं।

छोटी-बड़ी यात्राओंके वर्णनमें हम सड़कों आदिके बारेमें भी लिखेंगे। यहां हम यह लिख देना चाहते हैं, कि गङ्तोक आनेके लिये सिलिगोड़ीसे सीधे मोटर बस और टैक्सी मिलती है। कलिम्पोङसे भी टैक्सी आती रहती है और दोर्जेलिङ से भी।

सिक्किमके दर्शनीय स्थानोंके बारेमें हम यात्राओंके संबंधमें लिखते समय लिखेंगे। एवरेस्ट और कंचनजंगाके अभियानोंका रास्ता सिक्किमके भीतरसे जाता है। सन् १८४६-४९ ई० के सर्वेके आंकड़ोंकी गणना करते वक्त सन् १८५२ ई० में राधानाथ सिकदरने एक चोटीको २९००० फुट ऊँची गिन-कर आनन्द-गद्गद् हो अपने साहबको सूचना दी, कि यह शिखर दुनियाका सबसे ऊँचा शिखर है। सिकदरको अपनी गणितकी अप्रतिम प्रतिभाके लिये कुछ पद, वेतन-वृद्धितक रह जाना पड़ा, किन्तु शिखर प्रसिद्ध हुआ सर्वे डिपार्टमेंटके प्रमुख एवरेस्ट साहबके नामसे। इस सर्वोच्च शिखरके ऊपर चढ़नेके लिये भारत अभीतक कुलियों और दुभाषियोंको ही प्रस्तुत करता रहा, जब कि पश्चिमी जातियोंने उसके लिये कई अभियान भेजे। एवरेस्टके पास जिसे भोटवासी चामोलोङमा कहते हैं—तिब्बतकी सीमाके भीतरसे

पहुँचा जा सकता है। इसके लिये तिब्बती सरकारको राजी करना आसान नहीं था, तो भी एकसे अधिक बार उसपर चढ़नेकी कोशिश की गयी। सन् १९२१ ई० में पहिला अभियान २७३०० फुटतक पहुँचा। सन् १९२४ ई० के अभियानमें चढ़ाके २८१०० फुटतक पहुँच सके। सन् १९३३ ई० का अभियान इसीके करीबकी ऊँचाईतक पहुँचा। एवरेस्ट शिखरके ऊपर पैदल पहुँचना तो अब भी दूरकी बात है, किंतु सन् १९३३ ई० में मेजर ब्लेकर विमान-द्वारा शिखरके ऊपर उड़े थे।

६—सैलानियोंकी भूमि

सिक्किम अभियानिकोंके लिये ही आकर्षण नहीं रखता, बल्कि वनस्पति-शास्त्र, प्राणि-शास्त्र और शिकारियोंके लिये भी यह बहुत आकर्षक है। एक लेखकने लिखा है-"उष्ण कटिबंधसे लेकर ध्रुव-कक्ष तकके हर तरहके वनस्पति सिक्किमके हिमालयमें प्राप्य है। दुनियामें कोई इसके बराबरकी लंबाई-चौड़ाईका देश नहीं है, जो प्रकृति-शास्त्रज्ञोंके सामने इतनी विचारपूर्ण समस्याएं रखे। सिक्किममें ३० प्रकारका बुरांश (गुरांश, रोडोडेन्ड्रोन) मिलता है, जो इंचसे लेकर ४० फुटतक ऊँचा होता है। यहां पांच-छ सौ जातियोंकी चिड़ियां मिलती हैं, जिनमें सबसे बड़ी उच्च शिखरोंमें रहने वाली ४ फुट लम्बी और साढ़े ९ फुट फैले पंखोंका गरुड़ (Lammer-geyer) है, तितलियां यहां ६०० जातिकी और घोंघे २०० जातिके पाये जाते हैं। खनिज पदार्थोंकी सम्भावना भी यहां पर्याप्त है। तांबा सिक्किममें कभी निकाला जाता था, किंतु रास्ते और कड़े विदेशी तांबेके कारण वह उद्योग बंद हो गया। गेङ्तोके नजदीक होटङमें तांबेकी खानें हैं। पाक्योङ और रोङ्ग्याङके बीचमें एवं तुमलोङके नीचे भी तांबा मिलता है। यहाके तांबेमें कुछ मात्रामें सोना भी होता है। चुङथाङ और लाछेनके बीचमें भी सोना मिलनेकी खबर है। और भी कितने ही खनिज पदार्थ यहां भू-तत्त्वगवेषकोंकी प्रतीक्षा कर रहे है।

१२

हिमालय यात्राकी तैयारी

१—माहात्म्य

किसी वर्द्धमान देशकी प्रगति कृषि, उद्योग-धन्धे, साहित्य-निर्माण, राजनीति और सैनिक बल आदिके एक-एक क्षेत्रमें ही सीमित नहीं देखी जाती, बल्कि जीवनके सभी पहलुओंमें बढ़ते हुए राष्ट्रके मनसूबोंकी छाप दिखलाई पड़ती है। सैर-सपाटे, साहस-यात्राएं भी उसी जीवनके अंग हैं। पुराने समयमें जब भारत एक सबल और वर्धिष्णु शक्ति था, उस समय उसके साहसी पुत्र और पुत्रियां भी दुनियाके कोने-कोनेमें पहुंचते थे। आज फिर इस क्षेत्रमें हमें अपनी हिम्मतको दिखलाना है। देश-देशान्तरोंकी साहस-यात्राएं प्रत्येक व्यक्तिके करनेकी बात नहीं है। हिमालयमें ऐसे स्थान हैं, जहां कम समय तथा साधनसे और अपेक्षाकृत कम साहसवाले व्यक्ति भी अपनी उमंगोंको पूरा कर सकते हैं। दार्जेलिङ, कलिम्पोङ, गङ्तोक, खरसान् अथवा अलमोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, मसूरी, चकरौता, शिमला, सोलन हिमालयके ऐसे आकर्षक स्थान हैं, जहां आदमी बड़ी आसानीसे रेल और मोटर द्वारा पहुंच सकता है। जो लोग कुछ और कष्टके लिये तैयार हैं, और जिन्हें हिमालयके अद्वितीय प्राकृतिक दृश्यों-को देखनेका शौक है, वह कहीं घोड़ेसे और कहीं पैदल, कितने ही और भी मनोरम स्थानोंकी यात्रा कर सकते हैं। ऐसी यात्राओंके लिये रास्तोंके बारेमें बतलानेके पहिले आवश्यक है, कि हम यात्रा की तैयारीके संबंधमें कुछ सूचनाएं यहां पाठकोंके सामने रख दें।

२—यात्रा-व्यय

यात्रीके सामने पैसेका प्रश्न पहिले आता है। उसको मालूम होना चाहियें, कि यात्राके लिये कितने रुपयेके साथ वह निकल सकता है। सप्ताह

की भी यात्रा हो सकती है। कितने ऐसे यात्री हो सकते है, जो तीन-चारकी टोलीमें आवश्यक चीजोंको अपनी पीठपर लादकर पैदल हिमालयके कितने ही स्थानोंमें चक्कर लगा सकते है। यदि पथ-प्रदर्शिका (गाइड-बुक) और मानचित्र हाथमें है, तो उनका खर्च उतना ही होगा, जितना खानेकी चीजोका, सिर्फ आवश्यक वस्त्रों और बरतनोंपर कुछ और लगेगा। अपनी पीठपर सामान लेकर चलनेवाले यात्रीके लिये यह सबसे आवश्यक है, कि उसके पास आवश्यक तथा कमसे कम सामान हो। ऐसा व्यक्ति सौ रुपये मासिकमें अपनी यात्रा कर सकता है। यदि दो-तीन आदमी मिलकर कम सामान किंतु कुछ अधिक आरामके साथ यात्रा करना चाहते हैं, तो वे सामानके लिये एक सम्मिलित भारवाहक रख सकते है। आज-कल मंहगाईके दिनोंमें दो रुपया प्रतिदिनसे कममें भारवाहक मिलना मुश्किल है और मिले भी तो उसे कम देना नही चाहिये, क्योंकि आज-कल एक स्वस्थ-प्रकृति आदमीके खानेपर एक रुपये रोजमें कम कैसे खर्च आ सकता है ? भारवाहक बोझा ही नही ढोयेगा, बल्कि वह साधारण खाना भी बना देगा। उसे या अलग लिये रसोइयेको आपके भोजनमेंसे कुछ मिलना चाहिये। बेहतर यही होगा, कि भारवाहक या नोकरका भोजन अपने ऊपर ले लिया जाय और ऊपरसे एक डेढ रुपया दैनिक मजूरी बांध दी जाय। साधारणतया भारवाहकपर दैनिक दो से तीन रुपयेतक खर्च होंगे, जिसमें एक रुपया भोजनका होगा।

जो यात्री अधिक पैसा खर्च कर सकते है और अनावश्यक कष्ट उठानेके लिये तैयार नहीं हैं, उनके खर्चके बारेमें हम पुरानी यात्राओं या पथ-प्रदर्शिकाओंमें दिये आंकड़ोंसे आजके खर्चका निश्चय नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ मई सन् १९२१ ई० में चार अंग्रेज यात्रियोंके दलने अपनी नौ दिनकी यात्रापर ६०० रु० खर्च किये, अर्थात् प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन १७ रु० के करीब पड़ा, जिसमें बंगला और मदिराका खर्च सम्मिलित नहीं था। उसे भी मिला देनेपर प्रतिव्यक्ति २५ रु० प्रतिदिनके करीब पड़ा, अर्थात् महीनेका ७५० रु०। आजकल भी २५ रु० रोजमें यात्रा आरामसे की

जा सकती है, लेकिन जिस यात्राका यहां वर्णन है, वह कई नौकरों-चाकरोंके साथ अपना तम्बू और सामान लेकर की गयी थी, खाने-पीनेपर भी बहुत अच्छी तरह खर्च किया गया था। आज-कल तो वैसी यात्रा भी रुपये रोजसे कममें नहीं हो सकती। एक पथ-प्रदर्शिकाने सन् १९३१-१९३२ ई० में एक आदमीका २० रुपया प्रतिदिन खर्च बतलाया है। इन यात्राओंमें नौकरोंका क्रम इस प्रकार था—

३—सहायक, नौकर

(१) **सरदार**—यदि आपको ३, ४ भारवाहक, रसोइया और दूसरे नौकर भी रखने हैं, तो एक सरदारकी आवश्यकता पड़ेगी, जिसमें वह सभी चीजोंकी देख-भाल करे। यदि आप खुद देख-भाल करना चाहते हैं, तो सरदारकी आवश्यकता नहीं। सरदारपर भोजनके अतिरिक्त २,३ रुपये प्रतिदिनसे कम खर्च नहीं आयेगा। ऐसे सरदार दोर्जेलिङमें मिल सकते हैं, जिन्होंने ऐसी यात्राओंमें यात्रियोंका साथ दिया है और जिनके पास उनके पूर्व-यात्रियोंके प्रशंसा-पत्र भी होते हैं। ये आमतौरसे हिन्दी समझ लेते हैं और कितने ही टूटी-फूटी अंग्रेजी भी बोल लेते हैं।

(२) **रसोइया आदि**—अच्छा रसोइया खानेके अतिरिक्त डेढ़-दो रुपये रोजमें मिल जायेगा। बहुतसे स्थानोंके बंगलोंमें भंगी नहीं होते और जबतक यात्रीके पास अपना भंगी न हो, उसे इन बंगलोंमें ठहरनेका अनुज्ञा-पत्र नहीं मिल सकता। भंगीके लिये भी खानेके अतिरिक्त डेढ़-दो रुपया रोज देनेकी आवश्यकता पड़ेगी।

(३) **भारवाहक**—आरामकी यात्राओंमें एक व्यक्तिपर ५ से १० भारवाहकोंकी आवश्यकता होती थी, यदि वह १० दिनसे अधिककी यात्रा नहीं होती। नौकरोंके लिये भी आहारकी चीजें ले जानी पड़ती हैं, इसलिये अधिक नौकर होनेपर भारवाहकोंकी संख्या बढ़ानी पड़ेगी। चार यात्रियोंके लिये १५ से १८ भारवाहक चाहिये। घोड़ा ले जानेपर कहीं-कहीं उसके लिये दाना-चारा ढोनेके लिये भी भारवाहककी आवश्यकता होती

है। यह भी याद रखना चाहिये कि पहाड़में ३० सेरका बोझा एक मजबूत आदमीका पूरा बोझ समझा जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ सेरका अपना ओढ़ना-बिछौना आदि सामान भारवाहक ढोता है। बक्सों या होल्डालमें सामान डालते समय इस बातका ध्यान रखना चाहिये, कि बोझ २५ से ३० सेरके भीतर हो। आज-कल एक भारवाहकपर ढाई तीन रुपयेसे कम खर्च नहीं हो सकता। यदि यात्रा बंगलों और चलते राजपथोंसे हो रही हो, तो नौकरोंको ८ आना या १२ आना और देना पड़ेगा। ८,९ हजार फुटके ऊपर-की ऊँचाईपर ले जानेके समय यदि यात्रा अधिक समयकी हो, तो नौकरोंको ऊनी कम्बल या कोट भी देना चाहिये। वर्षासे अपने सामानको बचानेके लिये सामान बांधनेकी बरसाती चादरें और भारवाहकोंके उपयोगके लिये बरसाती कोट साथ होनी चाहिये, नहीं तो आपका बिस्तरा और दूसरे सामान भीग जायेंगे। नौकरोंके लिये भोजन-सामग्री प्रतिदिन निम्न प्रकार आवश्यक होगी—

चावल	१० छंटाक
आटा	४ "
दाल	२ "
घी	॥ "
चाय	१ तोला
मसाला	१ "
नमक	१ "
चीनी	१ "

(४) खच्चर—कलिम्पोङ और गङ्तोकमें सामान ढोनेके लिये खच्चर भी मिल जाते हैं। एक खच्चर दो मन तक बोझा ले जाता है। लेकिन अच्छा होगा यदि बोझ पौने दो मनसे अधिक न हो। एक खच्चर ढाई भारवाहकके बराबर सामान ले जा सकता है। सस्तीके जमानेमें खच्चर-का भाड़ा डेढ़ दो रुपया रोज था। आज-कल ६, ७ रुपयेसे कम नहीं होगा।

४—सवारी

दार्जेलिङ्गमें सवारीके लिये किरायेके घोड़े मिल जाते हैं, कलिम्पोङ्गमें भी वह प्रायः मिल जाते हं। लड़ाईसे पहिले उनका किराया ३, ४ रुपया प्रतिदिन था, जिसमें काठी (जीन) भी सम्मिलित थी और साईस भी। किन्तु आज-कल खाद्य-सामग्रीका भाव तिगुनासे भी ज्यादा हो गया है, इसलिये घोड़ेका किराया ढाई-तीन गुनेसे कम नहीं हो सकता है। घोड़े-का किराया करनेसे पहिले देख लेना चाहिये, विशेषकर यदि यात्रा कई दिनोंकी हो—कि घोड़ा भड़कनेवाला या अधिक चचल तो नही है, और उसकी पीठ कटी तो नहीं है। अच्छा यही है, कि घोड़ेको चढ़ाईमें ही इस्ते-माल किया जाये। कड़ी उतराईमें तो सवारी बिलकुल नही करनी चाहिये, क्योंकि इससे घोड़ेकी पीठ कट जाती है। सवारको भी उतराईमें घोड़सवारी सुखकर नहीं मालूम होती। हलकी ढालुवां उतराईमें सवारी की जा सकती है। कितने ही घोड़े सड़कके किनारे-किनारे ऐसी जगहसे चलते है, जहां कुछ ही अंगुलोंपर भयानक उतराई या खड्ड रहती है। अनभ्यस्त सवार ऐसे समय घबड़ा जाते हैं। घबड़ानेकी आवश्यकता नहीं है। घोड़े खुद खतरे-को समझते हैं। उनपर विश्वास रखना चाहिये। पुलों, विशेषकर झूलेके पुलोंपर अच्छा है, एक-एक करके पार किया जाय। घोड़ेकी सवारी न कर सकने वाले यात्रियोंके लिये डंडी मिल जाती है, जिसमें ६ आदमी लगते है। उनका वेतन भारवाहकके समान ही होता है। डंडी रुपये डेढ़ रुपये रोजपर किरायेमें मिल जाती है। रिक्साके लिये अधिकांश पैदल सड़कें अयुक्त हैं। बच्चों या हल्के आदमियोंके लिये डोको (कंडी) भी मिल सकती है, जिसे एक भारवाहक अपनी पीठपर ले जाता है।

५—परिधान

यहांकी यात्राओंमें कितनी ही बार ऐसे स्थानोंमें जाना होगा, जहां मई-जूनमें भी उत्तरी भारतकी दिसम्बर-जनवरीकी सी सर्दी रहती है। हां, तिस्ताकी निचली उपत्यका गर्मियोंमें दुःसह होती है। ऊपरके सर्द स्थानोंमें

सप्ताह-दो-सप्ताह विताकर लौटे यात्रियोंके लिये तो वह और भी। जिन्हें कलिम्पोङ, खरसान् या दोर्जेलिङ तक ही रहना है, उनका साधारण गरम कपड़ेसे काम चल जायेगा, किंतु अधिक ऊँचाईपर जानेके लिये अच्छे गरम कपड़ोंका होना आवश्यक है। पोशाकमें निम्न चीजें होनी चाहिये–

(१) पुरुषोंके लिये

बूट २ जोड़ा (एक कांटीदार)		फेल्ट टोप	१
ऊनी मोजा २ जोड़ा (मोटा ऊनी)		मंकी केप	१
सूती मोजा ६ जोड़ा		मफलर	१
रात्रि-पोशाक या लुंगी	२	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा
स्लीपर या चप्पल	१ जोड़ा	बरसाती कोट	१
सूती ब्रीचेज	२	स्वीटर	१
जांघिया	४	ड्रेसिंग गौन या ओवरकोट	१
बनियान	४	रंगीन चश्मा	१
ऊनी सूट	२	तौलिया	३
कमीज या कुरता	४	थर्मस	१
धोती	१ जोड़ा	पानी बोतल	१

(२) महिलाओंके लिये

बूट	२ जोड़ा	स्लीपर या चप्पल	१ जोड़ा
ऊनी मोजा	२	थर्मस	१
सूती मोजा	६	रात्रि-पोशाक	२
साड़ी	४	ब्लाउज	४
पेटीकोट	४	ब्रीचेज या पाजामा (ऊनी)	१
बनियान	४	अंडरवियर	२
ऊनी कोट	२	ड्रेसिंगगौन या ओवरकोट	१
मफलर	१	मंकी केप	१
ऊनी दस्ताना	१ जोड़ा	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा
तौलिया	३		

६—कुछ आवश्यक वस्तुएं

कपड़े धोनेके लिये साबुन पासमें होनेपर शहरोंसे दूर धुलाई नौकर कर लेंगे। बिस्तरमें निम्न चीजें रहनी चाहिये—

कम्बल	३ या ४	चादरें	२
तकिया	१	तकिया-खोल	२
मसहरी	१		

(१) दूसरी वस्तुएं—

पुस्तकें	फाउन्टेन स्याही
नकशे	डोरी १० हाथ
सुतली १० हाथ	छुरी
सूआ २	कैंची
हथौड़ी	चायटिन
टिनबंद दूध	न टूटनेवाली प्लेट
" मांस	न टूटनेवाली प्याली-चम्मच
" मक्खन	केतली
	बिस्कुट
पानी बोतल	टिनबंद तरकारी
सूई २	सूतगोली २
आलपीन	नहानेका साबुन ४
कांटी	कैमरा
स्क्रू ड्राइवर	फिल्म
हजामतका सामान	
रसोईके बरतन	लेमन-जूस
चीनी	सूखे फल

आटा, चावल, सूखेफल आदि मोटे कपड़ेके थैलोंमें रखे जा सकते हैं, उसी तरह मसाला, हल्दी आदिको छोटी थैलियों में रखा जा सकता

है। मुर्गी, अंडा और दूध बहुत स्थानोंपर मिल जाते है। मांस हाटके दिनोंको छोड़ कभी ही कभी मिलता है। शाक मौसिमपर मिलते है, किन्तु आलू, प्याज सदा सुलभ है। दोर्जेलिङ तथा कलिम्पोङमें बहुत-सी दूकानें हैं, जहांसे यात्रोपयोगी खाद्य-सामग्री तथा दूसरी चीजें मिल सकती हैं।

(२) **पैकिंग**—२८ इंच लम्बे १४ इंच चौड़े तथा १४ इंच ऊँचे हल्के लकड़ीके तालेवाले साधारण बक्स चीजोंको पैक करनेके लिये अच्छे हैं। उन्हें घोड़ों और भारवाहकों दोनोंपर आसानीसे ले जाया जा सकता है। खच्चरोंपर लोहेके बक्सोंके टूटनेका डर रहता है, और चमड़ेके सूटकेसोंकी तो गति बन जाती है। चमड़े या फाइबरके सूटकेस भारवाहकोंकी पीठ-पर भी मुश्किलसे सुरक्षित रह पाते हैं। पानीसे बचनेके लिये बक्सोंपर मोमजामा या चमड़ा मढ़ा होना चाहिये। चार बक्सोंमें चार आदमीके लिये दो सप्ताहकी आहार-सामग्री आ सकती है। भरतम् या दिक्छू जैसे कुछ स्थानोंमें दीमक बहुत लगती है, वहां बक्सोंको मेज या कुर्सियोंपर रखवाना चाहिये या पायोंके नीचे केरासिनमें भिगोया कागज या लत्ता रख देना चाहिये।

(३) **भेंट-इनामकी चीजें**—पहाड़ोंमें सिगरेट पीनेका बहुत रवाज है, पुरुष ही नही, स्त्रियां भी धूम्र-पान करती हैं। लाछेन जैसे हिमालयके अन्तिम गांवोंमें भी सूखी तबाकूको मामूली कागजमें लपेट कर पीते नर-नारियोंको आप देखेंगे, फिर ऐसी जगह सिगरेटका माहात्म्य बढ़ जावे, तो कोई आश्चर्य नहीं है, इसलिये भेंट या बखशीशके लिये सिगरेट साथमें रख लेना अच्छा है। बच्चोंमें बांटनेके लिये लेमनचूस, रेवड़ी तथा मिश्रीके टुकड़े अच्छे हैं।

(४) **पड़ावोंपरके खर्च**—चार आदमियोंके लिये प्रतिदिन निम्न मात्रामें स्थानीय चीजोंकी आवश्यकता होगी, यदि किसीको दूधके साथ विशेष प्रेम न हो—

दूध	१ सेर
मुर्गे या चुजे	१ या २

अंडे	१ दर्जन
ईंधन	आध मन
किरासिन	आध बोतल
चौकीदारको बख्शीश	१ रुपया

(५) **दो सप्ताहका खाद्य**—चार आदमियोंके लिये १४ दिनमें निम्न मात्रामें खाद्यसामग्री आवश्यक होगी—

आटा	२० सेर	मांस (टिन)	ढाई सेर
सूजी	८ "	बिस्कुट (मीठा)	१ "
बेसन	८ "	" (सादा)	१ "
चावल	८ "	मुरब्बा	आध "
दाल (मूंग, मसूर, उरद)	७ "	अचार	१ "
सूखे मेवे	२ "	लड्डू-पेड़ा	१ "
मेवड़ियाँ	आध "	पेठा	२ "
पापड़	" "	मठरी (मीठी)	१ "
बड़ी	१ "	" (नमकीन)	१ "
घी	८ "	गरम चूर्ण	आध पाव
मक्खन	२ "	काली मिर्च (चूर्ण)	१ "
पनीर	२ "	लाल मिर्च	१ "
डालडा या तेल	ढाई "	हल्दी	आध सेर
चीनी	८ "	मसाला (चूर्ण)	" "
चाय	१ "	आगरेका मसाला	" "

चार आदमियोंको १४ दिनके लिए युरोपीय खाद्यसामग्री निम्न मात्रामें आवश्यक होगी—

चाय	२ पौंड	कोकोजम	२ सेर
काफी	२ "	पनीर	२ "
क्वाकरओट	३ टिन	मुरब्बा (जाम)	६ टिन (सवापाव वाले)
मक्खन	ढाई सेर	मर्मलाद	४ " "

घी	१ सेर	आटा	२ सेर
चीनी	५ सेर	नमक	पाव भर
मांस	ढाई सेर	सरसोंचूर्ण	१ छटांक
मीठा बिस्कुट	१ सेर (टिन)	काली मिर्च	आध छटाक
सादा बिस्कुट	१ सेर (टिन)	ममाला	चूर्ण १ पाव
केक	२ (डेढ़ सेरकी)	बेसन	आध पाव
सूखे मेवे	२ सेर	चावल	आध सेर
सूजी	आध सेर	मकरोनी या सेवई	१ पाव

बीमारी, चोट या बर्फकी सर्दीके लग जानेपर उपचारार्थ एक बोतल बरांडी रख लेनी चाहिये, जो स्प्रिटके अभावमें स्टोव जलानेका भी काम देगी।

(६) **प्रतिदिनका खाद्य**—भारतीय भोजन करनेवाले व्यक्तिकी प्रतिदिनकी आहार-सामग्री निम्न प्रकार होगी—

चावल, आटा	आध सेर	चीनी	२ छटाँक
दाल	डेढ़ छटाँक	मुरब्बा	१ "
आलू-साग-भाजी	४ "	अचार	२ तोला
मांस या मिठाई	४ "	सूखा मेवा	३ छटाँक
घी	१ "	दूध	१ सेर
मक्खन	आध "	नमक	१ तोला
पनीर	आध "	हल्दी मसाला	आध छटाँक
चाय-काफी	२ तोला		

तथा यूरोपीय भोजन करनेवालोंके लिए—

चाय	आध छटांक	आलू	३ छटांक
काफी	२ तोला	चीनी	डेढ़ "
टिन-मांस	१ "	जाम (मुरब्बा)	१ "
मक्खन	आध "	मर्मलाद	१ "
पनीर	आध तोला	सूखा मेवा	३ "

क्वाकर ओट	एक चौथाई तोला	मांस	पाव भर
पावरोटी	२ या ३ पाव	दूध	१ सेर
बिस्कुट	१ पाव		

(७) **पावरोटी**—सप्ताह दो सप्ताह टिकने वाली पावरोटियां कलिम्पोङ गोम्पूके यहां मिल सकती हैं, नहीं तो कलकत्तेकी किसी अच्छी रोटी वाली कंपनीसे ले लेनी चाहिये । पावरोटियोंको तेल-कागज में लपेटकर हल्के काठ-बक्सोंमें रखना चाहिये । देर तककी यात्रा होनेपर चपातियां या पराबठे यात्राके लिये अच्छे रहेंगे ।

(८) **लालटेन**—सभी बंगलोंमें टेबुल-लैम्प होती है, किंतु आज-कल किरासिन सुलभ नहीं है । अच्छा है दो गेलनवाले पेट्रोल-टिनमें मिट्टीका तेल भरवाकर साथ ले लिया जाय, वह चार आदमियोंको दो सप्ताहके लिये पर्याप्त होगा । स्टोव, बैटरी टार्चके अतिरिक्त एक लालटेन और कुछ दर्जन मोमबत्तियां भी साथ रहनी चाहिये । ६-६ मोमबत्तियोंके ३ पैकेट दो सप्ताहके लिये पर्याप्त होंगे ।

(९) **पानी**—निचली उपत्यकाओंमें उबला पानी पीना चाहिये । शामको उबालकर पानी बोतलमें डाल लेनेपर वह सबेरे ठंडा हो जायेगा, और पीनेमें अरुचिकर नहीं प्रतीत होगा । तीन साढ़े-तीन हजारसे ऊपरके स्थानोंमें नदी या चश्मेका ताजा पानी स्वादिष्ट और स्वास्थ्यके लिये अहानिकर होता है । पहाड़में मंडुवाकी कच्ची शराब बनती है, जो हल्की होती है । इसे बांसके चोंगोंमें डालकर दिया जाता है, और नलीसे सुड़ककर पिया जाता है ।

७—मनीआर्डर, चिट्ठियां

निम्न डाकघरोंमें मनीआर्डर आदि मंगाया जा सकता है । ये दोर्जे-लिंङसे निम्नांकित दिनोंकी डाकके फासलेपर अवस्थित है—

डाकघर	दिन दूरी	डाकघर	दिन दूरी
पोशक	२	कलिम्पोङ	२
पेदोङ	३	तिस्तापुल	२

डाकघर	दिन दूरी	डाकघर	दिन दूरी
रोङली	२	रोङपू	२
पाक्योङ	३	रेनोक	२
मिङताम्	३	ग्नातोङ	४
मङगन	३	गङतोक	२
चुङथाङ	३	मुकियापोखरी	२
नमचो	२	रिन्छेनपोङ	२
क्योजिङ	२	रङली बाजार	२

पहिलेसे ही बात-चीत कर रखनेपर श्री जेठमल भोजराजकी दोर्जेलिङ, कलिम्पोङ, गङतोक और मंगनकी कोठियोंपर चेक भुनाया जा सकता है। पासपोर्ट पास रहनेपर डाकघरोंमें मनीआर्डर मिलनेमें तरद्दुद नहीं होगी। सौ या अधिकके नोटोंका भुनाव दूरके स्थानोंमें मिलनेमें कुछ कठिनाई होगी, इसलिये दस या कमके नोट साथमें हों तो अच्छा है।

८—यात्रारम्भ

बंगला छोड़नेसे पहिले उसकी सफाई और व्यवस्थितिको देख लेना चाहिये, और टूटी-फूटी चीजोंका दाम तथा बंगलेका शुल्क दे रजिस्टरपर हस्ताक्षर कर देना चाहिये। भारवाहकोंको आठ बजे सबेरे आगे रवाना कर देनेपर अपने पहुँचनेसे पहिले अगले पड़ावपर वे पहुँचे रहेंगे। आठ बजेतक चाय या नाश्ता कर लेना चाहिये। भारवाहकोंमेंसे कुछको जल्दी कराके आगे भेजनेसे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि रास्तेमें वे एक दूसरेके साथ बैठते-उठते ही आगे चलते हैं। साईस और रसोइयेको मालिकके साथ बंगला छोड़ना होता है। यदि रसोइयेको मध्याह्न भोजनके साथ नहीं ले चलना है, तो उसे भी आगे भेजा जा सकता है, किंतु ऐसी दशामें खानेकी कुछ चीजें अपने घोड़ेपर रख लेनी चाहिये। पानीकी बोतल साईसके गलेमें रहनी चाहिये। यदि तिब्बती ढंगके टट्टू और जीनपर चलनेको मिले, तो घोड़ेकी जीनपर दोनों तरफ लटकते थैले (ताड़ू) में १०-१२

सेर सामान रखा जा सकता है। उसमें या साईसके साथ चायकी केटली, न टूटनेवाले प्याले भी रखे जा सकते हैं। अथवा इस तरद्दुदसे बचनेके लिये आप चाय थर्मसमें ले जा सकते हैं। साधारण तौरसे देखते-भालते कुछ फोटो या स्केच लेते घंटेमें दो मील चला जा सकता है, इस प्रकार नौ बजेसे डेढ़-दो बजेतक ९-१० मील अर्थात् एक पड़ावपर चल कर अगले स्थानमें ठहरा जा सकता है। डबल यात्रा करनी हो, तो सवेरे आठ बजे चल देना चाहिये, अगले पड़ावके बंगले या दूसरी जगह मध्याह्न भोजनके लिये एक बजे एक घंटेके लिये ठहरकर शामतक ठहरनेके डाकबंगलेपर पहुँच सकते हैं। इसके लिये भारवाहकोंको और नौकरोंको दूना वेतन देना होगा, और रास्तेके ठहरनेके बंगलेके चौकीदारको भी कुछ बख्शीश देनी होगी। लेकिन डबल मार्च करना पहिले ही दिनसे शुरू नहीं करना चाहिये, इसके लिये आदमियों और जानवरोंको थोड़े अभ्यासकी भी आवश्यकता होती है। रात्रि-निवासके स्थानमें आनेपर पहिला काम है चारपान। आमतौरसे घोड़ेके मालिक घोड़ेके साथ नहीं जाते, इस लिये पर्यटकको चाहिये, कि वह घोड़ेके दाने-चारेकी ओर भी ध्यान रखे। यह मानवोचित ही नहीं है, बल्कि स्वार्थोचित भी है, क्योंकि घोड़के दुर्बल या घायल हो जानेपर यात्राको जारी रखना कठिन हो जाता है।

रोगादि—आठ-दस हजारसे ऊपरकी ऊँचाइयोंपर कड़ी सर्दी या पतले वायुमंडलकी तीव्र धूपके कारण नरम चमड़ेवाले व्यक्तियोंका चर्म जल उठता है। इसके लिये क्रीम या वेस्लीन लगा लेनी चाहिये। यदि ऐसे स्थानोंपर जाते समय पहिले हीसे वेस्लीन या क्रीम शरीरके खुले भागोंपर मल ली जाये, तो चमड़ा नहीं जलता। ऊँची चढाइयों विशेषकर बड़ी-बड़ी जोतों (डांडों) को पार करके आनेपर चेहरा तथा दूसरे खुले अंगोंके चमड़ेका रंग अस्थायी तौरसे बदल जाता है, गोरा रंग ताम्रवर्ण और पक्का रंग काला हो जाता है। इससे रक्षाके लिये तिब्बती महिलायें मुंह-पर कत्थेका लेप कर लेती हैं, और ऊपरसे सारे मुंहको ढंक लेती हैं। वेस्लीन या कोल्ड क्रीम लगाकर यदि चेहरेको गुलबंद या मंकी कैपसे पूरी तौरसे

ढांक लिया जाय, तथा आंखोंपर रंगीन चश्मा लगा लिया जाय, तो रंगपर असर नहीं होगा। ओठोंको फटनेसे बचानेके लिए कपूरी-क्रीम या ग्लेशियर-क्रीमका लेप अच्छा होगा। जोतोंको पार करनेसे पहिली रातको कोल्ड-क्रीम लगाकर सो जाना चाहिये और सवेरे चेहरेको नहीं धोना चाहिये। यदि इसके साथ मंकी कैपसे अच्छी तरह ढककर जोत पार की जाय, तो चमड़ेका विवर्ण होना तथा रंग बदलनेका डर नहीं रहता। जाड़े या असाधारण ठंडकके समय हाथ या पैर जैसे किसी अंगके खुले रहने-पर उसके हिम-जड़ हो जानेका भय रहता है। ऐसे समय विशेष सावधानी न रखनेपर अनर्थ हो सकता है। किंतु इससे आतंकित होनेकी अवश्यकता नहीं है। ऐसी नौबत जाड़ोंमें ही आ सकती है, जब कि पर्याप्त गरम कपड़ेसे न ढंकनेके कारण हाथ या पैरका पंजा जम जाता है। यदि ऐसा हो जाय, तो आदमीको घबड़ाना नहीं चाहिये, क्योंकि यदि हृदय और शरीरके अन्य अंगोंमें गरमी है, तो वह धीरे-धीरे हिमीभूत अंगमें भी पहुंच जायेगी, किंतु यदि आदमीने उस अंगको आगपर सेंक दिया, तो उस हिमीभूत अंगका सर्वनाश समझिये। सेंकनेपर पहिले एक तीव्र वेदना उठेगी, फिर शांति। कुछ सप्ताहोंमें अंगुलियां सूखकर लकड़ी हो जायेंगी, और हाथमें लकड़ी जोड़कर घूमनेकी जगह आप बढ़े नखोंकी भांति उन्हें काट डालना ही पसन्द करेंगे। पहाड़की उतराईमें भलेमानुस जूता भी काटने लगता है, इसलिये परीक्षित जूतेको ही इस्तेमाल करना चाहिये। उतराईमें भारी सर्दी या बर्फ न हो, तो बाटा-कान्वेस जूता अच्छा रहेगा, किंतु चढ़ाईमें कांटियों और उतराईमें पंजोंके बल चलना जूतेकी आयुको बहुत कम कर देता है, इसका भी ध्यान रखना चाहिये। जहां कटनेका डर हो, वहां समय-समयपर पैरको नमकके पानीमें रखकर कड़ा कर लेना चाहिये। चलते समय प्रतिदिन मोजेमें फिटकिरीका चूर्ण डाल लेना भी सहायक होता है। यदि छाले पड़ जायें, तो परिशोधित सूईसे फोड़कर पानी निकाल देना चाहिये, और वहां बोरिक चूर्ण या "सिवाजोल" मलहम लगाके औषधित रुई लगा लेनी चाहिये। छालोंसे बहुत सावधान रहना चाहिये। घावके उपचारके

लिये "सिबाजोल", टिकचर या टिंकचर बेंजील साथमें रहनी चाहिये। मधुमेहके रोगियोंको तो "रिपु रुज पावक पाप, इन्हिंह न गनिये छोट करि" की पंक्ति सदा याद रखनी चाहिये। टिंकचर और सिबाजोलके साथ उन्हें पेनिसिलीन तथा इन्सोलीन भी इन्जेक्शनके सामानके साथ पास रखनी चाहिये। पेनिसिलीन लगानेके लिये सूइयोंको "स्प्रिट" से नहीं, पानीमें उबालकर निष्कृमित करना चाहिये।

चारसे आठ हजार ऊँचे स्थानोंमें वर्षा-बूँदोंके समय वृक्षोंके नीचे या घासमें छोटी-बड़ी जोंकें भी एक बड़ी बाधा हैं। आदमीकी आहट पाते ही ये नेत्रहीन जंतु सहस्रोंकी संख्यामें पत्तोंके भीतरसे अपने मुंह निकालकर चिपकनेकी घातमें रहते हैं। जोंकें जूतेके भीतर भी चली जाती हैं। कसकर बंधी पट्टीके भीतर घुसना उनके बसका नहीं है। जोंकोंके लगनेसे पीड़ा नहीं होती, किंतु वह खून चूसकर निर्बल तो अवश्य करती है। पेट भर पीकर जब मोटी हो गिर जाती है, तब भी उनके मुंहसे निकलकर लगे एक रासायनिक तत्त्वके कारण शरीरसे खून कुछ देर बहता रहता है, फिर अपने आप बंद हो जाता है। हां, खून न जमनेवाले आदमीके रोगके लिये यह बुरा है। इसके लिये झिल्लीके जैसे पतले कागजकी एक-दो तहोंको घावपर साट देना चाहिये। जोंकोंको खींचकर नहीं निकालना चाहिये, नहीं तो घाव हो जानेका डर रहता है। नमक उनका भारी शत्रु है, उसके स्पर्श-मात्रसे वह गिर पड़ती हैं। नमक न होनेपर जलते सिगरेट या दियासलाईकी तीलीका स्पर्श काफी है। तवाकूका पानी या नीबूका रस लगा लेनेपर जोंकें नहीं चिपकतीं। निचले स्थानोंपर मलेरियाके मच्छर तथा कालाजरकी मक्खियोंसे बचनेके लिये मसहरी जरूर साथ रखनी चाहिये। ऊपरी भागोंमें खटमल और पिस्सू आफतकी चीज हैं। सौभाग्यसे अधिकांश डाकबंगले इनसे मुक्त हैं, नहीं तो नींद हराम हो जाय। भेड़-बकरियोंके रहनेके स्थानोंमें पिस्सुओंका और जोर रहता है, इसलिये शिविर गाड़नेके वक्त उनका ध्यान रखना चाहिये। फिलट इनके लिये अच्छी दवा है, उसकी कितनी ही पिचकारियां दीवार, चारपाई आदिपर दे देनी चाहिये।

९—कलाकी वस्तुएं

सिक्किमकी सीमापर तिब्बत है, जहां भारतीय और चीनी कला-परम्परा अविच्छिन्न रूपमें अबतक चली आयी है। दोर्जेलिङ-सिक्किममें यद्यपि अब दूसरी जातियां भी अधिक संख्यामें आ बसी हैं, किंतु यहां तिब्बत-वंशीय जातियोंका भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका तिब्बतसे धर्म और कलाके विषयमें घनिष्ट सम्बन्ध है, जिससे कितनी ही कला-पूर्ण तिब्बती वस्तुएं यहां आती रहती हैं। निम्न कलाकी चीजें संग्राह्य हैं—

चित्रपट	शूल (फुरबा)	घंटा
डमरू (कपाल)	अस्थिभूषण	कुंडल (फीरोजेका)
पुस्तक-पट्टिका	मूर्तियां	जूता (शोम्पा)
मसीपात्र	काष्ठ-चषक (फोरबा)	धूपदानी
धातुडब्बा (भूटानी)	कुकड़ी	टोपी (श. मो)
मानी (जपचक्र)	प्रतिमा-पेटिका	चौकी (चोक-ची)
घंटापात्र (रोल्-मा)	चायपात्र	चायप्याला
चकमक (चक्-मा)	" बेठकी	दुंदुभी (जोड़ा)
वज्र (दोर्जे)		पाइप (तम्बाकू)

१०—फोटोग्राफी

फोटो खींचनेमें अधिक ऊँचाइयोंपर कुछ विशेष ध्यान रखनेकी आवश्यकता है, क्योंकि वहां नील तथा अतिबैंगनी किरणोंकी अधिकतासे प्रकाश प्रखर होता है, और अधिक एक्सपोजर हो जानेका डर रहता है। सफेद बर्फका अच्छा फोटो फिल्टरके बिना लेना कठिन है। वैसे भी अच्छे फोटोके लिये इन पहाड़ोंपर फिल्टरकी आवश्यकता होती है। कोडकके पाससे अच्छे फिल्टर मिल सकते हैं। फिल्मोंमें वेरीक्रोम अधिक उपयुक्त होते हैं। अच्छे फोटोके लिये कुछ फिल्मोंको अलग-अलग एक्सपोजर समय देकर देख लेना चाहिये।

१३

यात्राएं

खरसान्, दोर्जेलिङ, कलिम्पोङ तथा गङतोकके लिये सिलिगोड़ीसे सीधी मोटरें मिलती हैं, जिसके बारेमें हम पहिले कह आये हैं। मोटर-पथसे दूरके रास्तोंकी यात्रा दोर्जेलिङ, कलिम्पोङ तथा गङतोकसे आरंभ की जा सकती है। इन तीनों स्थानोंमें दूकानों, चेक भुनाने मनीआर्डर तथा सवारी आदिके पानेका अच्छा सुभीता है। तिस्तासे पूर्वके लिये कलिम्पोङ एवं ऊपरी तिस्ता (सिक्किम) के लिये गङतोकसे यात्रा आरंभ करनी अच्छी होगी।

क. दोर्जेलिङके आस-पास

(१) दोर्जेलिङ-व्याघ्रगिरि-दोर्जेलिङ

(१ दिन, ६ मील)

	फुट ऊंचाई	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०
घूम (जोरबंगला)	७४००	३॥
सिञ्चेल		१॥
व्याघ्रगिरि (टाइगर-हिल)	८५१५	१
		६ मील

चौरस्तासे घूमतक कलकत्ता रोड द्वारा पैदल या घोड़ेपर चलना अच्छा होगा। यहां सूर्योदयसे पूर्व पहुँच जाना चाहिये। मोटर घूमतक जा सकती है। वहांसे छोटी कार पर्वत-सानुतक पहुँचायेगी। आगे एक घंटेमें टहलते हुए पहाड़के ऊपर पहुँचा जा सकता है। व्याघ्रगिरिपर जानेका सबसे अच्छा समय अक्टूबर-नवम्बर है। बदली और वर्षाके दिनोंमें

वहां जानेमें मजा नहीं है। निरभ्र आकाशका समय ही सबसे उपयुक्त है। दोर्जेलिङसे मोटर-द्वारा जानेवालोंको सूर्योदयसे दो घंटा पहिले ही जाना चाहिये। व्याघ्रगिरिकी ऊँचाई ८५१५ फुट है। सूर्यकी प्रथम किरण जिस वक्त कंचनजगाके उन्नत शिखरको धीरे-धीरे काचनवर्णसे रगने लगती है और उसका हिम-शरीर नारंगीके रंगमें परिणत हो जाता है, वह बड़ा ही सुन्दर दृश्य होता है। यहांसे सिकंदर (एवरेस्ट) शिखर (२९,००२ फुट) का केवल ऊपरी भाग दूसरी दो चोटियोंके बीचसे उत्तर-पश्चिमकी ओर दिखाई पड़ता है। एवरेस्ट यहांसे विमान-मार्गसे १०७ मील दूर है। उसके साथ दिखाई देनेवाले दोनों शिखर एवरेस्टसे ऊँचे मालूम देते हैं, क्योंकि वे अधिक नजदीक हैं। उत्तर-पूरबमें चोमोल्हारीका शिखर है, जो सीधे उड़नेपर ८४ मीलकी दूरीपर है। चोमोल्हारी बहुत ही सुन्दर शिखर कहा जाता है। इसका नजदीकसे और स्पष्ट दर्शन फरीजोङमें होता है, जो तिब्बतके भीतर कलिम्पोङसे ल्हासाके रास्तेपर है।

(२) दोर्जेलिङ—रङ्गिरुङ (जंग-बंगला)—दोर्जेलिङ

(१ दिन, ६॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	गाड़ी-सड़क		२। बायेंसे
घूम (जोरबंगला)	७४००	३॥	रङ्गिरुङ	५७००	१
		३॥ मील			३। मील

बंगलेके उपयोगके लिये डिवीजनल-फारेस्ट-अफसर, दोर्जेलिङसे आज्ञा लेनी पड़ती है। यहां जंगलका सुन्दर दृश्य है।

(३) दोर्जेलिङ—रम्बी (जंगल बंगला) दोर्जेलिङ

(२ दिन, ९॥ मील)

	फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०
घूम (जोरबंगला)	७४००	३॥

	फुट	मील
तीन-मील (मिनकोना) बस्ती		२
रम्बी	७३००	३
		९॥ मील

बड़ी कारें भी बंगलातक पहुँच जाती है। सड़क और बंगलेके उपयोगके लिये डिवीजनल फारेस्ट अफसर दोर्जेलिङसे आज्ञा लेनी पड़ती है। यहांसे तिस्ता-उपत्यकाका बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है।

(४) दोर्जेलिङ--घूमतालाब--दोर्जेलिङ
(१ दिन, ११ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	घूम तालाब		२
घूम (जोरबंगला)	७४००				३॥
					५॥ मील

यहींसे दोर्जेलिङ नगरको पानी जाता है। यहां भी भीतर जानेके लिये म्युनिसिपैल्टीके इंजीनियरसे आज्ञा लेनी पड़ती है। यह तालाब हरे जंगलोंसे आच्छादित पहाड़ोंके बीचमें अवस्थित है।

(५) दोर्जेलिङ--घूम पहाड़--दोर्जेलिङ
(१ दिन, [illegible] मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	गाड़ी-सड़क		३॥।
घूम स्टेशन	७४०७	३॥	घूम पहाड़	७९००	[illegible]
		३॥ मील			[illegible] मील

घूम पहाड़ ७९०० फुट ऊँचा है। यहांसे एक ओर हिमाच्छादित शिखर-पंक्तियां दिखाई पड़ती हैं और दूसरी ओर भारतीय मैदान। मोटर जंगलमें होकर अंतिम चढ़ाईके बहुत नजदीक तक पहुँच जाती है।

(६) दोर्जेलिङ--लेप्चा जगात--दोर्जेलिङ

(२ दिन, २०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	रिमिहाट		८
घूम स्टेशन	७४०७	३॥	लेप्चा जगात		१।
भंज्याङ		१॥	दोर्जेलिङ		१०।
		५ मील			१५॥ मील

गाड़ी-सड़क छोड़नेके बाद एक छोटी सड़क मिलती है, जो हल्की उतराईकी तरफ ले जाती है। यहांकी वन-सुषमा दर्शनीय है। लेप्चा-जगातके डाकबंगलेके लिये फारेस्ट-अफसरकी आज्ञा लेनी पड़ती है। लेप्चा जगाततक मोटर भी जा सकती है।

(७) दोर्जेलिङ--गिङगोम्पा--दोर्जेलिङ

(१ दिन, १२। मील)

	फुट	मील		मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लेबोङ	२॥।
लेबोङ		५	दोर्जेलिङ (पैदल)	१॥।
गिङ बाजार		२॥।		
		७॥।		४॥ मील

गोम्पा सड़कसे ५ मील चलकर रास्तेपर है। यह एक दर्शनीय बौद्ध-विहार है।

ख. दोर्जेलिङसे यात्राएं

(८) दोर्जेलिङ--मङपू--दोर्जेलिङ

(२ दिन, ४०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	मङपू	४०००	२

	फुट	मील		फुट	मील
घूम	७४०७	३॥	सुरेल		२
तीनमील बस्ती		३	मुनादा		८॥
रम्बी		३	घूम	७४०७	५॥
सुरैल (लालकूटी)	७०००	९॥	दोर्जेलिङ	६८१४	३॥
		१९ मील			२१॥ मील

मङ्पूमें भारतका सबसे बड़ा सिनकोना-बगान और कुनैनकी फैक्टरी है। इसे देखनेके लिये पहिलेसे ही मैनेजर गवर्नमेंट सिनकोना प्लान्टेशन, मङ्पू (दोर्जेलिङ) के पास लिख देना चाहिये। सुरेलमें डाकबंगला है और रम्बीमें भी। मङ्पू जानेके लिये सिलिगोड़ी-कलिम्पोङ सड़कसे रम्बी (कालीखोला) के नये पुलसे थोड़ा ही नीचेसे बाईं ओर मोटरवाली सड़क निकलती है। मङ्पू-फैक्टरी और कार्यालय वहांसे ६ मीलकी चढ़ाईपर सिनकोना-वृक्षोंके मीलों फैले बागोंमें है। कवींद्र रवींद्र नाथ १९३८-४० ई० की तीन गर्मियोंमें यहां रहे थे।

(९) दोर्जेलिङ—दर्शनविंदु (व्यू-प्वाइंट) दोर्जेलिङ
(४ दिन, ३८॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	पोशक	२६००	४॥
लोपचू	५३००	१४	दर्शनविन्दु	..	॥
—...दोर्जेलिङ					१९।
		१४ मील			२४॥ मील

दर्शनविन्दु वन-भोजके लिये बड़ा सुन्दर स्थान है और मोटरसे वहां पहुँचा जा सकता है। लोपचूमें डाकबंगला है। यहांसे खङ्छेनजुंगा और रंगित-उपत्यकाका सुन्दर दृश्य सामने आता है। पहिली रातको यहीं ठहरा जा सकता है और दूसरे दिन पोशक चाय-बगान होते

वहांके एकान्त स्थानमें अवस्थित डाकबंगलेमें पहुँचा जा सकता है, अथवा पोशकके डाकबंगलेमें सामान रखकर पौन मील चलकर दर्शनबिन्दुमें मनोहर दृश्योंके बीच मध्याह्न-भोजन किया जा सकता है। यहांसे सीधे २००० फुट नीचे रंगित और तिस्ताकी त्रिवेणी है, जहां मकरसंक्रान्तिको प्रयागकी त्रिवेणीकी भांति स्नान और मेला लगता है।

(१०) दोर्जेलिङ-रंगित-तिस्ता-दोर्जेलिङ

(५ दिन, ५० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	पोशक	२६००	१४॥
बदमताम	२५००	७॥	तिस्तापुल	७१०	३
... दोर्जेलिङ					२५
		७॥ मील			४२॥ मील

पहिले दिन लेबोङके पाससे चायबगानों और जंगलमें होकर बदमताम बंगलेतक साढ़े सात मीलकी उतराई है। दूसरे दिन साढ़े तीन मील खड़ी उतराई उतर वहांसे एक रास्ता मांजीटार-पुल होकर सिक्किमको जाता है, और दूसरेसे दाहिने रास्तेसे उतरते जंगलमें हो पुलिस-चौकीके पाससे आगे रोङदोङ खोलाके पुलपर पहुँचा जा सकता है। यहांसे रास्ता तिस्ताके किनारे-किनारे १८ मीलका है। यहांके पर्वत जंगलसे आच्छादित हैं, किंतु ऊँचाई ७०० फुट ही होनेके कारण स्थान गरम है। तिस्ता-पुलसे पोशक-खोलाके पुलको पार हो पोशक सड़क द्वारा तीन मीलकी चढ़ाई चढ़नेपर पोशक बंगला आता है, जहांसे दोर्जेलिङ १७ मील रह जाता है।

(११) दोर्जेलिङ-कलिम्पोङ-दोर्जेलिङ

(४ दिन, ५९॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	कलिम्पोङ	३९००	१४

	फुट	मील		फुट	मील
लोगन्नू	५३००	१८	पोशक	२६००	१८
—...दोर्जेलिङ	६८१८				१७॥
		१८ मील			८५॥ मील

मोटर द्वारा जानेपर दोर्जेलिङसे कलिम्पोङ ढाई-तीन घंटेमें पहुंच सकते हैं। पैदल चलनेका आनन्द लेनेके लिये पोशक बंगला और कलिम्पोङके बंगलेमें ठहरते चार दिनमें यात्रा पूरी की जा सकती है।

(१२) दोर्जेलिङ-पद्मायाङची (पामीओंची)—दोर्जेलिङ
(७ दिन, ८२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१८	०	पद्मायाङची	६९२०	१०
बदमताम्	२५००	७	रिन्छेङपोङ	६३००	१०
मांजीटार-पुल	१९०६	३	चाकङ	५१००	१३
नामची	५२००	११	बदमताम्	२५००	७
क्योजिङ	६०००	१८	...दोर्जेलिङ	६८१८	७
		३५ मील			४७ मील

बदमताम् उतराईका रास्ता है। बदमताम्से मांजीटारका पुल और भी कड़ी तीन मीलकी उतराई पर है। रंगित नदीके इस पुलको पारकर सिक्किममें प्रवेश होता है। पुलसे ८ मीलकी चढ़ाई चढ़कर नामची डाक-बंगला आता है, जहां जाकर आदमी गरमीसे गुलाबी जाड़ेके स्थानमें पहुँच जाता है। दोर्जेलिङसे पैदल चलकर ढाई घंटेमें बदमताम्, एक घंटेमें मांजी-टार और साढ़े तीन घंटेमें यहां पहुँचा जा सकता है। नामचीका बंगला बहुत ही सुन्दर स्थानमें है। इच्छा होनेपर डाकबंगलेसे ६ मीलकी चढ़ाई चढ़कर तें-दोङ (८६८० फुटकी ऊँचाई) पर जा अद्भुत पार्वत्य-वनश्रीका दर्शन किया जा सकता है। नामची बाजारसे एक मीलपर सिक्किमके

एक काजी (मंत्री) का घर है, जिसके आगे ही नामचीकी गोम्पा (विहार) है। दूसरे दिन क्योजिङमें रहना चाहिये। यह सारा रास्ता हरे-भरे जगलोंकी शीतल छायाके भीतरसे जाता है। ७ मील चलनेपर दम्योङ-जोंग और उसी नामका गांव आता है। यहां पश्चिमी सिक्किमका पुलिस थाना है। यहांसे दाहिने पूरबकी ओर जानेवाला रास्ता तेमी होकर गङतोक पहुंचता है, और बाया क्योजिङ (६००० फुट) की ओर जाता है। क्योजिङमें एक अच्छा बंगला है, जहांसे हिमालयका सुन्दर दृश्य सामने आता है। यहांसे ७ मीलपर टशीदिङ (विहार) है, किन्तु उसके लिये ४००० फुट नीचे नदी पारकर फिर २५०० फुट ऊपर चढ़ना पड़ता है। रास्ता कठिन है। सिक्किमी बौद्धोंका यह एक पवित्र विहार है।

क्योजिङ अच्छा बाजार है। यहांसे पद्मायाङ्ची जाते रास्तेमें दोंजिङ (दोंछेन) का बाजार आता है। यहां कई मारवाड़ी दूकानें हैं। बाजारसे हरे-भरे जंगलोंके भीतरसे ढाई मील चलकर बौद्ध स्तूपोंका समूह मिलता है, जहांसे सिक्किमके पुराने विहार पद्मायाङ्ची (पद्म सरस्वती) में पहुँचा जा सकता है। यह सिक्किमकी सबसे बड़ी और पुरानी गोम्पा (विहार) है। यहांके भिक्षु विनय (नियमों) का अधिक पालन करते हैं। विहारके प्रधान भिक्षु (लामा) को राजगुरु माना जाता है। गोम्पाका निर्माण १४वीं १५ वीं सदीमें हुआ था, किन्तु आग लगनेसे पुरानी इमारत नष्ट हो गयी। दुनिया भरमें जहां कहीं भी बौद्ध विहार बने हैं, प्राकृतिक सौंदर्यको चुननेमें सभी जगह कमाल किया गया है। यह विहार भी ऐसे ही स्थानमें स्थापित है। विहारकी मूर्तियां, भित्तिचित्र, तथा पुस्तकोंका संग्रह अच्छा है। यहांसे खरबू-शिखर बहुत साफ दिखलाई पड़ता है। इसके आस-पास उत्तरमें दोब्दी, सनङ और रालुङके विहार, पूरबमें टशीदिङ, दक्षिण-पश्चिममें सङा-छोलिङ और उत्तर-पश्चिममें मेती और कचुपारीके विहार हैं। पद्मायाङ्चीमें खाने-पीनेकी चीजें (दूध भी) नहीं मिलतीं, सभी चीजें गेजिङसे आती हैं, जो कि यहांसे १० मील या साढ़े चार घंटेके रास्तेपर है।

लौटते समय क्योंजिङ न आकर रिन्छेन्पोङ (६३०० फुट) का रास्ता लिया जा सकता है। यहांका बंगला बड़े सुन्दर स्थानपर अवस्थित है और उसके बरामदेसे खङ-छेन्-जुंगा और हिममंडित शिखरोंका अच्छा दर्शन होता है।

चाकङ (५१०० फुट) डाकबंगला भी अच्छे स्थानपर अवस्थित है। बगलेसे आधा मीलपर दुङ-चे गोम्पा है। वदमताम् (२५०० फुट) का डाकबंगला गरम स्थानमें है। यहां बहुत-सी दूकाने हैं। बदमताम् पहुँचनेसे पहिले चाकङसे साढ़े ६ मीलपर रम्मम् नदीका पुल है, जहांसे आध मीलपर नयाबाजार है। नयाबाजारसे सिङला होते सीधे दोर्जेलिङ पहुँचा जा सकता है, और इस प्रकार चाकङसे दोर्जेलिङके २० मीलके अन्तरको डबल मार्च करके एक दिनमें पूरा किया जा सकता है।

(१३) दोर्जेलिङ-फलूत-दोर्जेलिङ
(८ दिन, ९८ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	सन्दकपू	११९२९	१४
जोड़पोखरी	७४००	१२॥	फलूत	११८११	१२॥
तोङलू	१००७४	१०	...दोर्जेलिङ	६८१४	४९
		२२॥ मील			७५॥ मील

यह बड़े ठंडे स्थानोंका रास्ता है। रास्तेमें बहुतसे सुन्दर जंगल तथा सम्मुख हिममंडित शिखरों (एवरेस्ट, खङछेनजुंगा) का दृश्य देखनेमें आता है। मानेभंज्याङ तक मोटरसे जाया जा सकता है, किन्तु जंगल-विभागकी सड़कपर चलनेके लिये जंगल-विभागसे दो रुपयेमें अनुज्ञापत्र लेना पड़ता है। मानेभंज्याङसे आगे पैदल या घोड़ेसे यात्रा हो सकती है। पहिले दिनका पड़ाव जोड़पोखरीमें होगा। घूमके डाकखानेसे दाहिनी ओरकी सड़क जोड़पोखरी जाती है। रास्तेमें चौथे मीलके पत्थरके पास ऊपर घूम पहाड़ मिलता है। यह पहाड़ एक बहुत विशाल शिला है, जिसके ऊपर

टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे सुकियापोखरी गांवमें पहुँचा जा सकता है। गांवसे डेढ़ मीलपर जंगलके भीतर वंगला है, जहां रातको ठहरा जा सकता है।

दूसरे दिन १० मीलकी यात्रा करनेके बाद तङ्लू मिलता है। सिमाना-बस्ती पार करके तेज उतराई उतरनेके बाद मानेभंज्याङ आता है। यहांसे टेढ़ी-मेढ़ी उतराई तब-तक जारी रहती है, जब-तक कि तङ्लूका बंगला नहीं आ जाता। यहांसे सीधे दोर्जेलिङको देखा जा सकता है और खङछेनजुंगा-शिखर समूहको भी। चोमोल्हारी (२४००० फुट) का हिमाच्छादित शिखर भी दूर दिखायी पड़ता है। सन्दक्पू तङ्लूसे १४ मीलपर है। रास्ता अच्छा है। कितनी ही चढ़ाइयों और उतराइयोंके बाद तीन चोटियोंवाला सन्दक्पू आंखोंके सामने आता है, किन्तु अभी वहांतक पहुँचनेमें छोटे बांसोंके झुरमुटोंके भीतरसे चढ़ते-उतरते काफी दूरतक जाना पड़ता है। रास्तेमें थोड़ी-सी खुली जगहमें कालापोखरी मध्याह्न-भोजनके लिये अच्छा स्थान है, जहांसे ५ मील और जाना रह जाता है। रास्ता कुछ परिश्रमका है और अन्तिम भाग और भी अधिक। सन्दक्पू (समुद्रतलसे ११९२९ फुटकी ऊँचाई) से हिमालयका जो दृश्य सामने आता है, वह व्याघ्रगिरिसे भी अधिक आकर्षक और चिरस्मरणीय है। एवरेस्ट और खङछेनजुंगाके शिखर-परिवार यहांसे बहुत स्पष्ट दिखायी पड़ते हैं। देवदारके जंगलोंकी शोभा अपना अलग आकर्षण रखती है। अप्रैल और मई के महीनोंमें ब्रोश (गुरांश, रोडोडेन्ड्रोन) के लाल फूलोंसे लदे वृक्षोंवाले वन बड़े मनमोहक दृश्य उपस्थित करते हैं—ऊँचे-ऊँचे वृक्ष नीचेसे ऊपरतक अत्यन्त रक्त फूलोंसे लदे रहते हैं। हिमालयकी सौंदर्य-राशि देखनेके लिये व्याघ्रगिरि (टाइगर हिल) और सन्दक्पू बड़े ही सुन्दर स्थान हैं।

सन्दक्पूसे फलूत (साढ़े १२ मील) के रास्तेमें भी सुन्दर प्राकृतिक दृश्य मिलते हैं। रास्ता चढ़ाई-उतराईका है। यहांसे संडलीला पर्वत दिखायी पड़ता है। यहां ही सिक्किम, नेपाल और दोर्जेलिङ जिलेकी सीमाएं मिलती हैं।

(१४) दोर्जेलिङ-फलूत-रम्माम् दोर्जेलिङ
(१० दिन, १०७॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	रिम्बिक	७५००	१२
जोड़पोखरी	७४००	१२॥	पल्माजुआ	७२५०	७
तोङ्लू	१०७७४	१०	बतासे	६८८८	८
सन्दकफू	११९२९	१४	जोड़पोखरी	७४००	९॥
फलूत	११८११	१२॥	दोर्जेलिङ	६८१४	१३
रम्माम्	७९५८	९			

१०७॥ मील

यह भी ठंडे-ठंडे तथा सुन्दर पहाड़ोंकी यात्राका मार्ग है।

(१५) दोर्जेलिङ्-फलूत-श्रीपी-दोर्जेलिङ
(९ दिन, ९४ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	रम्माम्	७९५९	९
जोड़पोखरी	७४००	१२॥	रिम्बिक	७५००	१२
तोङ्लू	१००७४	१०	श्रीपी	८१००	११
सन्दकफू	११९२९	१४	दोर्जेलिङ	६८१२	१३
फलूत	११८११	१२॥			

९४ मील

(१६) दोर्जेलिङ-फलूत-पद्मायाङ्ची दोर्जेलिङ
(९ दिन, १२० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	तोङ्लू	१००७४	१०
जोड़पोखरी	७४००	१२॥	सन्दकफू	११९२९	१४

	फुट	मील		फुट	मील
केल्लान	५५००	१७	रिन्चेनपोङ	६३००	१०
पद्मायाङची	६३२०	११	चाकङ	५१००	१३
फलुत	११८११	१२॥	—..दोर्जेलिङ	६८१२	२०

१२० मील

इस रास्तेमें पद्मायाङची पहुंचनेसे ३ मील पहिले सङ्गा-छोलिङ गोम्बा (विहार) मिलती है, जो सिक्किमका सबसे पुराना बौद्ध विहार है। इसके स्थानके चुनावोंमे भी भिक्षुओंने बड़ी कलात्मक सुरुचि-प्रदर्शन किया है। यह और पद्मायांङची सिक्किमके सबसे पुराने विहार हैं।

(१७) दोर्जेलिङ-गङतोक-दोर्जेलिङ

(१० दिन, १२२॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१८	०	पाक्योङ	७८००	११
बदमताम्	२८१८	७	पेदोङ	४९००	१४
नामची	५२००	११	कलिम्पोङ	४०००	१२
तेमी	५०००	११	पोशक	२६००	१२
सोङ	४५००	१२	—..दोर्जेलिङ	६८१८	१७॥
गङतोक	५८००	१५			

१२२॥ मील

तेमीसे जरा सा नीचे डाकबंगला है, जहांसे तिस्ताके पार वाले सीधे खड़े पहाड़ दिखाई पड़ते हैं। यहांसे पूर्व-उत्तरकी ओर नाटूला डांड़ेकी ओर की सड़क जाती दिखाई पड़ती है और उत्तर-पूरबमें लामा-अम्देन (१९२१० फुट) शिखर। यहांसे ७ मील सीधे तिस्ताके तटतक उतरना पड़ता है। रेशपके पुलसे पार करके ५ मीलकी चढ़ाईके बाद सोङ आता है। राशपमें भी नदीसे जरा ऊपर एक छोटासा बंगला है। सोङका बंगला

बहुत सुन्दर है। इसके बरांडेमें उत्तर-पूरबकी ओर देखनेपर जालेप-ला और नाटूला इन दोनों जोतोंसे अलग-अलग होकर तिब्बत जानेवाले दोनों मार्ग दिखलाई पड़ते हैं। नाटूला और जालेप-ला सीधे तौरसे एक दूसरे-से तीन ही मीलके अन्तरपर हैं। अगले दिन ६ मीलकी उतराई और कड़ी चढ़ाईके बाद रामटेक गोम्बामें पहुँचा जा सकता है। यह भी सिक्किम-की सुन्दर गोम्बा है। चार मील और उतरनेपर रोङ्ली नदी आती है, और फिर यात्री सिलिगोड़ी-गङ्तोक सड़कपर आ जाता है। गङ्तोकसे लौटते वक्त रोङ्पूमें सिलिगोड़ीवाली सड़ककी बाईं तरफ रिनकका रास्ता मिलता है। रोङ्पूसे ८ मीलपर तीन रास्ते फूटते हैं, जिनमेंसे एक पर रिनक यहांसे ३ मील और दूसरेपर रिङ्नोङ ९ मील पर है। रिनक सिक्किमके अन्दर है। यहांसे पेदोङ और अलगढ़ा होकर नीचेके रास्ते कलिम्पोङ पहुँचा जा सकता है। अधिक ठंडे रास्तेसे जाना हो, तो ३ मीलकी चढ़ाई चढ़के देवराली डांड़ेको पार करना चाहिये, और वहांसे "होम्स" के भीतरसे कलिम्पोङ पहुँच सकते हैं। कलिम्पोङसे मोटर ढाई-तीन घंटेमें दोर्जेलिङ पहुँचाती है।

(१८) दोर्जेलिङ-गङ्तोक-दोर्जेलिङ

(११ दिन, १३० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१६	०	पाक्योङ	७८००	११
बदमताम	२५००	७	रिनक	३५००	९
नामची	५२००	११	रिशिसुङ	६४१०	१२॥
तेमी	५०००	११	कलिम्पोङ	४०००	१२
सोङ	८५००	१२	पोशक	२६००	१२
गङ्तोक	५८००	१५	— दोर्जेलिङ	६८१६	१७॥
					१३० मील

रिशिसुङ (६८१० फुट) का रोङ (लेपचा) नाम सिरिङ है। यहांसे

हिमाच्छादित शिखरोंका बड़ा मुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है, किंतु मार्चसे मईतक यहा पानीकी बड़ी दिक्कत होती है और उसे लानेके लिये १ मील नीचे रिलिङ्ग (नदी) जाना पड़ता है।

(१९) दोर्जेलिङ्-गङ्तोक-दोर्जेलिङ्

(८ दिन, ११६ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ्	६८१८	०	गङ्तोक	५८००	१५
बदमताम	२५००	७॥	सङ्कोखोला	१८००	१६
नामची	५२००	११	मल्ली	८००	१६
तेमी	५०००	११	पोशक	२६००	१०
सोङ्	४५००	१२	—...दोर्जेलिङ्	६८१८	१७॥
					११६ मील

सङ्कोखोलाका रोङ् नाम वर्दङ् है। यहांसे तिस्ताके बायें किनारे ५ मील जानेपर रोङ्फू बाजार मिलता है। यहां रोङ्फू नदी और तिस्ताका संगम है। यही सिक्किमकी सीमा भी है। सिलिगोड़ी वाली सड़कसे ११ मील जानेपर बड़े हरे-भरे दृश्योंके बीचमें मल्ली मिलती है। यहांका डाकबंगला विशाल वृक्षोंके भीतर बड़ी सुन्दर जगहमें बना हुआ है। किन्तु, यह गरम जगह है और मच्छरोंका डर रहता है। तीन मील और जानेपर तिस्ता-पुल आ जाता है, जिसे पार होकर पोशक और लोपचूके रास्ते दोर्जेलिङ् पहुँचा जा सकता है।

(२०) दोर्जेलिङ्-बदमताम-मल्ली-दोर्जेलिङ्

(८ दिन, १०६ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ्	६८१८	०	तेमी	५०००	११
बदमताम	२५००	७	सोङ्	४५००	१२
नामची	५२००	११	गङ्तोक	५८००	१५

	फुट	मील		फुट	मील
गङ्को खोला	१८००	१६	बदमनाम	२५००	११
मल्ली	८००	१६	दोर्जेलिङ	६८१८	७

१०६ मील

मल्लीसे मल्लीछपर-पुल पारकर तिस्ताके बायें तटपर आना होता है, फिर नदीके किनारे-किनारे नीचे उतरनेपर रंगित नदीका त्रिवेणी-पुल मिलता है। इस पुलको पार करने पर तिस्तापुलसे बदमनाग या मांजीटार जानेवाला रास्ता मिल जाता है। बदमतामका डाकबंगला सुन्दर स्थानमें है। यहांसे दोर्जेलिङ साढे सात मील रह जाता है।

(२१) दोर्जेलिङ-पद्मायाङ्ची-गङ्तोक-दोर्जेलिङ

(१३ दिन, १५६॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१८	०	मोङ	८५००	१२
बदमनाग	२५००	७	गङ्तोक	५८००	१५
चाताङ	५१००	१३॥	पाक्योङ	७८००	११
रिन्छेनपोङ	६३००	१३	पेदोङ	४०,००	१८
पद्मायाङ्ची	६०,४०	१०	कलिम्पोङ	४०००	१२
ग्योजिङ (शोशिङ)	६०००	१०	पोथाक	३६००	१२
लेमी	५०००	१०	— दोर्जेलिङ	६८१८	१७

१५६॥ मील

(२२) दोर्जेलिङ-फलूत-पद्मायाङ्ची-गङ्तोक-दोर्जलिङ

(१५ दिन, १२० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१८	०	तोङलू	१००७४	१०
जोड़पोखरी	७४००	१२॥	सन्दकपू	११९२९	१४

	फुट	मील		फुट	मील
फलूत	११८११	१२॥	ग्न्छेन्पोङ	६३००	१०
देन्तम्	८५००	१७	त्याकङ	५१००	१३
पद्मायाङची	६९००	११	—..दोर्जेलिङ	६८१४	२०

१२० मील

(२३) दोर्जेलिङ-जालेप-ला-दोर्जेलिङ

(१४ दिन, १६२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	मेदोन्छेन्	६५००	१३
लोपच्	५३००	१८	ग्नातोङ	१२३००	९
कलिम्पोङ	३९००	१४	कापुप	१३०००	४
रिशिमुम्	६४१०	१२	जालेप-ला	१४३९०	३
अरी	४७००	१२	—..दोर्जेलिङ	६८१४	८१

१६२ मील

(२४) दोर्जेलिङ--नाटूला--दोर्जेलिङ

(१५ दिन, १६६ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	गङतोक	५८००	१५
बदमनाम	२५००	७	पुसुम (कर्पेनिङ)	९५००	१०
नाराची	५२००	११	चङगू	१२६००	११
नेंमी	५०००	११	नाटूला	१४३००	६
गोङ	४५००	१२	—..दोर्जेलिङ	६८१४	८३

१६६ मील

(२५) दोर्जेलिङ--नाटूला--जालेप-ला--दोर्जेलिङ
(१७ दिन, १८४॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	(कापुप	१३२००	३)
बदमताम	२५००	७	ग्नातोङ	१२२१०	४
नामची	५२००	११	गेदोन्छेन्	६५००	५
तेमी	५०००	११	आरी	४७००	१३
सोङ	४५००	१२	रिशिमुग	६४१०	१२
गङतोक	५८००	१५		(या गेदोङ झाकर)	
पुसुम	९५००	१०	कलिम्पोङ	३९००	१२
चङगू	१२६००	११	(तिस्तापुल	७१०	३)
नाटूला	१४३००	६	पेशोक	२६००	९
लाङगू	१२६००	६		(या लोपचू ५३०० फुट)	
कापुप	१३२००	१०	--दोर्जेलिङ	६८१४	१७॥
जालेप-ला	१४३९०	३			

१८४॥ मील

(२६) दोर्जेलिङ-लाछेन-दोङख्याला-दोर्जेलिङ
(२२ दिन, २५२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	सिङ्गिक	४६००	१०
बदमताम	२५००	७	टूङ	४४०४	८
नामची	५२००	११	चुङथाङ	५३५०	५
तेमी	५०००	११	लाछेन	८५००	१३
सोङ	४५००	१२	थाङगू	१२८००	१३
गङतोक	५८००	१५	दोङख्या	१८१३१	५(?)
दिक्छू	२१५०	१३	लाछेन्	८८००	१३

	फुट	मील		फुट	मील
चुङथाङ	५३५०	१३	पेदोङ	४९००	१४
तुङ	४४०४	५	कालिम्पोङ	३९००	१२
सिङगिक	४६००	८	(तिस्ता	७१०	३)
दिक्छू	२१५०	१०	लोपचू	५३००	१४
गङतोक	५८००	१३	—... दोर्जेलिङ	६८१४	१६
पाकयोङ	७४००	१०			

२५२ मील

(२७) दोर्जेलिङ-युमथङ-दोर्जेलिङ

(२२ दिन, २२३ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लाछुङ	८८००	९।
बदमताम	२५००	७	युमथाङ	१३५०	१०।
नामची	५२००	११	लाछुङ	८८००	९।
तेमी	५०००	११	चुङथाङ	५३५०	१०।
सोङ	८५००	१२	तुङ	४४०४	५
गङतोक	५८००	१५	सिङगिक	४६००	८
दिक्छू	२१५०	१३	दिक्छू	२१५०	१०
सिङगिक	४६००	१०	गङतोक	५८००	१३
तुङ	४४०४	८	... दोर्जेलिङ	६८१४	५६
चुङथाङ	५३५०	५			

२२३ मील

(२८) दोर्जेलिङ-थाङगू-युमथङ-दोर्जेलिङ

(२६ दिन, २८९ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	बदमताम	२५००	७

	फुट	मील		फुट	मील
नामची	५२००	११	लाछेन	८८००	१३
तेमी	५०००	११	लुङथाङ	५३५०	१३
मोङ	६५००	१२	लाछेन्	८८००	१०।
गङतोक	५८००	१५	युमथाङ	११६५९	९।
दिक्छू	२१५०	१३	लाछुङ	८८००	९।
सिङगिक	४६००	१०	लुङथाङ	५३५०	१०।
टुङ	४४०४	८	—...दोर्जेलिङ	६८१४	९२
लुङथाङ	५३५०	५			

२४९ मील

(२९) दोर्जेलिङ-दोङख्याला-दोर्जेलिङ

(२७ दिन, २७३॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लाछेन्	८८००	१२
बद्मताम	२५००	७	थङ्गू	१२८००	१६
नामची	५२००	११	(ग्यागोङ	१५७५०	१०)
तेमी	५०००	११	(चोल्हामो	१७०००	१३)
मोङ	६५००	१२	(दोङख्याला	१८१३१	१३)
गङतोक	५८००	१५	(मोमि—समदोङ	१५०००	८)
दिक्छू	२१५०	१३	युमथाङ	११६५०	१०
सिङगिक	४६००	१०	लाछुङ	८८००	९।
टुङ	४४०४	८	लुङथाङ	५३५०	१०।
लुङथाङ	५३५०	५	—...दोर्जेलिङ	६८१४	९२

गङतोक द्वारा

२७३॥ मील

(३०) दोर्जेलिङ-जेमू हिमानी-हरितसर-दोर्जेलिङ

(२२ दिन, २६२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१६	०	लाछेन	८८००	१३
बदमताम	२५००	७	यकथाङ	११२००	९
नागन्री	५२००	११	जेमू हिमानी शिखर	१५०००	९
नेगी	५०००	११	हरितसर	१६२००	८
सांङ	४५००	१२	जेमू हिमानी शिखर	१५०००	८
गङतोक	५८००	१५	यकथाङ	११२००	९
दिक्छू	२१५०	१३	लाछेन	८८००	९
सिङगिक	४६००	१०	चुङथाङ	५३५०	१३
टुङ	४४०४	८	.... दोर्जेलिङ	६८१६	९२
चुङथाङ	५३५०	५		गङतोक होकर	

२६२ मील

(३१) दोर्जेलिङ-केशोङ-यकथाङ-दोर्जेलिङ

(२४ दिन, २२७ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१६	०	टुङ	४४०४	८
बदमताम	२५००	७	चुङथांङ	५३५०	५
नागन्री	५२००	११	लाछेन्	८८००	१३
नेगी	५०००	११	यकथाङ	११२००	९
सांङ	४५००	१२	मोलङ	१४०००	९
गङतोक	५८००	१५	तालुङ गोम्पा	८०००	१२
दिक्छू	२१५०	१३	बे	६०००	६
सङगिक	४६००	१०	लिङताम गोम्पा	५५००	९

	फुट	मील		फुट	मील
दिक्छू	२१५०	८	—... दोर्जेलिङ	६८१४	५६
गङतोक	५८००	१३			

२२७ मील

(३२) दोर्जेलिङ-ल्होनक गोमा-दोर्जेलिङ
(२८ दिन, २८८ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	टुङ	४४०८	८
बदमताम	२५००	७	चुङथाङ	५३५०	५
नामची	५२००	११	लाछेन	८८००	१३
तेमी	५०००	११	थङगू	१२८००	१३
सोङ	४५००	१२	गोगी	१६०००	५
गङतोक	५८००	१५	माकोथाङ	१४८००	३
दिक्छू	२१५०	१३	लम्नो लू शिविर	१५०००	७
सिङगिक	४६००	१०	गोमा	१६५००	८
			—...दोर्जेलिङ	६८१४	१४१ उसी मार्ग से

२८८ मील

(३३) दोर्जेलिङ-माकोथाङ-जेमू-दोर्जेलिङ
(३० दिन, ३०९ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	गङतोक	५८००	१५
बदमताम	२५००	७	दिक्छू	२१५०	१३
नामची	५२००	११	सिङगिक	४६००	१०
तेमी	५०००	११	टुङ	४४०८	८
सोङ	४५००	१२	चुङथाङ	५३५०	५

	फुट	मील		फुट	मील
लाछेन	८८००	१३	यकथाङ	११६००	६
थङगू	१२८००	१३	जेमूछू शिविर	१४५००	७
पोगी	१४०००	५	हरितसर	१६२००	१४
माकोथाङ	१४४००	७	जेमूछू शिविर	१४५००	१४
(दोवल्के		४)	यकथाङ	११६००	७
थेला		६	लाछेन	८८००	९
तोम्या गुफा		७	चुङथाङ	५३५०	१३
			—...दोर्जेलिङ	६८१४	९२

——

३०९ मील

(३४) दोर्जेलिङ-माकोथाङ-थेला-जेमू-दोर्जेलिङ

(२६ दिन, २६८। मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लाछेन	८८००	१३
बदागताम	२५००	७	थङगू	१२८००	१३
नामची	५२००	११	पोगी	१४००७	५
तेमी	५०००	११	माकोथाङ	१४४००	७
रोङ	४५००	१२	तोम्या गुफा		१६ (८ घंटा)
थाङलोक	५८००	१५	यकथाङ	११६००	८ (४")
दिनछू	२१५०	१३	लाछेन	८८००	९ (४।")
सिङगिक	४६००	१०	चुङथाङ	५३५०	१३
तूङ	४४०४	८	—...दोर्जेलिङ	६८१४	९२
चुङथाङ	५३५०	५			

——

२६८। मील

(३५) दोर्जेलिङ-गोमेसम्पोङ-लेपचोथङगू-दोर्जेलिङ
(२२ दिन, २२३ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दार्जीलिङ	६८१४	०	तुङ	४४०४	८
बदमताम	२५००	७	चुङथाङ	५३५०	५
नामची	५२००	११	लाछुङ	८८००	१०
तेमी	५०००	११	युमथाङ	११६५०	९
सोङ	४५००	१२	लाछुङ	८८००	९
गङतोक	५८००	१५	चुङथाङ	५३५०	१०
दिक्छू	२१५०	१३	—... दोर्जेलिङ	६८१४	९२
सिङ्गिक	४६००	१०			

२२३ मील

(३६) दोर्जेलिङ-थङगू-युमथाङ-दोर्जेलिङ
(२७ दिन, २७५ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लाछेन	८८००	१३
बदमताम	२५००	७	थङगू	१२८००	१३
नामची	५२००	११	लाछेन	८८००	१३
तेमी	५०००	११	चुङथाङ	५३५०	१३
सोङ	४५००	१२	लाछुङ	८८००	१०
गङतोक	५८००	१५	युमथाङ	११६५०	९
दिकछू	२१५०	१३	लाछुङ	८८००	९
सिङ्गिक	४६००	१०	चुङथाङ	५३५०	१०
तुङ	४४०४	८	—...दोर्जेलिङ	६८१४	९२
चुङथाङ	५३५०	५			

२७५ मील

(३७) दोर्जेलिङ—दोङक्याला—दोर्जेलिङ
(२७ दिन, २७०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	लाछन	८८००	१२
बदमताम	२५००	७	थङगू	१२८००	१३
नामची	५२००	११	ग्यागोङ	१५७५०	१०
तेमी	५०००	११	चोल्हामो	१७०००	१३
सोङ	४५००	१२	दोङक्याला	१८१३१	३)
गङ्गतोक	५८००	१२	मोमे समदोङ	१५०००	८
दिक्छू	२१५०	१३	युमथाङ	११७५०	१०
सिङगिक	४६००	१०	लाछुङ	८८००	९।
तुङ	४४०४	८	चुङथाङ	५३५०	१०।
चुङथाङ	५३५०	५	दोर्जेलिङ	६८१४	९२

२७०॥ मील

(३८) दोर्जेलिङ-थकथाङ-केशोङला-तालुङ—दोर्जेलिङ
(२४ दिन, २२७ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	तुङ	४४०४	८
बदमताम	२५००	७	चुङथाङ	५३५०	५
नामची	५२००	११	लाछन	८८००	१३
तेमी	५०००	११	थकथाङ	११९००	९
सोङ	४५००	१२	सोलङ	१४०००	९
गङ्गतोक	५८००	१५	तालुङ गोम्पा	८०००	१२
दिक्छू	२१५०	१३	बे	६०००	६
सिङगिक	४६००	१०	लिङताग गोम्पा	५५००	९

	फुट	मील		फुट	मील
दिकछू	५१५०	८	दोर्जेलिङ	६८१४	५६
गङतोक	५८००	१३			

२२७ मील

(३९) दोर्जेलिङ-माकोथाङ-ल्होनकछू-जेमू उपत्यका दोर्जेलिङ

(२६ दिन, २६१ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	थङगू	१२८००	१३
बदमताम	२५००	७	पोगी	१४०००	५
नामची	५२००	११	माकोथाङ	१४४००	७
तेमी	५०००	११		(ल्होनकछू द्वारा)	
सोङ	४५००	१२	यकथाङ	११९००	९
गङतोक	५८००	१५	जेमू—उपत्यका	१४५००	९
दिकछू	२१५०	१३	यकथाङ	११९००	९
सिङगिक	४६००	१०	लाछेन	८८००	९
टुङ	४४०४	८	चुङथाङ	५३५०	१३
चुङथांङ	५३५०	५	दोर्जेलिङ	६८१४	९२
लाछेन	८८००	१३			

२६१ मील

(४०) दोर्जेलिङ-मोमेसम्दोङ-सेरपोला-जाछू-दोर्जेलिङ

(२५ दिन, २५३ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	सोङ	४५००	१२
बदमताम	२५००	७	गङतोक	५८००	१५
नामची	५२००	११	दिकछू	२१५०	१३
तेमी	५०००	११	सिङगिक	४६००	१०

	फुट	मील		फुट	मील
तुङ	४८०८	८	थङ्गू	१२८००	६
चुङथाङ	५३५०			(३ घंटा)	
लाछुङ	८८००	१०॥	लाछेन	८८००	१३।
युमथाङ	११७००	९॥	चुङथाङ	५३५०	१३
मोमे समन्दोङ	१५०००	१०	—…दोर्जेलिङ	६८१४	९२.
सेरपोला	१७०००				
जाछू उपत्यका		१६ (८ घंटा)			

२५३ मील

(४१) दोर्जेलिङ-लाछुङ-सेरपोछू-करपोला-मोमेसम्दोङ-दोर्जेलिङ

(२० दिन, २२४॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	चुङथाङ	५३५०	५
तदमताम	२५००	७	लाछुङ	८८००	१०॥
नामची	५२००	११	सेरपोछू उपत्यका		
तेमी	५०००	११	करपोला		
सोङ	४५००	१२	मोमेसम्दोङ	१५०००	
गङतोक	५८००	१५	युमथाङ	११७००	१०.
दिक्छू	२१५०	१३	लाछुङ	८८००	९॥
सिङगिक	४६००	१०	चुङथाङ	५३५०	१०॥
टुङ	४८००	८	—…दोर्जेलिङ	६८१४	९२

२२४॥ मील

(४४) दोर्जेलिङ-जोङरी-गुइचाला-सिङलीला-दोर्जेलिङ

(२२ दिन, २०२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	गुइचाला	१६४००	३
बदमताम	२५००	७	अलुकथाङ	१३५००	३
चाकाङ	५१००	१३	जोङरी	१३१४०	८
रिन्छेन्पोङ	६३००	१३	चुरङ छू	१२१००	५॥
पमायाङ्चे	६९००	१०	गामोथाङ	१२२५०	९॥
तिङलिङ गोम्पा	६०००	७	मिगोथाङ	१३०००	१२
योकसुन	६०००	८	नागाथाङ	११८००	१५
नीबी शिला		६	फलूत	११८११	१०
बाकियम		५	मन्दकपू	११९२९	१२॥
जोङरी	१३१४०	६	तोङलू	१००७४	१८
अलुकथाङ	१३५००	८	जोङपोखरी	९४००	१०
			—...दोर्जेलिङ	६८१४	१२॥
					२०२ मील

(४५) दोर्जेलिङ-मिगोथाङ-जोङरी-दोर्जेलिङ

(१४ दिन, १४२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	तिङलिङ गोम्पा	६०००	७
बदमताम	२५००	७	योकसुन	६०००	८
चाकाङ	५१००	१३	नीबी शिला		६
रिन्छेन्पोङ	६३००	१३	बाकियम		५
पमायाङ्चे	६९००	१०	जोङरी	१३१४०	६
			—...दोर्जेलिङ	६८१४	७१
					१४२ मील

(४६) दोर्जेलिङ-मिगोथाङ-जोङरी-दोर्जेलिङ
(२५ दिन, २६५ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	जोङरी	१३१८०	४
बदमताम	२५००	७	बङलेथाङ		७
चाकङ	५१००	१३	गोचकला		१५
रिन्छेन्पोङ	६३००	१३	तालुङ हिमानी		८
पद्मायाङचे	६९००	१०	गोचकला		८
सङा छोलिङ		४	बङलेथाङ		१५
येन्तम	४५००	१६	जोङरी	१३१८०	७
चियाभंजन	९०००	११	बाक्यिम		६
नयाथाङ		६	निबी		५
मिगोथाङ		१६	योकसुन	६०००	६
थरा ला		३	तिङलिङ गोम्पा	६०००	४
लग ला		७	पद्मायाङचे गोम्पा	६९००	७
दुङ ला		२	रिन्छेन्पोङ	६३००	१०
ओमा ला		२	चाकङ	५१००	१३
(रमची पोखरी)			बदमताम	२५००	१३
गामोथाङ		२	—दोर्जेलिङ	६८१४	७
पोङ दिन		८			

२६५ मील

(४७) दोर्जेलिङ-जोङरी-नेपालसीमा-दोर्जेलिङ
(१८ दिन, १८६ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
दोर्जेलिङ	६८१४	०	चाकङ	५१००	१३
बदमताम	२५००	७	रिन्छेन्पोङ	६३००	१३

	फुट	मील		फुट	मील
पत्तागाङ्ले	६९००	१०	जांङ्री	१३१८०	६
सिङ्लिङ गोम्पा	६०००	७	गुरङ्छू		३ (१॥ घंटा)
गावरगुन	६०००	८	लेजग ला		१० (५ ")
लिबी		६	गङ्ला		९ (४॥ ")
नामिगाम		५	दोर्जेलिङ	६८१८	९३

१८६ मील

ग. कलिम्पोङसे यात्राएं

(४८) कलिम्पोङ-दोर्जेलिङ कलिम्पोङ

(६ दिन, ६१ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	दोर्जेलिङ	६८१४	१७॥
पेशोक	२६००	१३	—...कलिम्पोङ	४०००	३०॥

६१ मील

(४९) कलिम्पोङ-गङ्तोक-कलिम्पोङ

(९ दिन, ९४ मील पैदल)

	फुट	मील	
कलिम्पोङ	४०००	०	
मल्ली	८००	१२	मोटर से १ दिन
रंङफू (रंगपू)	१२००	११	
सिम्दोङ		१२	
गङ्तोक	५८००	१२	
—...कलिम्पोङ	४०००	४७	

९४ मील

(५०) कलिम्पोङ-जालेपला*-कलिम्पोङ

(१० दिन, १०० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	ग्नातोङ	१२३००	९
पेदोङ	४९००	१२	कापुप (कुपु)	१३०००	४
आरी	४७००	८	जालेपला	१३९००	३
सेदोन्छेन	६५००	१३	—...कलिम्पोङ	४०००	५१
					१०० मील

(५१) कलिम्पोङ-नातुला-कलिम्पोङ

(१४ दिन, १५० मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	मोटर द्वारा		
गङतोक	५८००	४४			
पुसुम	९५००	१०	नातुला	१४३००	६
चङगु	१२६००	११	—...कलिम्पोङ	४०००	७५
					१५० मील

(५२) कलिम्पोङ-जालेपला-नातूला-कलिम्पोङ

(१४ दिन, १४७ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	जालेप-ला	१४३९०	३
रिसिसुम	६४१०	१२	कापुप	१३२००	३
आरी	४७००	१२	चङगू	१२६००	१०
सेदोन्छेन	६५००	१३	नातूला	१४३००	६
ग्नातोङ	१२३००	९	चङगू	१२६००	६
कापुप	१३२००	४	पुसुम	९५००	११

* ५०-५२ की यात्राएं ल्हासा (तिब्बत) के प्रसिद्ध मार्गपर हैं।

	फुट	मील	
गङ्तोक	५८००	१०	मोटर द्वारा
....कलिम्पोङ	४०००	४८	

१४७ मील

(५३) कलिम्पोङ-लाछेन-लाछुङ-कलिम्पोङ

(२२ दिन, २१४ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	मोटर द्वारा		
गङ्तोक	५८००	४८			
दिक्छु	२१५०	१३	लाछेन	८८००	१३
सिङ्गिक	४६००	१०	चूङ्थाङ	५३५०	१३
तूङ	४४०४	८	लाछुङ	८८००	१०॥
चूङ्थाङ	५३५०	५	चूङ्थाङ	५३५०	१०॥
			गङ्तोक	५८००	३६ (मोटर द्वारा)
			...कलिम्पोङ	४०००	४८ (मोटर द्वारा)

२१४ मील

(५४) कलिम्पोङ-लाछेन-दोङ्ख्याला-मोमेसम्दोङ-कलिम्पोङ

(२७ दिन, २६७॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	मोटर द्वारा		
गङ्तोक	५८००	४८			
दिक्छु	२१५०	१३	थङ्गू	१२८००	१३
सिङ्गिक	४६००	१०	(ग्यागोङ	१५७५०	१०)
तूङ	४४०४	८	(चोल्हामो	१७०००	१३)
चूङ्थाङ	५३५०	५	दोङ्ख्याला	१८१३१	३
लाछेन	८८००	१३	(मोमेसम्दोङ	१५०००	८)

	फुट	मील		फुट	मील
थुमथाङ	११६५०	१०	चुङथाङ	५३५०	१०।
लाछुङ	८८००	९।	—...कलिम्पोङ	४०००	९४
					२८७॥ मील

(५५) कलिम्पोङ-थङगू-युमथाङ-कलिम्पोङ

(२१ दिन, २१०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	} मोटर द्वारा		
गङतोक	५८००	४८			
दिकछू	२१५०	१३	बोरुगला	१६६१६	
सिङगिक	४६००	१०	युमथाङ	११६५०	
टुङ	४४००	८	लाछुङ	८८००	९।
चुङथाङ	५३५०	५	चुङथाङ	५३५०	१०।
लाछेन	८८००	१३	—...कलिम्पोङ	४०००	९४
					२१०॥ मील

(५६) कलिपोङ-मोमेसम्दोङ-सेरपोला-कलिम्पोङ

(१८ दिन, २६०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	} मोटर द्वारा		
गङतोक	५८००	४८			
दिकछू	२१५०	१३	सेरपोला	१७०००	८
सिङगिक	४६००	१०	पालोङ (जा छू)		१०
टुङ	४४००	८		अतिसुन्दर उपत्यका।	
चुङथाङ	५३५०	५	थङगू	१२८००	९
लाछुङ	८८००	१०।	लाछेन	८८००	१३
युमथाङ	११७००	९।	चुङथाङ	५३५०	१३
मोमेसम्दोङ	१५०००	१०	—...कलिम्पोङ	४०००	९४
					२६०॥ मील

(५७) कलिम्पोङ-सेरपोङ-करपोला-कलिम्पोङ

(३४ दिन, २५०॥ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	} मोटर द्वारा		
गङ्तोक	५८००	४८			
दिक्चू	२१५०	१३	मोमिगम्दोङ	१५०००	१०
सिङ्गिक	४६००	१०	युमथाङ	११७००	१०
तुङ	४४००	८	लाछुङ	८८००	९।
चुङ्थाङ	५३५०	५	चुङ्थाङ	५३५०	१०।
लाछुङ	८८००	१०।	गङ्तोक	५८००	३६
सेरपोङ शिविर (१)		१३	रोङ्फू		१०
		सुंदर-उपत्यका	पाक्योङ	७४००	११
" (२)		१३	पेदोङ	४९००	१४
करपोला		८	—...कलिम्पोङ	४०००	१२

२५०॥ मील

(५८) कलिम्पोङ-गङ्तोक-पेदोङ-कलिम्पोङ

(४ दिन, ९८ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	} मोटर द्वारा		
गङ्तोक	५८००	४८			
(रोङ्फू	१२००	१३)	पेदोङ	४९००	१४
पाक्योङ	७४००	११	कलिम्पोङ	४०००	१२

९८ मील

(५९) कलिम्पोङ-गङ्तोक-रोङ्फू-कलिम्पोङ

(१ दिन, ७२ मील)

	फुट	मील		फुट	मील
कलिम्पोङ	४०००	०	मल्ली	८००	१२

	फुट	मील		फुट	मील
रोङफू	१२००	११	...कलिम्पोङ	४०००	३६
मङलोंग	५८००	१३			----
					७४ मील

(६०) कालिम्पोङ-मङपू-कलिम्पोङ

(१ दिन, ४८ मील)

कालिम्पोङ	४०००	०	मङपू	४०००	६
तिस्तापुल	७१०	१०	कालिम्पोङ	४०००	२४
ग्यलीपुल		८			----
					४८ मील

हे बिष्णुप्यारी न मरे सम्म बात गर्नु चाहिन्छ,
ढाकाको टोपी, राधाकृष्ण गोपी,
यसो समझेर ल्याउंदा, मन आउंछ खोपी, बिहोगी ता भगे नी ।
कोदो छर्‍यो गर्कै छर्‍यो धुल खेल्यो कुर्लेले,
परेवा पुर्‍यो, गाडत जुर्‍यो थुन्छ कि गुलेले,
ढाकाको टोपी, राधाकृष्ण गोपी,
यसो समझेर ल्याउंदा, मन आउंछ खोपी, बिहोगी ता भगे नी ।
परलोकमा पनि भेटौंला भनी दान पुण्य गर्दै छु ।
ढाकाको टोपी, राधाकृष्ण गोपी,
यसो समझेर ल्याउंदा, मन आउंछ खोपी, बिहोगी ता भगे नी ।
कुखराको भाले चिलैले लग्यो, अकासै बाशैले,
गुप्तीको कुरो जानकारी भयो, हेर्दिन लाजैले ।
ढाकाको टोपी, राधाकृष्ण गोपी,
यसो समझेर ल्याउंदा, मन आउंछ खोपी, बिहोगी ता भगे नी ।

२—झ्याउरे गीत

पुरुष—आज ता प्यारी आइनो बजार ।
घुमाउंने घर को त्यो छानै माथि चरीले[३] गर्ने बास,
आज ता प्यारी आइनौ बजार, मारी छौ हाम्रो आस ।
स्त्री—घुमाउंने घरको त्यो छानै माथि चरीले गर्ने बास,
  थोटा काम थियो आइन बजार मारेको छैन आस ।

३—चुड्के गीत*

दौरा[६] नी मेरी छैन, टोपी नी मेरो छैन, धोका[७] होला माथै,[८]
दौरा नी मेरो छैन, फेरखोला नी माथै, गुरवाल[९] नी मेरो छैन, जांगवाला माथै
पटुकी मेरो छैन, ढाका नी होला माथै, कोट नी मेरो छैन, मखमली माथै ।
गाई को ता लाऊं ता गोरी, अल्लारे[१०] न मोरी,[११]
अब र कसरी जानु, तपाई ज्यान लाई छोड़ी ।
अब ता बसाई छैन यो गैरीको टोलमा,
कैले[१२] न भेटी जाउंला परदेश, कैले र भेटी शाइ ।

१—पैरा बोया २—मुर्गी ३—लो ४—छत ५—चिड़िया ।
* यह नाचका गीत, चुटकी बजाके गाया जाता है ।
६—बगल बंदी ७—धोखा ८—केवल ९—पायजामा १०—तरुण
११—सखीका संबोधन १२—कब ।

४—लैबरी*

भातै र पाक्यो, ज्यान गुद गुद, तिहुन¹ ता चिन्डेको लैबरी,
बागमती तरनु के माया गरनु, छोड़ेर हिड़ने को लैबरी।
आजु र मैले घांसै है काटें, गाई लाई कि गोरु लाई,
हजुर ज्यानले बोलाउनु भयो, मलाई कि अरुलाई।
आजु र मैले खेताला डाकें,² गौ बीसै नौ जवान,
बिरानो देशमा मैं मरी जाउंलो³, को दिने गो दान।

५—लैबरी†

लावी गुनी हान⁴ दिदै, शंख जुरेली है दिदै, शंख जुरेली ...लैबरी।
लैबरी ..धोबी न लुगा धोई न धोई
बिरानो देशमा कोई न कोई ... लै ...लैबरी।
लैबरी ...पानी ता पर्यो ... ...,
रिमी झिमी रामशेर ल्याउनु नौ लै लै ...लैबरी।
पानीको बुलबुल यो मनको तुलबुल, काँ गई मरनु छ। लैबरी।

६—लैबरी†

भातै र फेरी पाउला फेर्यो⁵ झरै मा गयो होस मेरा।
रा रौं र जुनी एलीकै भयो, परन्तु⁶ लाई होस मेरा।
कालेजो काटी साना पात्रा ल्याको, परन्तुलाई होस मेरा,
तीनै र शहर, नेपालैमा लसुन-प्याज रोप्ने ज्याज,
तिमी पनि उस्तै⁷ हामी पनि उस्तै बल्ल मिल्यो स्याज को स्याज।

७—मीत÷लाउने गीत।

तीनै शहर नेपालै मा कप्तानकी छोरी,
मीत लाउनु भन्दैछिन् बाबा कसरी⁸ लाउनु मीत।
थालमा अछेता⁹, ठहरमा मोहर,
घुमी-घुमी लाउनु मीत है छोरी मीत।

---

* बनचारिणी तरुणियोंका गीत। † गायिका—श्रीमती शोभामाया सुन्दास।
÷ सखी बननेका गीत।

१—तेवन २—बुलाया ३—जाऊंगी ४—फेंको। ५—नया पत्ता फिर आया ६—भविष्यमें ७—वैसे ८—किस तरह ९—अच्छत।

८—संगिनी* गीत :—

कुरकुची कुरकुची[1] पानी दिदै, छैनहै दिदै पानी दह, मालिकाको[2] थान ।
अन परऽअन परऽजाउ मेरो मायती[3] होला पानी दह, मालिकाको थान ।
पिडुंला पिडुंला पानी दिदै, छैन है दिदै पानी दह, मालिकाको थान ।
कम्मर कम्मर पानी दिदै, छैन है दिदै पानी दह, मालिकाको थान ।
अन परऽ अनपरऽ जाउ मेरी मायती होला पानी दह, मालिकाको थान ।
कुम[4] है कुम पानी दिदै, छैन है दिदै पानी दह, मालिकाको थान,
सिर है सिर पानी दिदै, छैन है दिदै पानी दह, मालिकाको थान,
अन परऽ अन परऽ जाउ मेरो मायती होला पानी दह, मालिकाको थान ।

९—संगिनी गीत :—

रोसी है कोसी को मैं, चेली[5] भान्से,[6] सबैलाई पुग्यायें, बाबैलाई पुग्याइ न,
मन भयो अंध्यारो सैन[7], मन भयो अंध्यारो ।
रोसी है कोसीको मैं चेली भान्से, सबैलाई पुग्यायें, आमैलाई पुग्याइन ।
मन भयो अंध्यारो सैन मन भयो अंध्यारो ।
रोसी है कोसी को मैं चेली भान्से, सबैलाई पुग्यायें दाजैलाई पुग्याइ न ।
मन भयो अंध्यारो सैन मन भयो अंध्यारो ।
रोसी है कोसी का मैं चेली भान्से, सबैलाई पुग्यायें, भाउज्यैलाई पुग्याइ न ।
मन भयो अंध्यारो सैन मन भयो अंध्यारो ।
रोसी है कोसीका मैं चेली भान्से, सबैलाई पुग्यायें, भाईलाई पुग्याइ न,
मन भयो अंध्यारो सैन मन भयो अंध्यारो ।
रोसी है कोसीका मैं चेली भान्से, सबैलाई पुग्यायें, बैनीलाई पुग्याइ न,
मन भयो अंध्यारो सैन मन भयो अंध्यारो ।

१०—संगिनी गीत :—

कोसीको किनारमा के फूलै फूल्यो, किनारै उज्यालो,
दूद थुंगा टिपेरऽ सिरै मा चढ़ाउ, सिरै मा उज्यालो सैन ।
कालै न लिग्यो मनैका दाउरा, कालै न रेखी हाले,
ब्राह्मणले रेखी हाले, मनैका दाउरा लिरी दिये ।

---

* ब्याह गात (रतेळी) की खोड़िया गीत ।
:—गायिका—श्रीमती शोभामाया मुन्दास,

१—एड़ीभर २—देवी ३—मैके ४—कांधा । ५—कन्या ६—रसोइया
७—सखी ।

मुकी का बेला निमेर भये जगमेमा बगे हो गंन,
गतीका बेला निमेर भये गोडा हे भये हो,
गतीका बेला निमर भये लगन भये हो,
पतीका बेला निमेर भये सिदुर हाले हो, मन सिदूर हाले हो ।

११—देवसी गीत :

शालगा दियो गगार मारुनी लुगा खोल्लु लाई हा हे लुगा खोल्लु लाई ।
सिर को पगरी खोल है मारुनी खोल मारुनी अब घर जान पर्छ हा है ।
कान को मुनीया फुकाल मारुनी, अब घर जानु पर्छ, हा है ।
गलाको कठ खोल है मारुनी, अब घर जाने पर्छ, हा है ।
कायें को चोलिया खोल है मारुनी खोल मारुनी अब घर जानु पर्छ, हा है ।
कम्मर को पटुकी खोल है मारुनी, खोल मारुनी, अब घर जानु पर्छ, हा है ।
हातको चुरिया फुकाल मारुनी हा है अब घर जानु पर्छ हा है ।
पायें को कोरया फुकाल मारुनी, हा है अब घर जानु पर्छ हा है ।
माउाको कालिया फुकाल मारुनी, अब घर जानु पर्छ, हाहे खोल खोल ।
मारुनी हा है अब घर जान पर्छ ।

:—इसे मारुनी गीत भी कहते हैं, जो भैया-दूजके दिन स्त्री-वेषधारी नर्तक (मारुनी) को संबोधित करके गाते हैं ।

परम श्रद्धास्पदेषु,

सादर अभिवादन।

आज बहुत दिनोंके बाद आपके पास पत्र भेजने की धृष्टता कर रहा हूं तथा तदर्थ क्षमाप्रार्थी हूं।

आपको यह जान बड़ी प्रसन्नता होगी कि हिमाचल-हिन्दी-भवन-दार्जिलिङ्ग के प्रस्तावित भवन का निम्नतम तल्ला करीब करीब तैयार होगया है। इसके अतिरिक्त दूसरी मंजिल का काम भी आरम्भ हो गया है पर द्रव्याभाव के कारण उसका काम शीघ्र ही बन्द हो जायगा। निम्नतम तल्ले का खर्च लगभग चालीस हजार रुपया पड़ा है तथा दूसरी मंजिल में लगभग तीस हजार रुपये लगेंगे। 'भवन' को आपके दर्शन तथा सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है तथा आप स्थानीय आवश्यकताओं से भी पूर्णतया परिचित हैं। आपको यह भी मालूम है कि हम लोगों की शक्ति अत्यन्त परिमित है। अतः हम लोग स्वयं किसी के निकट सफलता पूर्वक पहुंच नहीं सकते हैं। आपने अपने दार्जिलिङ्ग में अवस्थान के समय यह कहकर हम लोगों को प्रोत्साहित किया था कि 'निम्नतम तल्ला बना लीजिए—उसके बाद देखा जायगा।'

अतः आपसे सविनय प्रार्थना है कि किसी दाता का ध्यान 'भवन' की ओर आकर्षित करा तथा भवन-निर्माणार्थ धन दिलाने का कष्ट स्वीकार कर इस राष्ट्रीय यज्ञ के सम्पादन में हम लोगों की सहायता कर 'भवन' की नौका को मझधार में ही डूबने से बचाने की कृपा करें। हम लोगों को पूरा विश्वास है कि आपकी सिफारिश होते ही 'भवन' को पर्याप्त आर्थिक सहायता प्राप्त हो जायगी तथा उसकी दूसरी मंजिल भी शीघ्रातिशीघ्र तैयार हो जायगी। इत्यलम्।

भवदीय—
कृपाभिलाषी—
लालजी सहाय,
हिमाचल-हिन्दी-भवन, दार्जिलिङ्ग।

सेवा में,

महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन त्रिपिटकाचार्य,
हौर्नक्लिफ-हैपी वैली—मसूरी (उत्तर प्रदेश)।